गोविन्द सिंह

आपरेशन पंजाब

(सचित्र)

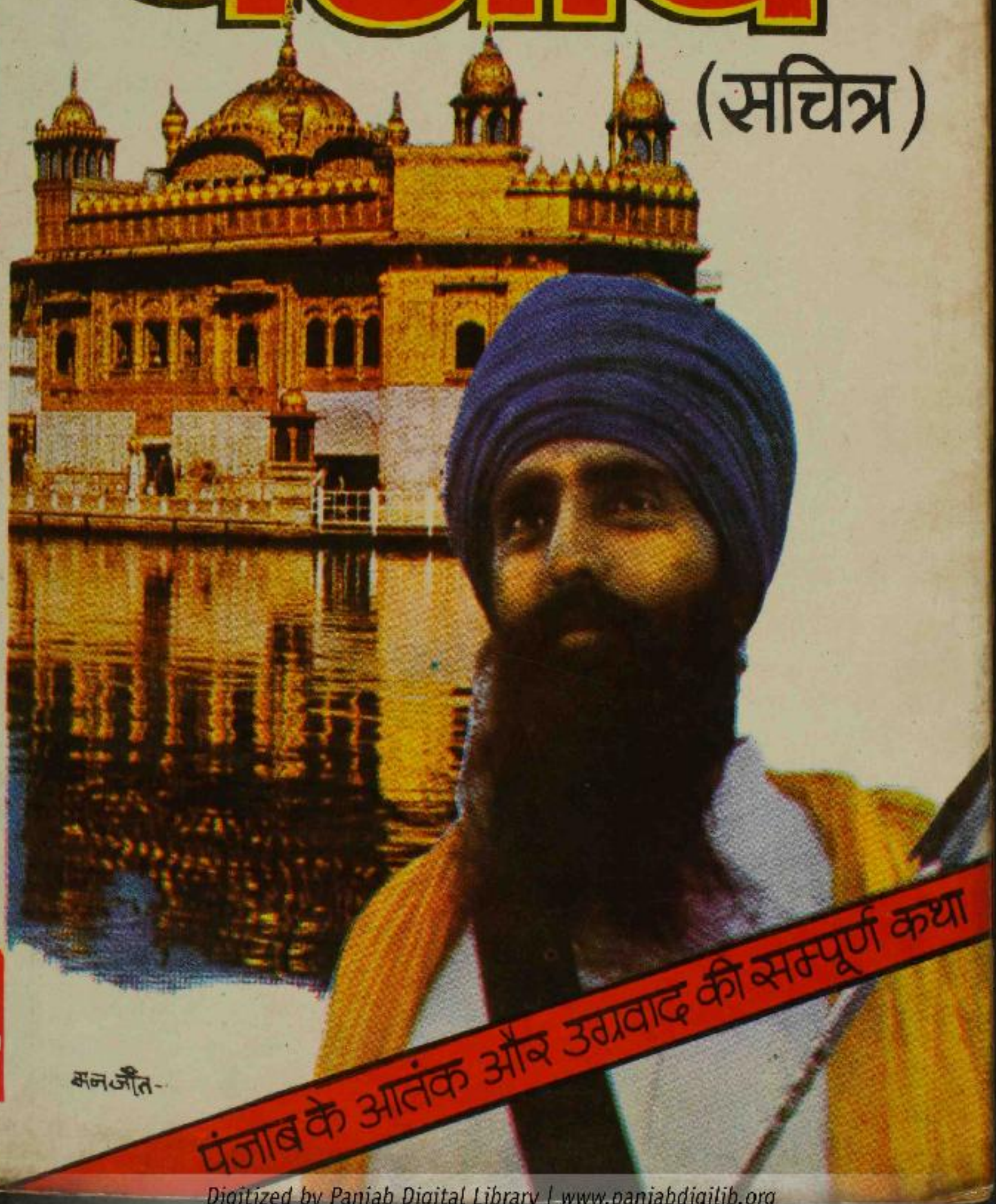

पंजाब के आतंक और उग्रवाद की सम्पूर्ण कथा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

12/H

"मैं दिल्ली जाकर श्रीमती इन्दिरा गांधी से, उस समय मिलूंगा,
जब लाल किले पर खालिस्तान का झंडा फहराने लगेगा।"

—सन्त जनरैलसिंह भिंडरांवाला

129

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हमारे प्रकाशन

साधना आधुनिक पाक कला	12.00
साधना अपटूडेट नॉलिज बुक	12.00
श्रीमद् भागवतपुराण	10.00
शिवपुराण	10.00
हितोपदेश	10.00
पंचतंत्र	10.00
साधना सैल्फ लैटर ड्राफ्टिंग कोर्स	10.00
साधना होम टेलरिंग कोर्स	12.00
साधना इंगलिश स्पीकिंग कोर्स	12.00
मंत्र विज्ञान	8.00
यंत्र विज्ञान	12.00
तंत्र विज्ञान	12.00
गणेश उपासना	10.00
सरस्वती उपासना	10.00
दुर्गा उपासना	10.00
शिव उपासना	8.00
हनुमान उपासना	8.00

साधना पॉकेट बुक्स

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आपरेशन पंजाब

['अकाली आन्दोलन' के जन्म से लेकर सैनिक कार्रवाई और उसके उपरान्त तक की स्थिति का निष्पक्ष प्रामाणिक विवेचन।]

Prof. Dr. Haroam Singh Shan
Principal Project Investigator
U.G.C. Research Project on Sikhism
605, Sector 16 Chandigarh.

गोविन्द सिंह

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

प्रकाशक :
साधना पॉकिट बुक्स
39 यू० ए० बैंग्लो रोड,
दिल्ली-110007

दूरभाष : 224241
2516715

प्रथम संस्करण

□

मूल्य 10 रुपये

मुद्रक : भाटिया प्रेस,
दिल्ली-110031

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आन्दोलन का जन्म !

लगभग एक शताब्दी की पराधीनता के बाद, अनवरत संघर्ष और बलिदान के फलस्वरूप भारत को स्वाधीन होने का अवसर मिला, पर विभाजन की शर्त के आधार पर। मुस्लिम लीग 'पाकिस्तान' के रूप में अपना नया देश पाने जा रही थी, उसी समय सिक्खधर्म के अनुयायियों ने अपने लिए भी अलग राज्य की माँग की थी। इस पर मुस्लिम लीग के दबाव कारण ध्यान न दिया और पंजाब का एक बड़ा भाग पाकिस्तान में चल गया। विभाजन होते ही खून की नदियाँ बह गईं। विभाजन की सबसे अधिक पीड़ा को पंजाबियों ने बर्दाश्त किया। लाखों पंजाबी, सिक्खमत के परिवार बेघरबार हो गए। सारे देश में वह बिखर गए। उन्होंने अपने को 'शरणार्थी' मानने से इन्कार कर दिया। 'पुरुषार्थी' कहलाने में गौरव का अनुभव किया। सचमुच देखते-देखते बेघरबार हो गई इस कौम ने अपने पौरुष के बल पर हर शहर में अपने पाँव जमा लिए। बच्चों ने बिस्कुट बेचे, पुरुषों ने रेहड़ियाँ लगायीं, महिलाओं ने घरेलू दस्तकारी की, पर इस कौम ने किसी के आगे हाथ नहीं

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

फैलाया। बिस्कुट बेचने वाले बच्चे समय के साथ अच्छे-खासे व्यापारी बन गए। रेहड़ियाँ लगाने वाले, फुटपाथ पर दुकान लगाने वाले पुरुष कई मकानों, कारखानों के मालिक बन गए। दस्तकारी करने वाली महिलाएँ परिवार के कारोबार में हाथ बँटाने लगीं और देखते-देखते विभाजन की पीड़ा भूलकर एक खुशहाल और बहादुर कौम के रूप में भारतमाता के यह लाड़ले हर जगह सुखद जीवन जीने लगे।

भारत ने स्वाधीनता प्राप्त करने के साथ ही लोकतन्त्र की स्थापना कर दी। इस आधार पर पंजाब में भी एक नया दल 'अकाली दल' बन गया। अकाली दल ने कुछ दिन तक तो काँग्रेस का साथ दिया, पर बाद में वह अलग हो गया। सन 1950 के आसपास सरदार हुकमसिंह, सरदार स्वर्णसिंह जैसे लोग काँग्रेस में बने रह गए। इसी समय मास्टर तारासिंह ने 'पंजाबी सूबा' आन्दोलन चलाया। पंजाबियों के लिए एक पृथक राज्य की माँग अस्तित्व में आई। सरदार फतेहसिंह ने आमरण अनशन किया। अनशन काल में ही उनका देहान्त हो गया। पंजाबी सूबे की माँग को लेकर तब छिटपुट उपद्रव भी हुए। 1967 में पंजाब में गैर काँग्रेसी सरकार बनी तो 'पंजाबी सूबे' का हौसला और बढ़ गया।

आगे चलकर अकाली दल 'शिरोमणि अकाली दल' के रूप में बदल गया और इस दल ने विधिवत् घोषणा कर दी—

"शिरोमणि अकाली दल निस्संदेह एक महान संगठन है; इसका अस्तित्व में आना सिक्खों के लिए गर्व की बात है। इसका समस्त इतिहास संघर्षों व आन्दोलनों, विजयों और उपलब्धियों का एक शानदार रिकार्ड है, जिस पर गौरव करना इसके लिए न्यायोचित है। इस पार्टी का पिछला इतिहास यह बताता है कि जब कभी किसी ने इसका मुकाबला करने की कोशिश की है, उसका अन्ततः विनाश हुआ है। देश के स्वतन्त्रता संग्राम में इसने जो अत्यन्त महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा इतिहास का एक अमिट अंग रहेगा।

शिरोमणि अकाली दल सिखों के अधिकारों के लिए और देश की संरचना में उनकी सम्मानपूर्ण हैसियत के लिए परिस्थिति की अपेक्षाओं के अनुसार उनका मार्गदर्शन करता रहा है। इसका उद्देश्य सिख पंथ को

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उन्नत करना रहा है और इस महान आदर्श की प्राप्ति के लिए शिरोमणि अकाली दल अनेक और विभिन्न तरीके अपनाता रहा है।

कांग्रेस सरकार की सिख विरोधी नीतियों और देश में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक हालातों को ध्यान में रखते हुए, शिरोमणि अकाली दल ने सिख पंथ के लक्ष्यों और उद्देश्यों को फिर से तैयार करने एवं उनकी प्राप्ति के लिए और तेजी से अग्रणी कार्य करने का निर्णय किया है ताकि ऐसा करते हुए वह पंथ, पंजाब तथा देश के भी और अधिक हितों के लिए कार्य कर सके और सिखों की आशाओं के अनुकूल बना रहे।

इस प्रयोजन के लिए, शिरोमणि अकाली दल ने 11-12-1972 को हुई अपनी कार्यकारी समिति की बैठक में एक नीति कार्यक्रम का मसौदा तैयार करने के लिए सिख बुद्धिजीवियों और विचारकों की एक उप-समिति गठित की थी, जिसके अध्यक्ष, पार्टी के महासचिव, सरदार सुरजीत सिंह बरनाला थे और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष, संसद सदस्य सरदार गुरचरन सिंह तोहरा, जत्थेदार जीवन सिंह उमरानंगल, भूतपूर्व मंत्री, सरदार गुरमीत सिंह, भूतपूर्व मंत्री, डा० भगत सिंह, भूतपूर्व वित्त मंत्री, सरदार बलवंत सिंह, सरदार ज्ञान सिंह राड़ेवाला, सरदार प्रेम सिंह लालपुरा, महासचिव शिरोमणि अकाली दल, सरदार जसविन्दर सिंह बरार, भूतपूर्व विधान सभा सदस्य, सरदार भाग सिंह, मेजर जनरल गुरुबक्श सिंह बधनी और ऐडवोकेट सरदार अमर सिंह अम्बालवी इसके सदस्य थे।

इस उप-समिति की ग्यारह बैठकें हुईं और पहली बैठक 23-12-1972 को अमृतसर में हुई थी। इसकी अधिकांश बैठक शान्तिपूर्ण और अनुकूल वातावरण होने से चंडीगढ़ में हुईं।

उप-समिति के सभी सदस्यों ने इसके कार्य में अत्यधिक रुचि दिखाई और बहुत दिलचस्प एवं उपयोगी विचार-विमर्शों में भाग लिया जो देखने व भाग लेने योग्य थे। मामलों के हर पहलू पर बहुत सावधानी व बारीकी से विचार करने के बाद अन्त में एक सर्वसम्मत रिपोर्ट तैयार की गई। सिख पंथ के प्रति प्यार की भावना से प्रेरित होकर इसके अनेक आर्मी जनरलों, विधि विशेषज्ञों, डाक्टरों, राजनीतिक विचारकों, अनुभवी राज-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नेताओं और धार्मिक नेताओं ने एक साथ मिलकर पंथ के भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बनाने के लिए इस योजना को तैयार करने में सहायता प्रदान की। विचार-विमर्श के दौरान पंथ व देश के प्रति इनका सन्तुलित प्यार एवं सिखों और देश के हितों की रक्षा के प्रति इनकी तत्परता पूर्णतया प्रत्यक्ष और स्पष्ट थी।

जब अत्यन्त सावधानी से तैयार की गई सरदार सुरजीत सिंह उपसमिति की यह रिपोर्ट, दसवें गुरु की पवित्र और ऐतिहासिक गद्दी श्री आनन्दपुर साहिब में हुई शिरोमणि अकाली दल की कार्यकारी समिति की बैठक में पेश की गयी तो दो दिन तक सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श करने के बाद महासभा के सामने रखे जाने के लिए इसका अनुमोदन किया गया। इसलिए यह मसौदा आपको भेजा जा रहा है ताकि आप इसका गहन अध्ययन कर सकें और महासभा की बैठक आपकी अमूल्य राय से लाभान्वित हो सके।

पंथ के प्रति प्यार व आदर सहित।

यह घोषणा 1-8-1977 को अमृतसर में शिरोमणि अकाली दल के कार्यालय में श्री अजमेर सिंह, सचिव शिरोमणि अकाली दल द्वारा की गयी।

इससे पूर्व शिरोमणि अकाली दल की नयी नीति कार्यक्रम मसौदा कार्य समिति द्वारा 16-17 अक्तूबर 1973 को श्री आनंदपुर साहिब में हुई बैठक में स्वीकृत किया गया। यह अकाली दल की आम सभा द्वारा 28-8-1977 को लुधियाना में होने वाले अधिवेशन में अनुमोदित किया गया। आनंदपुर साहिब में ज्ञानी अजमेर सिंह ने सचिव की हैसियत से नया कार्यक्रम पेश किया था।

इसके साथ ही यह घोषणा भी की गयी—

शिरोमणि अकाली दल का लक्ष्य सिखों को एक सशक्त और मजबूत राष्ट्र के रूप में तैयार करना है। वह ऊँची शिक्षा प्राप्त हों, अपने मूल अधिकारों के बारे में जागरूक हों। विभिन्न कलाओं में बहुत अच्छी तरह निपुण हों और जो अपने अधिक उत्कृष्ट सपूतों का सम्मान करने के लिए हमेशा तत्पर हों।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

शिरोमणि अकाली दल सिख राष्ट्रों के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कवियों, लेखकों और कलाकारों को इसकी सबसे अधिक मूल्यवान सम्पत्ति समझता है।

शिरोमणि अकाली दल ग्रामीण और पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों को उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी सहायता देगा।

सन्त हरचंद सिंह लोंगोवाल अध्यक्ष शिरोमणि अकाली दल ने आगे घोषणा की—अकाली दल की कार्य समिति द्वारा आनंदपुर साहिब में स्वीकृत संकल्प के पाठ के बारे में काफी भ्रांति और गलतफहमी है। शिरोमणि अकाली दल उक्त संकल्प की भावना और विषयवस्तु को स्पष्ट करने की लगातार कोशिश करता आ रहा है। अब पंजाबी न जानने वालों के लिए एक अंग्रेजी प्रामाणिक पाठ जारी किया जा रहा है।

आनंदपुर साहिब में पारित संकल्प इस प्रकार थे—

जत्थेदार जगदेव सिंह तलवंडी की अध्यक्षता में 28-29 अक्तूबर, 1978 को लुधियाना में हुए 81वें अखिल भारतीय अकाली सम्मेलन के खुले अधिवेशन में आनन्दपुर साहिब संकल्प को ध्यान में रखते हुए स्वीकृत संकल्प निम्न प्रकार हैं :—

(इन संकल्पों को पारित करने के बाद ही शिरोमणि अकाली दल ने उनके लिए संघर्ष शुरू कर दिया)

यह संकल्प शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष, सरदार गुरचरण सिंह टोहरा द्वारा प्रस्तुत किया गया और पंजाब के मुख्यमंत्री, सरदार प्रकाश सिंह बादल द्वारा इसका अनुमोदन किया गया।

शिरोमणि अकाली दल यह मानता है कि भारत विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों की एक संघीय लोकतन्त्रीय भौगोलिक इकाई है। धार्मिक और भाषाजात अल्प-संख्यकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा करने, लोकतंत्रीय परम्पराओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और आर्थिक प्रगति के लिए मार्ग प्रशस्त करने के वास्ते यह अपरिहार्य हो गया है कि केन्द्र और राज्य सम्बन्धों तथा अधिकारों की उपयुक्त सिद्धांतों एवं उद्देश्यों के अनुसार फिर से व्याख्या करते हुए भारतीय सांविधानिक ढांचे को एक वास्तविक संघीय रूप दिया जाए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रतिपादित पूर्ण क्रांति की संकल्पना भी शक्तियों के प्रगामी विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। कांग्रेस सत्ता के दौरान संविधान में लगातार संशोधनों के जरिए राज्यों की शक्तियों के केन्द्रीकरण की प्रक्रिया की चरमसीमा देशवासियों के समक्ष आपातस्थिति के रूप में आई, जब सभी नागरिकों के समस्त मौलिक अधिकारों को छीन लिया गया था। उसी समय शक्तियों के विकेन्द्रीकरण के कार्यक्रम को, जिसकी वकालत शिरोमणि अकाली दल ने भी की थी, खुलेतौर पर स्वीकार किया गया था और जनता पार्टी, सी०पी०आई० (एम०), ए०डी०एम०के० आदि सहित अन्य राजनीतिक दलों ने इसे स्वीकार किया था।

शिरोमणि अकाली दल सदा इस सिद्धान्त पर दृढ़ रहा और इसी कारण से काफी सोच-विचार के बाद उसने सर्वसम्मति से इस आशय का प्रस्ताव पारित किया, पहले अखिल भारतीय अकाली सम्मेलन बटाला में और फिर श्री आनन्दपुर साहिब में, जिसमें संघीय प्रणाली के अनुरूप राज्य स्वायत्तता के सिद्धान्त का समर्थन किया गया है।

इस प्रकार शिरोमणि अकाली दल जनता सरकार से दृढ़तापूर्वक यह आग्रह करता है कि विभिन्न भाषाई व सांस्कृतिक वर्गों, धार्मिक अल्पसंख्यकों एवं लाखों लोगों की आवाज को ध्यान में रखा जाए तथा राष्ट्र की एकता एवं देश की अखंडता को किसी खतरे की संभावना को दूर करने के लिए वास्तविक एवं अर्थपूर्ण संघीय सिद्धान्तों के आधार पर देश के संविधानिक ढांचे का पुनर्निर्माण किया जाए ताकि राज्य अपनी शक्तियों का वास्तविक उपयोग करते हुए अपने-अपने क्षेत्र में भारतीय लोगों की प्रगति और समृद्धि के लिए उपयोगी भूमिका निभा सकें।

शिरोमणि अकाली दल की यह महत्वपूर्ण सभा भारत सरकार से यह आग्रह करती है कि वह पिछली काँग्रेस सरकार द्वारा विशेषकर आपात स्थिति के दौरान की गई ज्यादतियों, गलतियों, गैरकानूनी कार्यों की लम्बी कहानी की जाँच करे और निम्नलिखित समस्याओं का शीघ्र ही हल ढूंढ़ने की कोशिश करे :—

(क) चण्डीगढ़ को जिसका निर्माण मूलत: पंजाब की राजधानी के रूप में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

किया गया था, पंजाब को सौंप दिया जाना चाहिए।

(ख) गाँव को इकाई मानते हुए भाषाई विशेषज्ञों द्वारा, जिन पंजाबी भाषी क्षेत्रों का पता लगाया जाना है, उनको पंजाब में मिलाने की शिरोमणि अकाली दल की लम्बे अर्से से चली आ रही माँग को स्वीकार किया जाए।

(ग) हैड वर्क्स का नियन्त्रण पंजाब में ही बना रहना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो पुनर्गठन अधिनियम को संशोधित किया जाना चाहिए।

(घ) रावी-व्यास के पानी के बँटवारे के सम्बन्ध में श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा आपात स्थिति के दौरान दिए गए मनमाने तथा अनुचित अधिनिर्णय को सर्वमान्य मानदण्डों और सिद्धान्तों के आधार पर संशोधित किया जाए और पंजाब के साथ न्याय किया जाए।

(ङ) सिखों की विशेष रुचि तथा उनके सैन्य गुणों को ध्यान में रखते हुए, थल सेना में उनकी संख्या के वर्तमान अनुपात को बनाए रखा जाए।

(च) भूमि सुधार के नाम पर उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में बसे हुए लोगों पर की जा रही ज्यादतियों को, केन्द्रीय मार्गदर्शीय सिद्धान्तों के आधार पर अधिकतम भूमि सीमा कानून में उचित संशोधन करके, समाप्त किया जाए।

शिरोमणि अकाली दल की आर्थिक नीतियों और कार्यक्रम के मुख्य प्रेरणा स्रोत श्री गुरु नानक देव और श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की सर्वधर्म समभाव की भावना तथा लोकतांत्रिक तथा समाजवादी विचारधाराएँ ही हैं। हमारा आर्थिक कार्यक्रम तीन मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित है :—

(क) श्रम का आदर।

(ख) एक ऐसा आर्थिक और सामाजिक ढाँचा, जिसमें गरीब तथा समाज के दलित वर्गों के उत्थान की व्यवस्था हो।

(ग) पूंजीपतियों के हाथों में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति केन्द्रित होने का निरन्तर विरोध करना।

आर्थिक नीतियों और कार्यक्रम को तैयार करते समय, शिरोमणि

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाली दल ने आनन्दपुर साहिब के अपने ऐतिहासिक संकल्प में, भारत में काँग्रेस शासन के 30 वर्षों में भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर पूंजीपतियों के एकाधिकार को समाप्त करने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया। इस पूंजीवादी आधिपत्य से केन्द्रीय सरकार ने मुगल साम्राज्य की तरह सारी शक्तियाँ अपने हाथ में ले ली। इससे राज्यों की आर्थिक प्रगति में रुकावट आना और लोगों के सामाजिक और आर्थिक हितों को नुकसान पहुंचना लाजमी था। शिरोमणि अकाली दल, गुरु नानक देव जी के पवित्र उपदेशों का पालन करने का संकल्प करते हुए सिख धर्म के अनुसार जीवन जीने पर पुन: जोर देता है।

केवल वही सही रास्ते को समझ सकता है, जो ईमानदारी से काम करता है और उस मेहनत के फल का भागीदार होता है।

इस प्रकार का जीवन तीन मूल सिद्धान्तों पर आधारित है :—

(1) ईमानदारी से काम करना;

(2) इस मेहनत के फल का भागीदार होना; और

(3) प्रभु के नाम का चिन्तन।

शिरोमणि अकाली दल केन्द्र और राज्य सरकारों से यह आग्रह करता है कि बेरोजगारी को अगले दस वर्षों में समाप्त करने के प्रयास किए जाएं। इस उद्देश्य के लिए कार्य करते हुए कमजोर वर्गों, अनुसूचित और दलित वर्गों, कामगारों, भूमिहीनों और गरीब किसानों तथा शहर के गरीब लोगों की स्थिति सुधारने पर विशेष जोर दिया जाए। सभी के लिए न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की जाए।

शिरोमणि अकाली दल पंजाब सरकार से यह आग्रह करता है कि वे राज्य के लिए ऐसी आर्थिक योजनाएँ तैयार करे, जिससे यह राज्य अगले दस वर्षों में एक अग्रणी राज्य बन जाए और ऐसा प्रति व्यक्ति आय बढ़ाकर 3000/-रुपए करते हुए और राष्ट्रीय स्तर की वार्षिक 4 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर के मुकाबले इसकी आर्थिक वृद्धि दर 7 प्रतिशत वार्षिक करते हुए किया जा सकता है।

शिरोमणि अकाली दल कर सम्बन्धी ढाँचे को इस प्रकार फिर से तैयार करने के कार्य को पहली अग्रता देता है जिससे करों का भार गरीबों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

से हटकर केवल अमीरों पर पड़े और राष्ट्र की आय का समान वितरण सुनिश्चित हो जाए।

शिरोमणि अकाली दल के आर्थिक कार्यक्रम का मुख्य आधार स्तम्भ यह है कि समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग राष्ट्रीय आय का लाभ पाने के भागीदार बन पाएँ।

शिरोमणि अकाली दल, केन्द्रीय सरकार से यह आग्रह करता है कि अमृतसर में एक अन्तर्राष्ट्रीय एयर फील्ड बनाया जाए जिसमें ड्राईपोर्ट की सुविधाएं भी उपलब्ध हों। इसी प्रकार लुधियाना में एक स्टाक-एक्सचेंज खोला जाए ताकि राज्य में औद्योगिकीकरण और आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया में तेजी आए। शिरोमणि अकाली दल यह भी चाहता है कि विदेशी मुद्राओं के मुक्त विनियम के लिए विदेशी मुद्रा नियमों में उचित संशोधन किये जाएं और इस प्रकार भारतीय प्रवासियों के सामने आ रही कठिनाइयां दूर की जाएं।

शिरोमणि अकाली दल भारत सरकार से यह आग्रह करता है कि वह कृषि उपज और उद्योगों के लिए कच्चे माल की कीमतों में समता लाएं ताकि ऐसे राज्यों के प्रति भेदभाव समाप्त हो सके, जहां उक्त कच्चे मालों की कमी है।

शिरोमणि अकाली दल यह मांग करता है कि कपास, गन्ने, तिलहन जैसी नकदी फसलों के उत्पादकों का व्यापारियों द्वारा शोषण तत्काल रोका जाए और इसके लिए इन फसलों को सरकार द्वारा इनके लिए लाभकारी मूल्यों पर खरीदने की व्यवस्था की जाए। इसके अलावा, सरकार द्वारा कपास निगम के माध्यम से कपास खरीदने के लिए कारगर उपाय किए जाने चाहिए।

शिरोमणि अकाली दल की दृढ़ भावना है कि अनुसूचित जातियों के लाखों शोषित लोगों की दशा को सुधारना अति तात्कालिक राष्ट्रीय समस्या है। इस प्रयोजन के लिए शिरोमणि अकाली दल केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों से विशेष निधियां निर्धारित करने की मांग करता है। इसके अलावा अनुसूचित जातियों को शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय भूखण्ड देने के लिए राज्य सरकारों को अपने-अपने बजटों में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पर्याप्त निधियां आबंटित करनी चाहिए।

खेतीबाड़ी में शीघ्र विविधता लाने के लिए भी शिरोमणि अकाली दल मांग करता है। भूमि सुधार कानूनों में जो त्रुटियां हैं, उन्हें दूर किया जाए, राज्य के तेजी से औद्योगीकरण को सुनिश्चित किया जाए, मध्यम दर्जे के उद्योगों के लिए ऋण की सहूलियतें बढ़ाई जाएं और जो लोग बेरोजगार हैं उनको बेरोजगारी-भत्ता दिया जाए। लाभकारी कृषि के लिए ट्रैक्टरों, नल-कूपों जैसे कृषि यन्त्रों के साथ-साथ अन्य निवेशों के मूल्यों में इतनी कमी की जाए जो महसूस न हो।

हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और कश्मीर आदि पड़ोसी राज्यों में पंजाबी भाषा के साथ जो भेदभाव बरता जा रहा है उस पर शिरोमणि अकाली दल का यह बृहत अधिवेशन खेद प्रकट करता है। इसकी यह दृढ़ मांग है कि नेहरू भाषा सूत्र के अनुसार, पंजाब के पड़ोसी राज्यों में पंजाबी भाषा को "दूसरी भाषा" का दर्जा दिया जाए। वहां की आबादी का एक बहुत बड़ा वर्ग पंजाबी भाषी है।

सभा इस इस बात पर खेद प्रकट करती है कि देश के विभाजन के फलस्वरूप जम्मू और कश्मीर में बसे शरणार्थियों के दावों पर इतने लम्बे समय के बाद भी उनको कोई मुआवजा नहीं दिया गया है और ये अभागे शरणार्थी तभी से तम्बुओं में ही सड़ रहे हैं।

इसलिए अकाली दल का यह अधिवेशन दृढ़तापूर्वक मांग करता है कि उनके दावों को जल्दी निपटाया जाए और उनके पुनर्वास के लिए तत्काल उपाय किए जाएं, चाहे इसके लिए धारा 370 में संशोधन करना पड़े।

अन्य राज्यों में अल्पसंख्यकों के साथ जिस तरह से भेदभाव किया जा रहा है और जिस प्रकार से उनके हितों के प्रति लापरवाही बरती जाती है, अखिल भारतीय अकाली सम्मेलन का 18वां अधिवेशन उनका पुरजोर विरोध करता है।

इसलिए यह सम्मेलन मांग करता है कि अन्य राज्यों में सिखों के प्रति अन्याय को दूर किया जाए और उन्हें सरकारी सेवा, स्थानीय निकायों राज्य विधान मण्डलों में, यदि आवश्यक हो तो मनोनयन द्वारा उचित प्रतिनिधित्व दिया जाए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अखिल भारतीय अकाली सम्मेलन का 18वां अधिवेशन इस बात से सन्तुष्ट है कि देश में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है और इसके परिणाम-स्वरूप देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

तथापि, अधिवेशन यह महसूस करता है कि गरीब किसान कृषि का यंत्रीकरण करने में इसलिए असमर्थ है कि इसम लगने वाली लागत अधिक है।

इसलिए शिरोमणि अकाली दल भारत सरकार से अनुरोध करता है कि ट्रैक्टरों पर से उत्पाद-शुल्क हटा दिया जाए, ताकि उनकी कीमत में कमी होने पर आम कृषक कृषि यंत्र का लाभ उठा सकें तथा देश के कुल कृषि उत्पादन को बढ़ाने में अपना योगदान दे सकें।

शिरोमणि अकाली दल की बैठक गरीब और श्रमिक वर्गों पर विशेष रूप से ध्यान देने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों से अनुरोध करती है, और यह मांग करती है कि न्यूनतम मजदूरी अधिनियम में समुचित संशोधन करने के साथ-साथ श्रमिक वर्ग की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए समुचित कानूनी उपाय किए जाएं ताकि वे सम्मानपूर्वक जीवन बिता सकें और देश के तेजी से औद्योगीकरण में उपयोगी भूमिका निभा सकें।

यह अधिवेशन भारत सरकार से स्वर्ण मंदिर अमृतर में प्रसारण केन्द्र स्थापित करने की अनुमति चाहता है, ताकि जो सिख विदेशों में रहते हैं उनकी आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए गुरवाणी कीर्तन प्रसारित किया जाए।

यह अधिवेशन इस बात को स्पष्ट कर देना चाहता है कि प्रस्तावित प्रसारण केन्द्र को स्थापित करने का पूरा खर्च खालसा पन्थ द्वारा वहन किया जाएगा और इसका समग्र नियंत्रण भारत सरकार में निहित होगा। हमें पूरी आशा है कि उचित रूप से विचार करने के बाद सरकार को इस मांग को मानने में कोई झिझक नहीं होगी।

शिरोमणि अकाली दल का यह वृहत अधिवेशन भारत सरकार से दृढ़तापूर्वक अनुरोध करता है कि उन कृषक वर्गों के लाभ के लिए निम्नलिखित कानून बनाए जाएं जिन्होंने राष्ट्र के व्यापक हितों के लिए कठिन मेहनत की है :—

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

1. हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की संबद्ध धारा में उचित संशोधन करके एक स्त्री को उसके पिता की जायदाद के बजाय उसके ससुर की जायदाद में उत्तराधिकारी होने के अधिकार दिए जाने चाहिए।

2. कृषकों की कृषि भूमि को सम्पत्ति कर (वैल्थ टैक्स) और सम्पदा शुल्क से पूर्ण रूप से मुक्त किया जाए।

शिरोमणि अकाली दल का वृहत अधिवेशन भारत सरकार से जोर देकर कहता है कि अनुसूचित जातियों और गैर-अनुसूचित जातियों के आर्थिक पिछड़ेपन को ध्यान में रखते हुए उनकी आबादी के अनुपात में बजट में प्रावधान किए जाएं, जिनका उपयोग उनके कल्याणार्थ किया जाए। आरक्षण के आधार पर उनको न्याय देने के लिए, व्यावहारिक उपाय के रूप में केन्द्र में एक विशेष मंत्रालय की स्थापना की जाए।

यह सम्मेलन सरकार से मांग करता है कि पहले ही हो चुके समझौते के मुताबिक देश के किसी भी भाग में सिख हरिजनों और हिन्दू हरिजनों के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

कांग्रेस सरकार से यह भी मांग है कि रावी-व्यास जल के वितरण में पंजाब के साथ किए गए घोर अन्याय और भेदभाव को दूर किया जाए। पंजाब में चीनी के छः कारखानों और चार वस्त्र कारखानों की तत्काल स्थापना के लिए भी केन्द्रीय सरकार अपनी स्वीकृति दे ताकि पंजाब राज्य अपनी कृषि-उद्योग नीति को कार्यान्वित कर सके।

अकाली दल के बुनियादी सिद्धांत श्री आनन्दपुर साहिब में 16-17 अक्तूबर, 1973 को शिरोमणि अकाली दल की कार्यकारी समिति की बैठक में यथास्वीकृत।

1. शिरोमणि अकाली दल सिख राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं का मूर्तरूप है और इस प्रकार इसे अपने प्रतिनिधित्व का पूरा अधिकार है। इस संगठन के मूल सिद्धांत हैं, मानव सहअस्तित्व, मानव उन्नति और अन्ततः सभी मानवों का परमात्मा से एकत्व।

2. ये सिद्धान्त, श्री गुरू नानक देव जी के तीन महान सिद्धान्तों पर आधारित हैं, अर्थात् परमात्मा के नाम का चिन्तन, मेहनत की गरिमा और मेहनत का भागीदार होना। (नाम जपो, कीरत करो, वंड चखो)

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

शिरोमणि अकाली दल निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहेगा :—

1. सिख धर्म और इसकी आचरण संहिता का प्रचार और नास्तिकवाद की निन्दा।

2. पंथ के स्वतन्त्र एवं पृथक स्वरूप की विचारधारा को कायम तथा जीवित रखना और ऐसा वातावरण तैयार करना, जिसमें राष्ट्रीय भावनाओं और सिख पंथ की आकांक्षाओं को पूरी अभिव्यक्ति मिले, उसकी तुष्टि और अभिवृद्धि हो।

3. गरीबी और भूखमरी को दूर करना—उत्पादन को बढ़ाकर तथा धन सम्पत्ति का बेहतर समान वितरण करके, एक न्यायप्रद ऐसी सामाजिक व्यवस्था करके जिसमें किसी प्रकार का शोषण नहीं हो।

4. जाति, धर्म या अज्ञानता के आधार पर भेदभाव को, सिख धर्म के बुनियादी सिद्धान्तों के अनुरूप दूर करना।

5. रोगों तथा बीमारियों को दूर करने के प्रयत्न, नशीले पदार्थों के इस्तेमाल की भर्त्सना तथा राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तैयारी व उत्साह पैदा करने के लिए जिस्मानी बहादुरी की सहूलियतों को बढ़ाना।

शिरोमणि अकाली दल अपना यह बुनियादी फर्ज समझता है कि सिखों के धार्मिक 'गर्मजोशी', तथा उनकी समृद्ध धार्मिक विरासत के प्रति गौरव की भावना पैदा की जाए जिसके लिए अकाली दल निम्नलिखित कार्यक्रम पर अमल करना चाहता है :—

(क) एकेश्वारवाद (ईश्वर एक है) के सिद्धान्त पर आग्रह उसी के नाम का ध्यान, गुरबानी का गायन, सिखों के दस पवित्र गुरुओं तथा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में नया विश्वास जगाना तथा इस उद्देश्य से दूसरे समुचित उपाय करना।

(ख) देश-विदेश में, स्कूल और कालिजों में गांव तथा शहरों में बल्कि हर स्थान पर सिख धर्म, सिख दर्शन, सिख आचार संहिता में विश्वास तथा कीर्तन आदि के अधिक प्रभावकारी प्रतिपादन के लिए सिख मिशनरी कालिज में निपुण प्रचारकों, रागियों, ढाडियों और कवियों को तैयार करना।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

(ग) बड़े पैमाने पर अमृत प्रचार, जिसमें विशेष जोर स्कूल और कालिजों पर दिया जाएगा, जहां पर छात्र और शिक्षक दोनों वर्गों में नियमित अध्ययन मण्डलों के जरिए प्रेरणा दी जाएगी।

(घ) सिखों में दसोंध (अपनी आय के 1/10 भाग को समुदाय के कल्याण के लिए देना) की धार्मिक प्रथा को दोबारा जगाना।

(ङ) सिख बुद्धिजीवियों, लेखकों, प्रचारकों, ग्रन्थियों आदि के प्रति आदर भाव पैदा करना, और फिर इनकी भी यह प्रेरणा जागृत करना कि उन्हें भी, सिख धर्म के बुनियादी उसूलों और रवायत को मानकर चलते हुए अपने-अपने हुनर में सुधार लाना होगा।

(च) कार्यकर्ताओ को ट्रेनिंग देकर गुरुद्वारा प्रबन्ध को सुचारु बनाना। गुरुद्वारों, भवनों को सही हालत में रखने के लिए समुचित उपाय किए जाएंगे। इस उद्देश्य से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी में तथा स्थानीय कमेटियों में पार्टी प्रतिनिधियों को समय-समय पर अपना पुरा प्रभाव डालने के लिए कहा जाएगा।

(छ) गुरबानी के शुद्ध पाठ को प्रकाशित करने के लिए उचित प्रबन्ध करना; प्राचीन तथा आधुनिक सिख इतिहास में शोध-कार्य को बढ़ावा देना तथा उसका प्रकाशन, गुरबानी का अन्य भाषाओं में अनुवाद करना तथा सिख धर्म पर उच्चकोटि का साहित्य निकालना।

(ज) देशभर में गुरुद्वारों के प्रशासन में सुधार लाने तथा सिख धर्म के पुराने प्रचारक पंथ जैसे कि उदासी तथा निर्मल पंथों को उनके अपने-अपने मठों की जायदाद पर किसी किस्म की मदाखलता किए वगैर, सिख धर्म की मुख्य धारा में फिर से घुल-मिलने के लिए, एक अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम को पारित कराने के लिए उचित कदम उठाना।

(झ) विश्व भर के गुरुद्वारों को एक ही प्रशासन प्रणाली के अन्तर्गत

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लाने के लिए आवश्यक उपाय करना, ताकि गुरुद्वारों को बुनियादी सिख सिद्धान्तों के अनुसार चलाया जा सके और सिख धर्म के व्यापक तथा अधिक प्रभावशाली प्रचार के उद्देश्य से गुरुद्वारों के साधनों को संचित किया जा सके।

(म) तीर्थयात्रा तथा रख-रखाव के वास्ते ननकाना साहिब समेत उन सभी अन्य पवित्र सिख मंदिरों तक निर्बाध पहुंच के लिए प्रयत्न करना, जिनसे सिख पंथ को दूर कर दिया गया है।

पंथ का राजनैतिक लक्ष्य निस्सन्देह दसवें गुरु के धर्म आदेशों, सिख इतिहास के पन्नों तथा खालसा पंथ के अन्दर ही समाया हुआ है, जिसका अन्तिम उद्देश्य है —खालसा सर्वोपरि है।

शिरोमणि अकाली दल की बुनियादी नीति, स्वस्थ अनुकुल वातावरण व राजनैतिक तन्त्र की स्थापना करके खालसा के जन्म सिद्ध अधिकार को प्राप्त करना है।

1. शिरोमणि अकाली दल, हर संभव तरीके से, निम्नलिखित प्रयासों के लिए कटिबद्ध है—

(क) उन सभी पंजाबी भाषी इलाकों को पंजाब में मिलाने के लिए जिन्हें जानबूझकर पंजाब से बाहर रखा गया है, जैसे कि जिला गुरदासपुर में डलहौजी, चंडीगढ़, अम्बाला जिले में पिंजौर, कालका और अम्बाला सदर आदि, होशियारपुर जिले की ऊना तहसील; नालागढ़ का देश इलाका; करनाल जिले के शाहाबाद और गुलहा ब्लाक; टोहान सब तहसील; रतिया ब्लाक तथा हिसार जिले की सिरसा तहसील, तथा राजस्थान में गंगानगर जिले की छः तहसीलें ताकि एकमात्र ऐसी प्रशासनिक इकाई स्थापित की जा सके, जहां पर सिखों और सिख धर्म के हितों की विशेष रूप से रक्षा की जा सके।

(ख) इस नये पंजाब में तथा अन्य राज्यों में, केन्द्र सरकार का हस्तक्षेप केवल रक्षा, विदेशी मामलों, मुद्रा तथा सामान्य संचार मामलों तक सीमित रहेगा तथा अन्य सभी विभाग, पंजाब (तथा अन्य राज्यों) के क्षेत्राधिकार में होंगे, और उन्हें

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इन विषयों पर प्रशासन की दृष्टि से, अपने ही कानून बनाने का पूरा हक होगा; केन्द्र के ऊपर बताये गये विभागों के लिए पंजाब तथा अन्य राज्य, संसद में अपने प्रतिनिधित्व के अनुपात के अनुसार, धन देंगे।

(ग) पंजाब से बाहर रहने वाले सिखों तथा अन्य धर्मों के अल्पसंख्यक समुदायों की हर प्रकार के भेदभाव से समुचित रक्षा की जाए।

2. शिरोमणि अकाली दल यह भी प्रयास करेगा कि भारतीय संविधान को, सही सच्चेसंघीय सिद्धान्तों पर फिर से नया रूप दिलाया जाए; सभी राज्यों को केन्द्र में बराबर का प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा।

3. शिरोमणि अकाली दल, कांग्रेस पार्टी द्वारा बनाई गई विदेश-नीति का पुरजोर खण्डन करता है। यह नीति बेकार है, निराशाजनक है तथा देश, राष्ट्र व मनुष्यमात्र के हितों के लिए बहुत ही हानिकारक है। शिरोमणि अकाली दल अपना समर्थन भारत की केवल उसी विदेश नीति को देगा, जो शांति तथा राष्ट्रीय हित के सिद्धान्तों पर आधारित होगी। शिरोमणि अकाली दल सभी पड़ोसी देशों, विशेषकर उन देशों के साथ जहां पर सिख लोग रहते हैं, और सिखों के धार्मिक स्थान हैं, के साथ अमन की नीति की पुरजोर हिमायत करता है। अकाली दल का दृढ़ विचार है कि हमारी विदेश नीति को किसी दूसरे देश की नीति के इशारे पर किसी भी सूरत में नाचना नहीं चाहिए।

4. शिरोमणि अकाली दल, केन्द्र सरकार अथवा राज्य सरकारों के सिख कर्मचारियों (अथवा अन्य कर्मचारियों के भी) के विरुद्ध किसी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध अपनी दृढ़ आवाज उठायेगा। रक्षा विभाग के सभी स्कंधों में सिखों के रवायती स्थान को कायम रखने के लिए प्रयास करेगा और पंथ सिख सैनिकों की जरूरतों की तरफ़ विशेष ध्यान देगा। शिरोमणि अकाली दल यह देखेगा कि "किरपान" को सेना में सिखों की वर्दी का अभिन्न अंग स्वीकार किया जाए।

5. शिरोमणि अकाली दल का यह परम कर्त्तव्य होगा कि वह रक्षा विभाग के भूतपूर्व सैनिकों का नागरिक जीवन में पुनःस्थापना के लिए

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पूरी मदद करे, इस उद्देश्य के लिए यह उन्हें संगठित करने में उनकी पूरी मदद करेगा ताकि वे सम्मान एवं गौरवपूर्ण जीवन के लिए समुचित रियायतें और समुचित संरक्षण प्राप्त कर सकें।

6. शिरोमणि अकाली दल की यह दृढ़ राय है कि सभी लोगों को, चाहे पुरुष हों अथवा महिलाएं, जिन्हें किसी कानूनी अदालत द्वारा किसी फौजदारी अपराध में सजा नहीं हुई है, सभी तरह के छोटे-छोटे हथियार, जैसे कि रिवाल्वर, बन्दूक, पिस्तौल, राइफलें, कारबाइन आदि, वगैर किसी लाइसेंस के रखने की पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए, उनकी जिम्मेदारी सिर्फ उन हथियारों को पंजीकृत कराने की होगी।

7. शिरोमणि अकाली दल, शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों की बिक्री पर बैन की मांग करता है, और सार्वजनिक स्थानों पर नशीले पदार्थों के सेवन तथा धूम्रपान की मनाही के लिए जोर डालेगा।

श्री आनन्दपुर साहिब में 17 अक्टूबर, 1973 को हुई उसकी कार्यकारिणी द्वारा अपनी बैठक में स्वीकृत।

यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है इस सत्य से वे सभी राजनीतिक शक्तियां भी मुंह नहीं मोड़ सकतीं, जो न्याय के आधार पर सामाजिक ढांचे के निर्माण का दावा करती हैं, फिर भी यह कटु सत्य है कि आर्थिक शक्तियां बड़े व्यापारियों, पूंजीपतियों और इजारेदारियों के हाथ में बनी हुई हैं। अन्य वर्गों को थोड़ा बहुत लाभ मिला होगा परन्तु आजादी के बाद पिछले 26 वर्षों के दौरान आर्थिक विकास का वास्तविक लाभ इन्हीं वर्गों ने प्राप्त किया। इन वर्गों ने राजनीतिक शक्ति का गलत प्रयोग किया है, जिसे वे अपने फायदे के लिए अपने ही अधिकार में रखना चाहते हैं। इस प्रकार सामाजिक न्याय के नये युग में प्रवेश करने के लिए किसी भी प्रकार के शान्तिपूर्ण प्रयास से लोगों की इन वर्गों की राजनीतिक किलेबंदी को तोड़ना होगा।

शिरोमणि अकाली दल मजबूती से इस बात की वकालत करता है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में अमीर और गरीब के बीच की बढ़ती हुई खाई को पाटा जाना चाहिए परन्तु इसका पक्का विचार है कि इस प्रयोजन के लिए पहले उन वर्गों पर चोट की जानी चाहिए, जिन्होंने

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सम्पूर्ण आर्थिक सत्ता को अपने हाथों में ले रखा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अकाली दल अनुसूचित जातियों, पिछड़े वर्गों, भूमिहीन पट्टेदारों, साधारण मजदूरों, गरीब और मझोले किसानों जैसे कमजोर वर्गों को मदद देने के लिए कृत संकल्प है। ऐसे प्रयोजनों के लिए यह ऐसे सार्थक भूमि सुधार का हिमायती है, जिसमें मानक अधिकतम सीमा 30 एकड़ होगी और फालतू जमीन का वितरण गरीब किसानों में किया जाएगा।

शिरोमणि अकाली दल का उद्देश्य सभी को रोजगार, सभी को आवश्यक भोजन और वस्त्र, रहने के लिए मकान, उपयुक्त परिवहन प्रदान करना है और सभ्य जीवन निर्वाह के लिए उन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साधन पैदा करने हैं, जिनके बिना जीवन अधूरा दिखाई देता है।

इस प्रकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की आर्थिक नीति में निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त करने की कोशिश करेगा—

हाल ही के वर्षों के दौरान कृषि क्षेत्र में भूमि सुधार और हरित क्रांति देखी है। शिरोमणि अकाली दल प्रति एकड़ उपज बढ़ाकर हरित क्रान्ति को समृद्ध बनाने का वायदा करता है। यह सभी ग्रामीण वर्गों खासतौर पर गरीब और मध्य-वर्गी किसानों और भूमिहीन मजदूरों के भी रहन-सहन के स्तर वास्तविक सुधार सुनिश्चित करेगा। इसके लिए वह निम्नलिखित दिशा में काम करेगा—

(क) भूमि सुधार कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के उपायों को शुरू करना ताकि गरीबों और अमीरों के बीच बढ़ती हुई खाई को पाटा जा सके। इस उद्देश्य से, भूमि की अधिकतम सीमा सम्बन्धी मौजूदा कानून में परिवर्तन करना होगा और एक परिवार के लिए तीस स्टैंडर्ड एकड़ भूमि की अधिकतम सीमा का दृढ़ता से पालन करना होगा, जिसमें वास्तविक काश्तकार को स्वामित्व के अधिकार होंगे। फालतू भूमि को भूमिहीन काश्तकारों और गरीब किसानों में बांटा जाएगा, जबकि काश्त योग्य, किन्तु बेकार पड़ी सरकारी जमीन को भूमिहीन

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जातियों और जनजातियों में बांटा जाएगा। ऐसी जमीन को बांटते समय हरिजनों तथा भूमिहीन मजदूरों के हितों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अकाली दल ऐसी संभावनाओं पर भी विचार करेगा कि टेनेन्ट किसानों को अपनी जोत भूमि को गिरवी रखकर कृषि-ऋण लेने दिए जाएं और इस बात पर भी विचार करेगा कि अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों में बांटी गई भूमि को रहन रखने की मनाही हो।

(ख) शिरोमणि अकाली दल कृषि कार्य के आधुनिकीकरण का प्रयास करेगा और यह भी कोशिश करेगा कि विभिन्न एजेन्सियों द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे ऋणों और निवेश दिलाने में मंझलेवर्ग के तथा गरीब किसानों की मदद की जाए।

(ग) शिरोमणि अकाली दल कृषि पैदावार की कीमतें मंझले वर्ग के किसानों की भूमि से आय के आधार पर तय कराने की कोशिश करेगा। ये कीमतें बुवाई के मौसम से बहुत पहले अधिसूचित की जाएंगी, और इन कीमतों को निश्चित करने का अधिकार केवल राज्य सरकारों को ही होगा।

(घ) शिरोमणि अकाली दल की नीति, खाद्यान्न के व्यापार के सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण की है। अतः अकालीदल, राजकीय एजेन्सियों के माध्यम से, खाद्यान्नों के थोक व्यापार का राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास करेगा।

(ङ) शिरोमणि अकाली दल खाद्यान्नों के भिन्न-भिन्न अंचलों (जोन्स) को रखने और उनके परिणामस्वरूप खाद्यान्नों की आवजाही पर रोक का पुरजोर विरोध करता है। सम्पूर्ण देश में खाद्यान्न का एक मात्र अकेला संयंत्र होना चाहिए।

अकाली दल थीन डैम और भटिंडा ताप बिजली यंत्र (थर्मल प्लांट) को शीघ्र पूर्ण कराने के लिए विशेष प्रयास करेगा ताकि सस्ती बिजली और सिंचाई-सुविधाएं उपलब्ध हों। राज्य में एक परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना कराने के लिए भरसक प्रयत्न किए जाएंगे।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी समितियां स्थापित की जाएंगी। उन सभी क्षेत्रों में जहां नहरी पानी उपलब्ध नहीं है, छोटी सिंचाई परियोजनाएं शुरू की जाएंगी।

शिरोमणि अकाली दल इस बात की पुरजोर हिमायत करता है कि सभी प्रमुख उद्योग सरकारी क्षेत्र के अधीन लाये जाएं।

अकाली दल की यह भी राय है कि आधारभूत उपभोक्ता उद्योगों का तत्काल राष्ट्रीयकरण किया जाए ताकि खपत की वस्तुओं की कीमतें स्थिर हो जाएं और उपभोक्ताओं को उद्योगपतियों और बिचौलियों के शोषण से बचाया जा सके। सरकारी क्षेत्र के उद्योगों को इस तरह स्थापित किया जाए कि भिन्न-भिन्न राज्यों के बीच आपसी असंतुलन दूर हो जाए।

शहरी क्षेत्रों में आबादी के बढ़ते हुए दबाव को कम करने के लिए, कृषि उद्योगों को ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित करने के लिए सुनियोजित प्रयास किए जाने चाहिएं। औद्योगिक प्रबंध में मजदूरों को अपनी बात मनवाने का अधिकार देकर तथा उद्योगपतियों और मजदूरों में लाभों के समान वितरण के जरिए, औद्योगिक प्रबंध को लोकतंत्रीय बनाया जाए। क्रैडिट एजेन्सियों में विशेषकर राष्ट्रीयकृत बैंकों को निदेश दिया जाए कि वे अपनी जमा राशि का एक निश्चित अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों में लगाएं। एक करोड़ मूल्य से ऊपर की परिसम्पत्तियों वाले प्रत्येक औद्योगिक यूनिट को सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत लाया जाना चाहिए। अकाली दल परिवहन के प्रगतिशील राष्ट्रीयकरण के हक में है।

सार्वजनिक क्षेत्र की यूनिटों को पूरी तरह स्वायत्त होना चाहिए और उसमें केन्द्रीय प्रतिभाशाली पूल से लिये गए सक्षम युवा व्यवस्थापक होना चाहिएं।

शिरोमणि अकाली दल यह मांग करता है कि कर ढांचे को इस तरह बदला जाए कि कर-अपवंचन और काले धन के आवागमन का पूरी तरह उन्मूलन हो जाए। इसका उद्देश्य कराधान-प्रणाली को सरल तथा स्पष्ट बनाना है। कराधान के वर्तमान ढांचे का भार गरीब आदमी पर अधिक पड़ता है और यह अमीर आदमी को इसकी उपेक्षा करने का मौका प्रदान करता है। दल का इस संबंध में अधिक वास्तविक नीति अपनाने का

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विचार है ताकि समानान्तर अर्थव्यवस्था का संचालन करने वाले काले धन का उपयोगी ढंग से इस्तेमाल किया जा सके।

उनकी भलाई के लिए शिरोमणि अकाली दल निम्नलिखित उपाय करने के भरसक प्रयास करेगा—

1. औद्योगिक कामगारों के लिए आवश्यकता पर आधारित मजदूरी नियत करना।

2. सरकारी कर्मचारियों के जीवन-स्तर में उत्तरोत्तर सुधार लाना।

3. कृषि मजदूर की न्यूनतम मजदूरी का पुन:मूल्यांकन करना तथा आवश्यकतानुसार उसमें उचित सुधार लाना।

4. श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए श्रमिक-ऋण की खामियों को दूर करना।

5. ग्रामीण तथा शहरी गरीब व्यक्ति के लिए छतदार आवास प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाना।

शिरोमणि अकाली दल देश में पूर्ण रोजगार चाहता है। इस उद्देश्य के लिए इसका दृढ़ मत है कि सरकार को शिक्षित तथा प्रशिक्षित व्यक्तियों को तत्काल रोजगार दिलाना चाहिए अन्यथा उन्हें उचित बेरोजगारी भत्ता दिया जाना चाहिए। इस राशि के भुगतान में केन्द्र तथा राज्य सरकार को हिस्सेदार होना चाहिए। ऐसे भत्ते की न्यूनतम दरें इस प्रकार होनी चाहिए---

1. मैट्रिक तथा प्रशिक्षित व्यक्तियों को	50/-रु० प्रति मास
2. बी० ए०	75/-रु० प्रति मास
3. एम० ए०	100/-रु० प्रति मास
4. इंजीनियर तथा डाक्टर	150/-रु० प्रति मास
*5. अन्य प्रशिक्षित श्रमिक	50/-रु० प्रति मास

*ये दरें 1973 में निर्धारित की गई थीं।

65 वर्ष से ऊपर आयु वाले सभी व्यक्तियों को वृद्धावस्था पेंशन दी जानी चाहिए।

शिरोमणि अकाली दल, समाज के कमजोर वर्गों तथा पिछड़े वर्गों को शिक्षा, रोजगार तथा अन्य रियायतें दिलाकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधा-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रने की कोशिश करेगा ताकि वे समाज के अन्य वर्गों के बराबर हो सकें। सस्ती दरों पर खाद्य सामग्री उन्हें उपलब्ध करायी जायेगी।

शिरोमणि अकाली दल का लक्ष्य सिखों को शक्तिशाली और मजबूत राष्ट्र के लिए तैयार करना है जिसमें उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे, जिन्हें अपने मूल अधिकारों का पूरा एहसास होगा और जो विभिन्न कलाओं में पुरी तरह निपुण होंगे तथा जो अपने अधिक विशिष्ट सपूतों का आदर करने के लिए सदा तत्पर रहेंगे।

इस उद्देश्य के लिए—

1. शिरोमणि अकाली दल सिख राष्ट्र के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कवियों, लेखकों तथा कलाकारों को अपनी अत्यधिक अमूल्य निधि मानता है।

2. शिरोमणि अकाली दल मैट्रिक स्तर तक अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा के हक में है।

3. बेरोजगारी की बढ़ती हुई दर को रोकने के लिए, शिरोमणि अकाली दल ऐसे अध्ययन पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रयास करेगा, जिनसे उनके विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम पूरा करने पर शीघ्र रोजगार मिल सके।

4. शिरोमणि अकाली दल ग्रामीण तथा कमजोर वर्गों की शिक्षा के लिए प्रबंध करेगा और उनमें से अधिक होनहार विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा की व्यवस्था करेगा।

5. मैट्रिक स्तर तक सभी विद्यार्थियों के लिए पंजाबी अनिवार्य विषय होगा।

6. विश्वविद्यालयों में न्यूक्लियर फिजिक्स तथा अंतरिक्ष विज्ञान के अध्ययन पर विशेष बल देते हुए, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

7. शिरोमणि अकाली दल खेलों के स्तर में भी सुधार लाने की कोशिश करेगा और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक लायेगा। यह संकल्प ज्ञानी अजमेर सिंह, सचिव शिरोमणि अकाली दल द्वारा प्रस्तुत किये गये थे।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आन्दोलन और सरकार

शिरोमणि अकाली दल ने आनन्दपुर साहिब में प्रस्ताव पारित करने के बाद अपनी इन मांगों को सरकार के सामने रखा और पूरी न होने पर आंदोलन करने की धमकी दी। यत्र-तत्र आंदोलन भी किया गया। अकाली नेताओं ने केन्द्र सरकार पर दबाव डालकर विवश करने की भी नीति अपनायी। केन्द्रीय सरकार ने अकाली दल की इन मांगों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक विचार करना शुरू कर दिया। अकालियों और केन्द्र सरकार के प्रतिनिधियों के बीच बात चलती रही। स्वयं अकाली दल में अलगाव था और न ही वह अपनी मांगों के बारे में एकमत थे। उनकी मांगों में भी हेरफेर चलने लगा। कभी एक बात करते, कभी दूसरी।

पंजाबी सूबे का स्वार्थ देखने वाले कतिपय महत्वाकांक्षी राजनेताओं ने सिक्ख समुदाय को जातीयता और प्रान्तीयता के नाम पर भड़काना शुरू कर दिया। एक सीधी-सादी बहादुर कौम के मन में अलगाव के बीज डालना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह निकला कि युवक गुमराह होने लगे। बड़े-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बूढ़ों के मन में भी भावनाएँ परिवर्तित होने लगीं। धीरे-धीरे जो जहर दिया जा रहा था, वह अपना रंग लाने लगा। आकर्षक नारे और स्वतंत्र राज्य की स्थापना का सुहाना सपना दिखलाकर जनसाधारण को अपने पक्ष में कर आंदोलन के लिए विवश किया गया। पंजाब के गांवों-देहातों में इस भावना ने जोर पकड़ा। सीधे-सादे मेहनतकश पंजाबी किसान इस माया-जाल में आने लगे।

शिरोमणि अकाली दल ने केन्द्र पर बराबर जोर डालना शुरू कर दिया। सूबाई आंदोलनों के कारण 'पंजाबी सूबा' आंदोलन को बल मिल रहा था। दक्षिण में तमिलनाडु, पश्चिम में बृहत्तर महाराष्ट्र, महाविदर्भ तथा उत्तर में हरियाणा जैसे सूबों का निर्माण हो चुका था। इस कारण पंजाबी भी 'पंजाबी सूबे' का स्वप्न देखने लगे थे, तो इसमें आश्चर्य की बात न थी। उस समय भारत का राजनैतिक माहौल ही कुछ ऐसा बन गया था।

अकाली दल द्वारा शुरू किया गया आंदोलन शुरू में कुछ मांगों के समर्थन में था। सितम्बर 1981 में अकाली दल ने सरकार को मांगों की एक सूची भेजी।

इनमें से कुछ मांगों की शुरुआत अकाली दल की 16 और 17 अक्तुबर, 1973 को आनन्दपुर साहिब में हुई एक बैठक में स्वीकार किए संकल्प से हुई थी, जिसे आमतौर पर आनन्दपुर साहिब संकल्प के नाम से जाना जाता है। इस संकल्प में अन्य बातों के साथ-साथ कहा गया है कि "जिन क्षेत्रों को पंजाब से ले लिया गया है या जानबूझ कर अलग रखा गया है, उन्हें एक प्रशासनिक इकाई के रूप में तुरन्त दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए ये क्षेत्र हैं, जिला गुरदासपुर से डलहौजी, चण्डीगढ़, पिन्जौर, कालका और जिला अम्बाला में अम्बाला सिटी, होशियारपुर जिले की पूरी ऊना तहसील, नालागढ़ का देश इलाका, जिला करनाल का शाहबाद ब्लाक गुहला और टोहाना की उप-तहसीलें, हिसार जिले का रतिया ब्लाक, और सिरसा तहसील, राजस्थान के जिला गंगानगर की 6 तहसीलें और आसपास के पंजाबी-भाषी सिखों की आबादी वाले क्षेत्र।"

संकल्प में आगे यह कहा गया है : "इस नए पंजाब में केन्द्र का हस्त-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

क्षेप, रक्षा, विदेशी-मामलों, डाक व तार, करेंसी तथा रेलवे तक ही सीमित रहना चाहिऐ।"

अप्रैल, 1981 में आनन्दपुर साहिब में हुए विश्व-सिख सम्मेलन में अकाली दल (तलवंडी ग्रुप) द्वारा आनन्दपुर साहिब संकल्प का एक भिन्न रूप पेश किया गया। इस संकल्प में अन्य बातों के साथ-साथ यह कहा गया कि "उत्तर भारत में एक ऐसा स्वायत्त प्रदेश तूरन्त स्थापित किया जाना चाहिए, जहां सिखों के हितों को प्रमुख तथा विशेष महत्त्व के हितों के रूप में संवैधानिक मान्यता दी जाए।"

और आगे कहा गया कि "सिख स्वायत्त प्रदेश की बात मान ली जाए और उसे अपना संविधान बनाने और विदेश संबंधों, रक्षा तथा सामान्य संचार को छोड़कर, सभी शक्तियां अपने लिए और अपने से प्राप्त करने का आधार बनाने का हकदार घोषित किया जाए।"

आनन्दपुर साहिब संकल्प का एक और रूपान्तर नवम्बर 1982 में जारी किया गया, जिसे अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल द्वारा अधिप्रमाणित किया गया था। इस रूपान्तर में यह मांग की गई है कि सभी पंजाबी-भाषी क्षेत्रों का विलय करके एक ऐसी प्रशासनिक ईकाई बनाई जाए, जहां सिखों और सिख धर्म के हितों को विशेष संरक्षण मिल सके।

अकाली दल की माँगें प्राप्त होने पर प्रधान मंत्री ने अकाली दल के प्रतिनिधियों को 16 अक्तूबर' 1981 को बैठक के लिए आमंत्रित किया। इसके बाद, प्रधान मंत्री उनसे फिर नवम्बर, 1981 और अप्रैल 1982 में दो बार मिलीं। तबसे परामर्श और विचार-विमर्श की प्रक्रिया में सरकार ने कोई रुकावट नहीं डाली है। सरकार के प्रतिनिधियों और अकाली दल के नेताओं के बीच खुली और गुप्त दोनों तरह की वार्ताओं के अनेक दौर हुए। त्रिपक्षीय विचार-विमर्श भी हुए जिनमें संसद में विपक्षी दलों के नेताओं ने भी भाग लिया।

इस विचार-विमर्श के दौरान सरकार का रवैया, सभी जायज मांगों को मान लेने का रहा है। सरकार ने वार्ताओं के दौरान पार्टी के हित का संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाया। सरकार ने देश की एकता तथा अखंडता

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

को सुरक्षित रखने के व्यापक राष्ट्रीय हितों के मार्गदर्शी सिद्धांतों को अपनाया। जहां कहीं मांगों का अन्य राज्यों से संबंध नहीं था अथवा जहां उन्हें किसी व्यापक ढांचे में सम्मिलित किया जा सकता था, उन मांगों को मानने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी।

अकाली दल के प्रतिनिधियों के साथ जिन मुख्य मसलों पर विचार-विमर्श किया गया वह तीन मुख्य श्रेणियों में आते हैं।

(i) वह मसले जिनका एक धार्मिक ग्रुप के रूप में सिख सम्प्रदाय से संबंध है;

(ii) वह मसले जिनका संबंध पंजाब के अलावा अन्य राज्यों से है; और

(iii) सामान्य मसले।

अकाली दल द्वारा अन्तिम रूप से पेश की गई धार्मिक मांगें इस प्रकार थी :

(क) हरिद्वार, काशी और कुरुक्षेत्र की तरह अमृतसर को "पवित्र शहर" का दर्जा दिया जाना;

(ख) कीर्तन के प्रसारण के लिए स्वर्ण मन्दिर में "हरमंदिर रेडियो" की स्थापना करना;

(ग) हवाई जहाज से यात्रा करने वाले सिखों को देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों में कृपाण धारण करने की अनुमति दी जानी; और

(घ) अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम बनाया जाना।

अमृतसर को "पवित्र शहर" का दर्जा दिए जाने की मांग के बारे में अकाली दल के प्रतिनिधियों को शुरू में ही यह बताया गया था कि उन्होंने जो उदाहरण दिए हैं वे मौजूं नहीं हैं, क्योंकि सरकार ने उल्लिखित शहरों को अथवा अन्य किसी शहर को "पवित्र शहर" का दर्जा नहीं दिया है तथापि हरिद्वार और कुरुक्षेत्र जैसे शहरों के सीमांकित क्षेत्रों में स्थानीय प्राधिकारियों व राज्य सरकारों ने, तीर्थ-यात्रियों की भावनाओं का आदर करते हुए, मांस और शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया हुआ है। काशी में ऐसे कोई प्रतिबँध नहीं हैं। यह सूचित किया गया था कि इन्हीं आधारों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पर अमृतसर के बारे में भी कार्रवाई की जा सकती है। प्रधान मंत्री ने सुझाव दिया कि एक समिति इस प्रश्न पर गौर करके कार्रवाई की उपयुक्त दिशा के बारे में सुझाव दे सकती है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एस० जी० पी० सी०) ने इस मामले में संबंधित प्राधिकारियों के साथ सहयोग करने में कोई रुचि नहीं दिखाई।

27 फरवरी 1983 को धार्मिक मांगों के बारे में कुछ घोषणाएं करते समय प्रधान मंत्री ने कहा कि अमृतसर में स्वर्ण मंदिर तथा दुर्गियाना मंदिर के आसपास के सीमांकित क्षेत्र में तम्बाकू, शराब और मांस की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। इस घोषणा के अनुसरण में हरमंदिर साहिब और दुर्गियाना मंदिर के 200 मीटर के घेरे में तम्बाकू, शराब और मांस बेचने वाली दुकानों को पहले ही वहां से हटाया जा चुका है। इस आशय के साइन-बोर्ड भी लगा दिए गए हैं। इसके बावजूद, अकाली दल ने हाल ही में फिर से यह मांग उठायी है कि अमृतसर को "पवित्र शहर" का दर्जा दिया जाए और यह भी मांग की है कि पुराने अमृतसर शहर (वाल्ड सिटी) के उस पूरे क्षेत्र में जो दीवार से घिरा हुआ है, तम्बाकू, शराब और मांस की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया जाए। इस तरह किसी शहर को "पवित्र शहर" का दर्जा दिया जाना हमारे संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप के अनुकूल नहीं होगा।

अकाली दल के प्रतिनिधियो के साथ विचार-विमर्श के दौरान सरकार ने यह बताया कि राष्ट्रीय नीति के रूप में देश में कहीं भी किसी ग्रुप को प्राइवेट रेडियो प्रसारण करने की सुविधाएं देने की अनुमति नहीं दी जा सकती है तथापि, सरकार ने आकाशवाणी के जालंधर स्टेशन के जरिए स्वर्ण मंदिर से 'शबद कीर्तन' के सीधे प्रसारण का प्रस्ताव किया। अकाली दल के प्रतिनिधियों ने तब यह आग्रह किया कि यह प्रसारण सुबह 2 घंटे और शाम को एक घंटे का होना चाहिए। सरकार ने सुबह डेढ़ घंटे के लिए और शाम को आध घंटे के लिए कीर्तन का प्रसारण किए जाने की घोषणा की और आकाशवाणी के प्राधिकारियों को अनुदेश दिया कि इस प्रयोजन के लिए शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के परामर्श से आवश्यक प्रबंध किए जाएं। परन्तु, शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपेक्षित सुविधाएं उप-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लब्ध नहीं कराई और इसी बात का आग्रह किया कि यह प्रसारण कम-से-कम तीन घंटे की अवधि तक के लिए होना चाहिए। गृह मंत्री ने 22 जून, 1983 के अपने बयान में यह सुझाव दिया कि समय और अवधि के प्रश्न पर बातचीत की जा सकती है, परन्तु सुबह डेढ़ घंटे के प्रसारण से तत्काल शुरूआत कर दी जाए। लेकिन, शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्राधिकारियों से सहयोग न मिलने पर कोई प्रगति नहीं हो पाई। हरमंदिर साहिब से कीर्तन का प्रसारण 8 जून, 1984 से शुरू कर दिया गया है।

अकाली दल ने यह मांग की कि हवाई जहाज द्वारा यात्रा करने वाले सिखों को देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों में कृपाण ले जाने की अनुमति दी जाए। हालांकि सरकार ने सिखों के द्वारा कृपाण धारण किए जाने संबंधी सांवैधनिक उपबंध का हमेशा आदर किया है, तो भी 1981 की विमान अपहरण की घटना के बाद उड़ानों में कृपाण साथ ले जाने पर कुछ प्रतिबंध लगा दिए गए थे तथापि सिख समुदाय की भावनाओं का आदर करते हुए, फरवरी 1983 में ये अनुदेश जारी किए गए कि देशीय उड़ानों में सिख यात्रियों को ऐसे कृपाण ले जाने की अनुमति दी जाए, जिनकी लम्बाई 22.8 से०मी० (9") से अधिक न हो और जिनके फलक की लम्बाई 15.24 से०मी० (6") से अधिक न हो। अकाली दल के प्रतिनिधि इससे सहमत हो गए।

जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों का संबंध है, यह स्पष्ट किया गया था कि एयर इंडिया अलग से इस बारे में कुछ नहीं कर सकता है, क्योंकि वह हथियारों को ले जाने के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय विनियमों और परिपाटियों से बंधा हुआ है।

देश के विभिन्न भागों में स्थित सभी ऐतिहासिक गुरूद्वारों को एक ही प्रशासन के क्षेत्र के अधीन लाए जाने के लिए अखिल भारतीय गुरूद्वारा अधिनियम बनाने की अकाली दल की मांग के दूरगामी प्रभाव होंगे। विभिन्न बैठकों में सरकार ने अकाली दल के नेताओं को बताया कि वे अन्य संबंधित पक्षों तथा शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ परामर्श के आधार पर सुझाव पर विचार करने के इच्छुक हैं। 27 फरवरी, 1982 को प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि ऐसा कोई कानून बनाने के लिए आवश्यक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सर्वसम्मति प्राप्त करने की दृष्टि से जिन राज्यों में गुरुद्वारे स्थित हैं, उन राज्यों की सरकारों तथा गुरुद्वारों के प्रबंधकों से परामर्श किया जायेगा। अकाली दल ने उन ऐतिहासिक गुरुद्वारों की कोई निश्चित सूची नहीं दी, जिन्हें इस कानून के अधीन लाए जाने का प्रस्ताव था। विभिन्न बैठकों में इन गुरुद्वारों की संख्या भिन्न-भिन्न दी गई, जो 10 से 30 के बीच थी।

सरकार को अनेक वर्गों के लोगों से ऐसे कानून के खिलाफ बहुत से अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं। पंजाब से बाहर स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारों का प्रबंध करने वाली कुछ कमेटियों ने इन गुरुद्वारों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नियंत्रण में लाए जाने के प्रति अपनी अनिच्छा भी व्यक्त की है। ऐसा कोई कानून बनाते समय, सरकार को संबंधित अन्य पार्टियों तथा राज्य सरकारों के विचारों को भी ध्यान में रखना होगा। लेकिन इसमें आने वाली दिक्कतों को महसूस किये बिना अकाली दल देरी के लिए सरकार को ही दोषी ठहराता रहा।

रावी-व्यास के अतिरिक्त पानी के आबंटन के बारे में दिसम्बर, 1981 का समझौता पंजाब, हरियाणा और राजस्थान सरकारों तथा केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधियों के बीच व्यापक विचार-विमर्श के फलस्वरूप हुआ था। पानी के बहाव की बाद की शृंखला से पता चला कि रावी-व्यास का अतिरिक्त पानी पहले की अनुमानित—15.85 एम० ए० एफ० की मात्रा के मुकाबले अब 17.17 एम० ए० एफ० था। इसका अर्थ यह हुआ कि विभाजन-पूर्व में पंजाब के हिस्से के अतिरिक्त पानी की और ज्यादा मात्रा उपलब्ध हो गई, जिसे पंजाब और हरियाणा में बांटा जा सकता था।1981 के समझौते में, विभाजन-पूर्व के पंजाब को आबंटित किया जाने योग्य यह ज्यादा पानी, केवल पंजाब को ही दिया गया। 1981 के समझौते के तहत दोनों राज्यों के बीच किये गये आवंटन में पंजाब का हिस्सा बढ़ाकर 4.22 एम० ए० एफ० कर दिया गया और हरियाणा का हिस्सा 3.50 एम० ए० एफ० ही रखा गया। इसके अतिरिक्त, राजस्थान के हिस्से में से पानी की उस मात्रा को भी जो राजस्थान की जरूरतों से फालतू था, तब तक पंजाब को इस्तेमाल की अनुमति दे दी गई जब तक राजस्थान अपने हिस्से के पूरे पानी को इस्तेमाल करने की स्थिति में नहीं होता।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जनवरी-फरवरी 1983 में नई दिल्ली में हुई त्रिपक्षीय वार्ता के दौरान अकाली दल के प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर दिया कि 1955 के समझौते के तहत विभाजन-पूर्व पंजाब और राजस्थान के बीच हुआ पानी का आवंटन इस आधार पर फिर से किया जाए कि राजस्थान को उसके हक से अधिक पानी आवंटित किया गया था।

अकाली दल के प्रतिनिधियों को यह बताया गया कि भारत के विभाजन के बाद पंजाब की नदियों के पानी के बंटवारे का मामला भारत और पाकिस्तान के बीच अनसुलझा मामला रहा और पाकिस्तान ने यह दलील दी थी कि भारत ने पानी की जितनी मात्रा का दावा किया है, वह उसे इस्तेमाल कर सकने की स्थिति में नहीं है। सिन्धु नदी के पानी में भारत के हिस्से के बारे में समझौता भारत के इस दावे की वैधता कि इस पानी का इस्तेमाल राजस्थान की सिंधु बेसिन की रेगिस्तानी तथा शुष्क भूमि की सिंचाई के लिए किया जाएगा, को स्वीकार करने के बाद हुआ। 1965 के समझौते के आधार पर राजस्थान ने 600 करोड़ रुपये की लागत की एक विशाल आधारिक संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) का निर्माण किया है और इसलिये यह स्पष्ट किया गया कि समझौते के लगभग तीस वर्ष बाद इस मसले को फिर से खोलना सही नहीं होगा। फरवरी 1983 के शुरू में हुई त्रिपक्षीय बैठकों में, जिनमें अकाली दल के प्रतिनिधि भी एक पार्टी थे, इस बात पर सर्वसम्मति हुई थी कि किसी भी मामले में जो पंजाब और हरियाणा के बीच नदी जल विवाद के निपटाने के लिए ट्रिब्यूनल को सौंपा जाए, 1955 के समझौते को फिर से न खोला जाए।

नदी जल विवाद पर चर्चा के दौरान अकाली दल के प्रतिनिधि इस बात पर जोर देते रहे हैं कि यमुना के पानी को भी इसमें शामिल किया जाए। पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 के अधीन भूतपूर्व अविभक्त पंजाब के उत्तराधिकारी के रूप में पंजाब के अधिकारों का विवरण दिया गया है, जिसमें यमुना के पानी को शामिल नहीं किया गया है और इसलिए सरकार की राय यह रही कि यमुना का जल ट्रिब्यूनल का विचारार्थ विषय नहीं हो सकता।

कई लम्बी चर्चाओं के बाद और पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

राज्यों के विचारों को ध्यान में रखते हुए नदी जल संबंधी मसलों का निपटारा करने के लिए निम्नलिखित फार्मूला अकाली दल के प्रतिनिधियों के समक्ष रखा गया :--

(1) रावी-व्यास के अतिरिक्त पानी के आवंटन के बारे में पंजाब, हरियाणा और राजस्थान सरकारों के बीच 31 दिसम्बर 1981 को हुए करार को रद्द हुआ समझा जाएगा। पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 की धारा 78 की उपधारा 1 के अधीन भारत सरकार कृषि और सिंचाई मंत्रालय सिंचाई विभाग की 24 मार्च 1976 की अधिसूचना को वापस लिया समझा जाएगा।

(2) पंजाब और हरियाणा के बीच रावी-व्यास के अतिरिक्त जल के बारे में विवाद एक ट्रिब्यूनल को सौंपा जाएगा, जिसकी अध्यक्षता उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश करेंगे। उसे अन्तःराज्य जल-विवाद अधिनियम 1956 के अधीन नियुक्त किया जाएगा। यह ट्रिब्यूनल इन दो राज्यों के बीच पानी के बंटवारे का नये सिरे से निर्धारण करेगा।

(3) ट्रिब्यूनल का अंतिम निर्णय होने तक पंजाब और हरियाणा के बीच जल का बंटवारा उक्त ट्रिब्यूनल द्वारा वर्षानुवर्ष आधार पर तय किया जाएगा।

(4) ट्रिब्यूनल से अपना निर्णय दो वर्ष की अवधि के अन्दर देने का अनुरोध किया जाएगा। ट्रिब्यूनल का निर्णय अंतिम और दोनों राज्यों के लिए बाध्यकारी होगा।

(5) पंजाब सतलुज-यमुना नहर के निर्माण के तत्काल उपाय करेगा और इसे दो वर्ष की अवधि के भीतर पूरा करेगा।

(6) उपर्युक्त के कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त कानूनी और प्रशासनिक उपाय तेजी से किए जाएंगे।

परन्तु बाद में अकाली दल के प्रतिनिधि पहले हुई सर्वसम्मति से पीछे हट गए और उन्होंने यह दृष्टिकोण अपनाया कि ट्रिब्यूनल के विचारार्थ विषय के क्षेत्र में राजस्थान के साथ 1955 का समझौता और यमुना जल का प्रश्न शामिल किया जाए। स्पष्टतया यह बात केन्द्र सरकार को और साथ ही हरियाणा तथा राजस्थान की सरकारों को अस्वीकार्य थी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाली दल के प्रतिनिधियों के साथ हुई बैठकों में से एक में प्रधान मंत्री ने उन्हें यह आश्वासन दिया था कि पंजाब के हित को कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और सुझाव दिया कि 'बेसिन' में पानी की उपलब्धता को बढ़ाने के सम्पूर्ण प्रश्न का विशेषज्ञों की एक समिति अध्ययन करेगी और सरकार उसकी सिफारिशों पर प्राथमिकता के आधार पर विचार करेगी। इस मसले पर अकाली दल के प्रतिनिधियों का कड़ा रुख बदलने में इन आश्वासनों का भी कोई प्रभाव नहीं हुआ।

क्षेत्र संबंधी मांग सबसे अधिक विवादास्पद सिद्ध हुई। यह स्मरण होगा कि 1966 में शाह आयोग ने सिफारिश की थी कि चंडीगढ़ हरियाणा को दिया जाए। लेकिन 1970 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रधान मंत्री के रूप में यह घोषणा की थी कि चंडीगढ़ पंजाब को दिया जाएगा। इस निर्णय के अनुसार—

(1) चंडीगढ़ का राजधानी परियोजना क्षेत्र पंजाब को जाएगा ;

(2) पंजाब के फिरोजपुर जिले की फाजिल्का तहसील का एक भाग (अबोहर सहित) हरियाणा को हस्तान्तरित किया जाएगा; और

(3) अंतःराज्य सीमाओं के पुनर्समायोजन के लिए अन्य दावों तथा प्रतिदावों के बारे में एक आयोग नियुक्त किया जाएगा।

बाद में राज्य के रुख में बदलाव के कारण उपर्यूक्त निर्णय को कार्यान्वित नहीं किया जा सका।

मौजूदा मांग यह है कि चंडीगढ़ तो तत्काल पंजाब को हस्तान्तरित किया जाए परन्तु अबोहर और फाजिल्का से सम्बन्धित दावों और प्रतिदावों सहित सभी अन्य और दावों प्रतिदावों को आयोग को सौंपा जाना चाहिए।

सरकार ने किसी भी राज्य के प्रति भेदभाव किए बिना पूरी तरह सहायता करने के सभी प्रयत्न किए हैं और निम्नलिखित चार विकल्पों में से किसी एक को मानने की अपनी इच्छा व्यक्त की है :—

1. 1970 के निर्णय का कार्यान्वयन;

2. चंडीगढ़ सहित सभी विवादों और दावों को एक नए आयोग को सौंपना;

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

3. चंडीगढ़ को पंजाब और हरियाणा में बांटना, जिसमें बड़ा हिस्सा पंजाब को देना और शेष विवादों को किसी आयोग को सौंपना; या

4. दोनों राज्यों को मान्य कोई और विकल्प अपनाना।

उपर्युक्त रूपरेखा के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न कई फार्मूले प्रस्तावित किए गए थे। परन्तु अकाली दल के नेतृत्व को उनमें से कोई भी मान्य नहीं हुआ। प्रधानमन्त्री ने संसद में बार-बार घोषणा की कि सरकार अपने इस निर्णय पर अडिग है कि चंडीगढ़ पंजाब को जाना चाहिए बशर्ते कि हरियाणा को इसकी समुचित पूर्ति कर दी जाए।

अकाली दल के प्रतिनिधियों का रवैया इस मुद्दे पर अपरिवर्तित रहा है अर्थात सरकार चंडीगढ़ पंजाब को दे दे, तथा बाकी सभी दावे-प्रतिदावे, जिनमें अबोहर-फाजिल्का के दावे-प्रतिदावे शामिल हैं, एक आयोग को सौंप दिए जाएं। इन पर गांव को एक यूनिट तथा भाषा और क्षेत्र की संलग्नता के सिद्धान्त के आधार पर निर्णय किया जाए। हरियाणा सरकार चंडीगढ़ पर अपना दावा छोड़ देने को तैयार थी, परन्तु वह 1970 के निर्णय के आधार पर या किसी अन्य आधार पर जिसके बारे में परस्पर सहमति हो, पंजाब से कुछ क्षेत्रों का हस्तान्तरण चाहती थी। इस मसले पर गतिरोध बना हुआ है।

पहले उल्लिखित आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव के उद्धरणों से देखने में आएगा कि अकाली दल ने राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के कुछ इलाकों पर इस आधार पर अपना दावा किया है कि वे "पंजाबी-भाषी, सिख आबादी वाले इलाके" हैं। अकाली दल के प्रतिनिधियों को यह स्पष्ट कर दिया गया था कि हरियाणा के साथ क्षेत्रीय विवादों के बारे में कोई भी समझौता उनकी इस वचनबद्धता पर किया जाएगा कि वे अन्य राज्यों के इलाकों के बारे में कोई और दावों पर जोर नहीं देंगे।

केन्द्र राज्य सम्बन्धों पर अकाली दल की मांग इस प्रकार है— आनन्दपुर साहिब संकल्प के अनुसार, शिरोमणि अकाली दल को पक्का यकीन है कि केन्द्र की समृद्धि के लिए राज्यों की प्रगति आवश्यक है, जिसके लिए राज्यों को अधिक अधिकार और प्रान्तीय स्वायत्तता देने के लिए संविधान में उपयुक्त संशोधन किए जाने चाहिए। केन्द्र को अपने पास

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विदेशी मामले, रक्षा, मुद्रा और संचार (यातायात के साधनों सहित) विषय रखने चाहिए, जबकि शेष विभाग राज्यों के पास होने चाहिए। इसके अलावा, सिखों को एक राष्ट्र के रूप में विशेष अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

केन्द्र-राज्य सम्बन्धों का प्रश्न एक व्यापक, सम्पूर्ण भारत पर प्रभाव डालने वाला प्रश्न है और इसकी चर्चा केवल पंजाब के संदर्भ में नहीं की जा सकती है। इस बात को जनवरी-फरवरी 1983 में त्रिपक्षीय वार्ता के दौरान विपक्षी नेताओं ने भी व्यापक रूप से स्वीकार किया था। उन वार्ताओं के दौरान यह विशेष रूप से उल्लेख किया गया था कि इस दौरे में किसी निर्णय को आनन्दपुर साहिब संकल्प से जोड़ने की कल्पना नहीं की जा सकती।

विषय के महत्व को स्वीकार करते हुए, सरकार ने जून 1983 में न्यायमूर्ति श्री रणजीत सिंह सरकारिया की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया। यह आयोग, भारत संघ और राज्यों के बीच सभी क्षेत्रों में शक्तियों कार्यों और जिम्मेदारियों के बारे में मौजूदा सम्बन्धों की व्यावहारिकता की जांच और समीक्षा करेगा और ऐसे परिवर्तनों तथा अन्य उपायों की सिफारिश करेगा, जो उचित समझे जाएं। आयोग देश की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए संविधान के ढांचे और उसके स्वरूप को भी ध्यान में रखेगा। केन्द्र-राज्य सम्बन्धों की ऐसी व्यापक समीक्षा करने के सरकार के निर्णय से अकाली दल को सन्तुष्ट हो जाना चाहिए था, जैसे कि अन्य विपक्षी दल भी इससे सन्तुष्ट हो गए थे, जिन्होंने इस मुद्दे को उठाया था। परन्तु अकाली दल इस बात पर अड़ा रहा कि सरकार को सरकारिया आयोग को मामला भेजते समय आनन्दपुर साहिब संकल्प का विशिष्ट उल्लेख करना चाहिए।

दरअसल, त्रिपक्षी बैठक में अकाली दल के प्रतिनिधि इस बात से सहमत हो गए थे कि वे आनन्दपुर साहिब संकल्प के विशिष्ट उल्लेख पर जोर नहीं देंगे, परन्तु बाद में अकाली दल के अध्यक्ष, सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल ने गृहमन्त्री को भेजे गए अपने पत्र में इस मांग पर फिर से आग्रह किया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सरकार का इस सन्दर्भ में मत कई अवसरों पर स्पष्ट किया जा चुका है। केन्द्र राज्य सम्बन्धों पर आनन्दपुर साहिब संकल्प में जिन प्रस्तावों का उल्लेख है, वे राष्ट्र की एकता और अखण्डता की बुनियादी संकल्पना से कतई मेल नहीं खाते, जो हमारे संविधान में बताई गई हैं। इन्हें विचार-विमर्श के आधार के रूप में भी स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

भारत के लोग इस धारणा को स्वीकार नहीं करते हैं कि भारत एक बहुराष्ट्रीय समाज है। भारत के लोग एक राष्ट्र के रूप में गुंथे हैं। भारत ने युगों से चली आ रही अपनी सभ्यता में भाषा, धर्म आदि की भिन्नता में भी निहित अपनी आधारभूत एकता प्रदर्शित की है। साम्राज्यवाद के साथ एक लम्बे और ऐतिहासिक संघर्ष के बाद प्राप्त भारत के पुष्ट राष्ट्रत्व के विरुद्ध किसी भी प्रकार की चुनौती को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। तथापि, सरकार ने अकाली दल के प्रतिनिधियों से यह स्पष्ट कर दिया है कि अकाली दल को इस बात की पूरी छूट है कि वह अगर चाहे तो सरकारिया आयोग के विचारार्थ विषयों के अन्तर्गत अपना दृष्टिकोण रख सकता है।

अपनी अन्य मांगों में अकाली दल के प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर दिया कि उनके लिए निम्नलिखित दो मुद्दे विशेष महत्व के हैं—

(i) हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में पंजाबी भाषा को दूसरी भाषा का दर्जा देना;

(ii) उत्तरप्रदेश के तराई क्षेत्र से पंजाबी किसानों को हटाने से रोकना।

अकाली दल यह मांग करता रहा है कि हरियाणा और राजस्थान के उन क्षेत्रों में जहां पंजाबी भाषी जनसंख्या काफी संख्या में है, पंजाबी को स्कूलों में दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। वार्ता के दौरान अकाली दल के नेताओं ने विस्तार से यह बात कही कि जबकि पंजाब के स्कूलों में हिन्दी भाषा पंजाबी कक्षा से पढ़ाई जाती है, हरियाणा में त्रिभाषा फार्मूले के अधीन तेलुगु या संस्कृत जैसी भाषाएं भी चुनी गई हैं।

जब उन्होंने यह मसला उठाया तभी उन्हें, 1961 में हुए मुख्य मंत्रियों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के सम्मेलन में स्वीकार किए गए त्रिभाषा फार्मूले को स्पष्ट करके बताया गया और यह सुझाव दिया गया कि सम्बन्धित मुख्य मंत्री स्वयं इसका कोई हल निकाल सकते हैं।

राज्यों ने पहले ही विभिन्न उपाय किए हैं और स्थिति इस प्रकार है :

प्राइमरी स्तर दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में कम से कम एक अध्यापक की नियुक्ति करके प्राइमरी स्तर पर पंजाबी पढ़ाने की व्यवस्था के लिए आदेश विद्यमान हैं, बशर्ते कि पूरे स्कूल में इस भाषा को पढ़ने के इच्छुक छात्रों की संख्या 40 से कम न हो या एक कक्षा में 10 से कम न हो।

सेकेण्डरी स्तर राज्य सरकारें मुख्य मंत्रियों द्वारा यथास्वीकृत त्रिभाषा फार्मूले का अनुसरण कर रही हैं। इस फार्मूले के अधीन पंजाबी भाषा पढ़ाने की सुविधाओं की व्यवस्था के लिए दिल्ली, राजस्थान और हरियाणा में राज्य सरकारों के अनुदेश विद्यमान हैं।

अकाली दल के प्रतिनिधियों ने यह शिकायत की कि तराई में सिख किसानों को "हटाया", "बेदखल" और "गिरफ्तार" किया जा रहा है। राज्य सरकार ने इस बात से इन्कार किया है। राज्य सरकार ने कहा है कि उनकी नीति जनजाति जमीन पर से अनधिकृत कब्जे को हतोत्साहित करने की है और कानून सम्मत भूमिधारियों को, चाहे वे किसी भी मूल के हों, बेदखल करने या हटाने के कोई आदेश जारी नहीं किए गए हैं। उन्होंने यह बताया है कि लगभग 7860 अनधिकृत कब्जा करने वालों में से 5000 से अधिक तो उत्तरप्रदेश के ही हैं, और ऐसे सभी व्यक्तियों के बारे में एक समान नीति अपनायी जा रही है। इस विषय पर राज्य के कानून का मुख्य उद्देश्य जनजातियों की भूमि के और हस्तान्तरण को रोकना और जिस भूमि को वे खो चुके हैं, उसे उन्हें वापिस दिलाना है। 1947 से पहले जिला नैनीताल के तराई भावर क्षेत्र में थारू और बक्सर जनजातियां लगभग 2.25 लाख एकड़ भूमि पर खेती करती थीं। धीरे-धीरे यह स्थिति बदलकर उनके अहित में चली गई है और अब रिकार्ड के अनुसार वे केवल 0.80 लाख एकड़ भूमि के पट्टेदार रह गये हैं जिसमें से भी वे 16,500 एकड़ भूमि पर से अपना अधिकार गैर-जनजातियों के पक्ष

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

में खो चुके हैं। राज्य सरकार ने इसी सन्दर्भ में जनजातीय लोगों के हित में कार्रवाई की।

अकाली दल के नेताओं को यह स्पष्ट किया गया कि प्राय: प्रत्येक राज्य ने जनजाति भूमि के हस्तान्तरण को रोकने की सर्व-सम्मत नीति के अनुसार कानून बनाए हैं। उत्तरप्रदेश सरकार ने जिला मजिस्ट्रेटों को विशेष रूप से अनुदेश दिए थे कि वे नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्तों तथा कानूनी तन्त्र के अनुसार ही कार्रवाई करें।

अकाली दल द्वारा सरकार के समक्ष रखी गई विभिन्न मांगों पर बातचीत चल ही रही थी कि अकाली दल ने जनवरी, 1984 में एक बिल-कुल नई मांग रख दी, जिसमें संविधान के अनुच्छेद 25(2) (ख) में संशोधन करने के लिए कहा गया और इस मांग को रखने के करीब-करीब साथ ही एक आन्दोलन की घोषणा कर दी, जिसमें भारत के संविधान को जलाना और विकृत करना शामिल था।

मार्च, 1984 में भी जब अकाली दल ने सरकार को भेजे गए पत्र में इस मांग का पहली बार उल्लेख किया था, उसमें चाहे गए संशोधन का आशय स्पष्ट नहीं किया गया था। वास्तविकता यह है कि अकाली दल ने अपना स्वयं का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से तय नहीं किया था। यह बात 1 मई 1984 के अखबारों की इस खबर से जाहिर होती है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष ने 21 सदस्यों की एक विशेषज्ञ समिति गठित की है जो अनुच्छेद 25 से सम्बन्धित संशोधनों का सुझाव देगी।

सरकार का यह मत है, कि अनुच्छेद 25(2) (ख), सिख समुदाय की विशिष्ट पहचान को मान्यता देता है। फिर भी, चूंकि सन्देह उठाये गये थे, इसलिए गृहमंत्री ने 31 मार्च, 1984 को एक वक्तव्य जारी किया कि सरकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और सिख समुदाय के अन्य प्रतिनिधियों तथा कानूनी विशेषज्ञों से भी परामर्श करने के लिए तैयार रहेगी तथा ऐसे सन्देहों को हटाने के लिए यथावश्यक संशोधन द्वारा कानून बनाने का काम हाथ में लेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को इस बारे में अपने सुझाव या प्रस्ताव भेजने के लिए आमंत्रित भी किया गया ताकि सरकार आगे और विचार कर सके। अनुच्छेद 25 के संशोधन के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लिए आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ्तार किए गए अकाली नेताओं को जेल से रिहा किया गया था ताकि वार्ता के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बन सके।

भारत के संविधान का अनुच्छेद 25(2) (ख) इस प्रकार है :—

(2) इस अनुच्छेद की कोई बात किसी ऐसी विद्यमान विधि के प्रवर्तन पर प्रभाव नहीं डालेगी या राज्य को कोई ऐसी विधि बनाने से निवारित नहीं करेगी जो :—

(क) धार्मिक आचरण से संबद्ध किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनैतिक या अन्य लौकिक क्रियाकलापों का विनियमन या निर्बन्धन करती है ;

(ख) सामाजिक कल्याण और सुधार का उपबन्ध करती है या सार्वजनिक प्रकार की हिन्दुओं की धार्मिक संस्थाओं को हिन्दुओं के सभी वर्गों और विभागों के लिए खोलती है।

स्पष्टीकरण :—(1) कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिख धर्म के मानने का अंग समझा जाएगा।

स्पष्टीकरण :—(2) खण्ड (2) के उपखंड (ख) में हिन्दुओं के प्रति निर्देश का यह अर्थ लगाया जाएगा कि उसके अन्तर्गत सिख, जैन या बौद्ध धर्म के मानने वाले व्यक्तियों के प्रति निर्देश है और हिन्दुओं की धार्मिक संस्थाओं के प्रति निर्देश का अर्थ तदनुसार लगाया जाएगा।

अकाली दल ने अनुच्छेद 25 के संशोधन की मांग के साथ सिखों के लिए अलग वैयक्तिक कानून (पर्सनल लॉ) को जोड़ने की मांग भी की पर, सरकार को विचार के लिए कोई प्रस्ताव नहीं दिए गए और न ही यह स्पष्ट किया गया है कि मौजूदा कानूनों में क्या और किन कारणों से परिवर्तन अपेक्षित है।

संविधान के अनुच्छेद 25 के संशोधन की मांग स्वीकार कराने के लिए सरकार पर दबाव डालने के वास्ते जो समय व तरीका चुना गया, वह अकाली दल द्वारा विचार-विनिमय करने का एक अपना ही ढंग है। अनुभव यह रहा है कि लम्बे विचार-विमर्श के बाद कुछ मुद्दों पर समझौता होने की उम्मीद दिखाई देने लगी तो नए मुद्दे उठाए गए, इससे समझौते

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

की किसी भी सम्भावना को विफल किया गया। बहुधा मांगों को इस बात पर ध्यान रखे बिना रखा जाता था कि स्वयं सिख समुदाय पर इसके क्या प्रभाव पड़ेंगे। अकाली दल किसी-न-किसी मुद्दे पर आन्दोलन जारी रखने का इच्छुक प्रतीत होता था। प्रत्येक कुछ महीनों के बाद नए मोर्चों या बन्द का आह्वान होता था ; प्रत्येक नया आन्दोलन पिछले आन्दोलन से अधिक हिंसक और खतरनाक होता गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आतंक और हिंसा

सरकार द्वारा बार-बार प्रयत्न करने के बावजूद कि शान्ति-पूर्ण ढंग से सद्भावना के वातावरण में समस्या का हल निकल आए, शिरोमणि अकाली दल वैसा मौका आने ही न दे रहा था। एक तो अकाली दल के नेतृत्व में बार-बार परिवर्तन तथा अवांछित तत्वों का प्रदेश स्थिति को जटिलतम बनता जा रहा था। शनैः शनैः कुछ विदेशी शक्तियां भी इन आन्दोलनों की आग में घी डालने का काम करने लगीं। भारत की एकता, अखण्डता और बढ़ती प्रगति उनकी आंख को किरकिरी बन गई थी। अतएव वह लोग और आगे आने लगे, जिन्हें ऐसे तत्वों का समर्थन मिल गया था।

सिक्ख सम्प्रदाया में दो पन्थ हैं। एक पन्थ कट्टरतावादी है और दूसरा उदारवादी। उदारवादी दल निरंकारी कहलाता है। विभाजन के बाद निरंकारी सिक्खों की संख्या में बराबर बढ़ोत्तरी होती गई। निरंकारियों के सम्मेलन धूमधाम से होने लगे। निरंकारियों के नेता सन्त बाबा गुरबचन सिंह का प्रभाव बढ़ने लगा। निरंकारियों का इस प्रकार के आन्दोलनों से कोई

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सम्बन्ध न था। कट्टरंपन्थी निरंकारियों के विरोध पर उतर आए और आतंक तथा हिंसा का सहारा लेने लगे।

इसके बाद पंजाब का घटनाचक्र बड़ी तेजी से बदला। आतंक हिंसा का दौर शुरू हो गया। आन्दोलन ने एक नया रूप ले लिया।

पंजाब में दुखद घटनाओं की शुरूआत कुछ कट्टरपंथी सिखों और निरंकारियों के बीच साम्प्रदायिक विद्वेष की वारदातों से हुई। अप्रैल, 1978 में झड़पों में हुई हत्याओं की चरम परिणति 24 अप्रैल, 1980 को निरंकारियों के आध्यात्मिक प्रमुख बाबा गुरबचन सिंह की हत्या के रूप में हुई। इसके बाद आतंक और हिंसा से लैस धर्मान्धता और उग्रवाद पंजाब के राजनीतिक जीवन पर छा गया। समाज पर हुए इस जबरदस्त हमले का परिणाम केवल मारे गये या घायल हुए लोगों की संख्या से नहीं आंका जा सकता। उग्रवादियों का मुख्य लक्ष्य पंजाब के लोगों में अलगाव पैदा करना और उनकी सांझी संस्कृति को नष्ट करना था।

यह विरोधाभास ही है कि साम्प्रदायिक पृथकतावाद, उस आन्दोलन का अभिन्न अंग बन गया, जो बिना किसी धार्मिक भेदभाव के सभी पंजाबियों की शिकायतें दूर करने के नाम पर आरम्भ किया गया था। यहां जो ताकतें काम कर रहीं थीं, उनके कारण ही यह स्थिति पैदा हुई। अकाली दल आन्दोलन, उग्रवाद से उत्पन्न विषाक्त साम्प्रदायिकता तथा एक छोटे से समूह जिसे मुख्यत: बाहरी तत्त्वों का समर्थन प्राप्त था, की पृथकतावादी तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के बीच सहजीवन सम्बन्ध कायम हो गया। इसके साथ ही भिन्न-भिन्न किस्म के लोग या समूह जैसे कि तस्कर, अपराधी, नक्सलवादी भी अनिश्चित स्थिति का फ़ायदा उठाने लगे। जो बहुत से लोग यह सोचते थे कि राजनीतिक पक्ष को पृथकतावाद और उग्रवाद से अलग रखा जा सकता है, सम्भवत: उपरोक्त तत्त्वों के पारस्परिक सम्बन्धों के जटिल और बदलते हुए स्वरूप को नहीं देख पाये, पर उग्रवादी हिंसा की राजनीति का अपना ही गतिशास्त्र है। कुछ समय बीतते ही ये लोग अन्य प्रवृत्तियों पर हावी हो जाते हैं। पहले भी ऐसा ही होता रहा है और इसलिए आश्चर्य नहीं कि पंजाब में भी यही हुआ, जहां हिंसा और आतंकवाद शीघ्र ही हावी हो गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाली दल ने हत्या, आगजनी व लूटपाट के उद्देश्यों और तरीकों से असहमत लोगों की निर्मम हत्याओं को न केवल अनुचित नहीं ठहराया बल्कि आन्दोलनकारी कार्यक्रम और ऐसी हिंसा के बीच जो सारे राज्य को अपनी चपेट में ले रही थी, कोई गहरा सम्बन्ध होने से भी इन्कार करते रहे। हिन्दू सिख सौहार्द के समर्थक होने का दावा करने के बावजूद इस दल ने साम्प्रदायिक कट्टरपंथियों द्वारा फैलाये जा रहे जहरीले प्रचार की निन्दा नहीं की। स्वर्ण मन्दिर परिसर तथा अन्य पूजा-स्थलों का बड़ी भारी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र व गोला बारूद जमा करने, हत्यारों और अपराधियों को शरण देने तथा तोड़फोड़ और विद्रोह की विस्तृत तैयारी करने के लिए दुरुपयोग किये जाने की अकाली दल के नेताओं ने निन्दा नहीं की, बल्कि इस तरह की गतिविधियों के अस्तित्व से भी इन्कार किया।

पंजाब में एक आक्रामक ग्रुप द्वारा हिंसा का ढांचा धीरे-धीरे खड़ा किया गया, जिसे पता था कि उसकी मंशा क्या है, और जिसे विश्वास था कि इस आन्दोलन के अग्रणी राजनीतिक नेता उनसे कुछ नहीं कहेंगे।

अकाली दल द्वारा सरकार को अपनी मांगें प्रस्तुत किये जाने से पहले, अखिल भारतीय सिख छात्र संघ (ए० आई० एस० एस० एफ०) तथा अन्य संगठन अमृतसर में रैलियों तथा जुलूसों का आयोजन कर रहे थे। 'खालिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाए जाते थे और साम्प्रदायिक तनाव जानबूझकर पैदा किया जाता था। उसके बाद सितम्बर, 1981 में लाला जगत नारायण की हत्या की गई थी, क्योंकि उन्होंने निरंकारियों को मारे जाने की आलोचना की थी। श्री भिन्डरांवाले को हत्या के सिलसिले में 20 सितम्बर, 1981 को गिरफ्तार किया गया था। बहुत अधिक पैमाने पर हिंसा हुई, जिसमें मेहता चौक के पास पुलिस पर घातक हथियारों से हमला किया गया। पुलिस ने भी गोली चलाई, जिसे न्यायिक जांच में उचित पाया गया। उसी दिन मोटर-साइकिल पर सवार एक गिरोह ने जालन्धर में चार आदमियों की हत्या कर दी और कई व्यक्तियों को घायल कर दिया। इस प्रकार मोटर-साइकिल सवारों द्वारा बेबात हत्याएं करने का दौर शुरू हो गया, जिसका आतंक अगले तीन वर्षों तक पंजाब में छाया रहा। 29 सितम्बर, 1981 को इण्डियन एयरलाइन्स के एक हवाई

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जहाज को कुछ सिख आतंकवादी अपहरण करके लाहौर ले गए। ये आतंकवादी अभी भी पाकिस्तान में हैं, हालांकि पाकिस्तान सरकार के साथ यह मामला उठाया जा चुका है।

इन सब बातों से, अकालियों के आन्दोलन की शुरूआत की पृष्ठभूमि बनी।

प्रधान मंत्री अकाली दल के नेताओं से अक्तूबर 1981, फिर नवम्बर 1981 तथा अप्रैल 1982 में मिलीं और विचार-विमर्श आगे बढ़ रहा था कि अकाली दल ने सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई में रुकावट डालने तथा सरकारी ऋण न अदा करने सम्बन्धी कार्यक्रम की घोषणा की। आन्दोलन पहले 24 अप्रैल, 1982 को और फिर 24 मई, 1982 को किया गया।

अकाली दल आन्दोलन से उत्पन्न तनाव उन विभिन्न आतंकवादी ग्रुपों के अनुकूल था, जो इसमें भाग ले रहे थे। दल खालसा ने खुले आम साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काया। 26 अप्रैल 1982 को इन्होंने हिन्दू मन्दिरों को अपवित्र करने की गम्भीर कार्रवाइयां कीं और जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और घोषणा की कि उनका इरादा आगे भी ऐसा बार-बार करने का है। गौ-हत्या आन्दोलन की धमकी दी, जिससे साम्प्रदायिक तनाव के बिगड़ने की बहुत आशंका थी। 1 मई, 1982 को दल खालसा तथा राष्ट्रीय खालिस्तान परिषद को गैर-कानूनी संघ घोषित किया गया।

एक हत्या के प्रयास के मामले में ए०आई०एस०एस०एफ० के अध्यक्ष श्री अमरीक सिंह तथा अन्य लोगों की 19 जुलाई, 1982 को गिरफ्तारी के बाद श्री भिन्डरांवाले ने अपना मुख्यालय चौक मेहता से स्वर्ण मन्दिर के परिसर के भीतर गुरु नानक निवास में स्थानान्तरित कर दिया। इस कार्रवाई के पीछे क्या अभिप्राय था, बाद में हुई घटनाओं के रूप में दिखाई पड़ा। श्री अमरीक सिंह की बिना शर्त रिहाई के लिए एक मोर्चा शुरु किया गया।

इस तनावपूर्ण वातावरण के बावजूद, अकाली दल ने 4 अगस्त, 1982 से अपना मोर्चा और तेज कर दिया और इसे एक 'धर्म युद्ध' की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

संज्ञा दी। इसके बाद इण्डियन एयर लाइन्स के हवाई जहाज के अपहरण की दो घटनाएं हुईं। 20 अगस्त, 1982 को जालन्धर जिले में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री दरबारा सिंह की हत्या करने की कोशिश की गई।

श्री भिन्डरांवाले तथा अन्य व्यक्ति जो अब सीधे स्वर्ण मन्दिर परिसर से कार्रवाई कर रहे थे, उन्होंने हिंसा की प्रशंसा की तथा लोगों को हिंसा करने के लिए भड़काना शुरू कर दिया। उग्रवादियों तथा आतंकवादियों ने स्वर्ण मन्दिर परिसर का खुलकर उपयोग करना शुरू कर दिया। राष्ट्रीय खालिस्तान परिषद् के श्री बलबीर सिंह सन्धु भी वहां आ पहुंचे। राज्य प्राधिकारियों ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी से अनुरोध किया कि वे उन अपराधियों को पुलिस के हवाले कर दें, जिनकी उन्हें तलाश है। यह प्रयास विफल रहा।

11 सितम्बर, 1982 को तरन-तारन में रेलवे क्रासिंग पर जहां कोई कर्मचारी तैनात नहीं था, एक रेल दुर्घटना हुई, जिसमें अकाली दल के कुछ ऐसे व्यक्तियों को जानें गईं, जिनके मामले अदालत में विचाराधीन थे, अकाली दल ने इसे जानबूझकर मारने की कोशिश बताया। मृतकों के अन्तिम संस्कार के बाद नई दिल्ली में 11 अक्तूबर, 1982 को संसद के समक्ष हिंसात्मक प्रदर्शन हुआ।

सरकार ने सद्भावना के तौर पर तथा बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिए अक्तूबर 1982 में अकाली दल के गिरफ्तार सभी आन्दोलनकारियों को रिहा कर दिया। पर अकाली दल के नेताओं ने आन्दोलनकारियों को निर्देश दिए कि वह जेलों से न निकलें। 26 अक्तूबर 1982 को रामनवमी के एक जुलूस पर हथगोले फेंके गए और उत्तेजनात्मक भाषणों से अमृतसर में नई हिंसात्मक घटनाएं भड़क उठीं। 4 नवम्बर, 1982 को गृहमंत्री ने लोकसभा में आन्दोलन को वापस लेने या स्थगित करने की अपील की। इसके उत्तर में अकाली दल ने मुख्य मंत्री का घेराव करने का एक नया कार्यक्रम शुरू कर दिया। ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि अकाली दल ने आन्दोलनों के लिए गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय उत्सवों को विशेष रूप से चुना या फिर आन्दोलन उन मौकों पर अयोजित किये जब अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की प्रतिष्ठा का सवाल था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नवम्बर-दिसम्बर 1982 में एशियाई खेलों के अवसर पर प्रदर्शन करने की धमकी दी गई और नवम्बर 1983 में राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों के सम्मेलन के अवसर पर अकाली दल की ओर से पैम्फलेट बांटा गया, जिसमें सरकार की बदनामी करते हुए निराधार आरोप लगाए गए।

अकाली दल ने घोषणा की थी कि यदि उसकी मांगें 21 फरवरी, 1983 तक स्वीकार नहीं की गई, तो यह लड़ाई गली-कूचों तक पहुंच जाएगी। बड़ी संख्या में सिखों को "करो या मरो" कार्यक्रम अपनाने के लिए प्रेरित किया गया और शहीदी स्वयंसेवकों की भर्ती शुरु करू दी गयी।

बातचीत अभी चल ही रही थी, इसलिए 31 मार्च, 1983 को अकाली दल के नेताओं से आन्दोलन समाप्त करने की नई अपील की गई। इसका जवाव पंजाव में 4 अप्रैल, 1983 को "रास्ता रोको" आन्दोलन के रूप में दिया गया, जिसके कारण कई स्थानों पर हिंसा तथा आगजनी की घटनाएं हुईं।

30 मई, 1983 को गृहमंत्री ने संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल को एक पत्र लिखा, जिसमें वातचीत पुनः शुरू करने का सुझाव दिया गया, अकाली दल ने 17 जून, 1983 को "रेल रोको" कार्यक्रम की घोषणा कर दी। 29 अगस्त, 1983 को "काम रोको" आन्दोलन चलाया गया, जिसमें फिर हिंसक घटनाएं हुईं।

इस पूरी अवधि में उग्रवादी उन कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारियों पर आक्रमण करते रहे, जो कानून व व्यवस्था कायम रखने का दायित्व निभा रहे थे। इन सभी अपराधों में सवसे संगीन अपराव 25 अप्रैल, 1983 को श्री ए०एस० अटवाल, उपमहानिरीक्षक पुलिस, जालन्धर रेंज, की कायरतापूर्ण ढंग से उस समय हत्या किया जाना है, जव वह प्रार्थना के बाद दरबार साहिब से बाहर आ रहे थे। आक्रमणकारी स्वर्ण मंदिर के अन्दर से आए थे और अपराध करने के वाद उसमें पनाह लेने के लिए वापस भाग गए। पुलिस और उग्रवादियों के वीच अनेक मुठभेड़ें हुईं, जिनमें कई पुलिस कर्मी मारे गए। वहुत से लोग विस्फोटों में मारे गए। निरंकारियों और अन्यों को चुन-चुन कर मारने की घटनाएं भी जारी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रहीं।

अखिल भारतीय सिख छात्र संघ पर, जिसे शुरू में सन् 1944 में सिख युवकों के मन में महान गुरुओं के उपदेशों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए बनाया गया था, उग्रवादियों ने कब्जा कर लिया और इसके सदस्यों ने हत्याएं और अन्य हिंसक वारदातें करनी शुरू कर दीं। जून, 1983 के बाद उग्रवाद तथा साम्प्रदायिक विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए तथा हथियारों का प्रशिक्षण देने के लिए गुरमत कैंपों का संगठित ढंग से प्रयोग किया गया। अनेक कैंपों में पाकिस्तान तथा खालिस्तान के समर्थन में नारे लगाए गए।

सितम्बर 1983 में हिन्दू समुदाय के लोगों को जानबूझ कर मारने की योजना से बढ़ती हुई हिंसा को एक नया स्वरूप दिया गया। 28 सितम्बर, 1983 को को लुधियाना जिले में जगराव में सवेरे सैर करते हुए व्यक्तियों पर अन्धाधुन्ध गोलीबारी की गई। इसके बाद 5 अक्तूबर, 1983 को कपूरथला जिले में धिलवां के नजदीक एक बस का अपहरण किया गया और छह हिन्दू यात्रियों को अन्य यात्रियों से अलग करके निर्मम हत्या कर दी गई।

31 अक्तूबर, 1983 को तोड़फोड़ के कारण सियालदा-जम्मू तवी एक्सप्रेस गाड़ी पटरी से उतर गई, जिसके कारण 19 यात्रियों की मृत्यु हो गई। 18 नवम्बर, 1983 को बस में यात्रा कर रहे अन्य चार हिन्दू यात्रियों की अमृतसर जिले में हत्या कर दी गई।

राज्य में घटनाओं का दौर इस सीमा तक पहुंच गया कि उसका असर देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता पर पड़ने लगा। इसे देखते हुए पंजाब के मुख्य मन्त्री ने इस्तीफा दे दिया। 6 अक्तूबर, 1983 से पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया और आतंकवाद को दबाने के लिए अनेक प्रशासकीय और कानूनी उपाय किए गए। 7 अक्तूबर, 1983 को पंजाब अशांत क्षेत्र अध्यादेश, 1983 और चंडीगढ़ अशान्त क्षेत्र अध्यादेश, 1983 की घोषणाएं की गयी। 15 अक्तूबर 1983 को सशस्त्र बल (पंजाब और चंडीगढ़) विशेष शक्तियां अध्यादेश, 1983 प्रख्यापित किया गया। इन अध्यादेशों को बाद में संसद के अधिनियमों के रूप में पारित

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कर दिया गया। पंजाब में अतिरिक्त केन्द्रीय बलों की तैनात की गई। प्रशासकीय उपायों के अतिरिक्त, गैरकानूनी हथियारों और गोला-बारूद की बरामद करने के लिए छापे मारे गए तथा खोजबीन की कार्रवाई की गई, फलस्वरूप कुछ नतीजे भी सामने आए।

15 दिसम्बर, 1983 को श्री भिंडरांवाले अपने हथियारबन्द संगी-साथियों सहित गुरु नानक निवास से अकाल तख्त पहुंच गए। इस पवित्र स्थान से, भिंडरांवाले और उसके सहयोगियों ने हिंसा और सांप्रदायिक घृणा भड़काने वाली गतिविधियां तेज कर दीं। गिरफ्तार किए गए अनेक व्यक्तियों ने स्वीकार किया है कि उन्होंने हिंसक अपराध, उनके विशेष निर्देशों पर किए थे।

उग्रवादियों का एक मुख्य उद्देश्य उन सिखों को समाप्त करना था, जो उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के खिलाफ थे। कानून का पालन करने वाले लोगों को, उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए, डराने के उद्देश्य से बड़ी भारी संख्या में सिखों, पुलिस कर्मियों, राजनीतिज्ञों, धार्मिक तथा आध्यात्मिक गुरुओं की हत्याएं की गयीं। यही हाल स्वर्ण-मन्दिर के भीतर उन लोगों का हुआ जिन पर सन्देह था या जिनके बारे में यह समझा गया कि उन्होंने आतंकवादियों की अवहेलना की थी, लोगों को यातनाएं दी गयीं और कष्टपूर्ण मौत का शिकार बनाया गया। बाद में उनकी लाशों को खुली नालियों में फेंक दिया गया। इसके अलावा अन्य निन्दनीय तरीकों से भी मन्दिर को अपवित्र किया गया। शिरोमणि गुरु-द्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल ने इन निर्मम हत्याओं व तरीकों को रोकने के लिए कुछ नहीं किया और न ही उन्होंने इनकी निन्दा की। लाखों सिखों और हिन्दुओं द्वारा पवित्र माने जाने वाले इस मन्दिर को इस प्रकार अपवित्र करने की कार्रवाई के प्रति उन्होंने कोई चिन्ता नहीं दिखाई।

इस तथ्य को जानते हुए कि मोर्चा या बन्द के लिए किए गए प्रत्येक आह्वान से हिंसा की गम्भीर घटनाएं हो रही हैं, अकाली दल ने 26 जनवरी 1984 को भारत के संविधान के अनुच्छेद 25 को जलाने के कार्य-क्रम की घोषणा कर दी। 8 फरवरी, 1984 को पंजाब बन्द की अपील की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

गई। दूसरी ओर एक नए संगठन अर्थात् हिन्दू सुरक्षा समिति ने, जिसका गठन 1981 में हुआ था, 14 फरवरी 1984 को बन्द का आह्वान किया। इसके कारण, फिर विभिन्न स्थानों पर गम्भीर झड़पें तथा हिंसक घटनायें हुईं, जिनमें 11 व्यक्तियों की मृत्यु हुई। उग्रवादी हिन्दू संगठनों के कुछ सदस्यों ने स्वर्ण मन्दिर के माडल को क्षतिग्रस्त करके और अमृतसर रेलवे स्टेशन पर लगे गुरु रामदास के चित्र को नुकसान पहुंचाकर अनुचित आचरण किया।

इसके बाद स्वर्ण मन्दिर परिसर में रहने वाले उग्रवादियों तथा उन्होंने जो पूरे पंजाब में फैल चुके थे, सुरक्षा बलों से मुकाबला करने का दुस्साहस करना शुरू किया।'स्वर्ण मन्दिर के नजदीक के भवनों से पुलिस कर्मियों पर बार-बार गोलीबारी होती रही।

लोग निरन्तर भयभीत रहने लगे। केवल इस बात का सन्देह होने पर ही कि किसी ने उग्रवादियों को आपराधिक गतिविधियों की सूचना दी है, तत्काल बदले की कार्रवाई की आशंका व्याप्त हो जाती थी। अदालतों में गवाही देना तो दूर रहा, लोग उन अपराधों के बारे में बात करने से भी डरते थे, जो उन्होंने अपनी आंखों से होते देखे थे। न्यायपालिका तक को डराया-धमकाया गया था। इस तरह, कानून लागू करने वाली एजेंसियां बुरी तरह से अक्षम पड़ गई थीं। इस प्रकार गिरफ्तार लोग छूट जाते और अभियुक्तों को सजा नहीं हो पाती। स्वर्ण-मन्दिर के समीप रहने वाले किरायेदारों और मकान मालिकों को उनके मकानों से जबरदस्ती निकाल दिया गया। ब्रह्मबूटा अखाड़े के महन्त को उग्रवादियों द्वारा पद से हटाकर बन्दी बना लिया गया और भवन को अर्द्ध सैनिक बलों पर आक्रमण करने के लिए एक मोर्चाबन्द चौकी के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। आदतन अपराधियों और असामाजिक तत्वों को स्वर्ण मन्दिर में विभिन्न राष्ट्र विरोधी ग्रुपों का संरक्षण मिलता रहा। इस अन्तहीन अराजकता से लोगों का मनोबल टूट गया और वे अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगे।

सरकार ने 14 फरवरी, 1984 को एक और त्रिपक्षीय बैठक बुलाई। एक बार फिर बातचीत शुरू होने के साथ ही, पंजाब में हिंसा की लहर शुरू हो गई। हरियाणा में भी हिंसा की अनेक घटनाएं हुईं। 19 फरवरी,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

1984 को पानीपत में 8 सिखों समेत कई निर्दोष जानें गईं।

त्रिपक्षीय बैठक 15 फरवरी को स्थगित हो गई थी और कुछ दिन बाद वह फिर होने वाली थी। परन्तु अकाली दल के नेता बातचीत के लिए फिर नहीं आए। आतंकवादी गिरोह सारे राज्य में लोगों की बेबात हत्या करने लगे। 21 फरवरी, 1984 को नौ व्यक्तियों की, 22 फरवरी को 12 व्यक्तियों, 23 फरवरी को 11 व्यक्तियों तथा फिर 24 फरवरी को 3 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष, श्री वेदपाल तथा पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, श्री दरबारा सिंह की हत्या करने के प्रयास किए गए। दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष, श्री एच० एस० मनचन्दा की 28 मार्च, 1984 को दिल्ली में और संसद सदस्य तथा पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा० वी० एन० तिवारी की, जिन्होंने पंजाबी भाषा के लिए बहुत योगदान दिया था, 3 अप्रैल, 1984 को चंडीगढ़ में गोली मारकर हत्या कर दी गई।

संत हरचंद सिंह लोंगोवाल ने 2 अप्रैल, 1984 से मनाए जाने वाले "पंथ आजाद सप्ताह" के लिए एक नया आह्वान किया। इसे गृहमंत्री के इस वक्तव्य के बाद वापस ले लिया गया कि संविधान के अनुच्छेद 25 (2) (ख) के संशोधन की मांग पर विचार किया जा सकता है परन्तु पंजाब में स्थिति को काफी अधिक क्षति पहले ही पहुंच चुकी थी।

पंजाब में सामान्य जीवन को पूरी तरह से अस्तव्यस्त करने के सुनियोजित प्रयासों के और अधिक सबूत मिलने लगे। आंतकवादी आन्दोलन से संबद्ध समाज विरोधी तथा अन्य आपराधिक तत्वों द्वारा बैंकों तथा व्यापारिक संस्थानों की लूट अधिक सुनियोजित और व्यापक स्तर पर की जाने लगी। 1 अक्तूबर, 1983 से 31 मई, 1984 तक की अवधि में 24 बैंकों में डाके डाले गए। भारी मात्रा में नकदी लूटी गई और गार्ड तथा अन्य कर्मिक मारे गये। 14 और 16 अप्रैल, 1984 के बीच 39 रेलवे स्टेशनों को, जिनमें से अधिकांश पर कर्मचारी नियुक्त नहीं थे, आग लगाने का बड़ा अभियान स्पष्टतया शक्ति प्रदर्शन के रूप में शुरू किया गया।

4 अगस्त, 1982 से जब से अकाली मोर्चा शुरू हुआ था, 3 जून,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

1984 तक 1200 से अधिक हिंसक घटनायें हुई जिनमें 410 व्यक्ति मारे गये और 1180 से अधिक घायल हुए। 1 जनवरी, 1984 से 3 जून, 1984 तक 775 से अधिक हिंसक घटनाएं हुई जिनमें 298 व्यक्ति मारे गये और 525 से अधिक घायल हुए।

हत्याओं, आगजनी और लूटपाट की लगातार घटनाओं का ब्यौरा वर्षवार और महीनेवार आगे में दिया गया है जो 1981—84 के दौरान भिन्न-भिन्न चरणों में प्रचण्डता तथा कटुता की पराकाष्ठा पर पहुंची लेकिन, अप्रैल-मई, 1984 की मुख्य घटनाओं पर विशेष प्रकाश डालना आवश्यक है क्योंकि वे आतंकवादियों के वास्तविक स्वरूप तथा मंसूबों को जाहिर करती हैं। फिरोजपुर में एक कालेज के प्रिंसिपल की 1 अप्रैल, 1984 को गोली मारकर हत्या कर दी गई। अखिल भारतीय छात्र संघ परीक्षाओं को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर आगजनी के कार्यों में लग गया। 2 अप्रैल, 1984 को भूतपूर्व विधायक व भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री हरबंसलाल खन्ना की स्वयं उनकी दुकान के भीतर गोली मारकर हत्या कर दी गई। 14 अप्रैल, 1984 को श्री सुरिन्दर सिंह सोढी की हत्या ने अकाली दल के नेताओं और श्री भिंडरांवाले के बीच गंभीर तनाव उत्पन्न कर दिया, परन्तु इस समय तक श्री भिंडरांवाले जो चाहे उसे करवाने की स्थिति में हो गए थे। हत्यारा तुरन्त मारा गया और श्रीमती बलजीत कौर को भी, जिसका कि सोढी की हत्या में हाथ बताया जाता है, नंगा कर गर्म तवे पर बैठाकर मार डाला गया और उसके क्षत-विक्षत शव को एक बोरी में बन्द करके बाहर फेंक दिया गया।

26 अप्रैल, 1984 को सुरक्षा बलों पर मोगा में गुरुद्वारे के भीतर से गोली चलाई गई। अत्यन्त सम्माननीय आध्यात्मिक नेता और श्री अकाल तख्त साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार सिंह साहिब ज्ञानी परताप सिंह की 10 मई, 1984 को हत्या कर दी गई। महन्त गोपाल दास और उनके शिष्य की 14 मई को हत्या कर दी गई; गुरुद्वारा टोट साहिब के श्री निरंजन सिंह, ग्रंथी की 14 मई, 1984 को हत्या कर दी गई, मजोली गांव के ग्रंथी सूरज सिंह की 16-17 मई की रात को गोली मारकर हत्या कर दी गई और ग्राम बालटोहा में एक गुरुद्वारे के ग्रंथी श्री जरनैल सिंह की 17-18

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मई, 1984 को हत्या कर दी गई। पुजारियों और धार्मिक नेताओं को, श्री भिंडरांवाले के निर्देश बिना कोई आपत्ति किये स्वीकार करने के लिए डराया-धमकाया जा रहा था। समाचार पत्रों के हिन्द समाचार ग्रुप के सम्पादक और लाला जगत नारायण (जिनकी पहले हत्या कर दी गई थी) के पुत्र श्री रमेश चन्द्र की 12 मई, 1984 को हत्या कर दी गई।

सुरक्षा बलों ने, 11 मई, 1984 को एक "कार सेवा" ट्रक की तलाशी ली और स्टेनगनें, हथियार और गोलाबारूद बरामद किया। ट्रक श्री जरनैल सिंह भिंडरांवाले के नाम में रजिस्टर्ड पाया गया। आतंकवादी स्वचालित हथियारों का प्रयोग करते हुए सुरक्षा बलों के शिविरों पर हमला करते रहे।

अब तक आतंकवादियों ने अपनी सामरिक स्थिति को सुधारने के ध्येय से स्वर्ण मंदिर के आसपास के कुछ प्राइवेट मकानों पर कब्जा कर लिया था। उग्रवादी जबरदस्ती धन खसोटने लगे और श्री भिंडरांवाले ने औद्योगिक तथा भूमि विवादों और व्यक्तिगत मामलों का भी निर्णय करना शुरू कर दिया।

सरकार को संत लोंगोवाल और श्री भिंडरांवाले के अनुयायियों समेत स्वर्ण मंदिर परिसर के भीतर रह रहे विभिन्न ग्रुपों के बीच हिंसक झगड़ों के बारे में विश्वस्त सूचना भी मिली थी। मंदिर के भीतर हत्याओं और यातनाओं को रोकने के लिए दोनों ग्रुपों को सहमत करने के वास्ते मई, 1984 में अकाल तख्त के मुख्य ग्रंथी की अध्यक्षता में प्रमुख ग्रंथियों द्वारा एक प्रयास किया गया था।

सरकार को यह सूचना मिली थी कि श्री भिंडरांवाले ने पंजाब में हिन्दुओं की हत्या करने की वकालत की थी ताकि वे अपने आप वहां से चले जाएं। किसी-किसी दिन एक दर्जन तक हत्याएं की जाने की सूचना मिली। ग्रामीण क्षेत्रों में आतंकवादियों को यह हिदायतें दी गई थीं कि कोई सरकारी कारवाई होने की स्थिति में वे हिन्दुओं और केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों को मारना शुरू कर दें और भारी संख्या में स्वर्ण मंदिर की ओर प्रस्थान करें। यद्यपि सिख जनता इन गतिविधियों से मोटे तौर पर अप्रभावित रही, फिर भी, यह स्पष्ट था कि प्राधिकारियों की खुली अवज्ञा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के साथ विद्रोह की स्थिति पैदा हो रही थी। श्री भिंडरांवाले का दृष्टि-कोण उनके अपने ही वक्तव्यों में पूरी तरह से स्पष्ट हो गया है, जिसके कुछ उद्धरण आगे दिये गए हैं।

अप्रैल और मई, 1984 में हिंसा के इस अभूतपूर्व दौर से अकाली दल पर कोई असर नहीं पड़ा। इतनी देरी के बाद भी अकाली दल अराजकता के कगार से पीछे हट सकता था, परन्तु उसने 3 जून, 1984 को एक अन्य आंदोलन शुरू करने के लिए आह्वान किया। आन्दोलन से अराजकता व हिंसा की चपेट में सम्पूर्ण राज्य के आ जाने का आशंका थी। अकाली दल के नेताओं ने लोगों से पंजाब से अन्य राज्यों को खाद्यान्न ले जाये जाने को जबरन रोकने और करों तथा सरकार को बकाया रकम की अदायगी न करने के लिए आह्वान किया।

सरकार अपनी ओर से अकाली दल के साथ समझौते करने का हर प्रयास करती रही। यहां तक कि मई, 1984 में भी वार्ता के कई दौर हुए। 14 मई, 1984 को बन्दी नेताओं को रिहा किया गया और उन्हें गृहमंत्री द्वारा बातचीत के लिए आमन्त्रित किया गया। इसके पहले भी तीन बैठक हो चुकी थीं। उसके बाद वार्ता का एक दौर मई के अन्त में हुआ। 3 जून, 1984 से घोषित आन्दोलन को वापस लेने के लिए अकाली दल के नेतृत्व को राजी करने के लिए एक और प्रयास किया गया। दुर्भाग्य से अकाली दल का रवैया सख्त हो गया था और कोई समझौता नहीं हो सका। 2 जून, 1984 को राष्ट्र-व्यापी प्रसारण में प्रधानमंत्री द्वारा की गई अंतिम अपील भी ठुकरा दी गई।

संसद के दोनों सदनों में पंजाब की स्थिति पर अनेक बार चर्चा हुई। देश भर के लाखों लोगों की चिन्ता व्यक्त करते हुए सदस्यों ने दल-गत सीमाओं से ऊपर उठकर, बढ़ती हुई हिंसा, व आतंकवादियों की साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की भर्त्सना की। 29 अप्रैल, 1982 को संसद ने एक संकल्प में, जो प्रधान मंत्री ने प्रस्तुत किया था और सर्व-सम्मति से पारित हुआ था, इन गतिविधियों के प्रति राष्ट्र का दुख तथा क्षोभ व्यक्त किया था। आतंकवाद, उग्रवाद और साम्प्रदायिकता के खतरे का सामना करने और देश की एकता तथा अखंडता बनाये रखने के लिए

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

राष्ट्रीय संकल्प के प्रति संसद दृढ़ बनी रही है।

विदेशों में काफी संख्या में बसे या काम कर रहे भारतीयों में सिख भी हैं जिनके स्वदेशप्रेम के बारे में कभी कोई सन्देह नहीं रहा, तथापि, निहित स्वार्थों वाले पक्षों द्वारा उनमें से कुछ व्यक्तियों को गलत जानकारी दी जाती है या गुमराह किया जाता है, जबकि कुछ अन्य उन देशों में दबाव में आ सकते हैं। विदेशों में बसे समृद्ध लोगों द्वारा भारत में मेहनत-कश सिख जनता के मूलभूत सामाजिक आर्थिक हितों से अपने आपको सम्बद्ध करना सदा आसान काम नहीं है। पंजाब की इन घटनाओं के बहाने कुछ के लिये अपने आपको सिख-समुदाय का नेता बताने का मौका हाथ लग गया।

विदेशों में कुछ पृथकतावादी सिख संगठन क्रियाशील हैं। "खालिस्तान" या एक "पृथक् सिख राज्य" का नारा लगाने वाले संगठनों में से मुख्य संगठन हैं, नेशनल काउंसिल आफ खालिस्तान, दल खालसा, बब्बर खालसा और अखण्ड कीर्तनी जत्था। 'नेशनल काउंसिल आफ खालिस्तान', जिसके अध्यक्ष डा० जगजीत सिंह चौहान हैं, यू० के०, पश्चिमी जर्मनी, कनाडा और यू० एस० ए० में सक्रिय है। दल खालसा की गतिविधियां मुख्यत: यू० के० और पश्चिम जर्मनी में हैं, जबकि बब्बर खालसा अधिकांश रूप में कनाडा में वैंकूवर से संचालन करता है। अखण्ड कीर्तनी जत्था की यूनिट यू० के० और कनाडा में है।

कथित खालिस्तान आन्दोलन के स्वयंभू नेता डा० जगजीत सिंह चौहान, जिन्होंने बाद में अपने आपको "नेशनल काउंसिल आफ खालिस्तान का प्रेसीडेंट" घोषित कर दिया, सार्वजनिक जीवन में कम्युनिस्ट पार्टी के स्टूडैंट विंग के जरिये आए। पहले उन्होंने लंदन में सितम्बर, 1971 में हुई प्रेस कान्फरेंस में "खालिस्तान" का नारा लगाया। 12 अप्रैल, 1980 को उन्होंने "नेशनल काउंसिल आफ खालिस्तान" के गठन की घोषणा की, जिसमें उन्होंने अपने आपको उसका प्रेसीडेंट और श्री बलवीर सिंह संधु को उसका महासचिव घोषित किया। इसके तीन महीने बाद उन्होंने लंदन से "खालिस्तान" के गठन की घोषणा की और इसी तरह की घोषणा भारत से बलवीर सिंह संधु ने की। तब से डाक्टर चौहान

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भारत से बाहर रह रहे हैं और भारत-विरोधी भावनाएं भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। वह खालिस्तान के पासपोर्ट, डाक टिकट और करेंसी नोट जारी करके प्रचार का नाटक करते रहे हैं। उनका इरादा यह था कि कनाडा और पश्चिम जर्मनी में निवास कर रहे, उन सिखों की भावनाओं का अनुचित लाभ उठाया जाये, जिन्हें वहां के आप्रवासन प्राधिकारियों से दिक्कत पेश आ रही है। अप्रैल, 1981 में डा० चौहान का भारतीय पासपोर्ट रद्द कर दिया गया और उनके विरुद्ध अगस्त, 1981 में राजद्रोह और विभिन्न समुदायों के बीच घृणा फैलाने का मामला दर्ज किया गया। उन्होंने अपना पासपोर्ट वापिस नहीं किया है और यू० के० में रहने का तथा कनाडा, यू० एस० ए० और कुछ यूरोपीय देशों में आने-जाने का प्रबन्ध कर लिया है। वह प्रदर्शन करने, भारतीय राष्ट्रध्वज को जलाने और भड़काने वाले वक्तव्य देने जैसे काम करते रहे हैं। अक्तूबर, 1982 में लंदन में उनकी अध्यक्षता में एक ग्रुप की बैठक हुई, जिसमें कर अदा न करने, नागरिक अवज्ञा का कार्यक्रम चलाने और पंजाब में निर्वाचित सरकार के साथ पूरी तरह असहयोग करने के लिए अकाली नेताओं से अनुरोध किया गया।

डा० चौहान ने मार्च, 1983 में नेपाल और बंगला देश से होकर भारत में प्रवेश करने का प्रयास किया परन्तु वह ऐसा करने में सफल नहीं हुए। पता चला है कि 15 मार्च को लंदन में उन्होंने यह कहा कि भारत में खास-खास ठिकानों पर हमला करने के लिए 10,000 लोगों का एक छापामार दल संगठित करने का यह उपयुक्त मौका है। उन्होंने दावा किया कि "खालिस्तान" के सैनिक शीघ्र ही भारतीय सुरक्षा बलों से युद्ध करना शुरू कर देंगे। 18 मई, 1983 को उन्होंने दावा किया कि युनाइटिड स्टेटट्स इस तथाकथित खालिस्तान आंदोलन में सहायता कर रहा है और उन्हें आशा है कि चार साल के अंदर वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। उन्होंने यू० एस० प्राधिकारियों से अनुरोध किया कि भारत को गेहूं बेचना बन्द कर दें और कहा कि पाकिस्तानी सैनिक सिखों के देश में अमृतसर स्थित उस गुरु रामदास सराय में ठहरे हुए हैं, जो श्री भिंडरांवाले के नियंत्रण में है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

13 जुलाई 1983 को श्री बलवीर सिंह सिंधु को लिखे गए एक पत्र में उन्होंने सलाह दी कि सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल और श्री भिंडरांवाले को एक पूर्ण सरकार और संसद का गठन करना चाहिए और यदि वे ऐसा करने में झिझकते हैं तो "नेशनल काउंसिल आफ खालिस्तान" अपने ढंग से कार्रवाई करेगी। दिसम्बर, 1983 में ऐसी ही सलाह अकाली दल के नेताओं को दी गई। 29 दिसम्बर, 1983 को उन्होंने घोषणा की कि 26 जनवरी, 1984 "विश्वासघात दिवस" के रूप में मनाया जाएगा, जब राष्ट्रीय-ध्वज को जलाया जाएगा और खालिस्तान ध्वज फहराया जाएगा। इसके अनुसरण में बलवीर सिंह सिन्धु ने उस दिन हरमन्दिर साहिब के पास एक भवन पर वह ध्वज फहरा दिया, जिसे उसने खालिस्तान का झंडा बतलाया। इस काउंसिल ने एक संकल्प प्रचारित किया, जिसमें यह कहा गया था कि वे भारत में एक अलग होमलैंड और संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी खुद की आवाज चाहते हैं। उन्होंने एक नया नक्शा जारी किया, जिसमें तथाकथित खालिस्तान राज्य की सीमाएं दिखाई गई थीं। डा० चौहान इस बात का दावा करते रहे हैं कि उनके मामले को विदेशों के महत्वपूर्ण नेताओं का समर्थन प्राप्त है और वह यू० एस० कांग्रेस के कई नेताओं के सम्पर्क में रहे हैं। भारत सरकार के विरोध के बावजूद वह 1982 में और पुनः मार्च, 1983 में युनाइटेड स्टेट्स के लिए प्रवेश वीजा प्राप्त करने में सफल हुए। डा० चौहान ने वाशिंगटन के हेरीटेज फाउंडेशन और संगठनों से सम्पर्क बना रखे हैं।

डा० चौहान भारत मूल के अमरीकी नागरिक और वाशिंगटन की ननकाना साहिब फाउंडेशन के अध्यक्ष, श्री गंगा सिंह ढिल्लों के निकट सम्पर्क में काम कर रहे हैं। हाल में ही डा० चौहान ने दल खालसा के सदस्यों और अन्य के साथ यू० के० में जम्मू व कश्मीर मुक्ति मोर्चा के नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर लिए हैं। 'आजाद' जे० एण्ड के० मुस्लिम कांफ्रेंस के अध्यक्ष, सुलतान मोहम्मद चौधरी की ओर से दिए गए एक वक्तव्य के अनुसार डा० चौहान ने उद्देश्यों के लिए प्राप्त समर्थन के प्रत्युत्तर में इस संगठन के उद्देश्यों को समर्थन प्रदान किया। वास्तव में 1981 में ही, डा० चौहान ने दावा किया था कि उनके आन्दोलनों को

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पाकिस्तान द्वारा अधिकृत कश्मीर की जे० ई० आई० का समर्थन प्राप्त है। इन ग्रुपों के कुछ सदस्यों का दावा है कि वे नियमित रूप से पाकिस्तान जाया करते हैं। श्री ढिल्लों भी इस बात का प्रचार करते रहे हैं कि सिख लोग एक अलग राष्ट्र हैं और वह यू० एस० सिनेट के सदस्यों एवं पाकिस्तान प्रशासन के उच्च वर्ग के लोगों से सम्पर्क रखते रहे हैं।

स्वतन्त्र प्रभुसत्ता सम्पन्न सिख राज्य के निर्माण की मांग करने के प्रकट उद्देश्य से दल खालसा की स्थापना मूलरूप से भारत में 13 अप्रैल, 1978 को की गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि यह दल बरमिंघम के नक्सलाइट-समर्थक नेता, स्वर्गीय ज्ञानी बक्शीश सिंह के विचारों पर आधारित था। दल खालसा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिंसा के प्रयोग की वकालत करता है। इसके अनुसार एकमात्र आतंक ही हमें अपना उद्देश्य-प्राप्त कराने में सहायक होगा। 20वीं सदी केवल यही भाषा समझती है"। यू० के० स्थित दल खालसा के मुख्य पंच, जसवन्त सिंह ठेकेदार ने कहा कि "राजनीतिक शक्ति किसी व्यक्ति को कठौती में नहीं दी जाती, न ही यह "भक्ति" द्वारा प्राप्त की जा सकती है। गुरिल्ला युद्ध और सशस्त्र विद्रोह के बिना हमारे उद्देश्य की प्राप्ति असम्भव है। राजनीतिक शक्ति बन्दूक की नली से निकलती है। सशस्त्र युद्ध ही खालिस्तान प्राप्त करने का एकमात्र साधन है"। 29 सितम्बर, 1981 को इंडियन एयरलाइन्स के एक वायुयान का अपहरण करके लाहौर ले जाने और 26 अप्रैल, 1982 को अमृतसर में अपवित्रीकरण के कारनामों के लिए यह संगठन जिम्मेवार था। प्रतिकूल क्रियाकलापों के कारण इसे विधि विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के प्रावधानों के तहत 1 मई, 1982 को एक गैर कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया।

दल खालसा ने 4 जनवरी, 1983 को यू० के० में एक शाखा स्थापित की और पश्चिम जर्मनी में एक शाखा जून, 1983 में स्थापित की।

यू० के० स्थित दल खालसा और वैंकूवर स्थित बब्बर खालसा की लंदन में मई 1983 में हुई एक संयुक्त बैठक में उन्होंने शिरोमणि अकाली दल अमृतसर के नेताओं को सरकार के साथ बात करने के लिए उनकी रजामन्दी के कारण दोषी पाया तथा उनको यह चेतावनी दी कि यदि

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उन्होंने भारत सरकार के साथ कोई समझौता किया तो उनका भी वही हाल होगा, जो निरंकारियों का हुआ। कथित सुप्रीम काउंसिल आफ दल खालसा के सदस्य ठेकेदार और इसी संगठन की कथित सुप्रीम एग्जिक्युटिव काउंसिल के सदस्य देविन्दर सिंह परमार के नाम से 29 मई, 1983 को प्रचारित किए गए पैम्फलैट में भारतीय संविधान के बारे में बताया गया कि जहां तक सिखों का सम्बन्ध है यह एक बेकार दस्तावेज है और यह कहा गया कि दल खालसा इन्टरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस में भारत को चुनौती देना चाहता है और "सिख होमलैंड छोड़ने के लिए" भारत पर दबाव डलवाने के वास्ते संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता लेगा। 12 जून, 1983 को हुई सभा में श्री ठेकेदार ने लाला जगतनारायण और पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री अटवाल की हत्याओं के लिए दल खालसा के जिम्मेदार होने का दावा किया और इस बात के लिए चेतावनी दी कि अकाली मोर्चा के दौरान सिखों की मौत के लिए पुलिस अधिकारियों से इसी तरह बदला लेंगे। अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने हिंसा के प्रयोग की वकालत की और घोषणा की कि यह संगठन सिखों के लिए स्वतन्त्र राष्ट्र की स्थापना से कम किसी भी बात से सन्तुष्ट नहीं होगा। श्री ठेकेदार ने, पश्चिम जर्मनी के प्राधिकारियों द्वारा श्री तलविन्दर सिंह परमार की गिरफ्तारी पर, भारत सरकार को धमकी दी। जुलाई 1983 में साउथ हाल में हुई बैठक में, श्री ठेकेदार ने कहा कि दल खालसा, पंजाब में सशस्त्र संघर्ष के लिए तैयार हो रहा है और पंजाब के अनेक उच्च स्थानों पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने संगठन को अपना गुप्त समर्थन प्रकट किया है यहां तक कि सेना के अधिकारी भी विद्रोह में आगे आने के लिए तैयार हैं। तथाकथित "समाज के गद्दारों" को सजा देने की भी धमकी दी गई।

14 अगस्त, 1983 को दल खालसा द्वारा आयोजित "राजनीतिक शिक्षा शिविर'. (पालिटिकल एजुकेशन कैंप) में विदेशी राष्ट्रियता वाले कुछ सिखों को संबोधित करते हुए, श्री ठेकेदार ने घोषणा की कि संगठन छापामार संघर्ष शुरू करेगा। सितम्बर, 1983 के तीसरे सप्ताह में लंदन के दौरे के समय श्री सुर्जन सिंह गिल ने वैंकूवर में खालिस्तान के तथा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कथित कांसुल-जनरल ने दावा किया कि पाकिस्तान ने उनके संघर्ष में उन की सहायता करने का वचन दिया है और कि यदि एक बार खालिस्तान बन गया तो पाकिस्तान "ननकाना साहिब" को वही दर्जा देगा जो वेटिकन को दिया गया है। दल खालसा, स्पष्ट रूप से पाकिस्तान को, सामरिक महत्व के मित्र राष्ट्र के रूप में मानता है। नवम्बर 1983 के पहले सप्ताह में श्री ठेकेदार द्वारा पंजाबी में लिखी गई "खालसा राज" पुस्तक यू० के० में बिक्री के लिए जारी की गई। उसमें यह कहा गया है कि (1) खालसा राज की स्थापना के लिए दल खालसा वचनबद्ध है (2) सिखों में धार्मिक जागरूकता तैयार करने और संसार के उन अन्य समुदायों के साथ सहयोग करने के लिए योजना बनाई है, जो इसी प्रकार स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे हैं, और (3) कि एक नया संगठन "तख्त खालसा" बनाया जाएगा जिसका काम खालसा पंथ को स्वच्छ करना और स्वतन्त्रता के लिए सरकार के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। यह संघर्ष यहूदियों की तरह होगा। पुस्तक में यह भी उल्लेख किया गया है कि राजनीतिक शक्ति, केवल शारीरिक शक्ति, छापामार युद्ध और सशस्त्र विद्रोह से प्राप्त की जा सकेगी।

संगठन के कुछ सदस्यों ने ऐसे सिख युवक कार्यकर्ताओं का एक ग्रुप तैयार करने की इच्छा प्रकट की, जो आत्मघाती मिशनों को पूरा करने के इच्छुक हों।

अप्रैल, 1984 में, श्री मनमोहन सिंह बजाज, दल खालसा के मुख्य पंच, पश्चिम जर्मनी ने सर्वश्री हरबंस सिंह मनचंदा और विश्वनाथ तिवारी की हत्याओं को उचित बताया और दावा किया कि ये "गुरू साहब" के हुक्म पर की गई थीं। 11 जून, 1984 को यह घोषणा की गई कि इसने एक निर्वासित गुप्त सरकार की स्थापना कर ली है। श्री जसवंत सिंह ठेकेदार को रक्षा मंत्री कहा गया है जबकि श्री मनमोहन सिंह बजाज को गृह मंत्री। डा० हरजिन्दर सिंह दिलगिर को विदेश मंत्री कहा गया है जबकि गजिन्दर सिंह (हवाई जहाज का एक अपहरणकर्त्ता) को कृषि और उद्योग मंत्री कहा गया।

अखंड कीर्तनी जत्था मुख्य रूप से धार्मिक ग्रुप के रूप में शुरू हुआ,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

परन्तु यह अन्य सिख राजनीतिक, और उग्रवादी संगठनों, विशेषकर बब्बर खालसा की सहायता करता है। बीबी हरशरण कौर और फौजा सिंह की विधवा बीबी अमरजीत कौर, (फौजा सिंह अप्रैल 1978 में सिख-निरंकारी के बीच हुए झगड़े में मारा गया था), इस संगठन के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। इसका मत है कि सिख, तब तक अपनी शुद्धता को बनाए नहीं रख सकते, जब तक वे स्वतंत्र राज्य प्राप्त नहीं कर लेते। यू० के० और कनाडा में इसकी शाखाएं हैं।

बब्बर खालसा, अखण्ड कीर्तनी जत्थे की एक राजनीतिक शाखा है। बब्बर खालसा दल अपनी गतिविधियों के लिए यहूदियों के इस्राइल की स्थापना के संघर्ष, और कुर्द लोगों द्वारा अपनी राष्ट्रीय आजादी के लिए किए जा रहे संघर्ष को अपना आदर्श मानता है।

भारत में बब्बर खालसा की स्थापना सन् 1978 में हुई। कनाडा में इसकी शाखा सन् 1981 में खोली गई। विदेशों में इसकी यूनिटों के जत्थेदार श्री तलविन्दर सिंह परमार हैं। बब्बर खालसा, अमेरिका, ब्रिटेन, हालैंड और पश्चिम जर्मनी तक अपनी गतिविधियों को फैलाते की कोशिश कर रहा है।

बब्बर खालसा के अनुसार पाकिस्तान सिखों के लिए एक सहज और सांस्कृतिक पड़ोसी है, जो भारत सरकार के खिलाफ उनके आन्दोलन में मदद करने को तैयार है। बब्बर खालसा इस बात पर जोर देता है कि विदेशों में रह रहे सिख समुदाय के लोगों को 'खालिस्तान' की आजादी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

इस संगठन के सदस्य 'खालिस्तान मुक्ति सेना' बनाने के लिए और उनके स्वयंसेवकों को सशस्त्र प्रशिक्षण देने की जरूरत की बात कर रहे हैं।

फरवरी 1982 में, "वेंकूवर सन" में एक रिपोर्ट छपी थी, जो कनाडा में ब्रिटिश कोलम्बिया में सिख आतंकवादी तत्वों द्वारा सिखों की भर्ती करने और रोडशिया की लड़ाई के एक अ5भवी मर्सीनरी द्वारा इन सिख सिपाहियों को ट्रेनिंग दिलाने के बारे में थी। इस समाचार में जोहन वैडरहर्स्ट नाम के व्यक्ति द्वारा दिए गये एक विज्ञापन का हवाला दिया हुआ था जिसमें सेना का अनुभव रखने वाले युवा स्वयंसेवकों को यू० एस० डालर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

1,250 के मासिक वेतन पर भर्ती होने की पेशकश की गई थी। जोहन वेंडरहर्स्ट ने समाचार पत्र के संवाददाता को बताया कि कुछ भारतीयों ने सेना का अनुभव वाले व्यक्तियों का एक दल गठित करने के लिए उसे रखा है ताकि वह ब्रिटिश कोलम्बिया में सिखों को अग्नि-अस्त्रों और युद्ध कला की ट्रेनिंग दे। खबर में उसने यह दावा किया था कि प्रशिक्षण का उद्देश्य सिखों को पंजाब पर कब्जा करने में उनकी मदद करना है।

20 मई 1983 को लन्दन के 'देश-परदेश' को दिए गये साक्षात्कार में श्री तलविन्दर सिंह परमार ने दावा किया कि बब्बर खालसा, पंजाब में लाला जगत नारायण, निरंकारियों तथा अन्य लोगों की हत्याएं करने के लिये जिम्मेदार है और रेल लाइनों की तोड़-फोड़ की घटनाओं के लिए अखिल भारतीय सिख छात्र संघ जिम्मेदार है।

फरवरी 1984 में श्री सुरजनसिंह गिल ने पंजाब के सिक्ख नेताओं को एक खुला पत्र लिखा। इस पत्र में आग्रह किया गया था कि वह लोग सिक्ख कौम के मूल लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अर्थात् स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना के लिये कार्रवाई शुरू करें। उसने राय दी कि पंजाब में स्थिति को बदलने के लिये आत्मघाती दस्तों (सुसाइडस्क्वैड) के प्रयोग का यह सही समय है और साथ ही यह भी चेतावनी दी कि कौम उस नेता को माफ नहीं करेगी, जो इस नाजुक समय में कोई कमजोरी दिखलायेगा।

इसके बाद मई 1984 में हुई बैठक में जो इंग्लैंड में सम्पन्न हुई थी, सिक्खों द्वारा एयरइण्डिया उड़ानों का बहिष्कार करने के विषय में विचार किया गया और एक संकल्प पारित किया गया कि एक समिति बनाई जाये जो एयरपोर्टों पर आकर सिक्खों से 'एयरइंडिया' से यात्रा न करने का अनुरोध करे।

जत्थेदार गुरमंजसिंह ने इस बैठक में यह भी चेतावनी दी कि उन सिक्ख यात्रियों और इंगलिशस्तान में काम कर रहे सिक्ख यात्रा-एजेंटों के नाम जो समिति को सहमति नहीं देते, पंजाब और नई दिल्ली में बब्बर खालसा को भेज दिये जायें, ताकि उन्हें कत्ल करवा दिया जाये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बैठकें

केन्द्र सरकार ने अपनी ओर से अकालियों की मांगों पर विचार करने और उनके औचित्य को परखने के लिये बराबर बैठकें कीं। इनमें शीर्षस्थ अकाली नेताओं के साथ-साथ शीर्षस्थ केन्द्र के लोगों ने भी भाग लिया। इन बैठकों में हमेशा सहानुभूतिपूर्वक रुख अपनाया गया। हर बार शिरोमणि अकाली दल के शीर्षस्थ नेता नया अड़ंगा डाल दिया करते थे। इस कारण बैठकों में निष्कर्ष हाथ न आ पाते थे।

केन्द्र ने सन 1981 से ही अकालियों के साथ समझौता-वार्ता शुरू कर दी थी, पर हर बार अकाली आपस में ही एकमत न हो पाते थे।

सन् 1981 से लेकर अब तक की बैठकों का विवरण इस प्रकार है।

प्रधान मंत्री द्वारा जो बैठकें की गईं उनका विवरण इस प्रकार है।

16-10-1981 को साउथ ब्लाक, नई दिल्ली में हुई। सर्वश्री एच. एस. लोंगोवाल, जी. एस. टोहरा, पी. एस.

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बादल, एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह, श्रीमती इन्दिरा गांधी, सी. आर. कृष्णास्वामी राव साहिब, मंत्रिमंडल सचिव पी. सी. ऐलिग्जेंडर (प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव), टी. एन. चतुर्वेदी गृह सचिव ने भाग लिया।

26-11-81 को संसद भवन नई दिल्ली में हुई। सर्वश्री एच. एस. लोंगोवाल, जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह, श्रीमती इन्दिरा गांधी, पी. वी. नरसिंह राव, (केन्द्रीय मन्त्री) सी. आर. कृष्णास्वामी राव साहिब, पी.सी. ऐलिग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी ने हिस्सा लिया।

5-4-82 को संसद भवन, नई दिल्ली में हुई। सर्वश्री एच. एस. लोंगोवाल, जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, बलवंत सिंह, भान सिंह, आर. एस. भाटिया, पी. एस. ओबेराय, रवि इन्दर सिंह, श्रीमती इन्दिरा गांधी, जैलसिंह, प्रणव मुखर्जी, (केन्द्रीय मंत्रीगण) सी. आर. कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलिग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी ने विचार-विमर्श किया।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्यों द्वारा भी बैठकें की गईं। उनका विवरण इस प्रकार है :

23-10-1981, 24-10-1981 को विदेश मंत्री का कार्यालय, नई दिल्ली में हुई। सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह, अजीत सिंह सरहदी, भान सिंह, पी. वी. नरसिंह राव ने भाग लिया।

11-1-1983, 18-1-1983 को राज भवन, चंडीगढ़ में हुई। इसमें सर्वश्री एस. एस. बरनाला, सुखजिन्दर सिंह, बलवंत सिंह, जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, जे. एस. तलवंडी, रवि इन्दर सिंह, पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमण, शिवशंकर (केन्द्रीय मंत्रीगण) टी. एन. चतुर्वेदी ने विचार-विमर्श किया।

कुछ गुप्त बैठकें भी हुईं। उनका विवरण इस प्रकार है :

16-11-1982, 17-11-1982 को 27, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली में सर्वश्री पी. एस. बादल, बलवंत सिंह, रवि इन्दर सिंह, आर. एस. भाटिया, आर. वेंकटरामन, पी. सी. सेठी, शिवशंकर,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

(केन्द्रीय मंत्रीगण) अमरेन्द्र सिंह, संसद सदस्य, पी. सी. एलिग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी ने भाग लिया।

17-1-1983 को 27, सफ़दरजंग रोड, नई दिल्ली में सर्वश्री जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, रवि इन्दर सिंह, राजीव गांधी, संसद सदस्य सी.आर. कृष्णास्वामी, राव साहिब, पी.सी. एलिग्जेंडर ने विचार-विमर्श किया।

24-1-1984 को नई दिल्ली में एक गेस्ट हाऊस में सर्वश्री जी. एस. टोहरा पी. एस. बादल, रवि इन्दर सिंह, राजीव गांधी, संसद सदस्य अमरेन्द्र सिंह, संसद सदस्य सी. आर. कृष्णस्वामी, राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर ने भाग लिया।

27-3-1984 को चंडीगढ़ में एक प्राइवेट मकान में, सर्वश्री जी. एस. टोहरा एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह, रामूवालिया, आर. एस. चीमा, पी. वी. नरसिंहराव, सी. आर. कृष्णस्वामी, राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, एम. एम. के वली, गृह सचिव ने बातें कीं।

28-3-1984 को नई दिल्ली में एक गेस्ट हाउस में सर्वश्री पी. एस. बादल, पी. वी. नरसिंह राव, सी. आर. कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, एम. एम. के. वली ने भाग लिया।

29-3-1984 को चंडीगढ़ में एक प्राइवेट मकान में सर्वश्री जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह रामूवालिया, आर. एस. चीमा, पी. वी. नरसिंह राव, सी. आर. कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, एम. एम. के. वली, प्रेम कुमार (विशेष सचिव, गृह) ने भाग लिया।

21-4-1984 को हवाई अड्डा विश्राम कक्ष, चंडीगढ़ में सर्वश्री जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह रामूवालिया, आर. एस. चीमा, पी. वी. नरसिंह राव, प्रणव मुकर्जी, सी. आर. कृष्णस्वामी राव साहिब पी. सी. एलेग्जेंडर, एम. एम. के वली, प्रेम कुमार उपस्थित थे।

26-5-1984 को नई दिल्ली में एक गेस्ट हाऊस में सर्वश्री जी. एस. टोहरा,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पी. एस. बादल, एस. एस. बरनाला, पी. वी. नरसिंह राव, प्रणव मुकर्जी, शिवशंकर ने भाग लिया।

कुछ त्रिपक्षीय बैठकें भी हुईं।

24-1-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवंत सिंह, रबि इन्दर सिंह, रामविलास पासवान, के. पी. उन्नीकृष्णन, एच. एस. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, सी. टी. दण्डपानी, मधु दण्डवते, चंद्रजीत यादव, रामलाल राही, इब्राहीम,, सुलेमान सेट, भाई महावीर, सरूप सिंह, गुलाम रसूल कोचक (विपक्षी नेता) पी. सी. सेठी, आर. वेंकट रमन, पी. वी. नरसिंह राव, सी. एम. स्टीफन, शिवशंकर, भीष्म नारायण सिंह। कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी, पी. पी. नय्यर, (विशेष सचिव गृह) एम. जी. पाध्ये, (सचिव सिंचाई) ने भाग लिया।

25-1-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. वरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, रामविलास पासवान, के. पी. उन्नीकृष्णन, एच. एस. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, सी. टी. दण्डपानी, चंद्रजीत यादव, मधु दण्डवते, रामलाल राही, क्यू. एम. बतानवाला, भाई महावीर, सरूपसिंह, गुलाम रसूल कोचक (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमन, सी. एम. स्टीफन, शिवशंकर, भीष्म नारायण सिंह, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी, एम. जी. पाध्ये, के बीच सम्पन्न हुई।

8-2-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, सुशीलचन्द मोहन्ता, योगेन्द्र शर्मा, भाई महावीर, एल. के. अडवाणी, सरूप सिंह, मधु दण्डवते, गुलाम रसूल कोचक, एच. एस. सुरजीत, चन्द्रजीत यादव, हरिकेश बहादुर (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमन, पी. वी. नरसिंह राव, शिवशंकर, बूटा सिंह भीष्म नारायण सिंह, कृष्णास्वामी, राव साहिब, पी. सी.

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

एलेग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी, एम. जी पाध्ये ने भाग लिया।

10-2-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, सुशील चन्द मोहन्ता, योगेन्द्र शर्मा, एल. के. अडवाणी, सरूप सिंह, मधु दण्डवते, एच. एस. सुरजीत, चन्द्रजीत यादव, हरिकेश बहादुर, श्रीमति एस. मुथु (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमन, शिवशंकर, बूटा सिंह, भीष्म नारायण सिंह, सर्वश्री कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंडर, टी. एन. चतुर्वेदी, एम. जी. पाध्ये उपस्थित थे।

15-2-83 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, सुशील चन्द्र मोहन्ता, के. पी. उन्नीकृष्णन, एच. एस. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, चन्द्रजीत यादव, मधु दण्डवते, हरिकेश बहादुर, एल. के. अडवाणी, सरूप सिंह, गुलाम रसूल कोचक (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमन, पी. वी. नरसिंह रांव, बूटा सिंह, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेण्डर, टी. एन. चतुर्वेदी, पी. पी. नय्यर, एम. जी. पाध्ये ने भाग लिया।

18-2-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, चित्त बसु, के. पी. उन्नीकृष्णन एच. एस. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, मधु दण्डवते, चन्द्रजीत यादव, हरिकेश बहादुर, एल. के. अडवाणी, सरूप सिंह, (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकटरमन, शिवशंकर, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंण्डर, टी. एन. चतुर्वेदी, एम. जी. पाध्ये उपस्थित थे।

19-2-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एच. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, के. पी. उन्नीकृष्णन, एच. एम. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, चन्द्रजीत यादव, चित्त बसु, मधु दण्डवते, सुशील चन्द मोहन्ता, हरिकेश बहादुर, एल. के. अडवाणी सरूप सिंह (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, आर. वेंकट-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रमन, शिवशंकर, बूटा सिंह, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंण्डर, टी. एन. चतुर्वेदी, एम. जी. पाध्ये, पी. पी. नय्यर ने विचार विमर्श किया।

20-2-1983 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, बलवन्त सिंह, रवि इन्दर सिंह, के. पी. उन्नीकृष्णन, एच. एस. सुरजीत, योगेन्द्र शर्मा, चन्द्रजीत यादव, मधु दण्डवते, सरूप सिंह, चित्त बसु, सुशील चन्द मोहन्ता, हरिकेश बहादुर, एल. के. अडवाणी (विपक्षी नेता)। पी. सी. सेठी, प्रणव मुखर्जी, बूटा सिंह, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेण्डर, टी. एन. चतूर्वेदी, एम. जी. पाध्ये, पी. पी. नय्यर उपस्थित थे।

14-2-1984 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, जी. एस. टोहरा, पी. एस. बादल, बलवन्त सिंह, आर. एस. चीमा, जगजीवन राम, ए. बी. बाजपेयी, एल. के. अडवाणी, चन्द्र शेखर, बीजू पटनायक, एस. सी. मोहन्ता, मधु दण्डवते, एस. एन. मिश्रा, सरूप सिंह, एच. एस. सुरजीत, चन्द्रजीत यादव, लोक नाथ जोशी, धर्मवीर सिन्हा, गुलाम रसूल कोचक, चित्त बसु (विपक्षी नेता), पी. सी. सेठी, प्रणव नुखर्जी, शिव शंकर, बूटा सिंह: कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंण्डर, टी. एन. चतुर्वेदी, पी. पी. नय्यर, प्रेम कुमार, उपस्थित थे।

15-2-1984 को संसदीय सौंध, नई दिल्ली में सर्वश्री एस. एस. बरनाला, जी. एस. टोहरा, पी. एस बादल, बलवन्त सिंह, आर. एस. चीमा, जगजीवन राम, एल. के. अडवाणी, चन्द्र शेखर, बीजू पटनायक, मधु दण्डवते, एस. सी. मोहन्ता, एस. एन. मिश्रा, सरूप सिंह, एच. एस. सुरजीत, समर मुखर्जी, लोक नाथ जोशी, धर्मवीर सिन्हा, गुलाम रसूल कोचक, इन्द्रदीप सिन्हा, चित्त बसु, पी. सी. सेठी, पी. वी. नरसिंह राव, प्रणब मुखर्जी, बूटा सिंह, शिव शंकर, कृष्णस्वामी राव साहिब, पी. सी. एलेग्जेंण्डर, टी. एन. चतुर्वेदी, पी. पी. नय्यर, प्रेम कुमार

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मौजूद थे।

इन बैठकों के बावजूद कोई एकमत समझौता न हो सका। आनन्दपुर-साहिब के प्रस्तावों में भी शिरोमणि अकाली दल ने संशोधन कर दिया।

अपनी मांगों में भी वह परिवर्तन ले आये। इस प्रकार केन्द्र सरकार के सामने हर बार एक समस्या आ जाती थी कि समझौता किस प्रकार हो? महाराष्ट्र सूबे के निर्माण को लेकर, तमिलनाडु के सूबे के निर्माण को लेकर चलने वाले आंदोलनों से सरकार परिचित थी। महाराष्ट्र और तमिलनाडु की तरह 'पंजाबी सूबा' की मांग स्वीकार कर लेने में केन्द्र को आपत्ति न थी, पर कुछ शीर्षस्थ नेताओं का रवैया बड़ा ही संदेहास्पद था। उनके बार-बार बदलने वाले विचारों से ऐसा लगता था, मानो वह नहीं; कोई और विदेशी शक्ति उनके पीछे से बोल रही है।

गुप्त बैठकों में कई बार ऐसी बातें उभरकर आईं, जिनका उल्लेख करना सार्वजनिक हित में अच्छा नहीं है। इस कारण भी समझौता न हो पा रहा था।

बराबर तनाव बढ़ता गया।

इस तनाव के साथ-साथ हिंसात्मक घटनाओं का सिलसिला भी शुरू हो गया और देश में आतंकवाद बढ़ने लगा। पंजाब का सारा व्यापार, अर्थव्यवस्था को गहरा आघात लगने लगा। देखते-देखते आग भड़कती ही गयी। केन्द्र सरकार के सारे प्रयास विफल होते गये कि शांतिपूर्ण समझौता हो सके।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाली दल का रुख

शिरोमणि अकाली दल ने अपना गठन केवल सिक्ख-सम्प्रदाय के लिये किया था। अतएव साम्प्रदायिकता, जातीयता और क्षेत्रीय हित उसका मुख्य लक्ष्य हो गया। राष्ट्रीयता और देश की अखंडता तथा अन्य सम्प्रदायों या धर्मों की ओर उसका बिलकुल ध्यान न गया। उसने अपने आपको एकमात्र सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ धर्म-सम्प्रदाय मानकर आंदोलन छेड़ दिया था। अपने मुकाबले किसी धर्म या सम्प्रदाय को कुछ न समझने की भावना का तेजी से विकास किया गया और धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर एक बहादुर कर्मठ कौम को प्रभावित कर राजनीति के क्षेत्र में अपनी रोटियां सेंकना शुरू कर दीं। राजनीति में दबाव और धमकी से काम लेना शुरू कर दिया। आतंकवाद के बीज अकाली दल में शुरू से रहे हैं। भारत की सीमा से लगे इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर उसका प्रभाव होने के कारण विदेशी छायाओं का उसके साथ लग जाना आश्चर्य की बात न थी। विदेशों से मिलने वाले प्रोत्साहन के कारण इस दल ने अपनी जड़ें मजबूत करना शुरू कर दीं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

गुरुद्वारों को राजनैतिक हलचल का केन्द्र बनाकर, वहीं से अपनी गतिविधियों का संचालन कर अकाली दल ने धार्मिक भावनाओं को अपनी ताकत बनाकर सौदेबाजी शुरू कर दी। गुरुद्वारों में चढ़ावे के रूप में आने वाला लाखों रुपया तथा गोपनीय विदेशी सहायता के बल पर वह दृढ़, मजबूत बनता गया। धर्म के नाम पर आया धन राजनीति के खेल में लगाया जाने लगा।

सितम्बर, 1981 में सर्वप्रथम अकाली दल ने केन्द्र सरकार पर निम्न-लिखित आरोप लगाये।

1. सिखों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप।
2. पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारों के प्रम्बन्ध पर सिखों के नियन्त्रण के लिए सरकार द्वारा कोई प्रयत्न नहीं किया जाना।
3. विदेशों में तथा भारत के अन्य राज्यों में बसे हुए सिखों के जान-माल की सुरक्षा के प्रति उदासीनता।
4. 1971 में दिल्ली गुरुद्वारों पर दबरदस्ती कब्जा किया जाना।
5. हरियाणा में गुरुद्वारों पर अधिकतम भूमि सीमा अधिनियम लागू किया जाना।
6. किसी ट्रेन का नाम गोल्डन टेम्पल एक्प्रेस रखने में असफल होना जबकि 15 ट्रेनों का नाम अन्य धार्मिक स्थानों के नाम पर रखा गया है।
7. अमृतसर को पवित्र शहर का दर्जा देने में विलम्ब।
8. स्वर्णमंदिर में ट्रांसमीटर लगाने की अनुमति न देना।
9. अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम का न बनाया जाना।
10. शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सिखों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में मान्यता न दिया जाना।
11. पाकिस्तान में तीर्थ-यात्रियों को भेजने के क्षेत्र में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्राधिकार को हड़पना।
12. सिख सिद्धांतों में हस्तक्षेप और सिख परम्पराओं की पवित्रता का उल्लंघन।
13. पुलिस की सहायता से दिल्ली गुरुद्वारों पर गैर-कानूनी और जबर-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

दस्ती कब्जा।

14. सिखों द्वारा राष्ट्रीय विमान सेवाओं में कृपाण (तलवार) साथ रखने पर प्रतिबंध।

☐

1. एक स्वायत क्षेत्र के लिए सिखों को दिए गए आश्वासन का उल्लंघन और इसके बजाय सिखों को अपराधी घोषित करना।
2. "पंजाबी सूबा" नारे पर प्रतिबंध लगाना।
3. चंडीगढ़ तथा अन्य पंजाबी भाषी क्षेत्रों को पंजाब से बाहर रखना और वाटर-हेड वक्स नदी-जल वितरण का नियंत्रण छीन लेना।
4. राज्य को आन्तरिक स्वायत्तता प्रदान करने से इन्कार करना।
5. अकाली सरकारों को गैर-कानूनी भ्रष्ट तरीके से गिराना।
6. पड़ोसी राज्यों में पँजाबी को दूसरी भाषा का दर्जा देने से इन्कार करना।
7. पंजाबियों पर विश्वास की कमी व्यक्त करना और लाइसेंस शुदा शस्त्र वापस लेकर उन्हें नि:शस्त्र करना।
8. आनंदपुर साहिब संकल्प को अस्वीकार करना और साम्प्रदायिक तनाव पैदा करके फूट डालो और राज करो की नीति अपनाना।

☐

1. में सिखों की भर्ती 20% से घटाकर 2% करना।
2. पंजाब और सिंध बैंक का राष्ट्रीयकरण करना।
3. अमृतसर में ड्राई-पोर्ट स्थापित करने में असफलता।
4. पंजाब को कम से कम केन्द्रीय सहायता मंजूर किया जाना।
5. 5 प्रतिशत लोगों के हाथों में आर्थिक शक्ति का केन्द्रीयकरण।
6. पंजाब का आर्थिक शोषण।
7. मूल्यों में वृद्धि होना।
8. पंजाब में भारी-उद्योगों की कमी।
9. उत्तरप्रदेश से पंजाबी किसानों को बेदखली।
10. 7 हेक्टेयर की अधिकतम भूमि सीमा निर्धारित करना, किंतु शहरी सम्पत्ति की कोई सीमा निर्धारित न करना।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

11. पंजाब में सामूहिक बीमा योजना लागू न करना।
12. किसानों को ऋण उद्योगपतियों को दरों पर देने से इन्कार करना।
13. कृषि उत्पादों के लिए अलाभकारी-मूल्य।
14. कृषि उत्पादों को सस्ते भावों पर खरीदना, परन्तु उन्हें उपभोक्ताओं को ऊंचे मूल्यों पर बेचना।
15. हरिजनों और अन्य कमजोर वर्गों के अधिकारों को संरक्षण प्रदान करने में असफलता।
16. पंजाब में भारत-पाकिस्तान युद्धों के पीड़ितों को मुआवजे का भुगतान न करना।
17. बेरोजगारी भत्ते की अदायगी न करना।
18. उत्पादन को मूल्य सूचकांक से जोड़ना।
19. रोजगार बीमा स्कीम के अधीन किसानों और कामगारों को सुविधाएं प्रदान करने से इंकार करना।
20. शहरी कृषि भूमि को सस्ते दामों पर जबर्दस्ती अधिग्रहण करना।
21. निगम सीमाओं के 5 कि० मी० अर्धव्यास के भीतर ग्रामीण भूमि की बिक्री पर प्रतिबंध।

□

1. सिख पर्सनल लॉ को मान्यता न देना।
2. फिल्मों और टी० वी० आदि में सिखों को अनुचित ढंग से प्रदर्शित करना, सिख-विरोधी साहित्य को बढ़ावा देना ऑल रेडियो/टी० वी० पर सिख साहित्य के प्रकरण के लिए पर्याप्त समय न देना।

उपरोक्त मांगें पेश करने के बाद अकाली दल ने अक्तूबर 1981 में फिर 15 मांगों की संशोधित सूची पेश कर दी। उसने निम्नलिखित मांगें केन्द्र सरकार के सामने प्रस्तुत कर उनकी पूर्ति के लिये दबाव डालना शुरू कर दिया।

1. संत जरनैल सिंह भिण्डरांवाले की बिना शर्त रिहाई और दिल्ली रैली (सितम्बर, 7), चौक मेहता और चंदो कलां के बारे में पुलिस कार्रवाई की न्यायिक जांच।
2. दिल्ली गुरुद्वारों के प्रबंध में सरकार की कथित मनमानी को हटाना,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

"सरकार के हाथ में कठपुतली बने व्यक्ति" द्वारा किये गये बलात् नियंत्रण को हटाने के बाद लोकतांत्रिक चुनाव करना।

3. तीर्थ-यात्री दलों को पाकिस्तान भेजने और स्थानीय सिख पवित्र स्थानों के रख-रखाव के लिए सेवादार रखने के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकार को बहाल करना।
4. विमान से यात्रा करने वाले सिखों को देशीय और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों में कृपाण धारण करने की अनुमति।
5. एक अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम पारित किया जाना चाहिये।
6. हरिद्वार, कुरुक्षेत्र और काशी की तरह अमृतसर को पवित्र शहर की हैसियत प्रदान करना।
7. कीर्तन प्रसारित करने के लिए स्वर्ण मंदिर, अमृतसर में "हरिमंदिर रेडियो" की स्थापना।
8. फ्लाइंग मेल का नाम बदल कर हरिमंदिर एक्सप्रेस रखना।
9. आनंदपुर साहिब साहिब संकल्प के अनुसार शिरोमणि अकाली दल को इस बात का पूरा विश्वास है कि राज्यों की प्रगति से केंद्र समृद्ध होगा, जिसके लिए राज्यों को और अधिक अधिकार और प्रांतीय स्वायत्तता प्रदान करने के वास्ते संविधान में उपयुक्त संशोधन किये जाने चाहिये। केंद्र के पास विदेशी मामले, रक्षा, मुद्रा और संचार (परिवहन के साधनों सहित) होने चाहिये और बाकी विषय राज्यों के पास होने चाहिये। इसके अतिरिक्त, सिखों को एक राष्ट्र के रूप में विशेष अधिकार प्राप्त होने चाहिये।
10. पंजाबी भाषी क्षेत्रों और चण्डीगढ़ को पंजाब में मिलाना।
11. राज्य में डैमों और हेडवर्क्स को पंजाब को सौंपना और नदी जल का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार फिर से वितरण।
12. पंजाबी भाषा को हरियाणा, दिल्ली, हिमांचल प्रदेश और राजस्थान में दूसरी भाषा का दर्जा देना।
13. उत्तरप्रदेश के तराई क्षेत्र से पंजाबी किसानों के उखाड़े जाने को रोकना।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

14. अमृतसर में एक ड्राई पोर्ट स्थापित करना।

15. पंजाब सिंध बैंक के बदले में एक नये बैंक का लाइसेंस मंजूर किया जाना चाहिये, जो सिखों के नियंत्रण में होना चाहिये और कृषि उत्पाद की, इसे औद्योगिक उत्पादन के इन्डेक्स से जोड़ते हुए, लाभकारी कीमतें निश्चित की जानी चाहिए।

आनंदपुर साहिब के संकल्पों के उपरांत और इस प्रकार रखी गई 15 मांगों को देखकर न केवल केंद्र सरकार का वरन् विभिन्न धर्मावलम्बियों का चौंक जाना स्वाभाविक था। सिक्ख सम्प्रदाय भारत का एक अविभाज्य अंग रहा है। पवित्र गुरु-ग्रंथ साहिब इस देश के बहुसंख्यक हिंदू सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रंथों का सुंदर निचोड़ है। इसी बहुसंख्यक सम्प्रदाय की एक शाखा के रूप में पनपे इस सम्प्रदाय का इस प्रकार कट्टर मांगों का पेश करना सबको नागवार लगा। प्रश्न उठने लगा, क्या एकमात्र सिक्ख सम्प्रदाय का धर्म ही सर्वोपरि है? क्या मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघरों का कोई महत्त्व नहीं है? हरमंदिर साहिब में ट्रांसमीटर लगाना, रेडियो हरमंदिर साहिब की स्थापना करना, सिक्ख धर्म मानने वालों को विशेष सुविधा देना आखिर क्यों? उनसे अधिक प्राचीन धर्म को मानने वाले तथा उनसे अधिक बहुसंख्यक हिंदू-सम्प्रदाय ने कभी इस प्रकार की मांगें पेश नहीं कीं! इस देश में बसे मुसलमान भी यहां के नागरिक हैं। उन्होंने भी कभी नहीं मांग की रेडियो या ट्रांसमीटर मस्जिदों में लगाया जाये। हिंदुओं ने न वेदपाठ की मांग की और न मुसलमानों ने कुरान की।

क्या एकमात्र सिक्ख धर्म ही सर्वोपरि हो गया है?

क्या अन्य धर्म इसके आगे हीन या कमजोर हैं?

क्या सिक्ख ही अपने को सब कुछ समझते हैं?

इतना ही नहीं, उनकी इस प्रकार की मांगें न मानी जायें तो 'पंजाब बंद' का आंदोलन, तोड़-फोड़ और हिंसा!

यह कौन-सा तुक है?

सारे देश में रोष की लहर फैल गई। स्पष्ट रूप से लग रहा था कि अलगाववादी शक्तियां सक्रिय हो गई हैं। सिक्खों और अन्य सम्प्रदायों के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मध्य कटुता उत्पन्न करने का षडयंत्र प्रारंभ हो गया है। आखिर किस आधार या बल पर सिक्खों को इतनी सुविधाएं चाहिए। अन्य सम्प्रदायों का तब क्या होगा? अतएव केंद्र सरकार का सहमत न होना सर्वथा उचित और स्वाभाविक था। भारत के प्रजातंत्रीय संविधान में सभी सम्प्रदाय और धर्म एक बराबर हैं। भारत हमेशा से विभिन्न धर्मों-सम्प्रदायों का एक खूबसूरत गुलदस्ता रहा है। अतएव किसी धर्म या सम्प्रदाय विशेष को विशिष्ट सुविधाएं देने का आधार क्या है? क्यों? किसलिये दी जायें? इन सवालों पर अकाली दल ने कभी गौर नहीं किया। अपने को सबका सिरमौर मानने की ठान ली और बदले में कृपाणें चमकाने लगे। अतएव स्पष्ट हो गया कि इस धार्मिक भावना के पीछे देश का विघटन करने वाली अलगाववादी शक्तियां हैं! यह शक्तियां इस बहादुर पर भोली-भाली कौम को गुमराह कर अपना स्वार्थ साधन करना चाहती है। भारत की प्रगति, शक्ति और अखंडता को फूटी आंखों न देख सकने वाले स्वार्थी तत्त्वों का पीछे हाथ है।

आनंदपुर साहिब संकल्प हो या अकाली दल की मांगें, सबका अध्ययन इस बात को एकदम प्रमाणित कर रहा है कि वास्तविकता यही है। आखिर इस तरह की मांगें पेश करने का आशय क्या है? क्या यह परोक्ष रूप से पृथकतावाद की ओर बढ़ाया गया कदम नहीं है?

सिक्ख सम्प्रदाय के नाम पर अकाली दल ने अपना रंग दिखलाना शुरू कर दिया। अन्य सम्प्रदायों के साथ मेल-मिलाप की भावना में अपनी मांगें पेश कर, उनके प्रति हठधर्मिता दिखलाकर दरार डालना शुरू कर दी। क्रमशः यह दरार चौड़ी होती गयी।

न केवल केंद्रीय सरकार ने वरन् गण्यमान्य राज नेताओं ने भी प्रयास किये पर अकाली दल का रहस्य कुछ और ही था। अपने धर्म, अपनी राजनीति को, अपने गुरुद्वारों को सर्वोपरि बनाने की हठवादिता से बेतरह चिपके अकाली दल का नेतृत्व अलगाववादी, पाश्चात्य शक्तियों के इशारे पर आतंकवाद को जन्म देने लगा।

वैसे पंजाब में पिछले तीन वर्षों के दौरान लगातार अनेक आन्दोलन होते रहे हैं। वहां स्पष्ट रूप से चार प्रकार के तत्व सक्रिय थे। कभी-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कभी ऐसा लगता था कि इनमें परस्पर कोई संबंध नहीं है पर आखिर में यह स्पष्ट हो गया कि ये एक ही ताने-बाने के हिस्से थे। इससे हिंसा और आतंक का ऐसा दौर शुरू हो गया, जिससे न केवल पंजाब बल्कि सारे देश की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिरता को खतरा पैदा हो गया था। मुख्य रूप से यह तत्व इस प्रकार थे।

1. शिरोमणि अकाली दल द्वारा उन कुछ मांगों के समर्थन में चलाया गया आन्दोलन, जो सरकार को पेश की गईं थीं और जिनके बारे में बातचीत चल रही थी ;
2. एक जबरदस्त साम्प्रदायिक और उग्रवादी आन्दोलन जिसमें खुलेआम हिंसा की वकालत की जाने लगी और बेकसूर एवं असहाय नागरिकों के विरुद्ध तथा राज्य के खिलाफ जघन्य अपराध शुरू हो गए :
3. बाहरी समर्थन से सिखों के लिए एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना के घोषित उद्देश्य से चलाई जा रही पृथकतावादी और राष्ट्रविरोधी गतिविधियां शुरू हो गयीं।
4. इनमें अपराधियों, तस्करों, अन्य समाज विरोधी तत्वों तथा नक्सलवादियों का शामिल होना, जिन्होंने स्वार्थ की पूर्ति के लिए स्थिति का नाजायज फायदा उठाना शुरू कर दिया।

एक पृथक सिख राज्य की मांग को विदेशों में रहने वाले सिख समुदाय के कुछ सदस्यों ने सैद्धान्तिक आधार दिया। श्री अमरीक सिंह, श्री जरनैल सिंह भिंडरांवाले और कुछ अन्य लोगों के भड़काने वाले बयानों ने भारत में पृथकतावादी गतिविधियों की आग में घी डालने का काम किया। हालांकि अकाली दल के नेताओं ने अलगाववादी किस्म की कोई विशिष्ट मांग पेश नहीं की तो भी सिख अलगाववाद के बारे में उनकी अस्पष्ट बातों से तोड़-फोड़ करने वाली तथा राष्ट्रविरोधी ताकतों को इस जानकारी के साथ काम करने के लिए एक सम्मानजनक आड़ मिल गई थी कि उन्हें राजनीतिक दृष्टि से अस्वीकार नहीं किया जाएगा। उनके अस्पष्ट विचारों तथा उनके द्वारा कभी-कभी पृथकतावादी आन्दोलन की संकल्पना और शब्दावली के प्रयोग के कारण राज्य में राजनीतिक भ्रांति की स्थिति पैदा हो गई। स्वयं अकाली दल अपने बारे में स्पष्ट

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नहीं था।

पृथक्तावादी और आतंकवादी ग्रूपों ने जो तरीके अपना रखे थे, वह थे — सिखों और हिन्दुओं के बीच कटुता तथा नफरत पैदा करने के लिए क्रम-बद्ध अभियान, गुरमत कैंपों के बहाने पृथकतावादी विचारधारा उत्पन्न करना, आधुनिक हथियारों का प्रशिक्षण पंजाब की पुलिस तथा प्रशासन में विशिष्ट लक्ष्यों के खिलाफ आतंक का उपयोग; जो असहमत हों, उनकी "हिट लिस्ट" तैयार करना और उनकी हत्याएं कराना, आतंक फैलाने तथा साम्प्रदायिक हिंसा उकसाने के उद्देश्य से समुदाय के विशेष लोगों की हत्याएं कराना, पूजास्थलों पर हथियार, गोलाबारूद के भंडार जमा करना, हथियार, गोलाबारूद प्राप्त करने तथा बैंकों, हीरे-जवाहरात की दुकानों तथा घरों को लूटने के लिए तस्करों और समाजविरोधी तत्त्वों का इस्तेमाल करना और गुप्त रूप से तथा खुले तौर पर बाहरी स्रोतों से समर्थन प्राप्त करना, यह सब उन्होंने स्वर्ण मंदिर के पवित्र परिसर, पंजाब तथा अन्य जगहों पर स्थित अन्य गुरुद्वारों में रहकर किया। सिख समुदाय की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए गुरुद्वारों में पुलिस बल भेजने की सरकार की इच्छा न होने का पूरी तरह नाजायज फायदा उठाया गया।

इन तत्वों ने हत्या, तोड़-फोड़, आगजनी और लूटपाट का निदेश देकर और ऐसे कार्य करके पवित्र पूजा स्थलों का दुरुपयोग किया। उनकी कार्रवाइयों से पंजाब में अव्यवस्था व अराजकता फैल गई, जिसके कारण कानून का पालन करने वाले लोगों के मन में भारी असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो गई। विभिन्न समुदायों के बीच फूट पड़ जाने का खतरा सचमुच पैदा हो गया था। विद्रोह की स्थिति तेजी से पैदा होती जा रही थी जिससे देश की एकता तथा प्रादेशिक अखंडता को गंभीर खतरा पैदा हो गया था।

पंजाब की समस्या का मूल अकाली दल द्वारा 1981 में पेश की गई मांगें नहीं, बल्कि विदेशों में कार्य कर रहे थोड़े से ग्रुपों के सक्रिय समर्थन से पृथकतावादी तथा राष्ट्र विरोधी आन्दोलन का बल पकड़ना था। अकाली दल के नेताओं के हाथ से आन्दोलन की बागडोर छूट गई। सर-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कार द्वारा पेश किए गए किसी तर्क-संगत प्रस्ताव के आधार पर किसी समझौते पर पहुंचने की उनकी इच्छा नहीं थी। हिचकिचाहट, विचार बदलते रहना, आदान-प्रदान की भावना का अभाव तथा निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचने की अनिच्छा और घोर साम्प्रदायिक उग्रवादी तत्वों के दबाव का सामना न कर पाना, उनके रवैये की विशेषताएं रही हैं।

जब कभी समझौते की संभावना नजदीक दिखाई दी, बातचीत को विफल कर दिया गया। नागरिक प्राधिकारियों की सहायता के लिए सेना बुलाए जाने से एक सप्ताह पहले भी सरकार ने समझौते पर पहुंचने के लिए अकाली दल के नेताओं से बातचीत करने का एक और प्रयास किया परन्तु उनका रवैया पहले से भी अधिक सख्त हो गया। दरअसल उग्रवादियों ने उनको अपने इशारे पर नचाना शुरू कर दिया।

आतंकवादियों ने अपनी हिंसात्मक गतिविधियां तेज कर दीं। दिन प्रति-दिन स्थिति बिगड़ती गई। स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर रहने वाले ग्रूपों की तोड़फोड़ संबंधी गतिविधियों से भारत की सुरक्षा को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया। भारत की अखंडता को छिन्न-भिन्न करने में गहरी रुचि रखने वाली विदेशी ताकतों का प्रभाव साफ जाहिर होने लगा। सरकार को यह विश्वास हो गया कि देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता के लिए इस चुनौती का मुकाबला राज्य की कानून और व्यवस्था सम्बन्धी सामान्य एजेन्सियां नहीं कर सकती हैं। फलस्वरूप इन्हीं परिस्थितियों में सेना को बुलाने का निर्णय किया गया।

सभी प्रकार की अलगाववादी प्रवृत्तियों के खतरे से राष्ट्रीय अखंडता को बचाने के लिए सरकार के सामने केवल यही रास्ता रह गया था और कोई उपाय न था।

28 फरवरी 1984 को लोकसभा में केंद्रीय गृह-मंत्री ने अपनी ओर से पंजाब आन्दोलन के सम्बंध में एक स्पष्ट वक्तव्य दिया और सरकार की नीतियों तथा अब तक की हुई प्रगति का विवरण सदन में पेश किया गया। गृह-मंत्री ने सदन में दिये अपने वक्तव्य में कहा सदन में, निर्दोष व्यक्तियों के विरुद्ध लगातार हिंसा की शोकपूर्ण पृष्ठभूमि में पंजाब की स्थिति पर विचार विमर्श किया जाएगा। यह अत्यन्त खेदपूर्ण बात है कि

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

यह हिंसा जानबूझ कर हिन्दुओं और सिक्खों के बीच कटुता और अविश्वास उत्पन्न करने के लिए की जा रही है। सरकार ही नहीं बल्कि समस्त देश इन प्रवृत्तियों के बारे में चिन्तित है, जो राष्ट्रीय एकता को दूषित कर रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि सदन में एकता को ध्यान में रखकर बहस की जाए ताकि जो समस्याएं आजकल हमारे सामने हैं, उनके समाधान में वह सहायक हो सकें।

इससे पहले कि मैं पंजाब की हाल की दुखद घटनाओं के बारे में विचार व्यक्त करूं, मैं सदन को उन वार्ताओं की संक्षिप्त पृष्ठभूमि बताना चाहूंगा जो सरकार शिरोमणि अकाली दल के प्रतिनिधियों के साथ उनकी विभिन्न मांगों के बारे में करती रही है।

सरकार काफी समय से शिरोमणि अकाली दल से उनकी विभिन्न मांगों के बारे में विचार-विमर्श करती रही है। मांगें तीन मुख्य श्रेणियों में आती हैं जैसे (1) वे जो सिक्ख समुदाय से एक धार्मिक दल के रूप में सम्बन्धित हैं (2) वे जिनका संबंध पंजाब राज्य तथा अन्य राज्यों से हैं और (3) वे जिनका संबंध कुछ सामान्य विवादों से हैं।

सरकार ने वास्तव में अकाली दल की सभी धार्मिक मांगों को स्वीकार किया है। सरकार ने पहले ही यह ऐलान कर दिया है कि अमृतसर नगर में जिसमें हरमन्दर साहिब, दुर्गियाना मन्दिर के आस-पास के क्षेत्र शामिल हैं, तम्बाकू, शराब, मांस पर एक निर्धारित क्षेत्र के भीतर रोक रहेगी। सरकार ने आकाशवाणी के जालन्धर केन्द्र से स्वर्ण मंदिर से प्राप्तः डेढ़ घण्टे तथा सायं आधे घण्टे गुरवाणी को सीधे तौर पर रिले करना मान लिया है और इसके साथ-साथ सिखों द्वारा स्थानीय उड़ानों के दौरान कुछ विशिष्टताओं के कृपाण ले जाना भी मान लिया गया है। अखिल भारतीय गुरुद्वारा अधिनियम जिसका सम्बन्ध पंजाब के अतिरिक्त अन्य राज्यों तथा उन राज्यों में सिक्ख समुदाय से है, सरकार ने विधेयक, जिसमें विशिष्ट ऐतिहासिक गुरुद्वारे भी आते हैं, को बनाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, संबंधित राज्य सरकारों तथा अन्य संबंधित पक्षों के साथ परामर्श करके, विचार करने पर सहमति व्यक्त की है किन्तु अकाली इस बात पर जोर दे रहे हैं कि परामर्श केवल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ ही किया जाए और विधेय को अधिनियमित करने से पहले अन्य सभी संबंधित दलों की सहमति प्राप्त करना सरकार का कार्य है। अकाली दल ने ऐतिहासिक गुरुद्वारों की सूची प्रस्तुत नहीं की है और भिन्न-भिन्न बैठकों में 10 से 30 तक के भिन्न-भिन्न आंकड़े दिए गए हैं।

जहां तक स्वर्ण मंदिर से गुरवाणी को रिले करने का संबंध है, अकाली अधिक समय की मांग कर रहे हैं हालांकि सरकार ने गुरुवाणी को रिले करने के लिए स्थापन की सुविधाओं के लिए प्रबंध कर लिये हैं और इस प्रयोजन के लिए कर्मचारियों को प्रतिनियुक्त कर चुकी है, फिर भी सरकार को उपकरण की स्थापना में अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं हुआ है।

जहां तक नदी जल विवाद का संबंध है, सरकार का सदैव यह दृष्टिकोण रहा है कि यह पंजाब तथा हरियाणा के सभी लोगों से सम्बंधित है और इसलिए इस विवाद को दोनों राज्यों के हितों को ध्यान में रखकर तय करना है।

सरकार पंजाब और हरियाणा के बीच नदी जल विवाद को अंतर्राज्य जल विवाद अधिनियम के अधीन नियुक्त किये जाने वाले उच्चतम न्यायालय के एक न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक न्यायाधिकरण को सौंपना चाहती है। अकाली दल ने इस विवाद पर सामंजस्य की स्थिति बनाये नहीं रखी है। एक समय यह केवल रावी-व्यास जल का ही प्रश्न था। बाद में अकाली दल द्वारा यमुना जल का प्रश्न उठाया गया। उन्होंने राजस्थान को आवंटन के प्रश्न पर पुन: विचार करने की भी मांग की है, जिसके संबंध में सदन को याद होगा, यह काफी समय पहले तय किया जा चुका था। सरकार का दृष्टिकोण स्पष्ट है। यह स्पष्ट है यह सिर्फ पंजाब व हरियाणा के बीच रावी-व्यास के अतिरिक्त जल से संबंधित विवाद है, जो पंजाब पुनर्गठन अधिनियम के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ था। इसका फैसला एक न्यायाधिकरण पर छोड़ दिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में राजस्थान के हिस्से और यमुना जल के संबंधित मसलों पर प्रत्यक्षत: विचार नहीं किया जा सकता।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जहां तक क्षेत्रीय विवादों का संबंध है, सदस्यों को स्मरण होगा कि शाह आयोग ने चण्डीगढ़ हरियाणा को दिया था और 1970 में यह हुआ कि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में यह निर्णय किया कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाना चाहिए और अबोहर तथा फाजिल्का हरियाणा को और अन्य सभी दावे तथा प्रतिदावे शाह आयोग को भेजे जाएंगे। अकाली दल की मांग है कि चण्डीगढ़ तुरंत पंजाब को हस्तांतरित कर दिया जाना चाहिए और अबोहर तथा फाजिल्का समेत अन्य सभी दावे तथा प्रतिदावे किसी आयोग को भेजे जाने चाहिए। हरियाणा के लोगों के सभी वर्ग, इसका विरोध करते हैं।

सरकार ने किसी राज्य का पक्षपात किए बिना सहायता करने के लिए भरसक प्रयास किए हैं और निम्नलिखित चार विकल्पों में से किसी एक विकल्प को मानने के लिए अपनी इच्छा की घोषणा की है—

(1) 1970 के निर्णय का कार्यान्वयन।

(4) चण्डीगढ़ के प्रश्न समेत तभी विवादों तथा दावों को एक नए आयोग को सौंपना।

(3) पंजाब और हरियाणा के बीच चण्डीगढ़ का विभाजन और शेष विवादों को एक आयोग को भेजना, और।

(4) दोनों राज्यों को स्वीकार्य कोई अन्य विकल्प अपनाना।

अकाली दल इन विकल्पों में से किसी भी विकल्प को मानने के लिए इच्छुक नहीं है।

सामान्य विवादों के अंतर्गत अकाली दल की मुख्य मांग यह रही है कि केन्द्र राज्य संबंधों के प्रश्न का पुनरीकरण करने के लिए कानूनी विशेषज्ञों की एक समिति की नियुक्ति की जाए, जैसी कि उनके आनन्दपुर साहिब संकल्प द्वारा मांग की गई थी। सरकार ने राष्ट्रीय एकता तथा अखन्डता की अपेक्षाओं के अनुरूप केन्द्र राज्य संबंधों से संबंधित मसलों की जांच करने के लिए उपयुक्त विचारार्थ विषयों सहित सरकारिया आयोग की नियुक्ति कर दी है। अकाली दल इस बात पर दृढ़ है कि सरकार को यह मामला सरकारिया आयोग को भेजते समय आनन्दपुर साहिब संकल्प का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहिए। माननीय सदस्य

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इस बात से सहमत होंगे कि आनन्दपुर साहिब संकल्प की बातों का उन लोगों द्वारा समर्थन नहीं किया जा सकता, जिनके मन में राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता की भावना है। एक समय अकाली दल इस मांग को छोड़ने के लिए सहमत हो गया था, लेकिन बाद में इसे फिर उठाया है। अकाली दल कोई भी अनुरोध सरकारिया आयोग के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्र है, जिसे वे चाहते हैं और जो उसके विचारार्थ विषयों में आते हैं।

बातचीत के दौरान सरकार ने अकाली दल से यह आश्वासन मांगा है कि धार्मिक स्थानों का प्रयोग हथियार जमा करने और जिन लोगों की कानून प्रवर्तन एजेंसियों को जरूरत है, उन्हें शरण देने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। ये आश्वासन भी मांगे गये थे कि धार्मिक वर्गों के विवाद शांतिपूर्ण तथा बिना हिंसा के तय किये जाने चाहिए। ऐसे आश्वासन नहीं दिये गए हैं। इसके विपरीत हिंसा भड़क उठी है और स्वर्ण मंदिर के परिसर को कथित खालिस्तान झंडा फहराने के लिए प्रयोग की अनुमति दी गई है। राजद्रोह कार्य करने वालों को अभी आत्मसमर्पण करना है ताकि उनके विरुद्ध कानून के अनुसार कार्रवाई की जा सके।

अब अकाली दल ने एक नई मांग उठाई है, जिसमें संविधान के अनुच्छेद 25 में संशोधन करने के लिये कहा गया है। इससे भी अधिक, संवैधानिक तरीकों के माध्यम से कोई संशोधन की मांग करने के बजाय उन्होंने संविधान के भाग को जलाने के कार्यक्रम का सहारा लिया है। जानबूझकर संविधान के अनादर से सारे राष्ट्र को धक्का लगा है।

सरकार ने सदैव वार्ताओं के जरिये समाधान ढूंढने की अपनी सहमति व्यक्त की है। इसी भावना से सरकार ने अकाली दल से बार्ताओं में भाग लेने के लिये विपक्षी दलों के नेताओं को आमंत्रित किया था। 14 फरवरी को हुआ त्रिपक्षीय सम्मेलन इस दिशा में उठाया गया एक ऐसा कदम था।

त्रिपक्षीय बैठक में जिस मुख्य मुद्दे पर विचार किया गया था वह क्षेत्रों से संबंधित था। कुछ उपयोगी सुझाव दिये गए थे और बैठक को अगले दिन के लिए उन पर आगे विचार-विमर्श करने के लिये स्थगित कर दिया गया था। इस बीच पंजाब के विभिन्न भागों में हिंसा भड़क उठी थी और बैठक को विपक्षी नेताओं तथा अकाली प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सुझाव के अनुसार थोड़े समय के लिये स्थगित कर दिया गया था ताकि अकाली नेता पंजाब को लौट सकें और उस राज्य में शांति और सामान्य स्थिति बहाल करने में सहायता कर सकें।

आम उम्मीद थी कि बैठक तीन या चार दिन बाद पुनः होगी। वास्तव में बैठक 20 ता० को बुलाने का प्रस्ताव था लेकिन सरकार को उस दिन अकाली दल के कथित निर्णय को जानकर दुख हुआ कि वे आगे त्रिपक्षीय वार्ता में भाग नहीं लेंगे। इसी दौरान पंजाब में बड़े पैमाने पर हिंसक वारदातें होती रहीं। हरियाणा के अनेक स्थानों पर अचानक हिंसा होने से स्थिति और बिगड़ गई।

माननीय सदस्यों को मालूम है कि अकाली दल ने अपने लगातार आन्दोलन के एक भाग के रूप में 8 फरवरी को पंजाब बंद का आह्वान किया था। हालांकि जान की कोई क्षति नहीं हुई लेकिन बंद से सड़क और रेल यातायात अत्यधिक अस्तव्यस्त हुआ और जनता को पर्याप्त असुविधा हुई।

हिन्दू रक्षा समिति द्वारा 14 फरवरी को पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश बंद का आह्वान किया गया, जिसका कुछ अन्य संगठनों ने समर्थन किया। कुछ संगठनों ने बंद का विरोध किया और अनेक झड़पें और हिंसा की घटनाएं हुईं। इनमें से अमृतसर रेलवे स्टेशन पर भीड़ द्वारा गुंडागर्दी की एक घटना हुई, जिसके कारण वस्तुओं का नुकसान हुआ, जिससे एक समुदाय के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंची। दूसरी घटना में स्वर्ण मंदिर परिसर के अन्दर से अकारण गोलीबारी हुई, जिसमें एक पुलिस कर्मी सहित चार व्यक्तियों की जानें गयीं।

उस दिन हुई झड़पों में 11 व्यक्ति मारे गए और 18 पुलिस कर्मियों सहित 76 व्यक्ति जख्मी हुए। हिमाचल प्रदेश और हरियाणा में स्थिति अधिकतर शांत रही।

पंजाब और हरियाणा में अन्य स्थानों पर कुछ वारदातें हुईं। कई स्थानों से बंद, हड़ताल और छुट-पुट हिंसा की घटनाएं सूचित की गयीं हैं। 17 ता० को अमृतसर में एक बहुत गम्भीर घटना हुई। स्वर्ण मंदिर के परिसर से ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मिकों पर अकारण गोलियां चलायी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

गयीं। पुलिस कर्मिकों ने आत्मरक्षा में जवाबी गोलियां चलायीं। काफी समय तक रुक-रुक कर गोलियां चलायी गईं, जिसके कारण बस्ती के लोगों में गम्भीर तनाव और भय व्याप्त हो गया। गृह सचिव को हरियाणा और पंजाब में अत्यधिक गम्भीर रूप से प्रभावित स्थानों का दौरा करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

19 ता० को पानीपत में दो समुदायों के बीच भड़पों की एक अन्य गम्भीर घटना हुई, जिसमें 8 व्यक्ति मारे गए। पूजा के स्थान से पुलिस द्वारा 46 व्यक्तियों को बचाया गया। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को गोली चलानी पड़ी। हरियाणा को अर्धसैनिक बलों की कुमुक भेजी गयी। मैंने 20 ता० को हरियाणा का दौरा किया और मुख्य मंत्री और जनता के भिन्न-भिन्न वर्गों के साथ स्थिति की समीक्षा की। ऊर्जा मंत्री ने अमृतसर का दौरा किया और वहां इस प्रकार का विचार-विमर्श किया।

दुर्भाग्यवश उग्रवादी तत्वों द्वारा की गयी हिंसा और हत्या के लगातार कार्यों से पंजाब में स्थिति और उग्र हो गयी। 21 फरवरी से लगभग प्रत्येक दिन हत्याओं की कई घटनाएं हुई और तब तक प्राप्त सूचनाओं के अनुसार 44 व्यक्तियों की जानें गयीं। जख्मी व्यक्तियों की संख्या 58 से अधिक है।

महिलाओं और बच्चों सहित निर्दोश व्यक्तियों की निरर्थक हत्याओं से राष्ट्र को धक्का लगा है। मुझे विश्वास है कि यह सदन मारे गए व्यक्तियों के परिवारों के साथ एक बार फिर सहानुभूति व्यक्त करने और आतंक फैलाने की कोशिश करने वाली ताकतों की निन्दा करने में मेरा साथ देगा। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि यह सदन शस्त्रों की रखने और कानून-प्रवर्तन अभिकरणों द्वारा अपेक्षित अपराधियों को शरण देने के लिए धार्मिक स्थानों के प्रयोग के प्रति अपनी घृणा को पुनः दोहराएगा।

साम्प्रदायिक हिंसा, सम्पत्ति का विनाश और पूजा के स्थानों को अपवित्र करना, चाहे वह हिंदुओं द्वारा किया गया हो अथवा सिखों द्वारा, की कड़ी निन्दा की जानी चाहिए। प्रतिहिंसा अथवा बदले के लिए की गई हिंसा का कोई भी औचित्य नहीं है। मैं सदन को विश्वास दिलाना

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

चाहता हूं कि सरकार क्रूर हिंसा को समाप्त करने के लिए हर सम्भव कदम उठाएगी, चाहे उसकी कीमत कुछ भी हो। पंजाब में कानून और व्यवस्था तंत्र को सुदृढ़ और सुप्रवाही बनाने के लिए पहले ही कार्रवाई की जा चुकी है और हिंसा चाहे पंजाब, हरियाणा अथवा अन्य कहीं पर हो, उससे पूरी सख्ती से निपटने के लिए अनुदेश जारी कर दिये हैं। हरियाणा में स्थिति में सुधार हुआ है। मुझे विश्वास है, कि स्थिति शांतिपूर्ण रहेगी।

सरकार ने बातचीत के द्वारा कोई समझौता करने के लिये सदैव अपनी तत्परता व्यक्त की है। फिर भी मुझे पक्का विश्वास है कि सदन और राष्ट्र इस बात से सहमत होगा कि विवादों का समाधान करने में आतंक और हिंसा से कोई लाभ नहीं उठाने दिया जायेगा।"

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आतंक और हिंसा

'खालिस्तान' के नाम पर पृथकतावादी शक्तियां सिख सम्प्रदाय में शामिल हो गईं। भारत की एकता, अखण्डता से उनका कोई रिश्ता न था। अविभाज्य हिन्दू और सिखों के बीच खाई बनाने का काम शुरू हो गया 'सतश्री अकाल' के नारे के साथ 'राज करेगा खालसा' का नारा बुलंद किया जाने लगा। 'राज करेगा खालसा' अर्थात् हिन्दुस्तान की हुकूमत 'खालसा' के हाथ में होगी। न केवल 'खालिस्तान' वरन् पूरे भारत पर अपना अधिकार करने का स्वप्न देखा जाने लगा। सिख समुदाय को शेष भारत से अलग रहने के नाम पर पूरे भारत को तोड़ने का भयानक षडयन्त्र गुरुद्वारों में बनने लगा। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये आतंक और हिंसा का न रुकने वाला सिलसिला शुरू हो गया। सारे पंजाब में खून-खराबी, लूटमार शुरू हो गई। एक सम्प्रदाय-विशेष के लोगों को ही मारने के साथ-साथ इस प्रकार की 'हिटलिस्ट' बनना शुरू हो गई कि आंदोलन विरोधी चाहे सिख ही क्यों न हो, उसे मार दो। बहुत छोटे स्तर से उठने

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वाला संत जरनैल सिंह भिंडरांवाला चौक मेहता गुरुद्वारा से खिसककर स्वर्ण मंदिर में आ गया और तब तो आतंक हिंसा का बेइन्तहा खूनी दौर-दौरा शुरू हो गया। गोलियां चाहे जब और जहां चलने लगी। आतंकवाद के नाम पर सारे भारत को दहला कर अपनी स्वार्थपूर्ति का कार्यक्रम चल पड़ा।

मार्च 1981 से लेकर 2 जून 1984 तक सरकारी सूचनाओं के अनुसार घटनाएं प्रस्तुत हैं। गैरसरकारी आंकड़े हत्याएं, लूटमार, इनसे कहीं ज्यादा हैं। फिलहाल केवल प्रामाणिक सरकारी सूची प्रस्तुत है।

1981

20 मार्च, आनन्दपुर साहिब, जिला रोपड़ में होला मौहल्ला मेले के अवसर पर एक केसरी झंडा फहराया गया, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह नये खालिस्तान गणराज्य का झंडा था। उस समय एक निहंग द्वारा सलामी के तौर पर पांच गोलियां चलाई गईं।

8 अप्रैल, दो व्यक्ति, हज़ारा सिंह और उजागर सिंह, श्री बलवीर सिंह, संधु द्वारा हस्ताक्षरित अधिकार-पत्र लेकर पाकिस्तान गए। समझा जाता है कि यह पत्र वैसाखी के अवसर पर पाकिस्तान के पंजा साहिब जा रहे सिख तीर्थ यात्रियों के सम्बन्ध में विरोध प्रकट करने के लिए था।

13 श्री बलवीर सिंह संधु ने अकाल तख्त, अमृतसर के सामने श्री गोपाल सिंह शहीद को एक दस्तावेज दिया। कहा जाता है कि यह तथाकथित "खालिस्तान गणराज्य" के नाम में पासपोर्ट था।

16 आनन्दपुर साहिब में शिरोमणि अकाली दल (तलवन्डी ग्रुप) द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में रुपिन्दर सिंह ने भारतीय संविधान के पृष्ठ फाड़े।

31 मई, अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के स्वयं सेवकों, श्री भिंडरांवाले के अनुयायियों और अन्यों ने एक जलूस निकाला। कुछ शरा-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रती तत्वों ने हिंसक वारदातें कीं और कुछ खोखों को आग लगा दी।

26 जुलाई, शिरोमणि अकाली दल (लोंगोवाल ग्रुप) ने अमृतसर में विश्व• सिख सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सिखों के प्रति कथित भेद-भाव पर विशेष जोर दिया गया।

5 अगस्त, श्री शादीलाल आगरा, म्युनिसिपिल कमेटी के अध्यक्ष और आनन्दपुर साहिब के निरंकारी प्रमुख की आनन्दपुर साहिब जिला रोपड़ में हत्या।

9 सितम्बर, पटियाला से जालन्धर जाते समय लाला जगत नारायण की हत्या।

13-14 लाला जगत नारायण की हत्या से संबंधित मामले के संबंध में श्री भिंडरांवाले को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस चन्दूकला गई, किन्तु भिंडरांवाले पहले ही वहां से जा चुके थे। बाद में वहां हिंसक वारदात उस समय हुई जब श्री भिंडरांवाले के कुछ अनुयायियों ने पुलिस पार्टी पर गोली चलाई। वहां एक-दूसरे पर गोलीबारी हुई और आगजनी की घटनाएं हुईं।

20 लाला जगत नारायण की हत्या से संबंधित मामले के संबंध में श्री भिंडरांवाले को गिरफ्तार किया गया। इसके पश्चात् श्री भिंडरांवाले के अनुयायी हिंसा पर उतर आए और हथियारों के साथ पुलिस पर हमला किया और आगजनी तथा लूटमार की। पुलिस को गोली चलानी पड़ी। 11 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

20 चौक मेहता में श्री भिंडरांवाले की गिरफ्तारी के बाद, जालन्धर के बाजार में मोटर साईकिल पर सवार तीन सिख युवकों ने हिन्दुओं पर गोली चलाई। चार व्यक्ति मारे गए और 12 घायल हुए।

21 तरन तारन में बाज़ार में छह अज्ञात सिख युवकों से गोली चलाई जिससे एक हिन्दू की मृत्यु और दो सिखों सहित 13

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अन्य घायल।

26 पटियाला के केंद्रीय तार-घर में एक बम विस्फोट। अमृतसर जिले के राय्या और बुटारी रेलवे स्टेशनों के बीच रेल पटरी की तोड़-फोड़ जिसके परिणाम स्वरूप एक सेक्शन मालगाड़ी के कुछ डिब्बे पटरी के उतर गए। उसी दिन हिमाचल प्रदेश (पठानकोट-जालन्धर सैक्शन) में मिरथल रेलवे स्टेशन के नजदीक रेल पटरी क्षतिग्रस्त।

28 होशियारपुर जिले में नसराला और शाम चौरासी रेलवे स्टेशनों के बीच रेल पटरी काटी गई।

29 इंडियन एयरलाइंस के एक हवाई जहाज का अपहरण करके लाहौर ले जाया गया।

3 अक्तूबर, सरहिंद-नंगल सेक्शन में रोपड़ जिले के नागावारी रेलवे स्टेशनों के नजदीक रेल पटरी की तोड़-फोड़।

6-7 विभिन्न स्थानों पर विस्फोट की घटनाएं, जिनमें अमृतसर में चार स्थान, जिला अमृतसर के तरनतारन में सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट का न्यायालय, खंड विकास अधिकारी, भटिंडा का-का आवास, सब-डिविजनल आफीसर (सिविल) होशियारपुर का आवास और जिला फरीदकोट के मोगा के सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट के आवास शामिल हैं।

9-10 अमृतसर के उपायुक्त के सामान्य सहायक आवास पर दो देसी बम फेंके गए। जिला फरीदकोट के मोगा में एक पुलिस सहायक सब-इंस्पैक्टर के मकान पर एक विस्फोट हुआ। गुरुदासपुर जिले के चूमा में एक पैट्रोल पम्प पर विस्फोट।

15 श्री भिंडरांवाले हिरासत से रिहा।

16 एक निरंकारी, श्री निरंजन सिंह, आई ए एस पर हमला और चंडीगढ़ स्थित पंजाब सरकार सचिवालय कार्यालय में उनके भाई को मार दिया गया।

23 कपूरथला जिले के ग्राम पंच्चटा के एक हिंदू सरपंच मोहिंदर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पाल की हत्या।

1 नवम्बर, पुलिस उप-महानिरीक्षक पटियाला रेंज के कार्यालय में विस्फोट।

14 चंडीगढ़ में पिकाडिली सिनेमा के शौचालय में बम विस्फोट।

16 कपूरथला में दो सिख मोटर साइकिल सवारों द्वारा एक निरंकारी प्रमुख, प्रहलाद चंद तथा उसके पिता की गोली मार कर हत्या तथा प्रहलाद चन्द का भाई घायल।

19 जिला लुधियाना में ग्राम डाहेरू में एक पुलिस दल पर गोली चलाई गई, जिससे एक पुलिस इंस्पेक्टर और एक कांस्टेबल मारा गया।

29 गुरुद्वारा चौक मेहता में एक भारी विस्फोट हुआ, जिसमें गुरुद्वारे में रहने वाले तीन व्यक्ति मारे गए।

27 दिसम्बर, पुलिस स्टेशन जंडियाला, जिला अमृतसर के ग्राम मच्छाल में एक निरंकारी गोली चलाये जाने से घायल।

1982

21 जनवरी, जिला गुरदासपुर के ग्राम महेश में, गुरुद्वारा राम-सरण में एक विस्फोट हुआ।

23 फरवरी, फरीदकोट जिले में मोगा में गोली चलाने से एक निरंकारी सूरज प्रकाश गम्भीर रूप से घायल।

30 मार्च, दो सिखों द्वारा एक निरंकारी प्रकाश सिंह पर गोली चलाई गई, जिसकी चोटों के कारण बाद में उसकी मृत्यु।

13 अप्रैल, आनंदपुर साहिब संकल्प और इस विषय पर विचार करने के लिये कि सिख एक अलग राष्ट्र हैं, शिरोमणि अकाली दल (तलवंडी ग्रुप) द्वारा विश्व सिख सम्मेलन का आयोजन।

24 शिरोमणि अकाली दल द्वारा 'नहर रोको' आन्दोलन।

25-26 कुछ शरारती तत्त्वों द्वारा अमृतसर के मंदिरों के सामने गायों के कटे हुए सिर डाले गए। इस घटना की जिम्मेदारी दल खालसा ने अपने ऊपर ली।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

27 जिला अमृतसर के चौरस्ता अट्टारी स्थिति गुरुद्वारे में ग्रंथ साहिब को आग लगाने की खबर।

1 मई, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 के अधीन दल खालसा और नेशनल कौंसिल आफ खालिस्तान को गैर-कानूनी संगठन घोषित।

6 इस महीने के दौरान विशेषतौर पर अमृतसर जिले में गुरुद्वारों और हिन्दू मंदिरों को अपवित्र करने की अनेक घटनाएं।

22 अमृतसर जिले के पट्टी में मुख्य बाजार में चार सिखों ने अंधाधुंध गोली बारी की, जिससे चार व्यक्तियों की मृत्यु और कई अन्य घायल।

24 शिरोमणि अकाली दल द्वारा पुन: 'नहर रोको' आन्दोलन।

17 जून, अमृतसर में मोटर साईकिल पर सवार तीन सिख युवकों ने तीन हिन्दुओं पर गोली चलाई।

27 धाबूजी, जिला अमृतसर में गोली चलाये जाने से निरंकारी मण्डल के प्रचार सचिव, जोगिन्दर सिंह शान्त घायत।

18 जुलाई, जिला अमृतसर के पुलिस स्टेशन ब्यास की एक पुलिस टुकड़ी द्वारा एक जीप को चैकिंग के लिए रोकने पर जीप में बैठे व्यक्तियों द्वारा जिनमें चौक मेहता के गुरुद्वारा गुरदर्शन प्रकाश का रसोइया, श्री जागीरसिंह भी था, पुलिस पर हमला, हमलावर गिरफ्तार।

19 श्री जोगिन्दर सिंह शान्त की हत्या के प्रयास से संबंधित मामले में अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के अध्यक्ष, भाई अमरीक सिंह अमृतसर में गिरफ्तार। श्री भिंडरांवाले ने अपने अनुयायियों सहित गुरुद्वारा गुरदर्शन प्रकाश छोड़ दिया और अमृतसर आ गए। उन्होंने उपायुक्त के आवास के सामने स्वयं-सेवकों की गिरफ्तारी देने के साथ एक मोर्चे की घोषणा की।

21 मोगा, जिला फरीदकोट के मुख्य बाजार में कुछ सिख युवकों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ने एक बम फेंका। एक रिक्शा चलाने वाला मारा गया और पांच अन्य घायल।

22 श्री भिंडरांवाले के अनुयायियों द्वारा पंजाब पुलिस के एक हैड कांस्टेबल को गुरू रामदास सराय, अमृतसर की ओर ले जाकर पीटा गया।

23 पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री, श्री दरबारासिंह के जन्म-स्थान ग्राम जडियाला, जिला जालन्धर के मकान पर दो देशी बम फेंके गए। एक बम फटा जिसके कारण भवन को थोड़ा-सा धक्का पहुंचा।

4 अगस्त, शिरोमणि अकाली दल द्वारा व्यापक मोर्चा शुरू और उसे धर्मयुद्ध की संज्ञा दी। श्री भिंडरांवाला द्वारा उसी दिन की घोषित अपना मोर्चा समाप्त। अमृतसर होते हुए दिल्ली से श्रीनगर के लिए उड़ान पर जाते हुए इंडियन एयर लाइन्स के एक हवाई जहाज का अपहरण इसमें 126 यात्री थे। हवाई जहाज को लाहौर की तरफ ले जाया गया, पर वहां उतरने की अनुमति न मिलने पर उसे अमृतसर हवाई अड्डे पर लाया गया जहां अपहरणकर्ता को गिरफ्तार क़र लिया गया।

20 जोधपुर से दिल्ली के लिए उड़ान कर रहे इंडियन एयर लाइन्स के अन्य हवाई जहाज का अपहरण कर लिया गया। इसे लाहौर में उतारने की अनुमति नहीं दी गई थी, इसलिए यह अमृतसर हवाई अड्डे पर उतरा, जहां गोलीबारी में अप-हरणकर्ता मारा गया। राहोन, जिला जालन्धर में दो उग्र-वादियों द्वारा हथगोलों से तत्कालीन मुख्य-मंत्री, श्री दरबारा सिंह पर हमला किया गया। श्री दरबारा सिंह को कोई चोट नहीं आई किन्तु 18 व्यक्तियों को चोटें आईं, जिनमें शिक्षा मंत्री और मुख्य मत्री के मार्गरक्षण दल के कुछ सदस्य शामिल थे।

11 सितम्बर तरन तारन में बिना गेटमैन वाले रेलवे क्रासिंग पर उस

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

समय एक दुर्घटना हुई जब एक रेलगाड़ी की उस वाहन से टक्कर हुई जिसमें कुछ अकाली आंदोलनकारियों को ले जाया जा रहा था। कई आंदोलनकारी मारे गये। 11 सितम्बर, की रेल दुर्घटना के शिकार हुए व्यक्तियों को लेकर आनंदपुर साहिब के गुरुद्वारा रकाब गंज, नई दिल्ली आये मातमी जलूस की समाप्ति पर संसद भवन के सामने शिरामणि अकाली दल द्वारा हिंसक प्रदर्शन।

26 राम-नवमी के जलूस के समय स्वर्ण मंदिर, अमृतसर के नजदीक चौक पर दो हथगोले फेंके गए। एक हथगोला फटा जिससे एक हिंदू यूवक और सी आर पी का एक कांस्टेबल मारा गयो और कई अन्य व्यक्ति घायल हो गए।

27 नंगल-खन्ना, जिला होशियार में मोटर-साईकिल सवार तीन सिखों ने निरंकारी रेशम सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी।

29 जालंधर में सैदा गेट के नजदीक, गुरु नानक के जन्म दिवस के संबंध में निकाले गए जलूस की समाप्ति के बाद एक पटाखे का विस्फोट हुआ। नौ व्यक्ति घायल हुए, जिनमें स्त्रियां और बच्चे शामिल थे।

12-13 नम्बर, कई स्थानों पर विस्फोट। इनके जिला जालंधर में राहोन में पुलिस चौकी बिल्डिग, अथवाल, श्री हथगोबिंदपुरी में कैनाँल रैस्टहाऊस, चमन में निरंकारी, श्री अजायब सिंह का मकान, जिला फरीदकोट के मोगा के पुशोक प्लैंट मुख्य बाजार में, लुधियाना की सुन्दर नगर कालौनी में गोहिन्दर पाल का मकान, जिला गुरदासपुर के कादियां का डी० ए० वी० हाई स्कूल और एस० डी० एम० जालन्धर के न्यायालय का रिटायरिंग रूम शामिल हैं।

14 तरन तारन, जिला अमृतसर में सी० आर० पी० के एक ट्रक के नजदीक एक विस्फोट हुआ पर उससे कोई नुकसान नहीं हुआ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

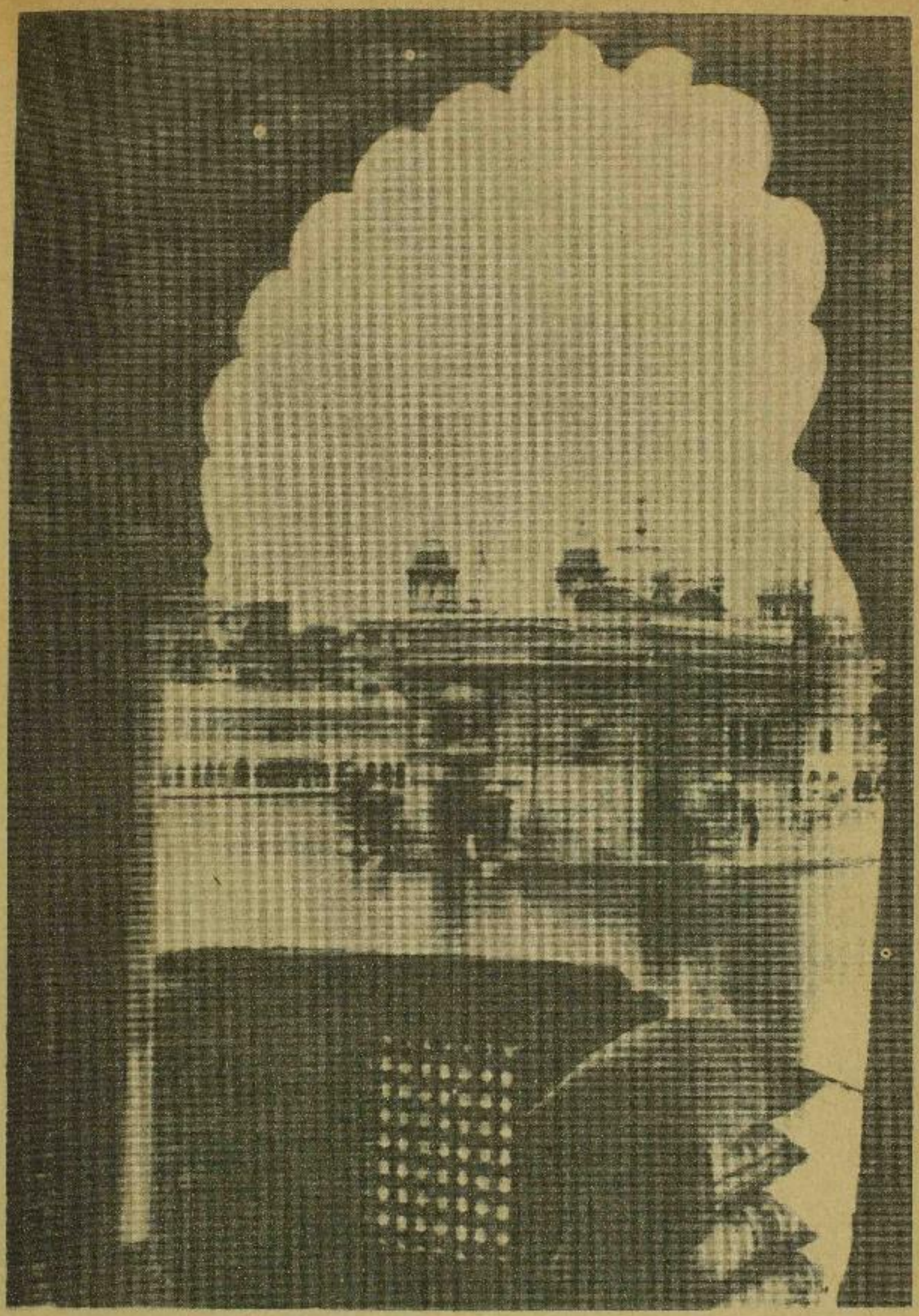

लंगर भवन की छत पर की गयी किलेबंदी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

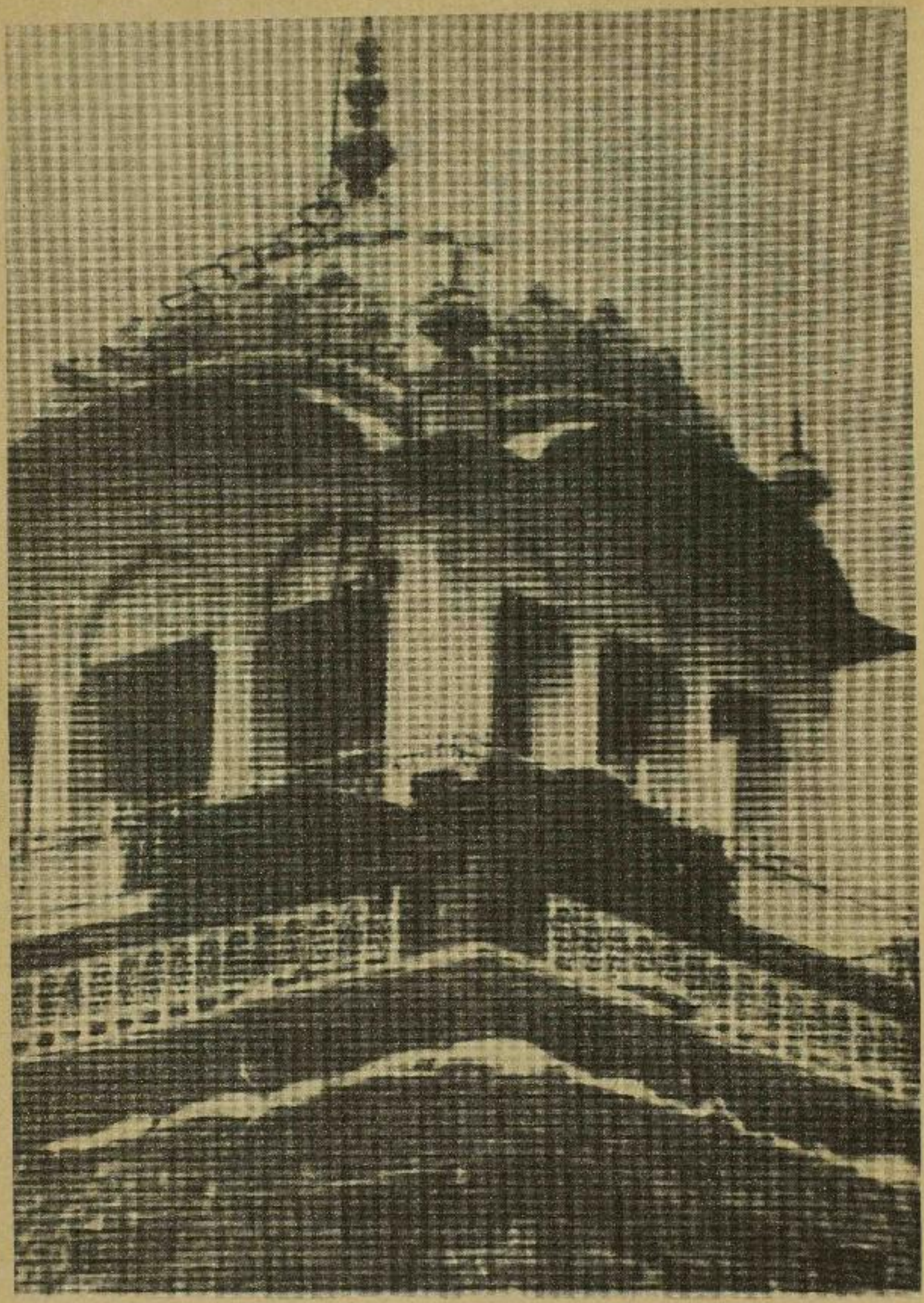

लंगर भवन की छत पर की गयी किलेबंदी, जिसका प्रभाव स्वर्ण मंदिर क्षेत्र तक था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

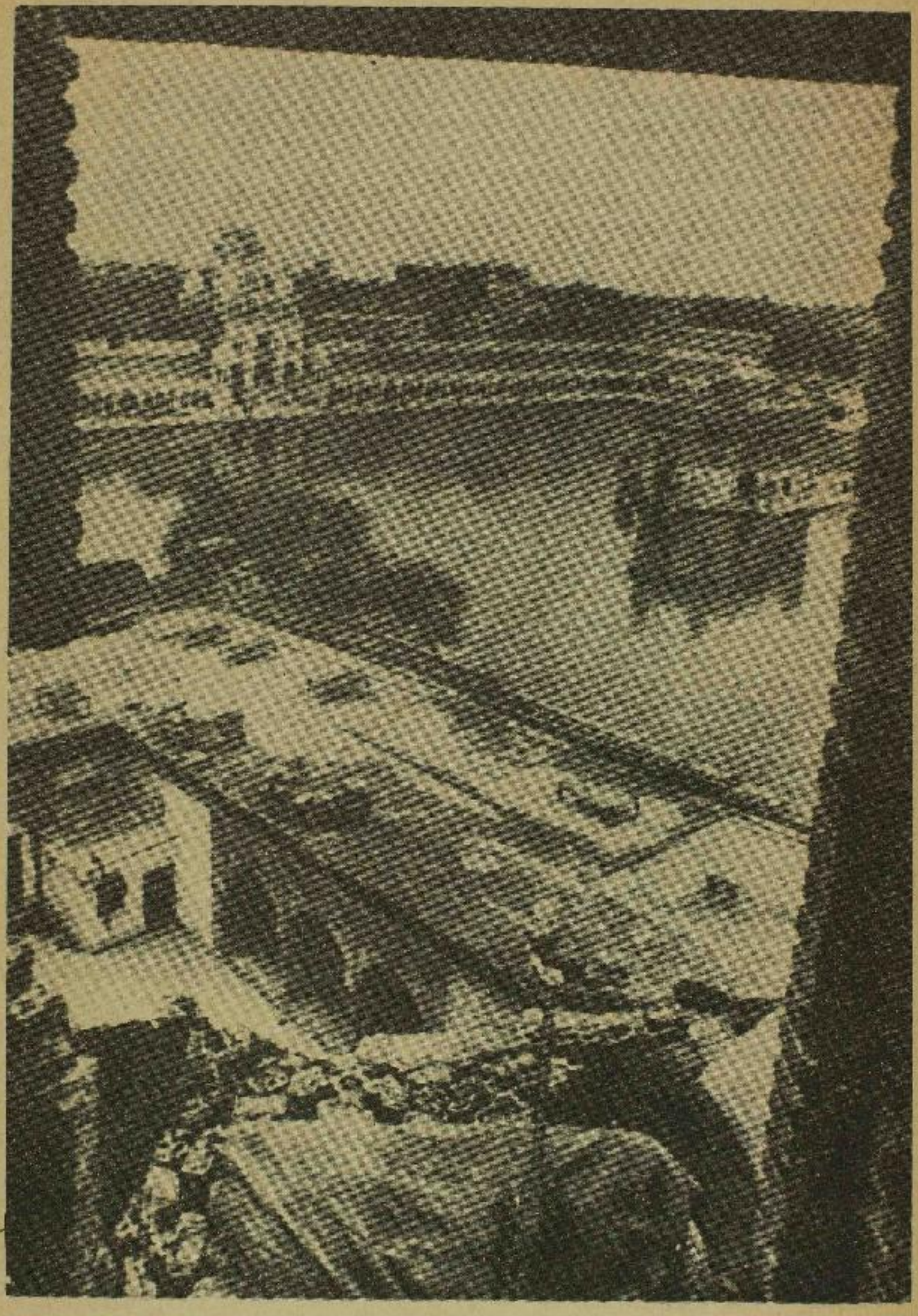

मीनार बुग्गा पर देखने व गोली मारने का सुराख। इस प्रभाव क्षेत्र हरिमंदिर साहिब और परिक्रमा तक था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

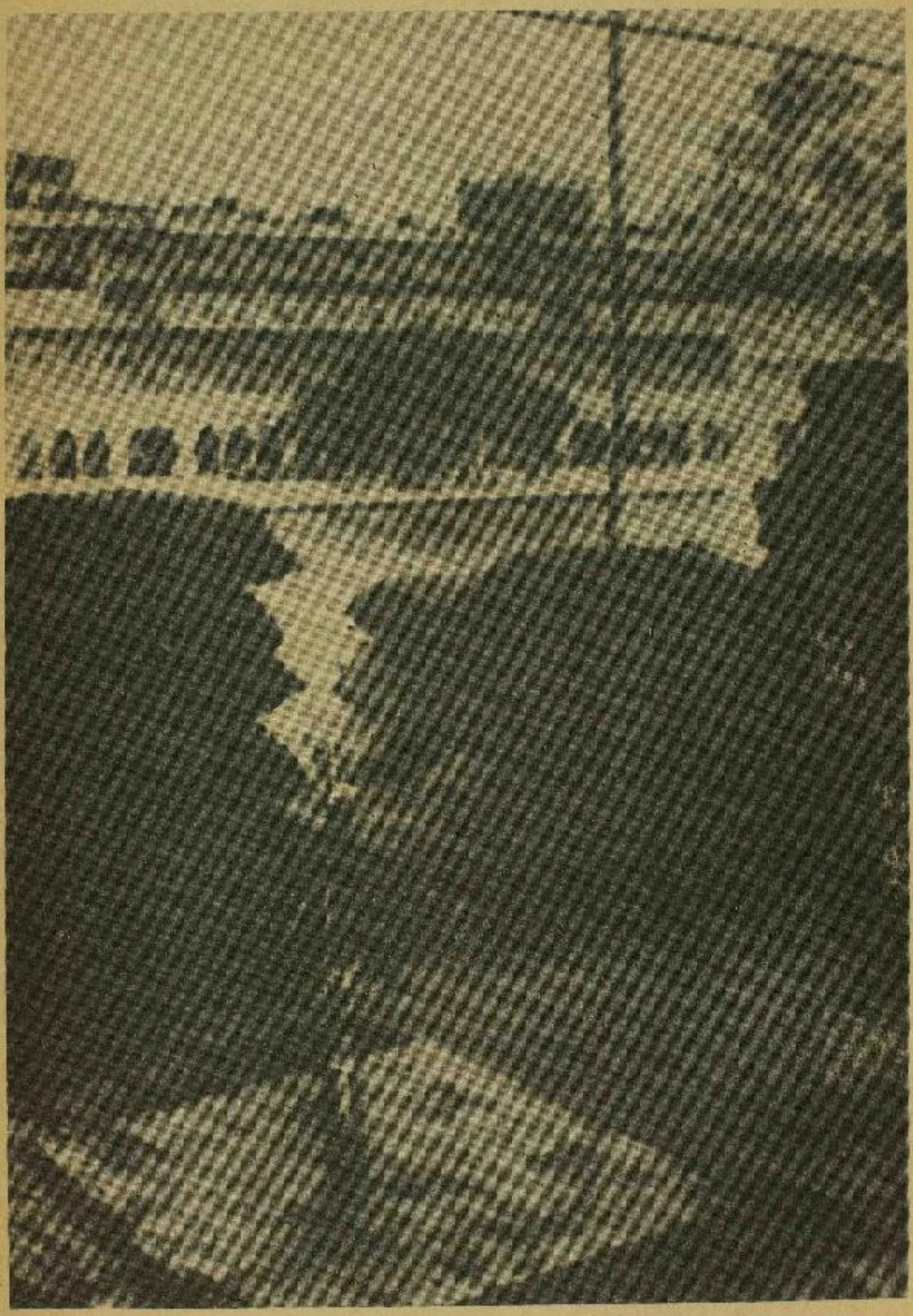

अकाल तख्त के दाहिने भाग में लगी लाइट-मशीनगन ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

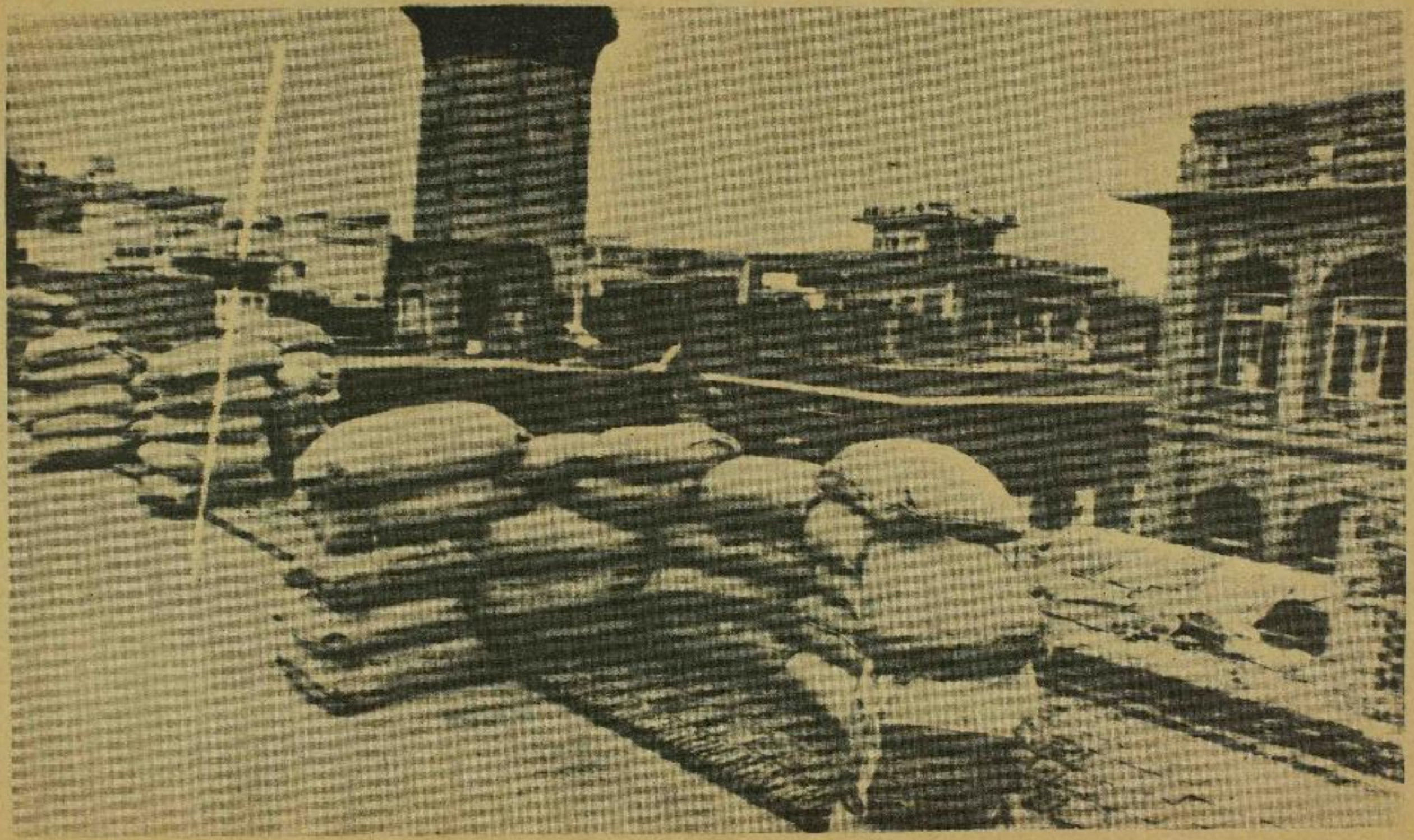

मीनार के नीचे की गई किलेबंदी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

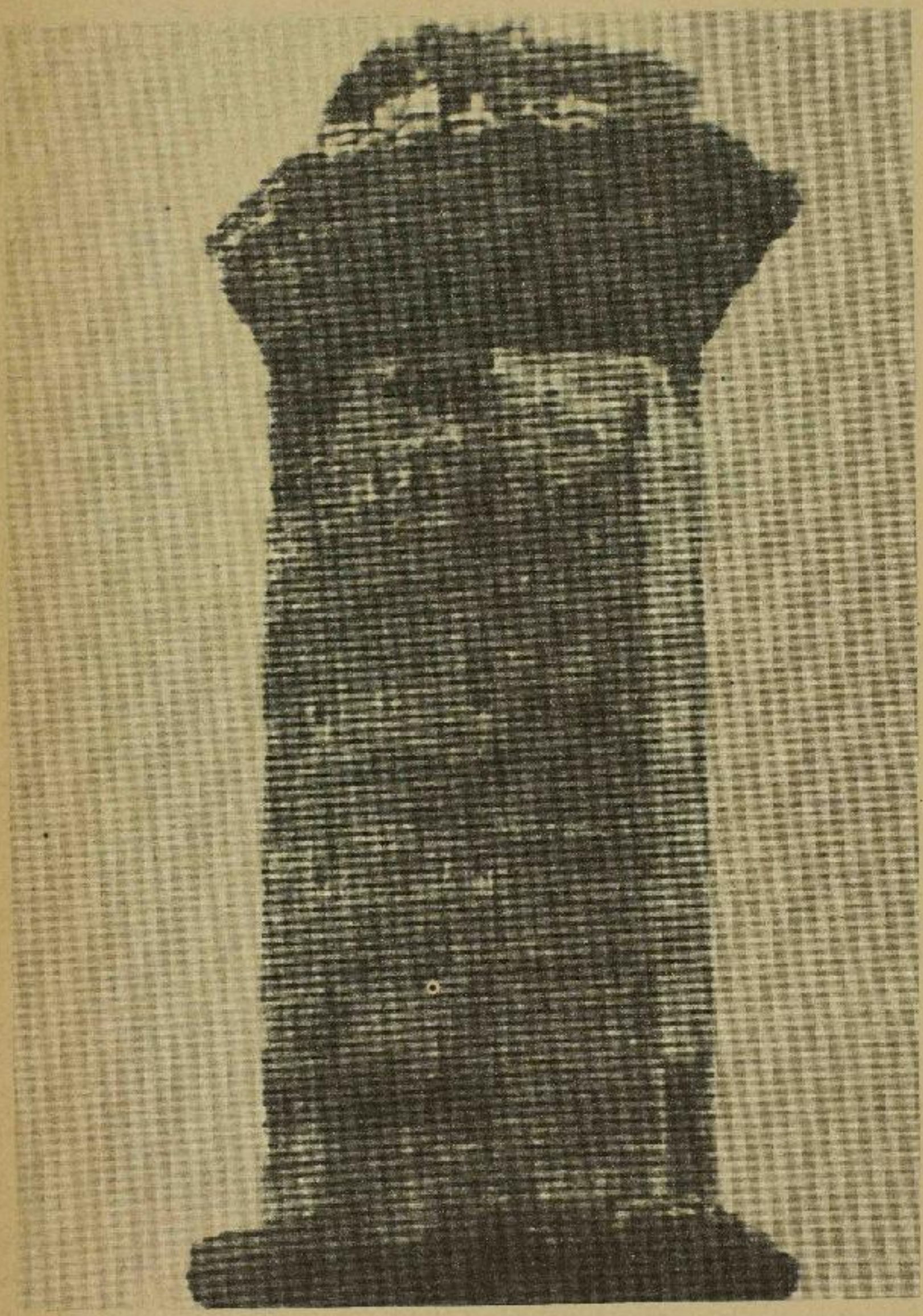

एक और टॉवर पर मोर्चाबंदी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

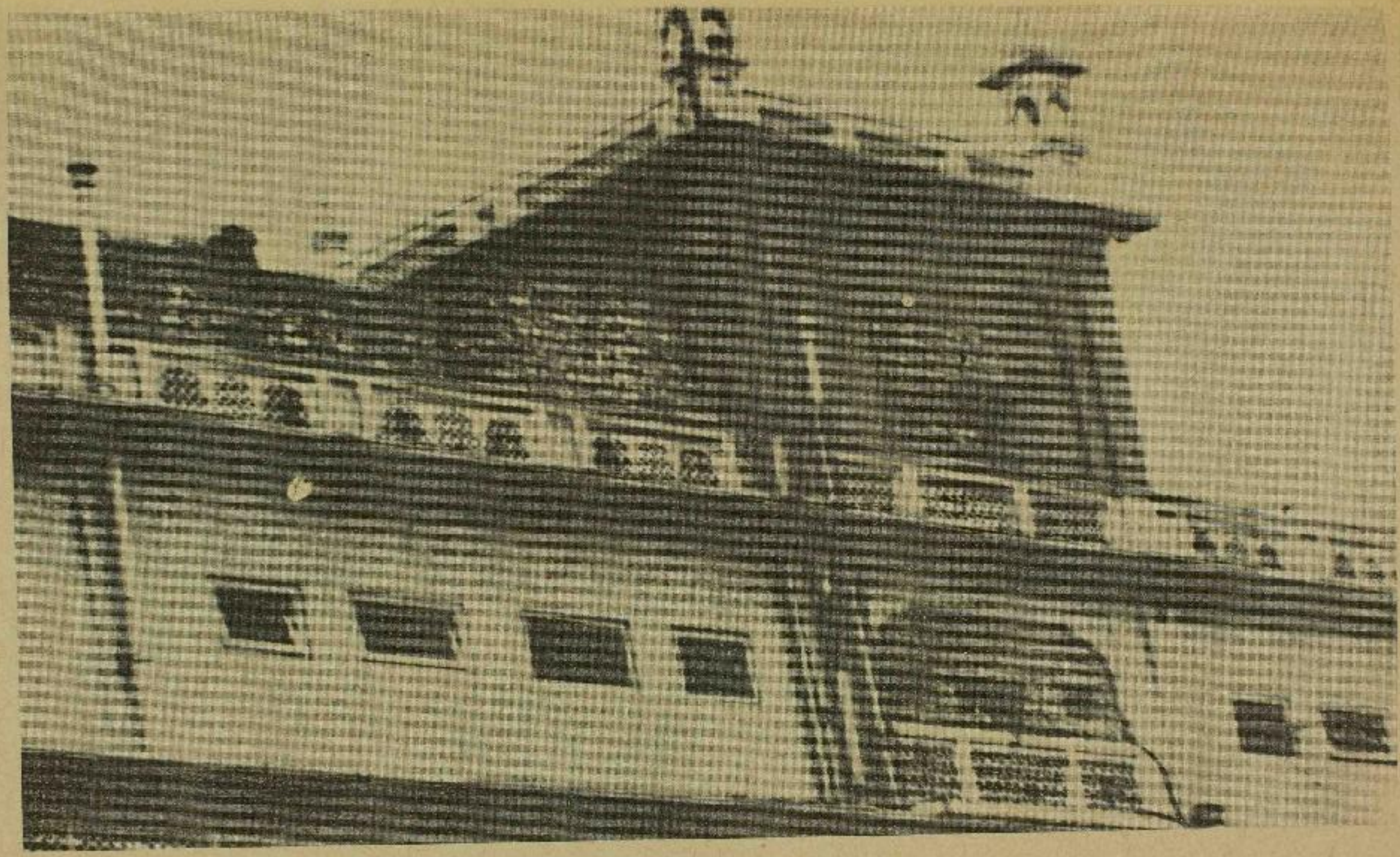

स्वर्ण मंदिर के सामने के बड़ी लगे प्रवेश द्वार पर ईंटों से बहुत मजबूत किलेबंदी की गई थी और खिड़कियों तथा "जाली" को तोड़ कर सुराख किए गए थे । मंदिर जाने के सभी रास्तों पर इन सुराखों से गोली चलाई जा सकती थी ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

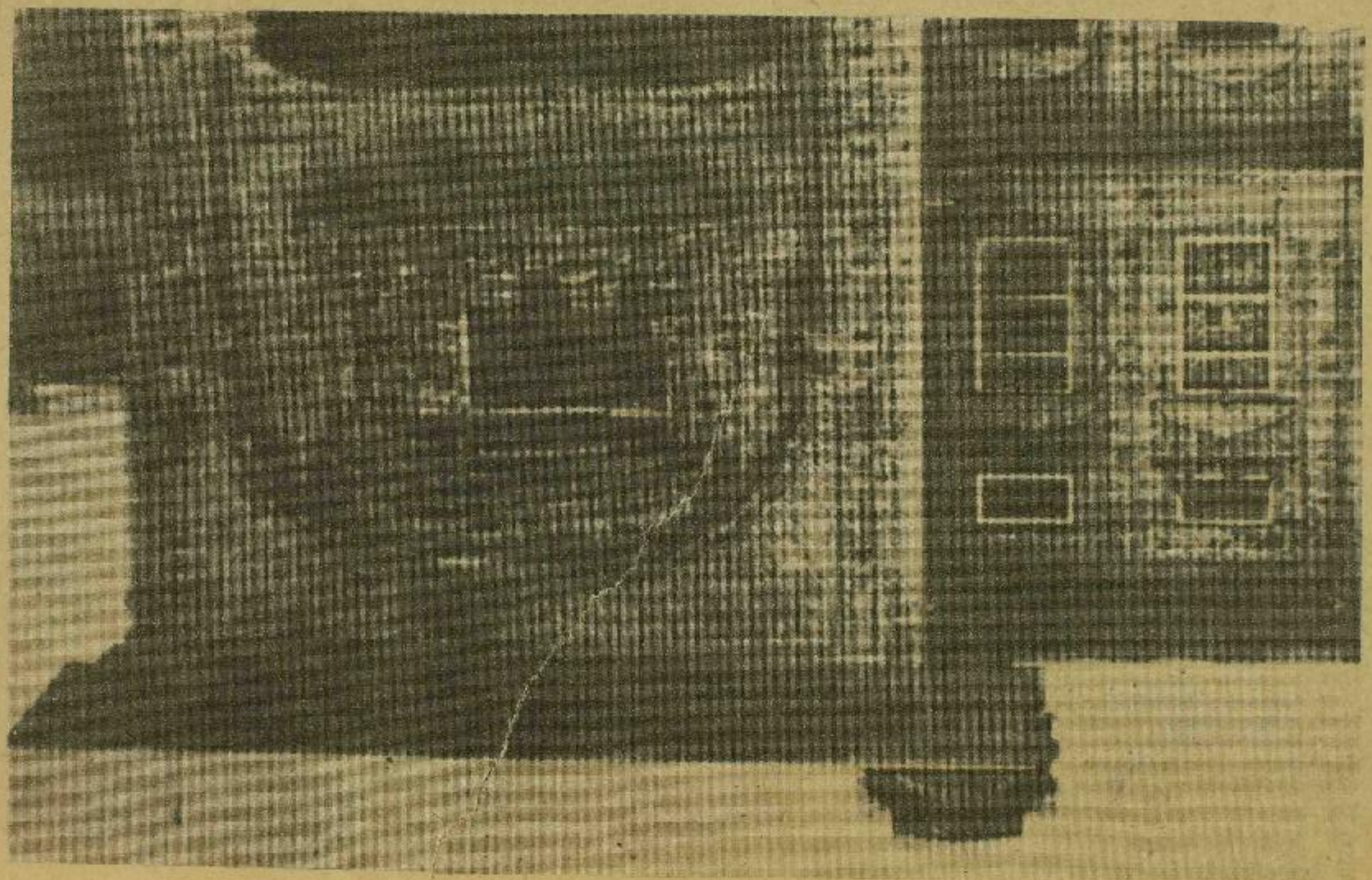

ਖਰਾਲ ਹਲਕਾ ਦੇ ਹਰਿਡ਼ੇ ਖੇਤ ਦੇ ਖਰਚ ਤੇ ਤੋ ਵੀਹਵੀਂ ਹਥਾ ਏਂਟੀ ਵਾਲੇ ਕਿਰਾਇਦਾਰੀ ਕਿਰਦੇ ਦੁਆਲਿਦਾਰ
ਬਾਰੇਦਾ ਹਥ ਵਾ 40 ਏਕ ਵਾ ਰੋਜ ਖਾਲ ਪਾਵਰਾਹਕ ਖੇਤਾਲ ਕਰ ਸਕਦਾ ਸਾ ; ਕਾਬਿਲਕਰ ਰੰਗਵਾ ਤੇ
ਚਕਰਾ ਹਰੀ ਸਕੀਰ ਹੁਏ ।.

Digitized by Panjab Digital Library / www.panjabdigilib.org

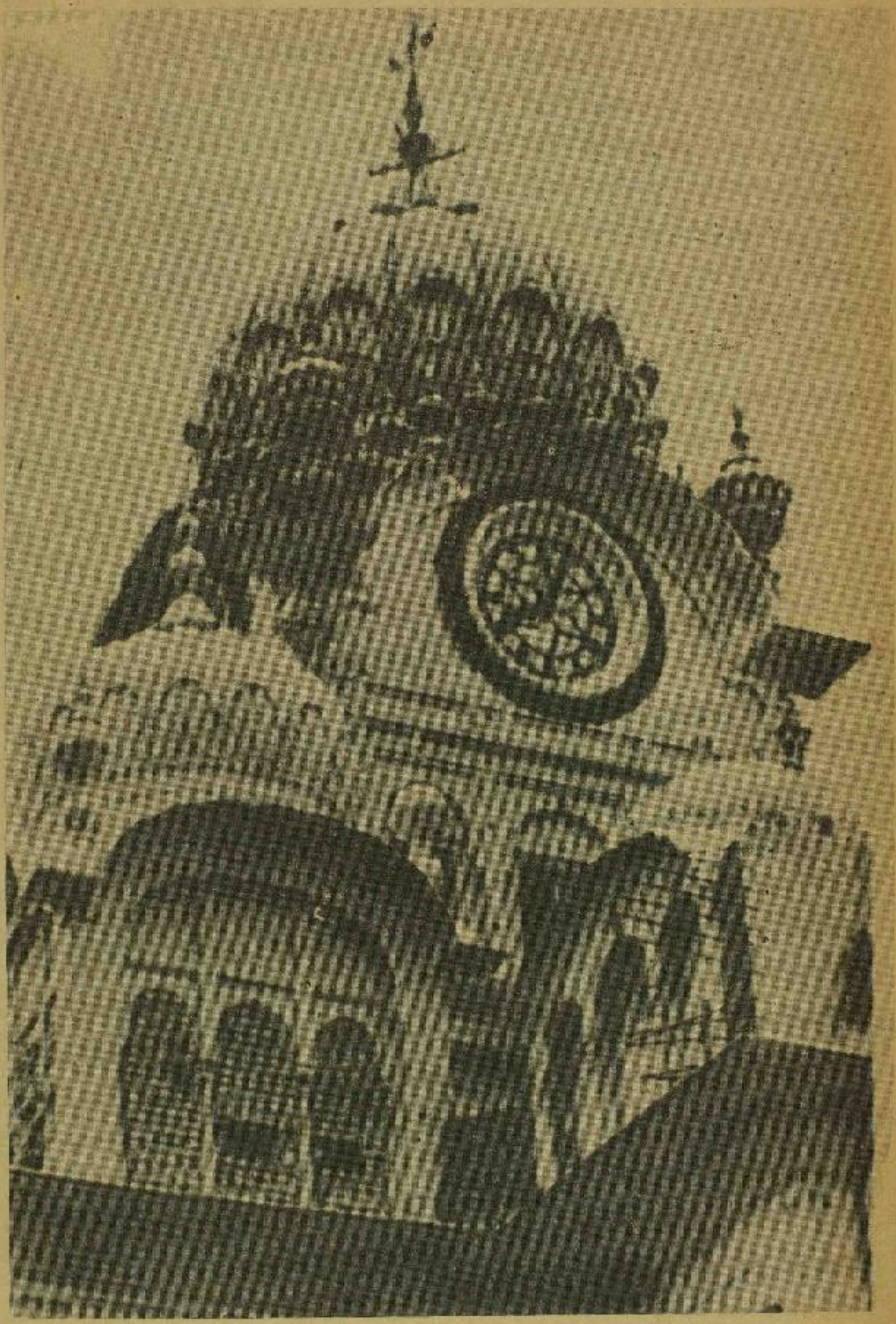

तोड़ कर बनाए गए सुराखों और जलियांवाला बाग के मुख्य प्रवेश द्वार के गुम्बद के नीचे ईंटों की किलेबंदी में किए गए सुराखों से मशीनगनों और स्व:चालित राइफलों से गोलाबारी की गई थी ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

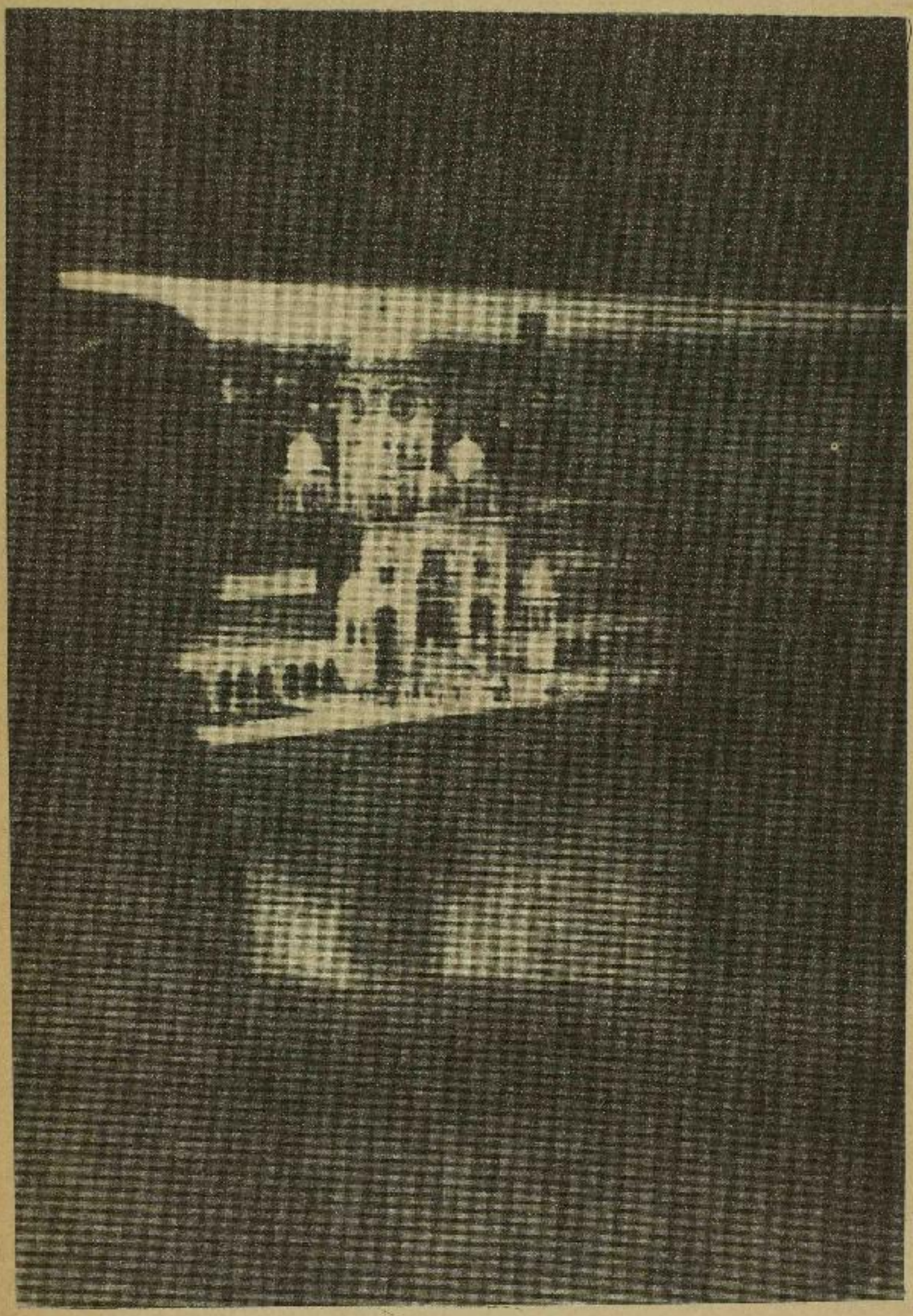

हरमंदिर साहब के प्रवेश द्वार पर किलेबंदी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

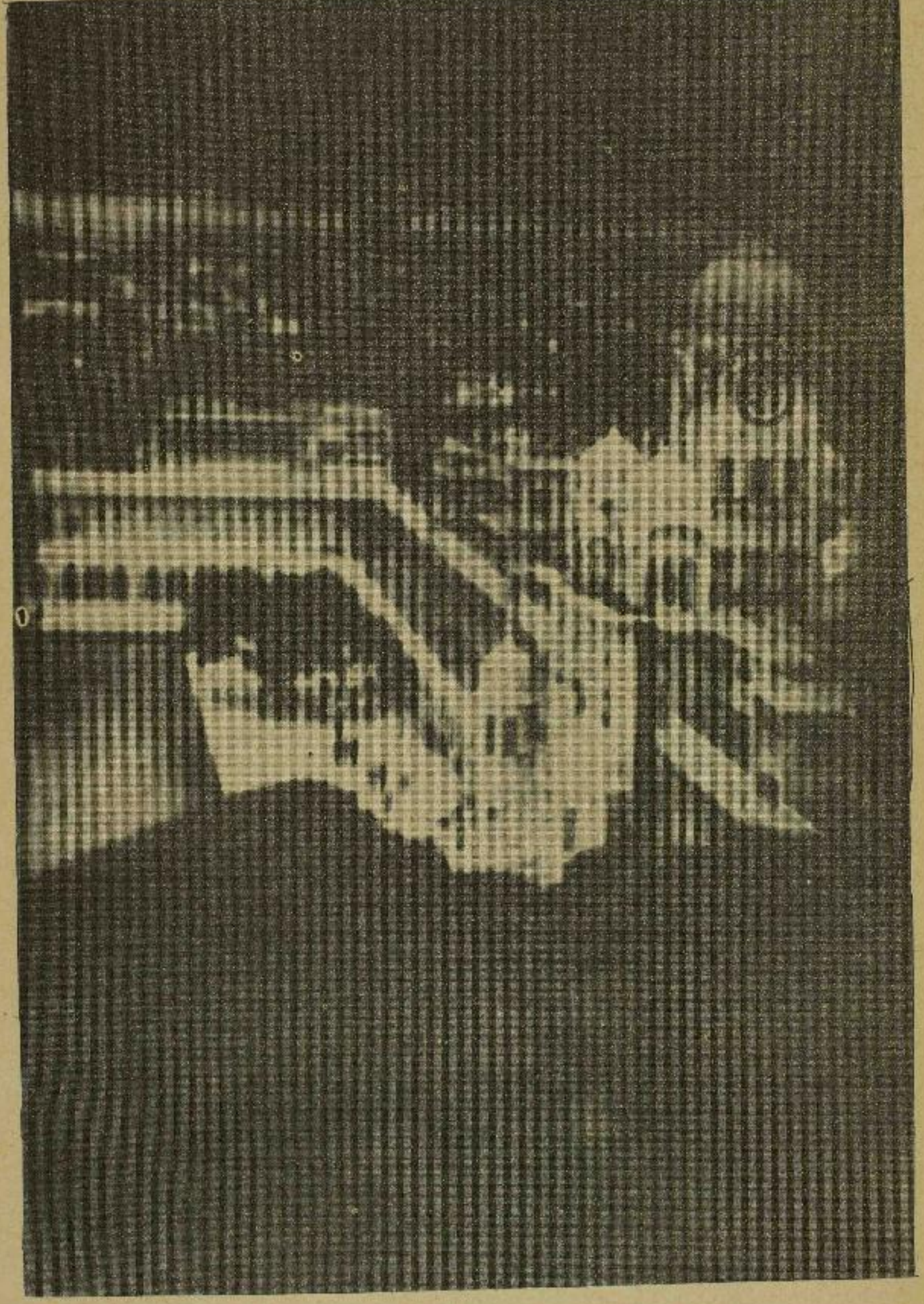

मुख्य प्रवेश द्वार को कवर करने वाले खम्बे के निकट बनाया गया बच निकलने का रास्ता ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

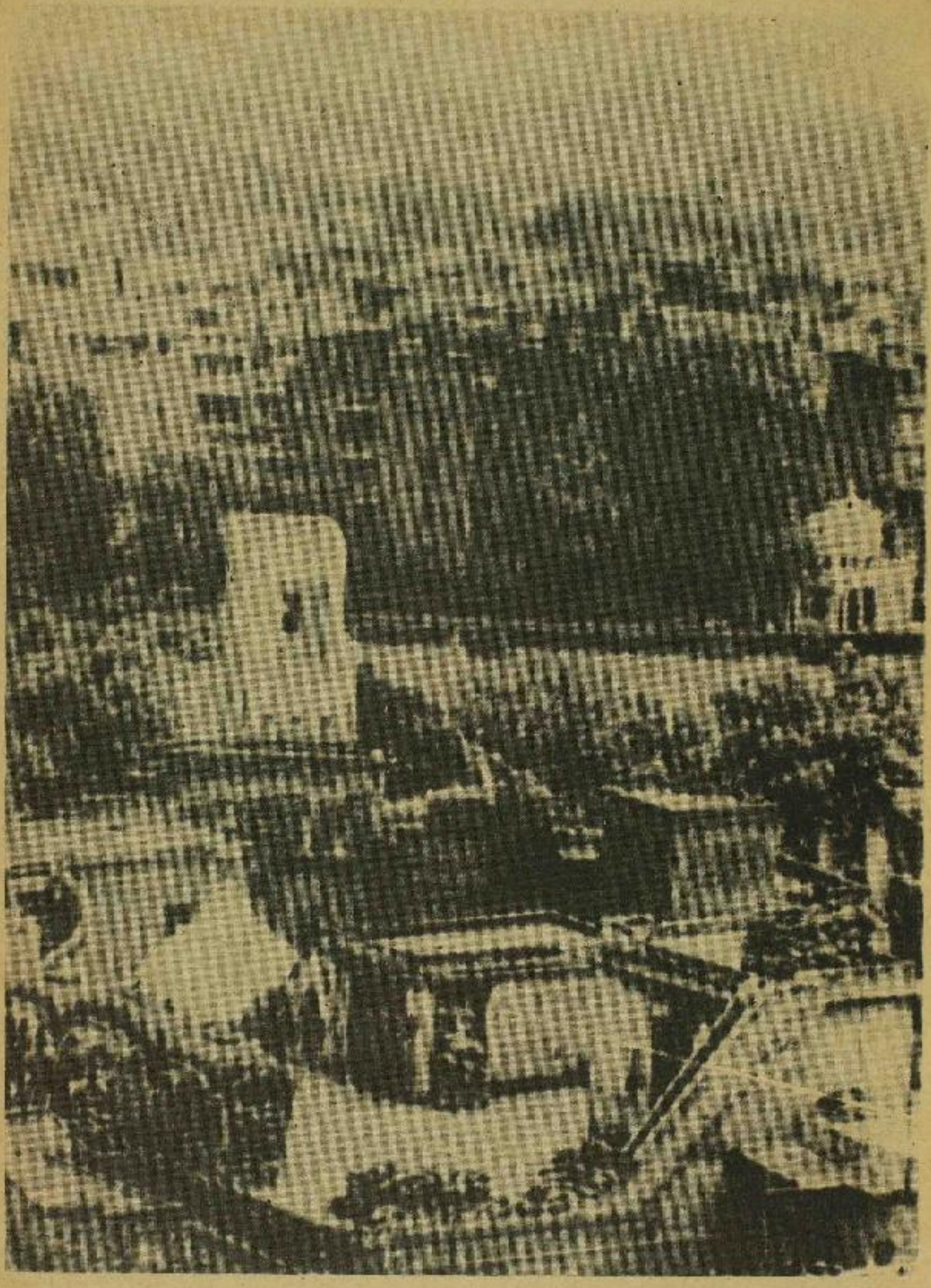

पृष्ठ भूमि में सफेद रंग में जलियांवाला बाग के साथ निजी मकानों की छतों पर रेत की कई बोरियां और ईंटें लगा कर की गई किलेबंदी जिससे स्वर्ण मंदिर में प्रवेश करने के सभी रास्ते कवर किए गए ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

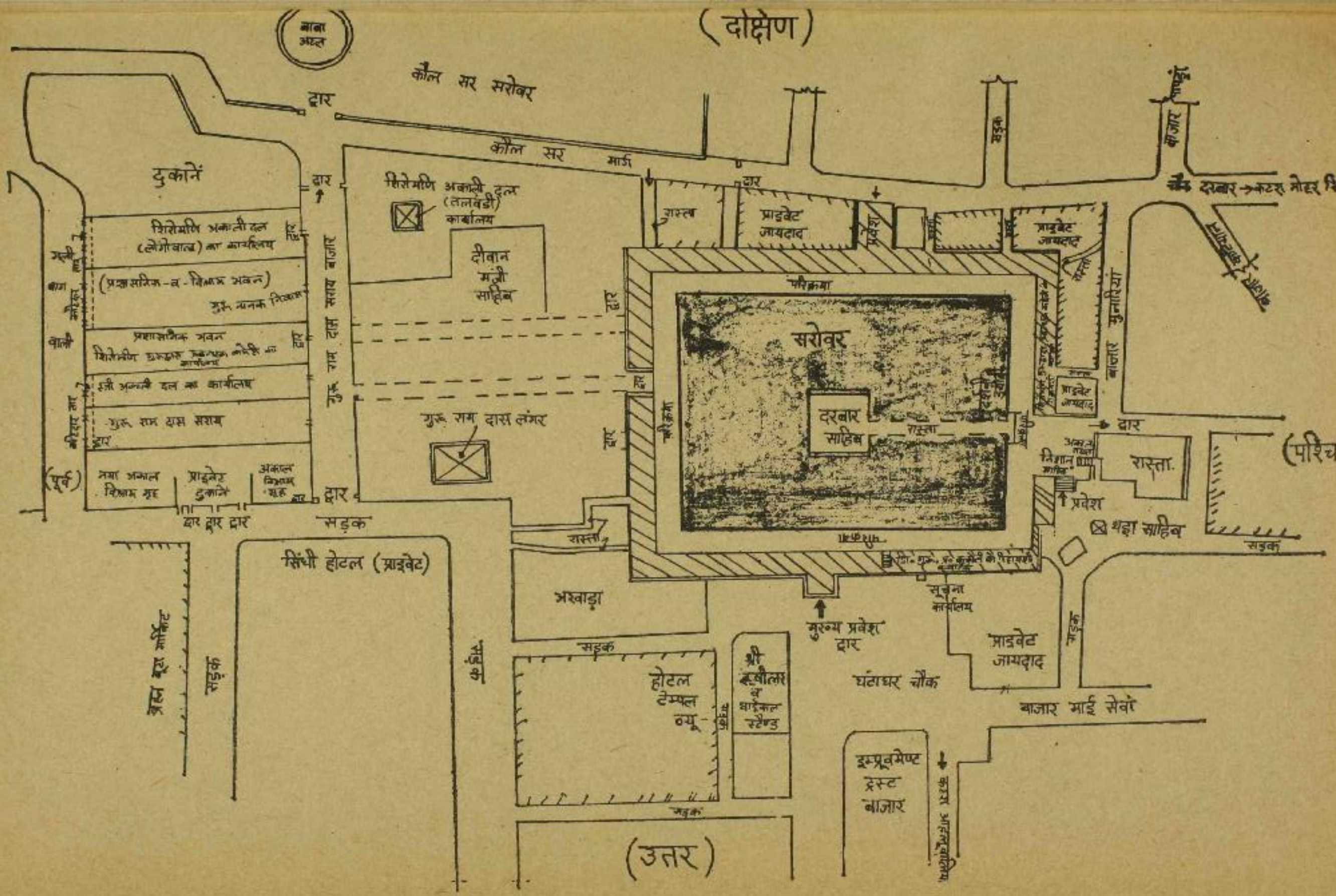

• स्वर्ण मंदिर, अमृतसर का मानचित्र।

Digitized by Panjab Digital Library / www.panjabdigilib.org

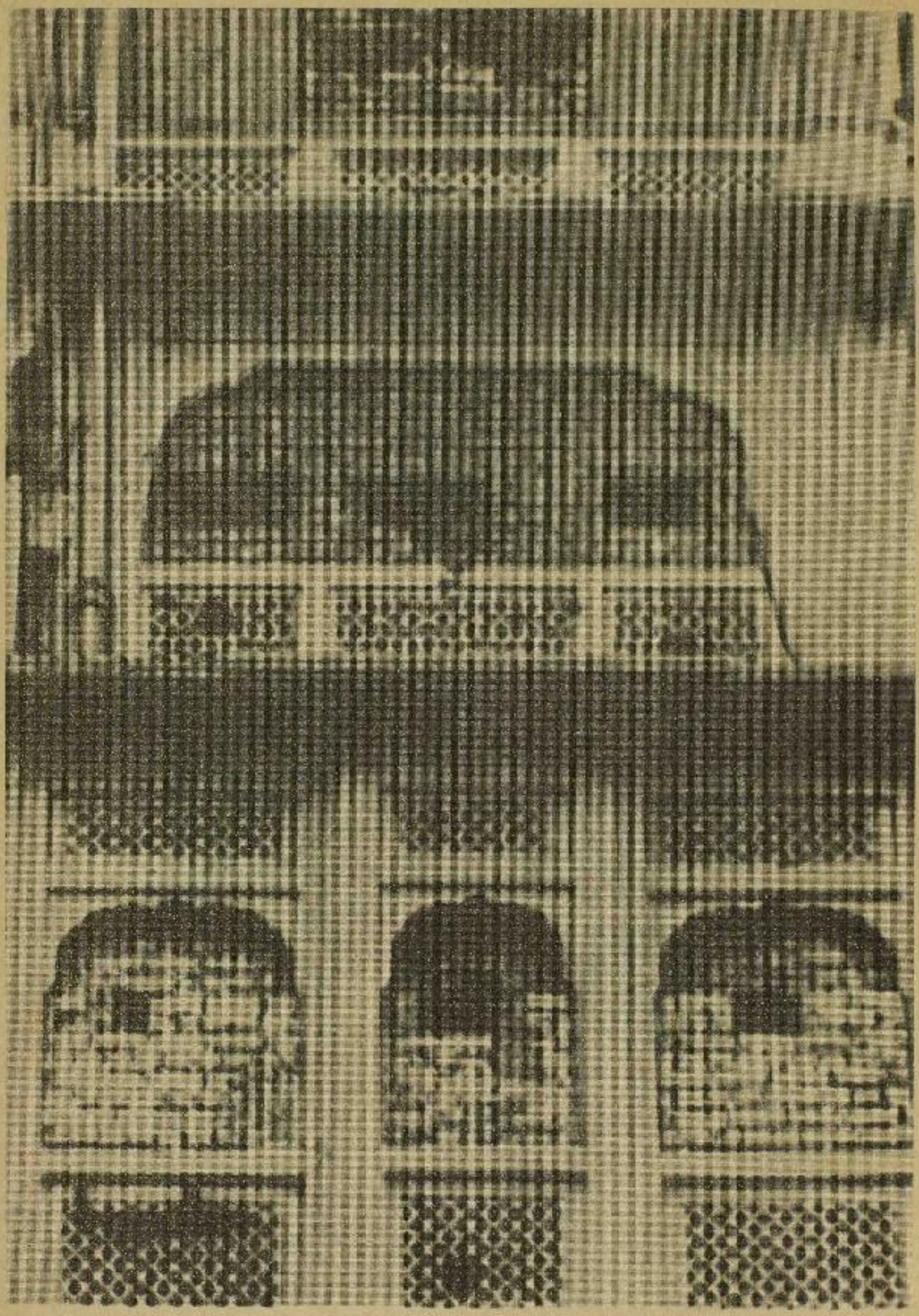

मंदिर के मुख्य घड़ी वाले प्रवेश द्वार पर की गई तिहरी किलेबंदी ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

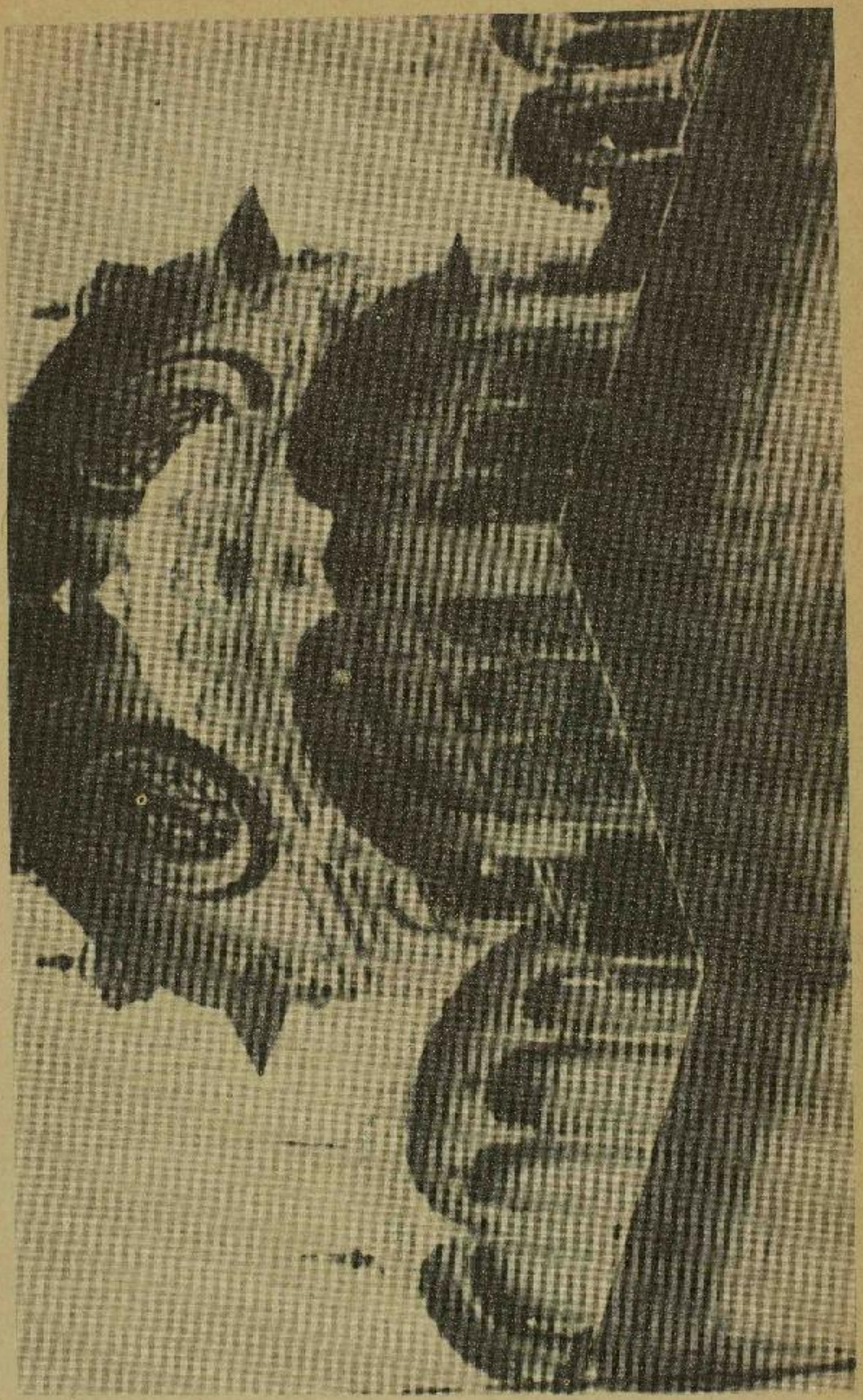

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

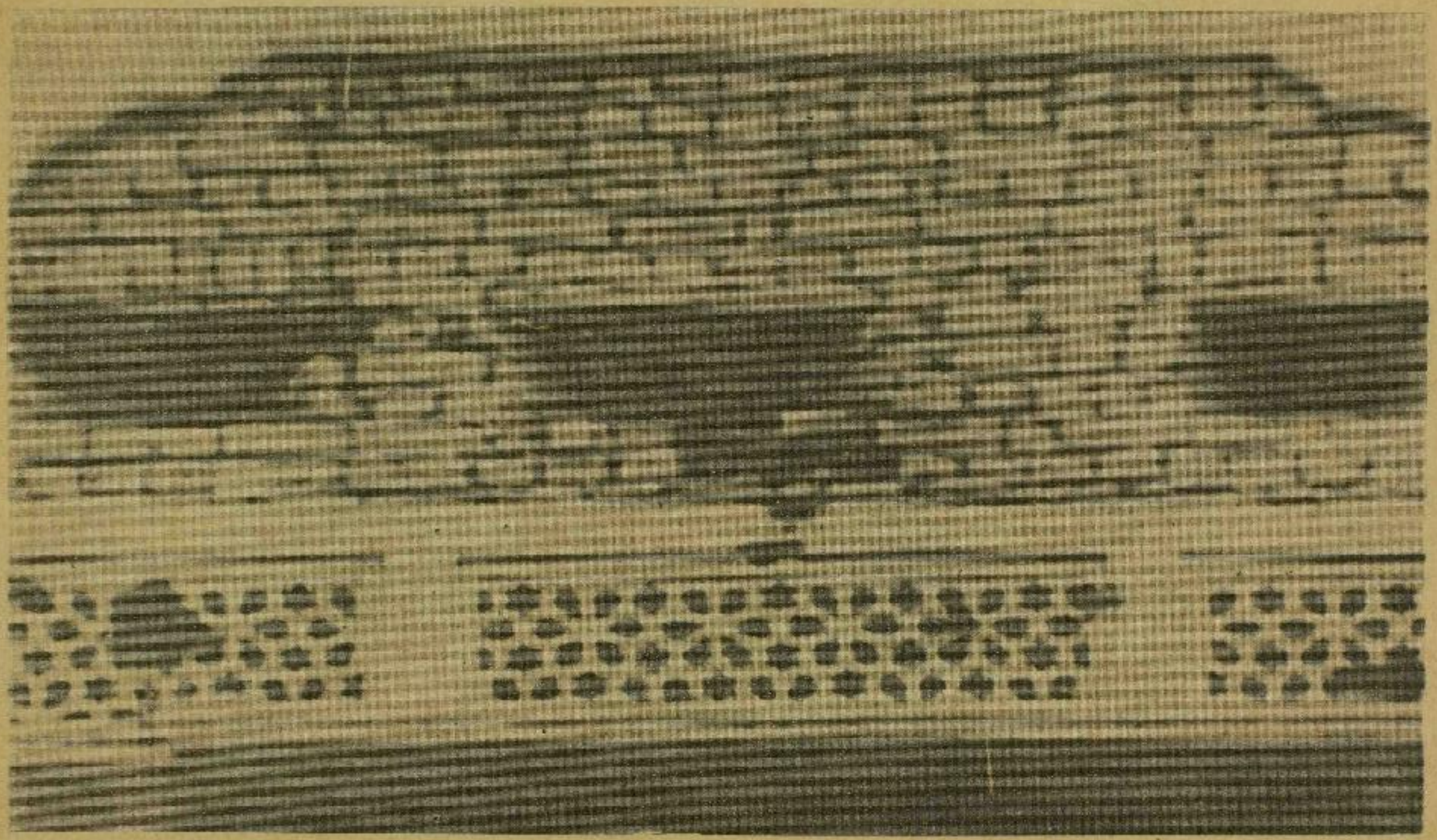

जलियांवाला बाग के मुख्य प्रवेश द्वार के मुख्य रास्ते को कवर करते हुए बनाई गई
ईंटों की किलेबंदी और तोड़-कर बनाए गए ग्रेटों का नजदीक का दृश्य ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

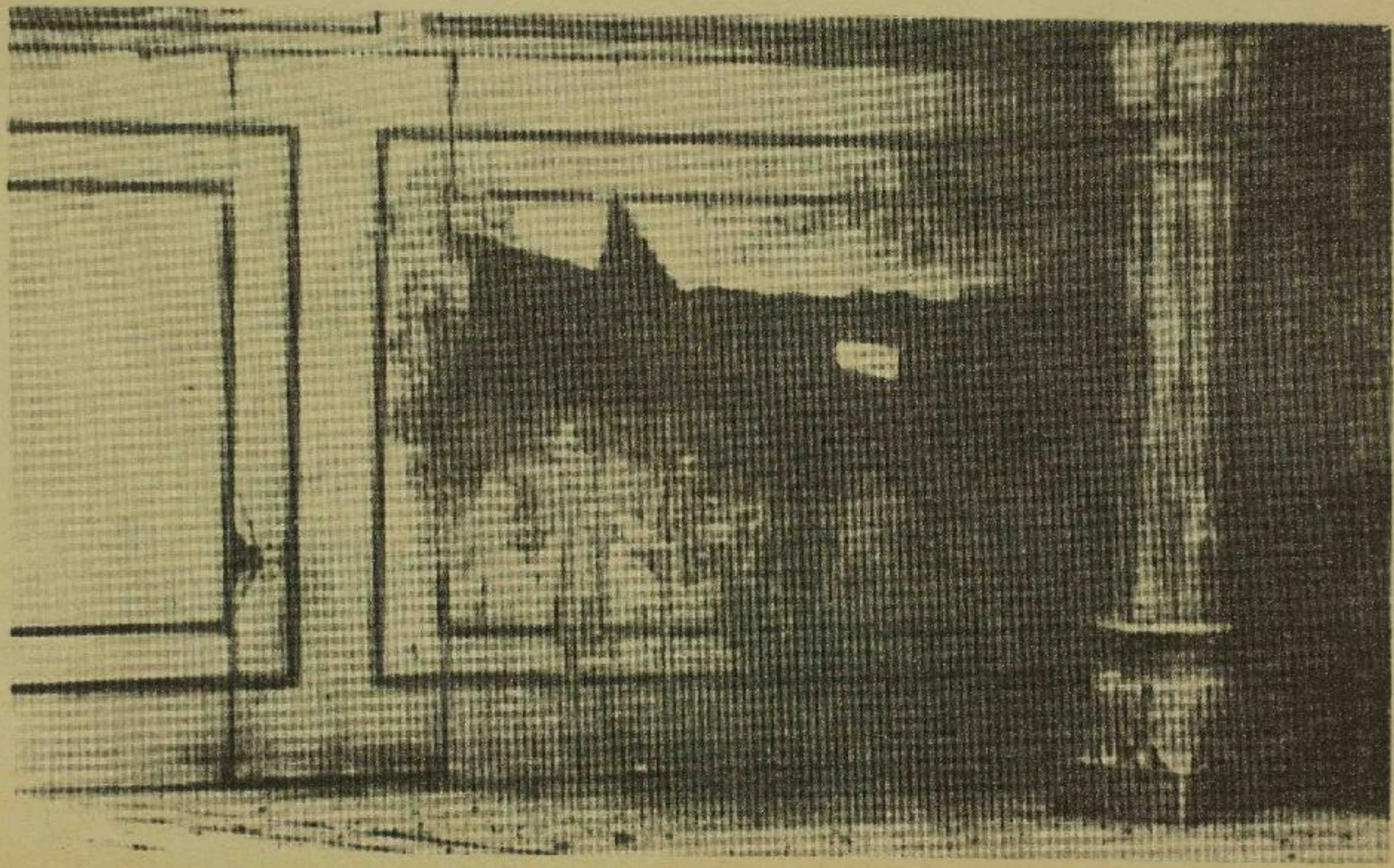

अकाल तख्त की संगमरमर की दीवारों को काट कर भूमि पर ईंट पत्थर का छोटा किला जिसमें मशीनगनें लगा रखी थीं, वहीं से जवान बड़ी संख्या में हताहत हुए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

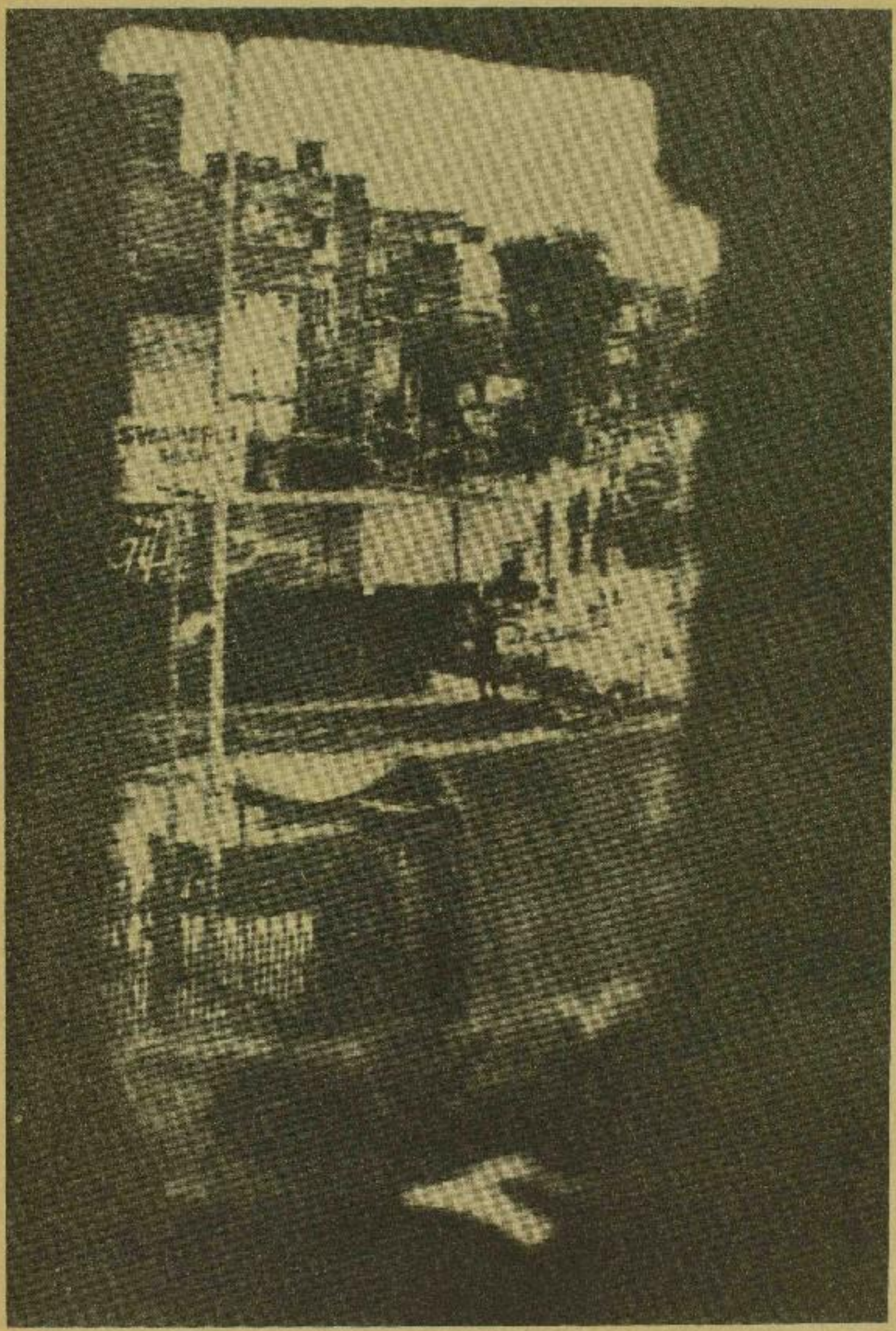

कलाक टावर के प्रवेश के प्रथम तल पर एक गोली मारने तथा देखने का सुराख, प्रवेश के मार्ग को यह सुरक्षा दिए हुए था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

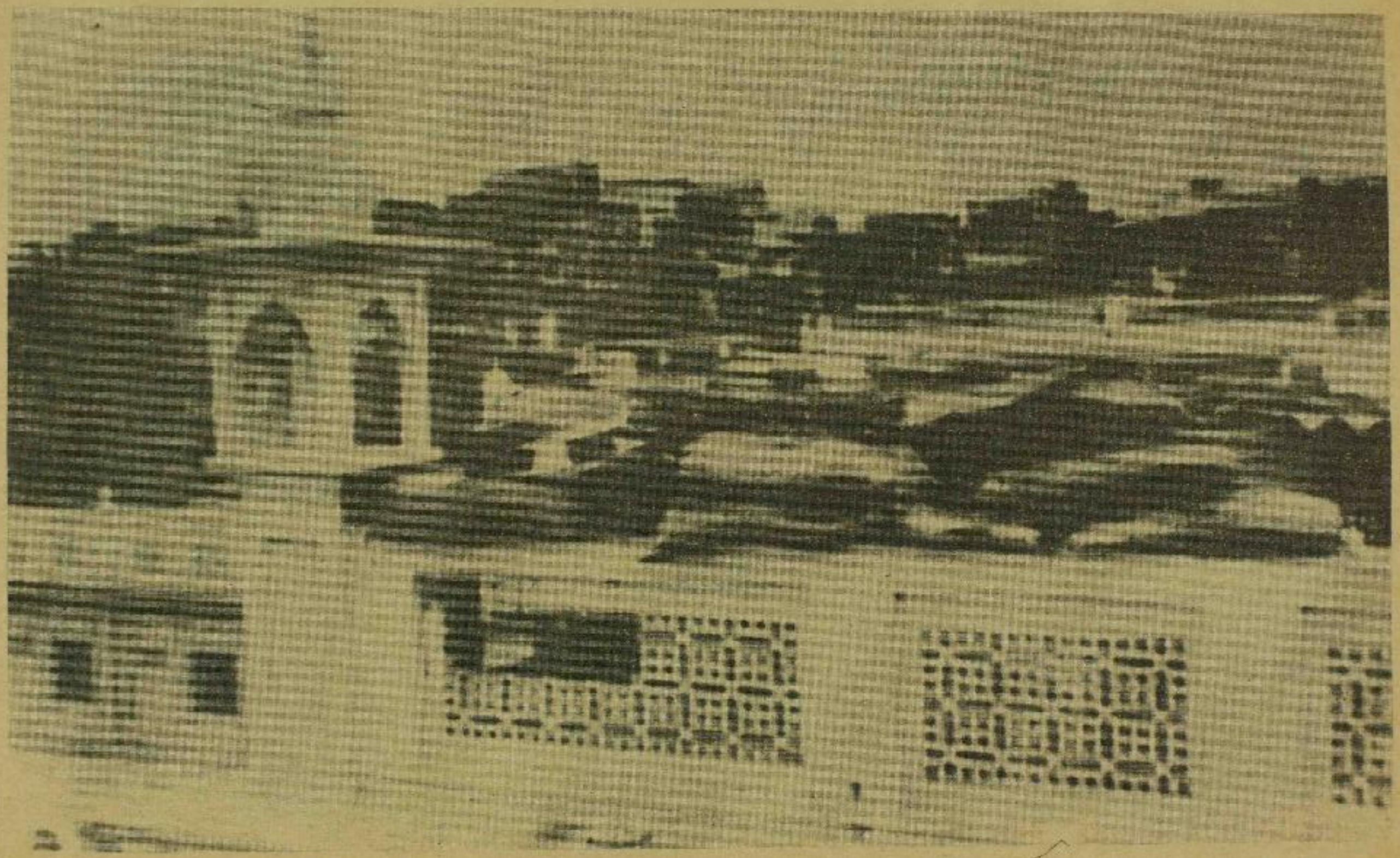

स्वर्ण मंदिर परिसर की छतों और उसके साथ लगते निजी मकानों की छतों पर की गई किलेबंदी ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

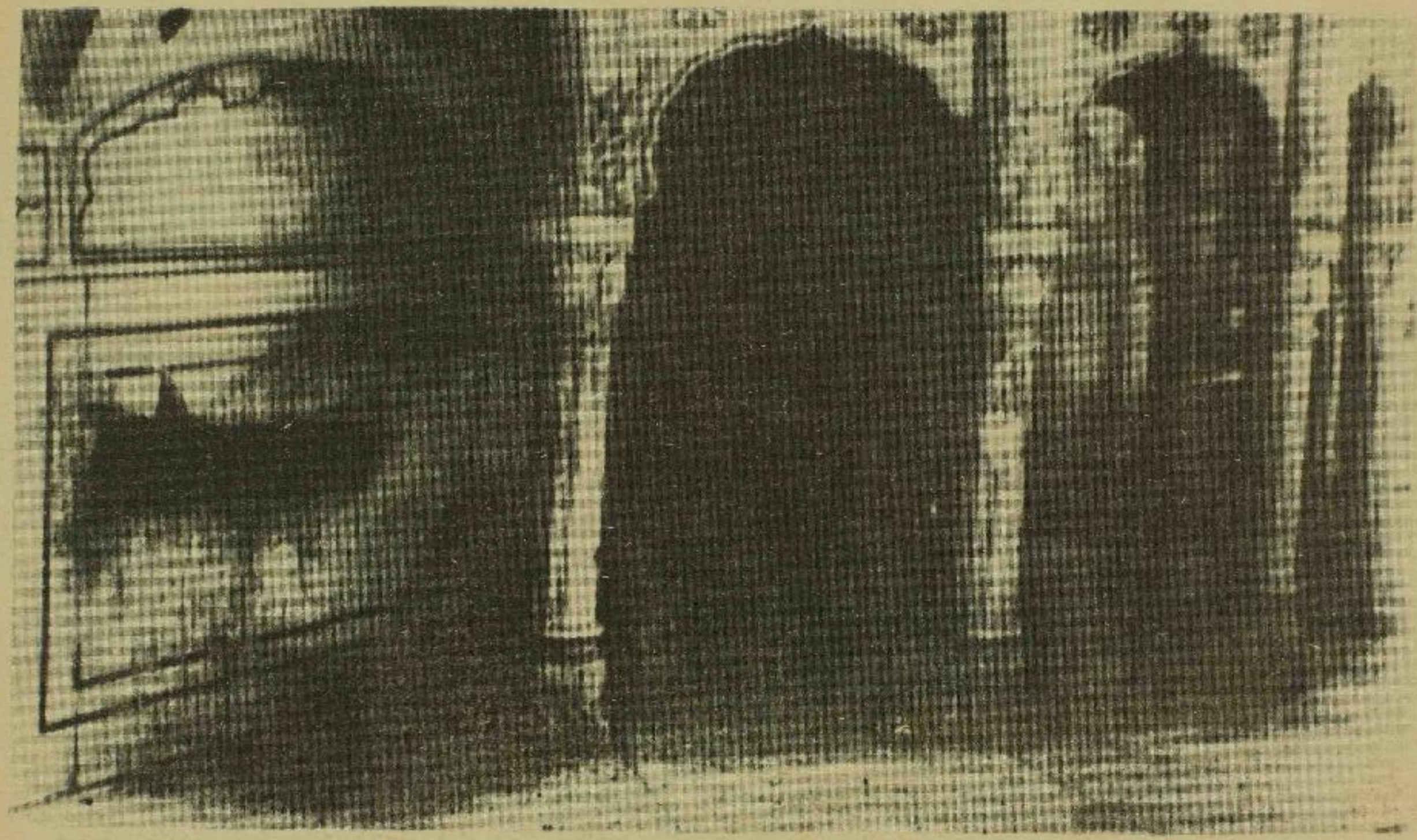

अकाल तख्त की संगमरमर की दीवारों को काट कर बनाया गया ईंट पत्थर का एक मशीनगन से गोलीबारी का ठिकाना—और विनाश के मौन दर्शक अकाल तख्त के स्तंभ ।

Digitized by Panjab Digital Library / www.panjabdigilib.org

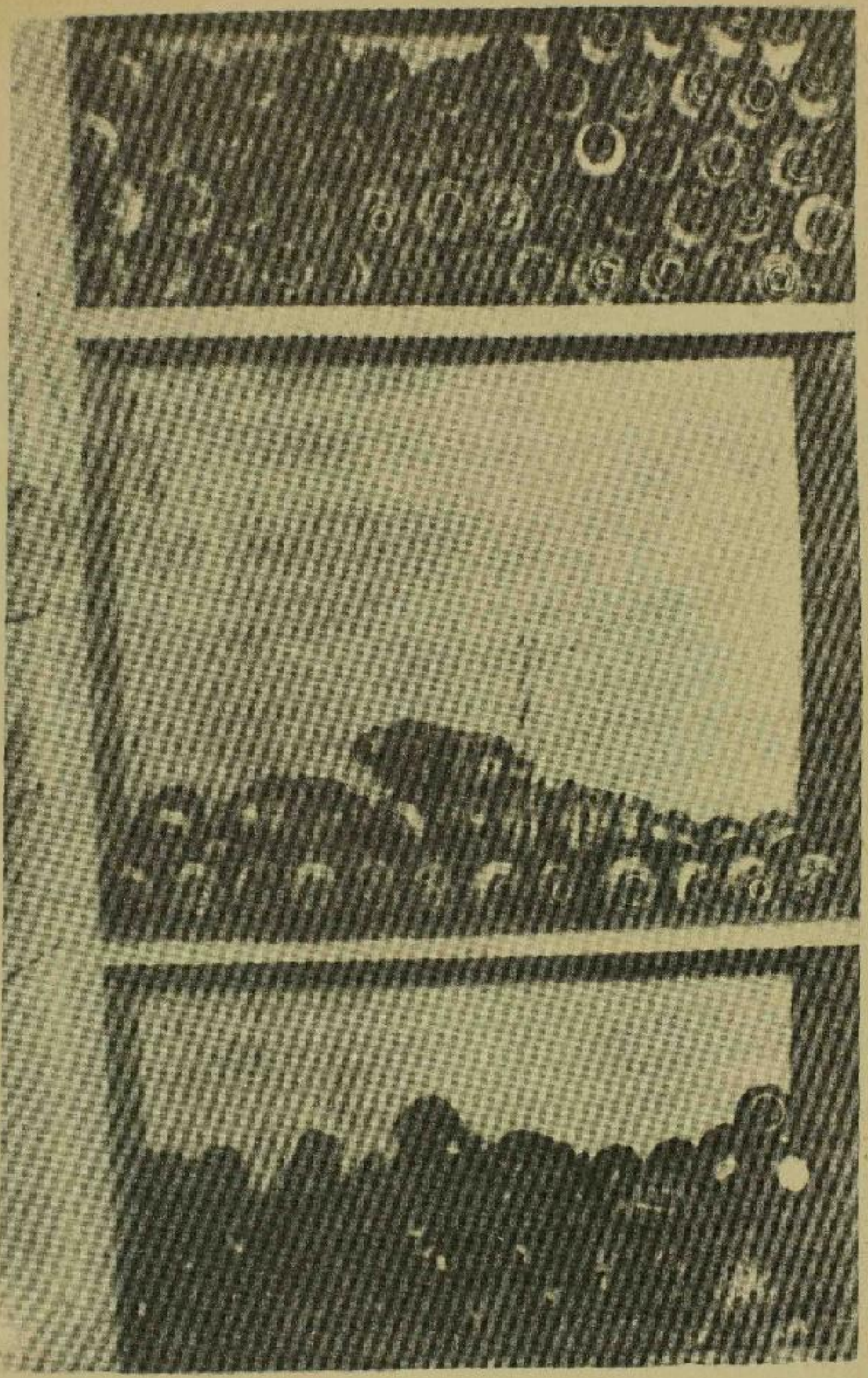

स्वर्ण मंदिर ग्रेनेड बनाने की फैक्टरी में पाए गए देसी और अन्य हैंड ग्रेनेड ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

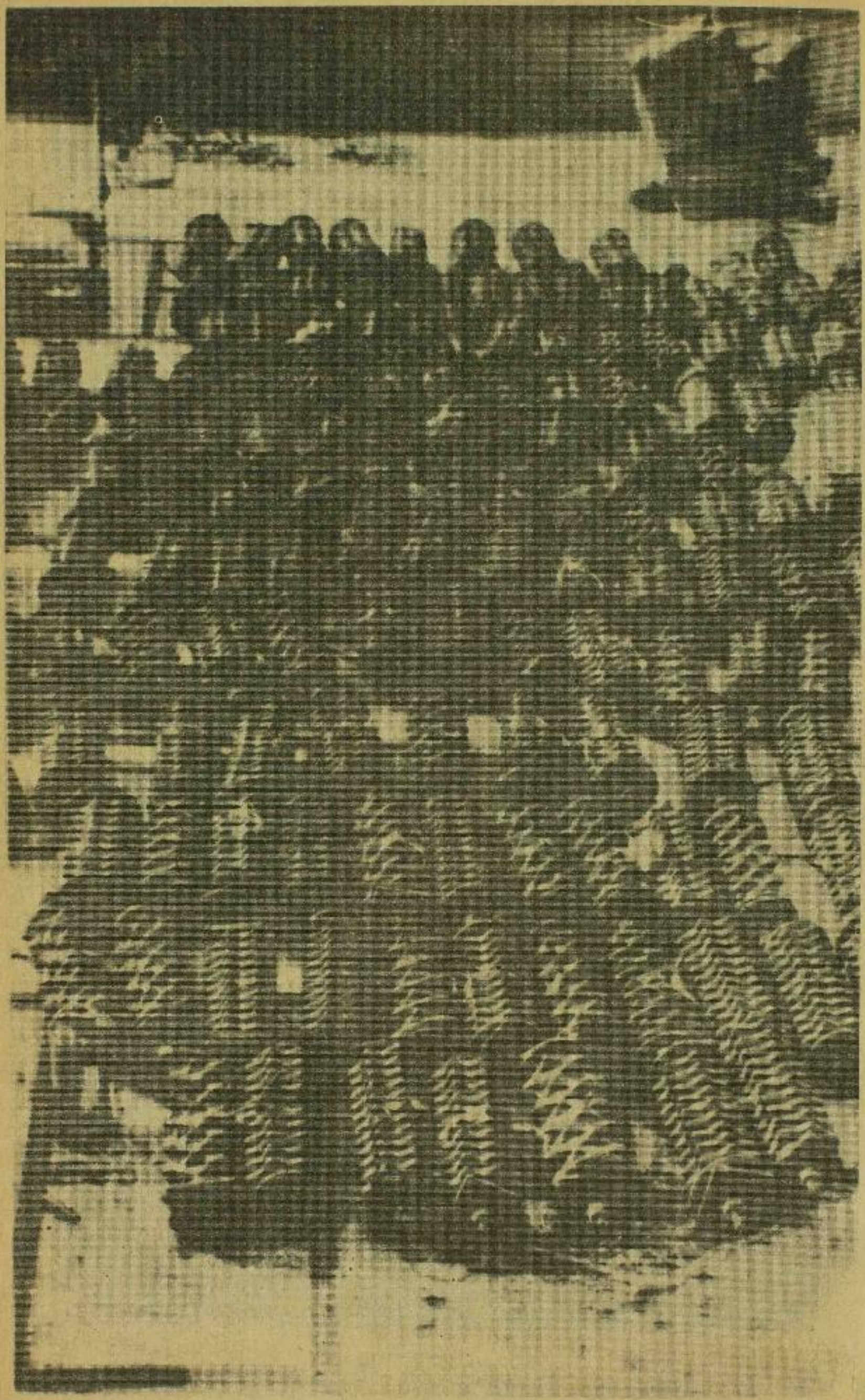

स्वर्ण मंदिर परिसर से बरामद "बटाला बम" के नाम से जानी जाने वाली देसी घातक ग्रेनेडे ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

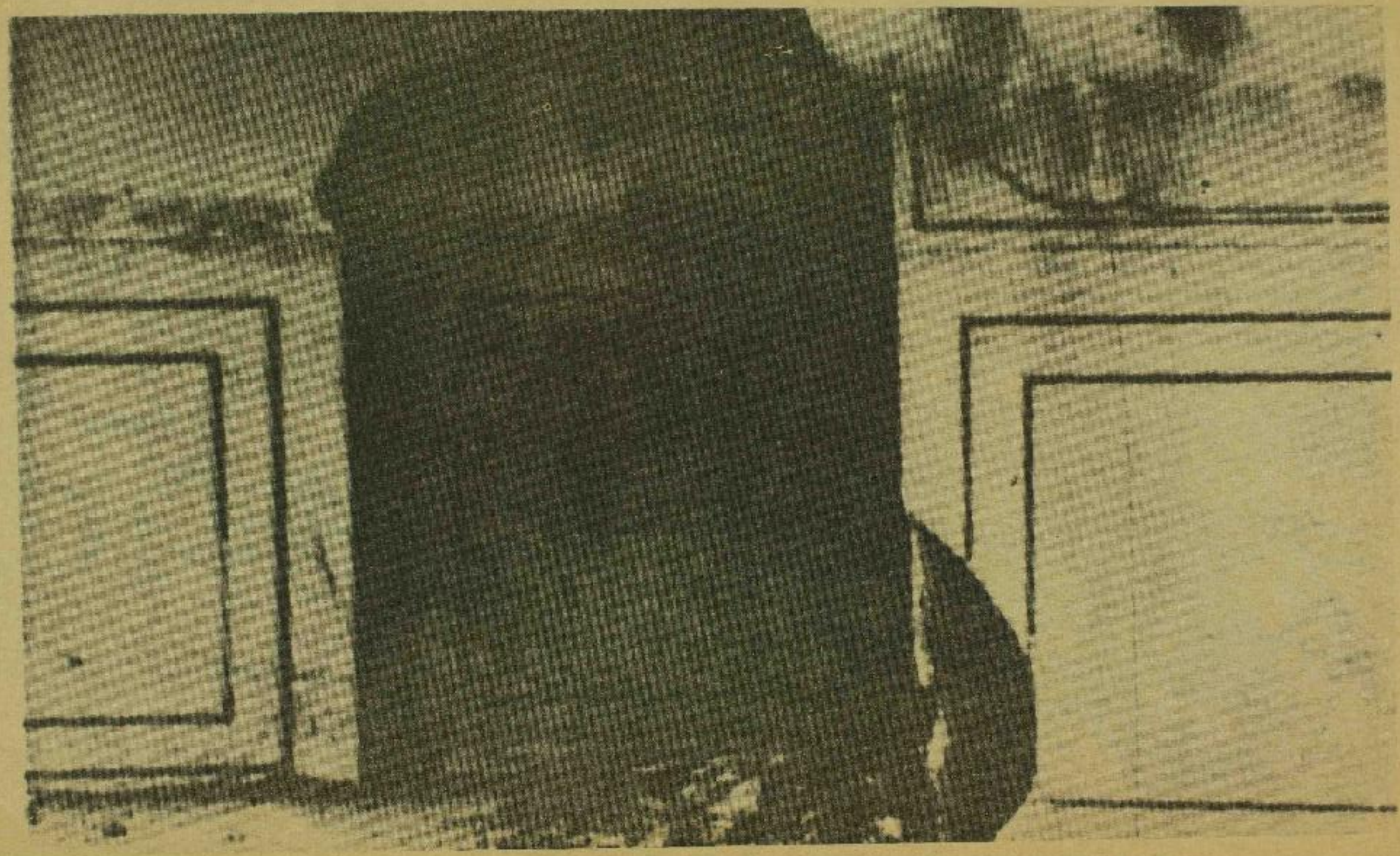

अकाल तख्त के तहखाने के ऊपर एक रोशनदान जहां से हथियारों का प्राणलेवा उपयोग किया गया।

Digitized by Panjab Digital Library / www.panjabdigilib.org

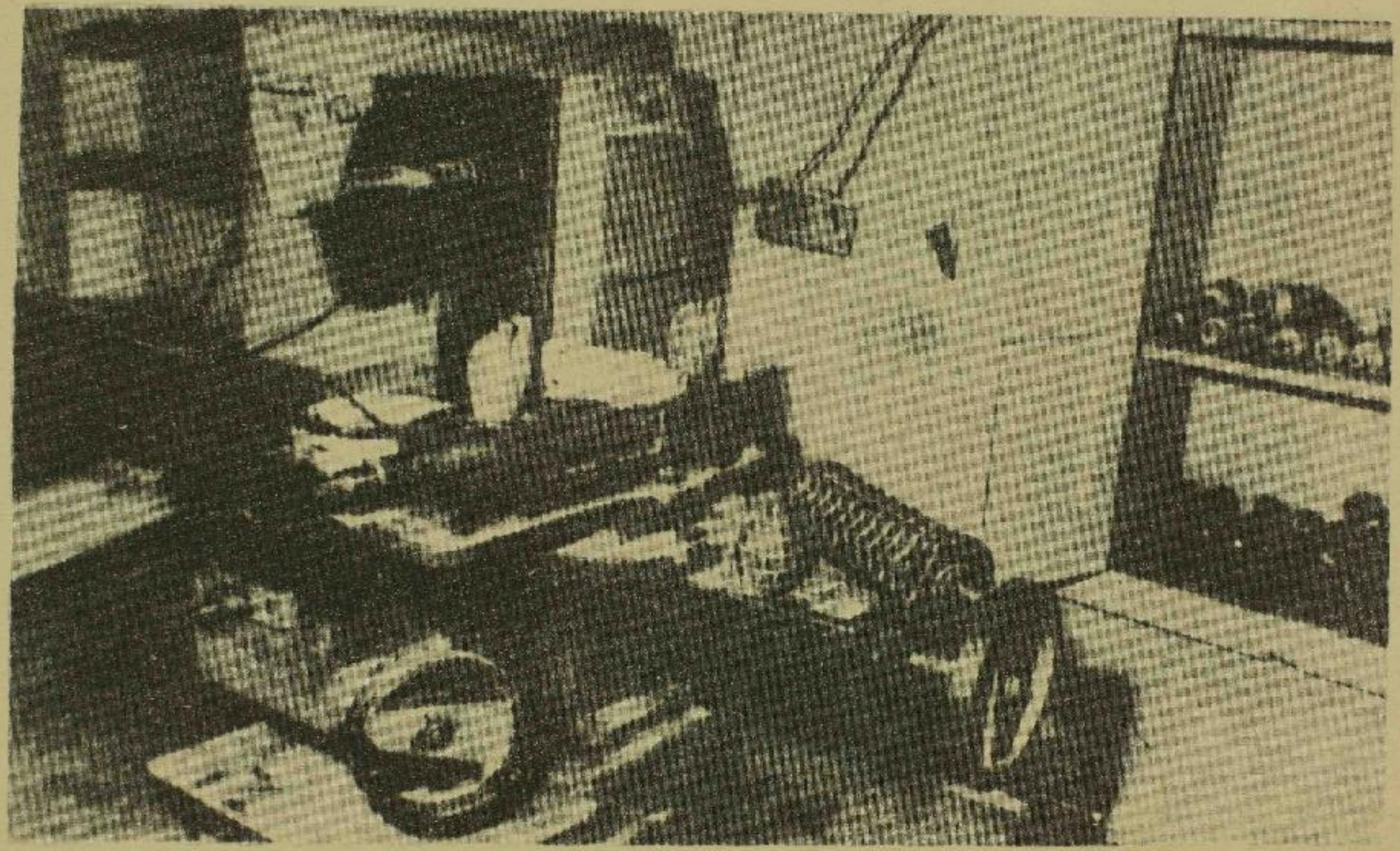

स्वर्ण मंदिर परिसर के दरवाजों में छिपाई हुई ग्रेनेड बनाने की फैक्टरी ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

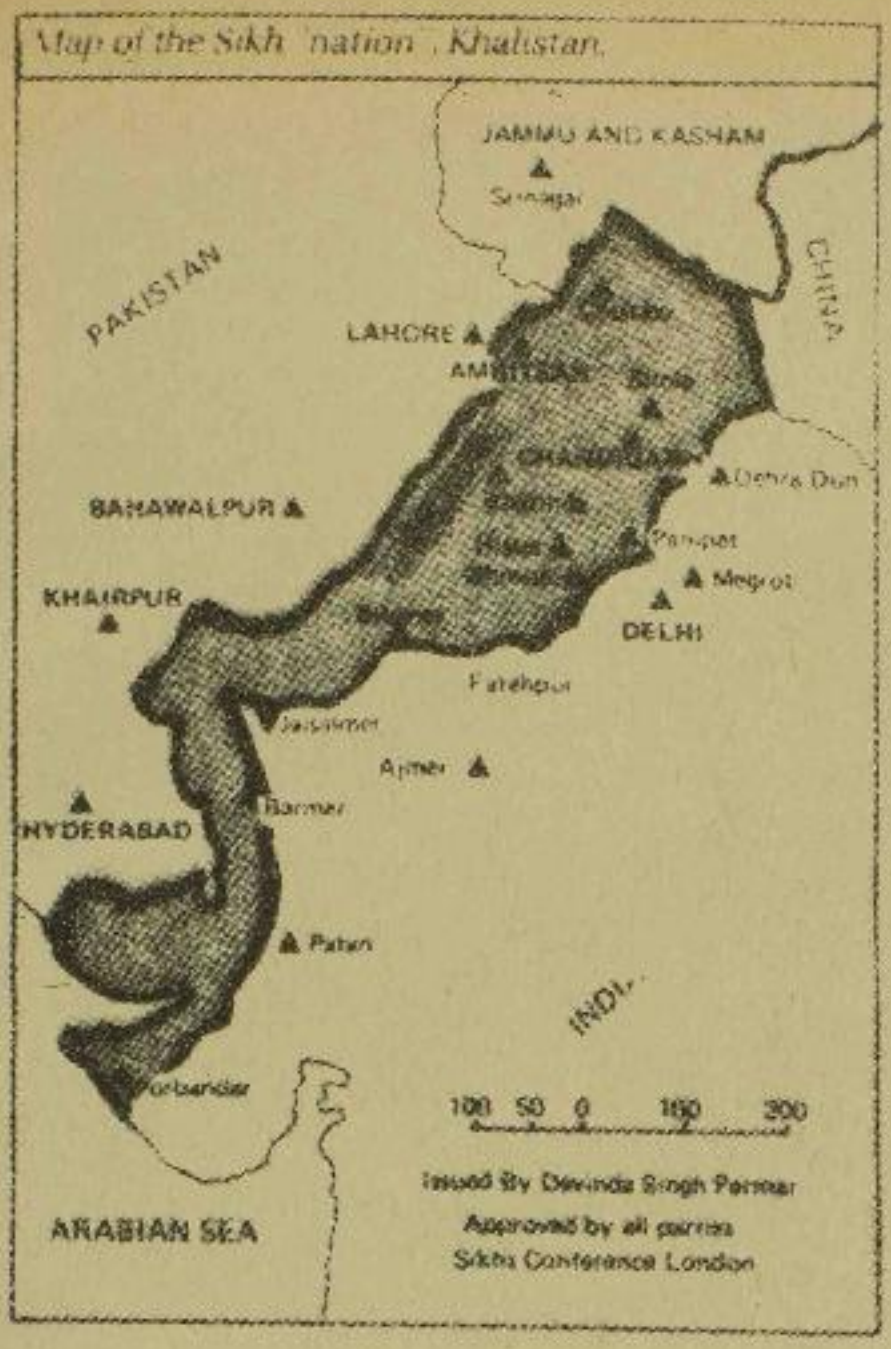

मानचित्र : खालिस्तान।

लंदन में 10 जून 84 को किया गया उग्र प्रदर्शन।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

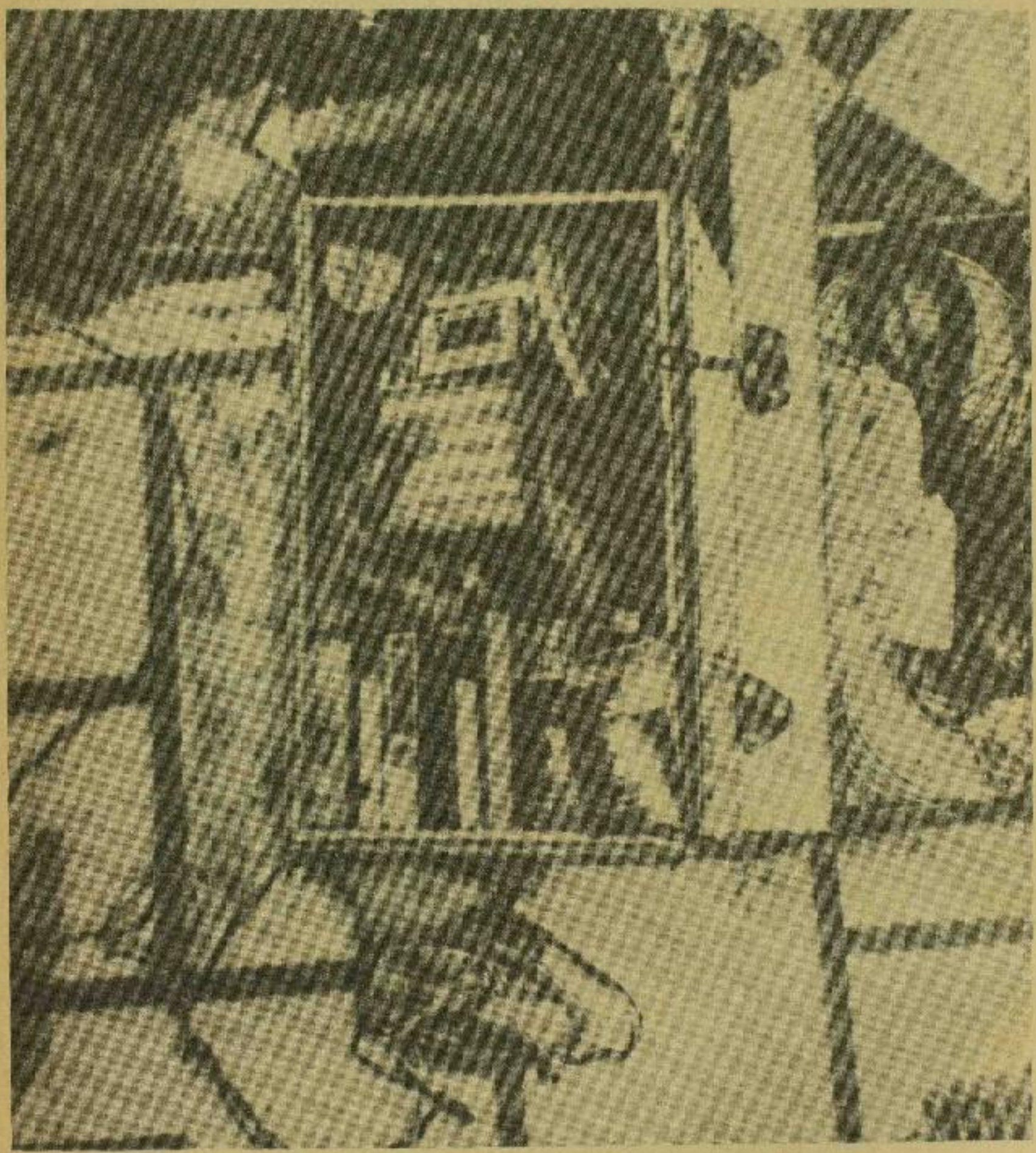

स्वर्ण मंदिर क्षेत्र में आतंकवादियों से प्राप्त कुछ पासपोर्ट, वीडियो-रिकार्डर कैसेट, फिल्म स्पूल्ज और सहायक सामग्री सहित विस्फोटक पदार्थ । आतंकवादियों के पास जापान का बना हुआ वायरलैस ट्रांसमीटर भी था ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

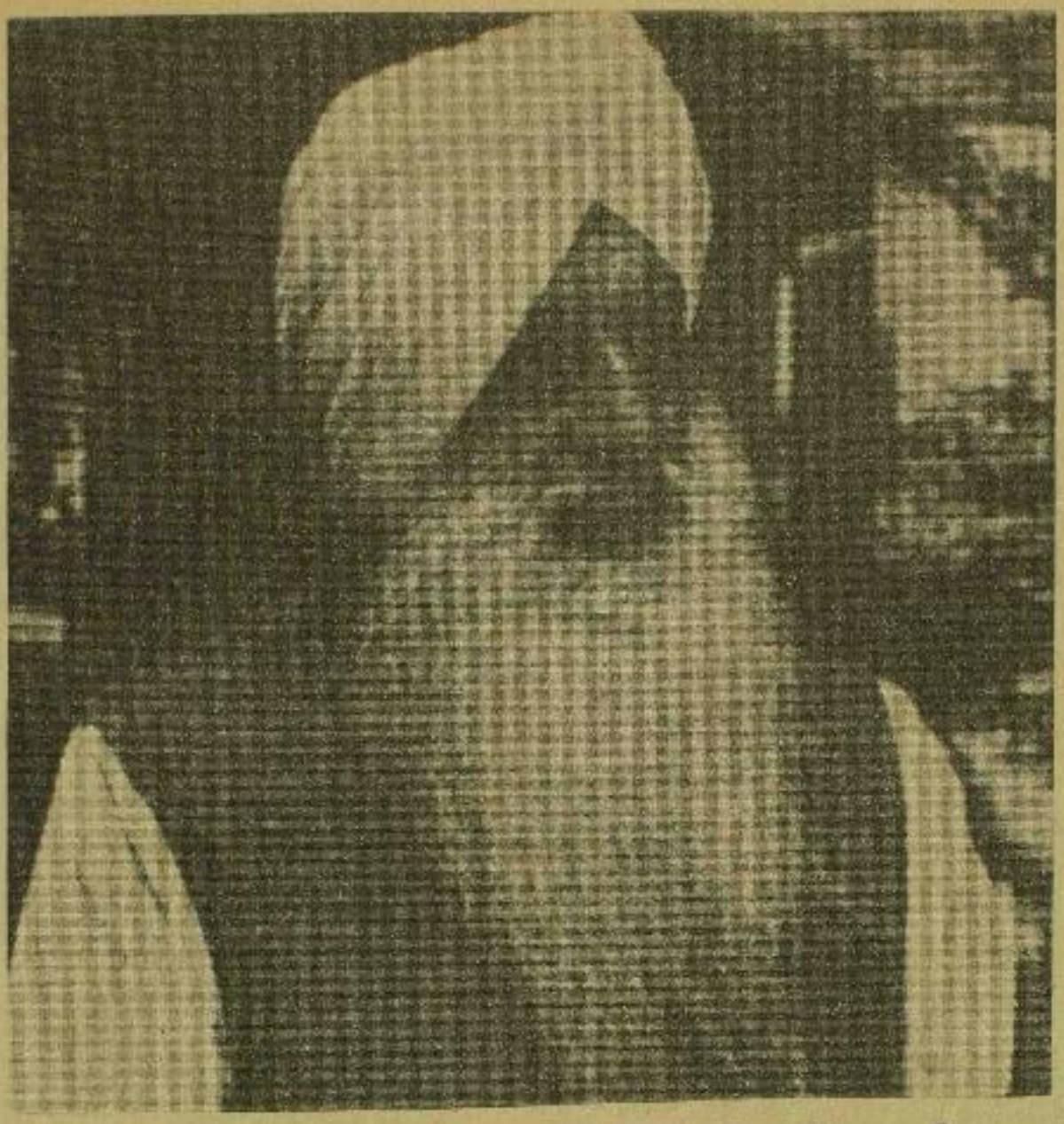

खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीत सिंह चौहान।

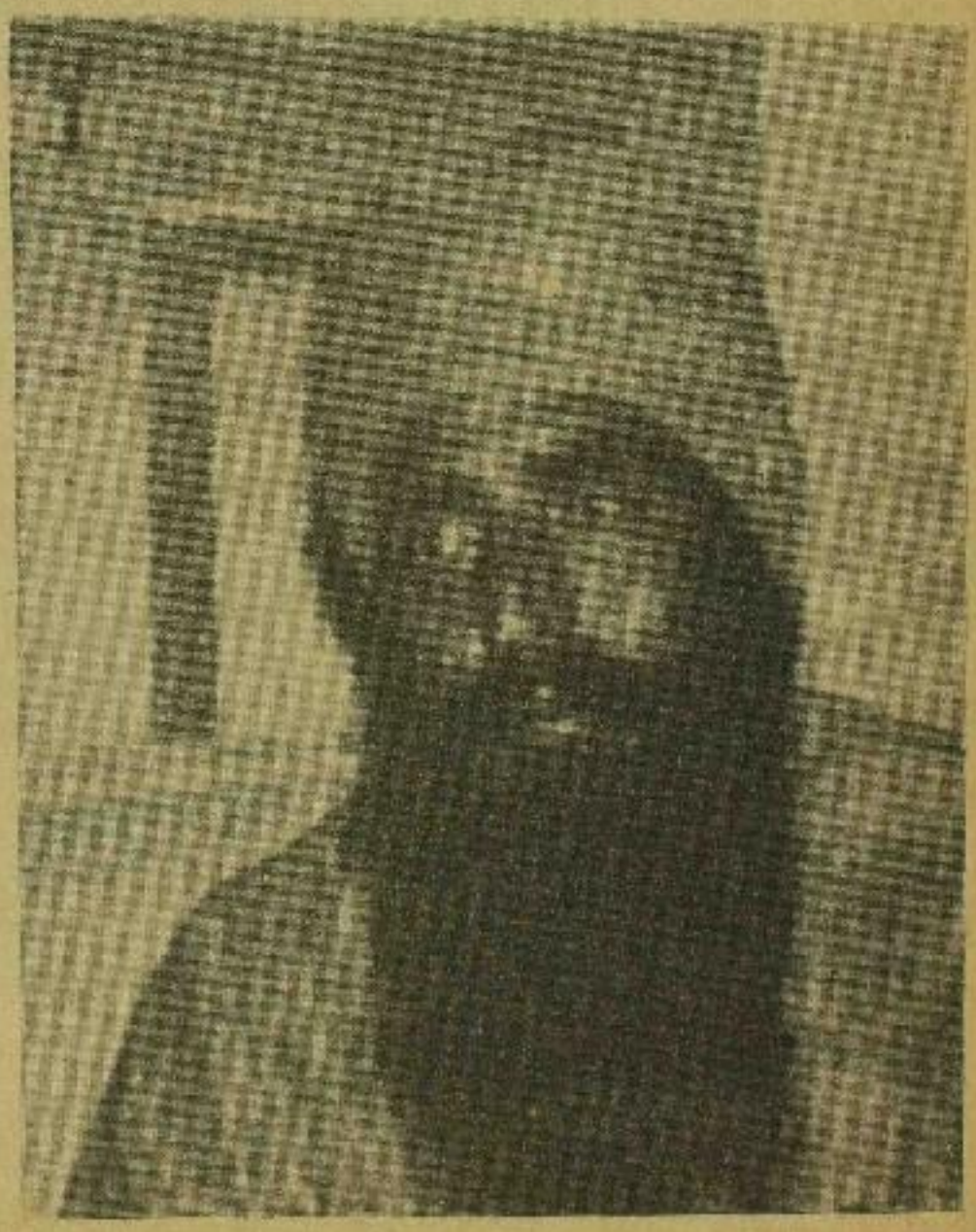

सन्त जनरैल सिंह भिडरांवाला।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

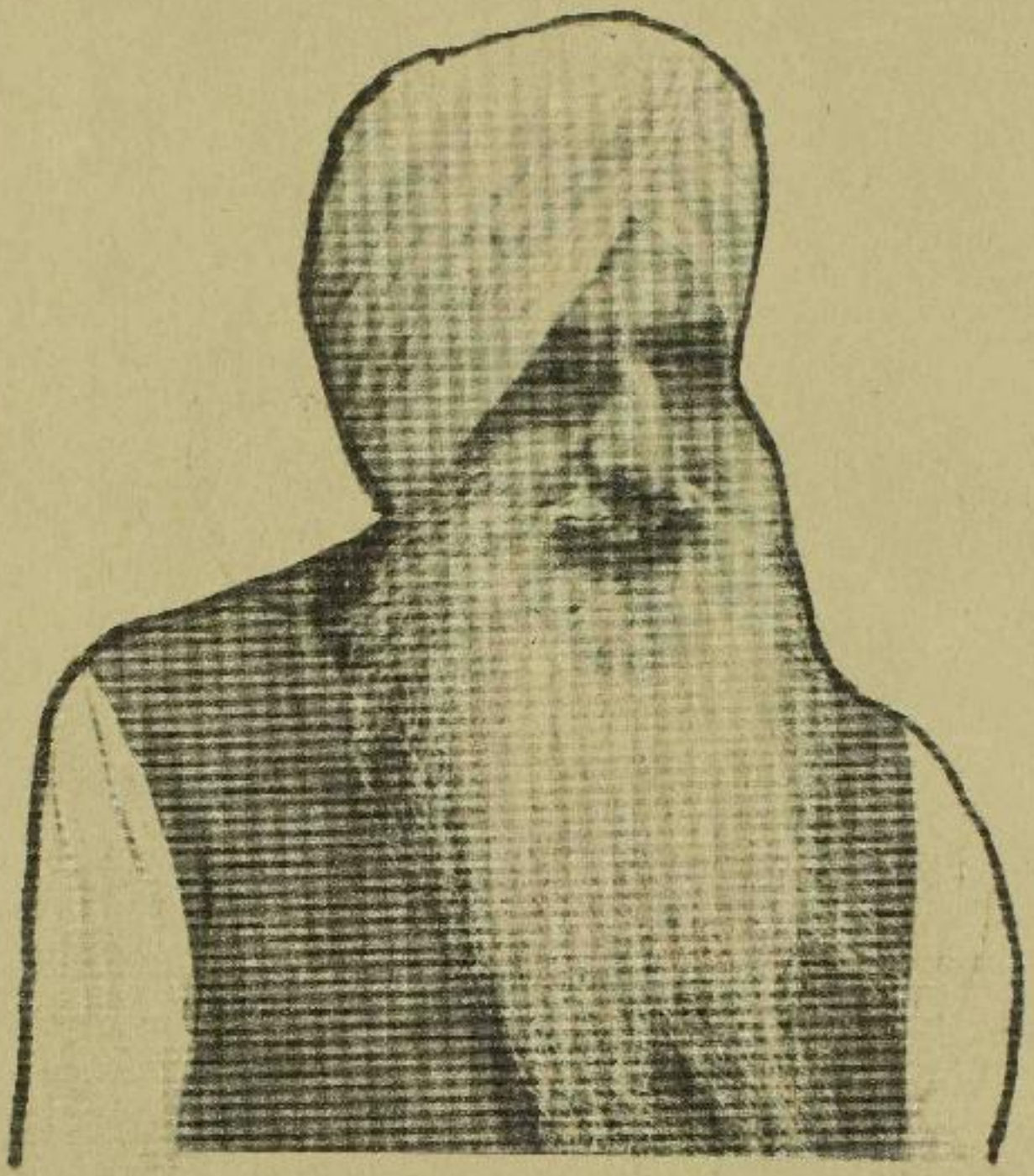

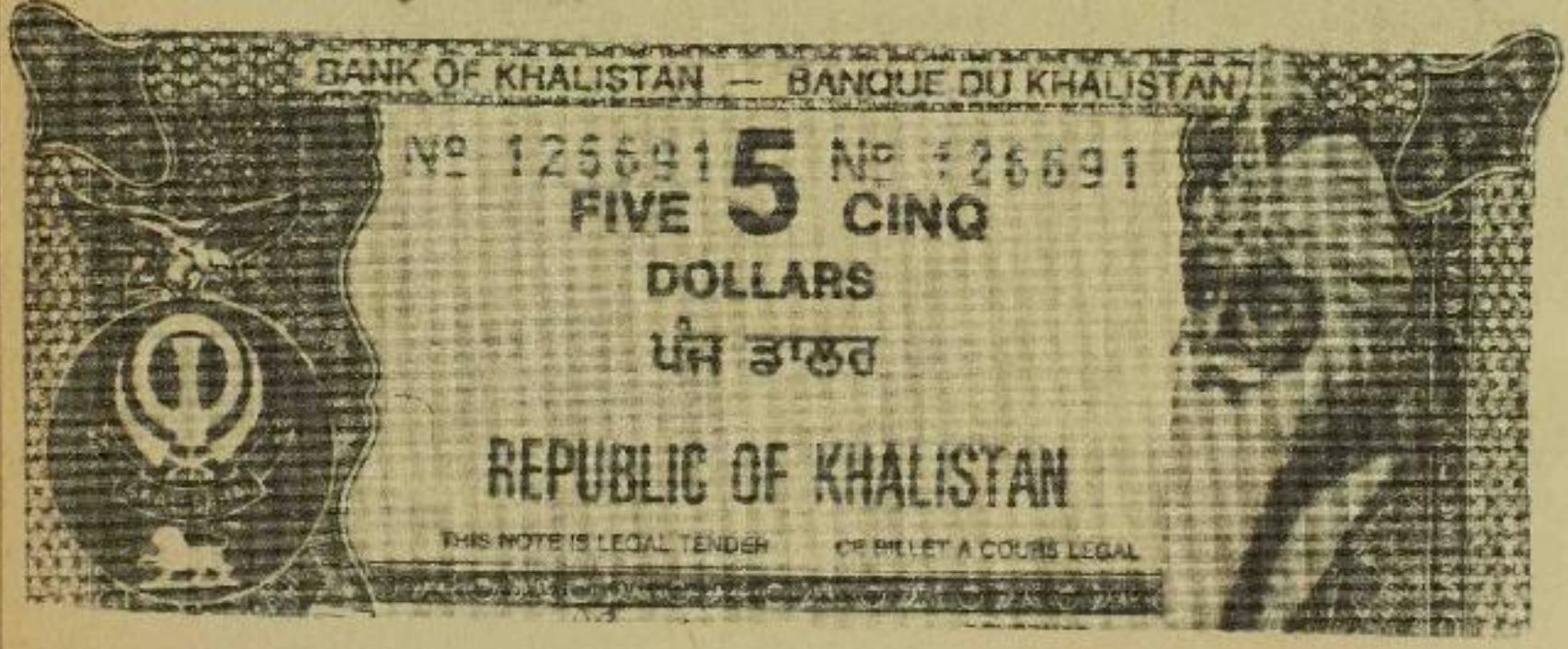

खालिस्तान का नोट और नोट जारी करने वाले जगजीत सिंह चौहान।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

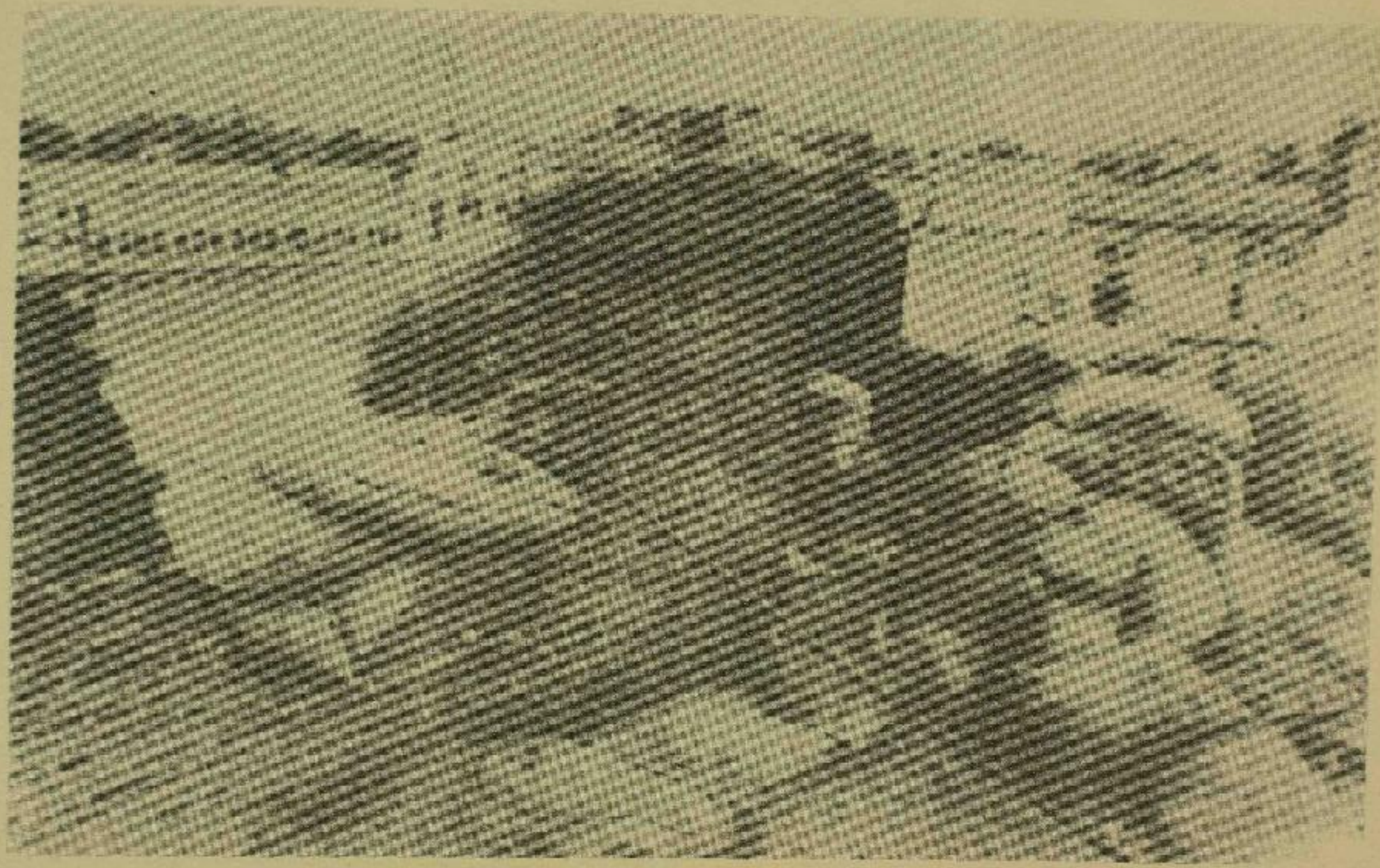

"दुख भजनी बेरी" के छत पर परिक्रमा के दोनों ओर दुहरी किलेबंदी की गई थी जिसके अंतर्गत हरमंदिर साहिब के सभी रास्ते और प्रवेश द्वार आ जाते हैं ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

खालिस्तान की मांग के लिए कनाडा में आंदोलन।

खालिस्तान की मांग : लंदन में प्रदर्शन।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

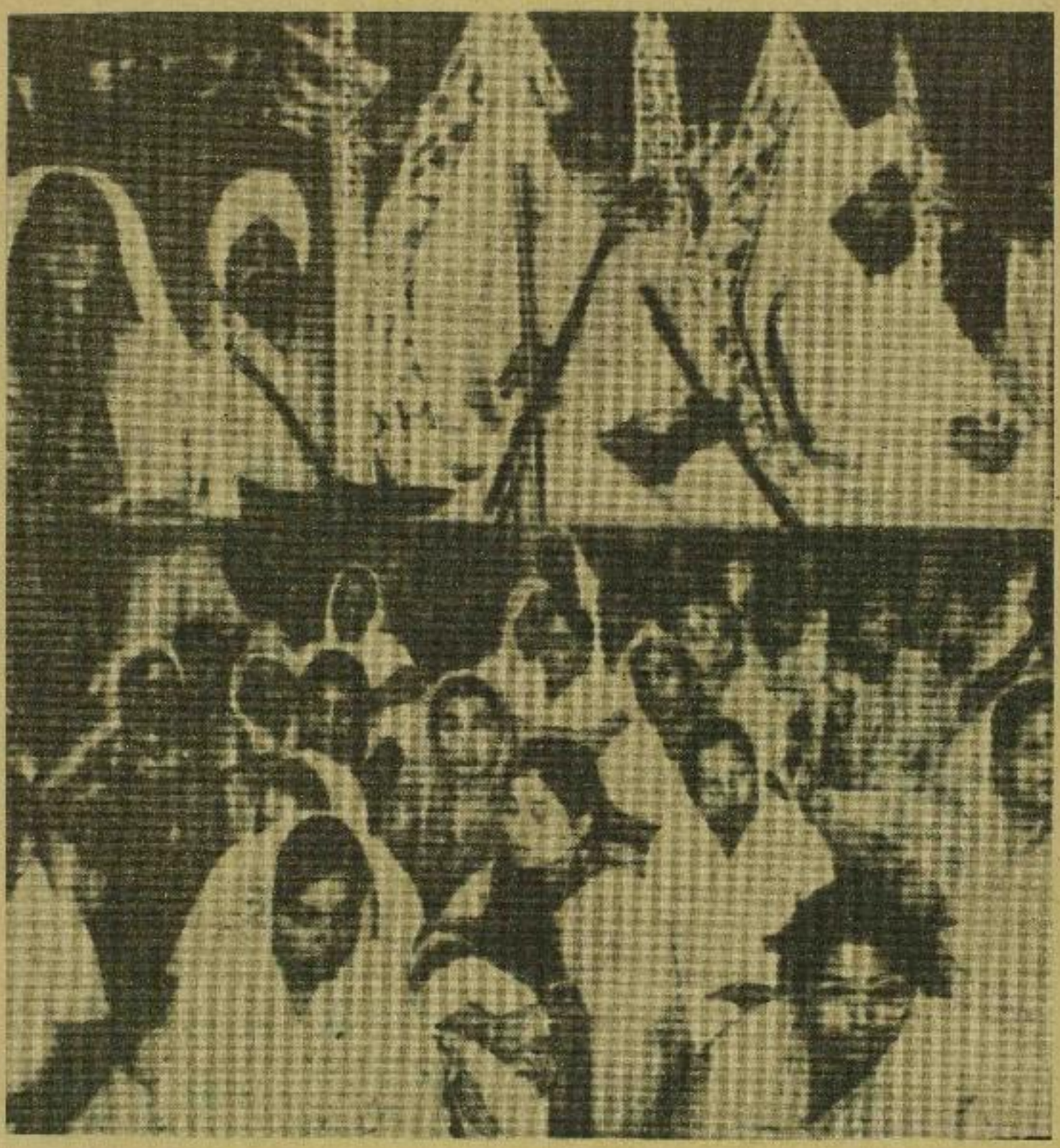

निरंकारियों का सम्मेलन ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

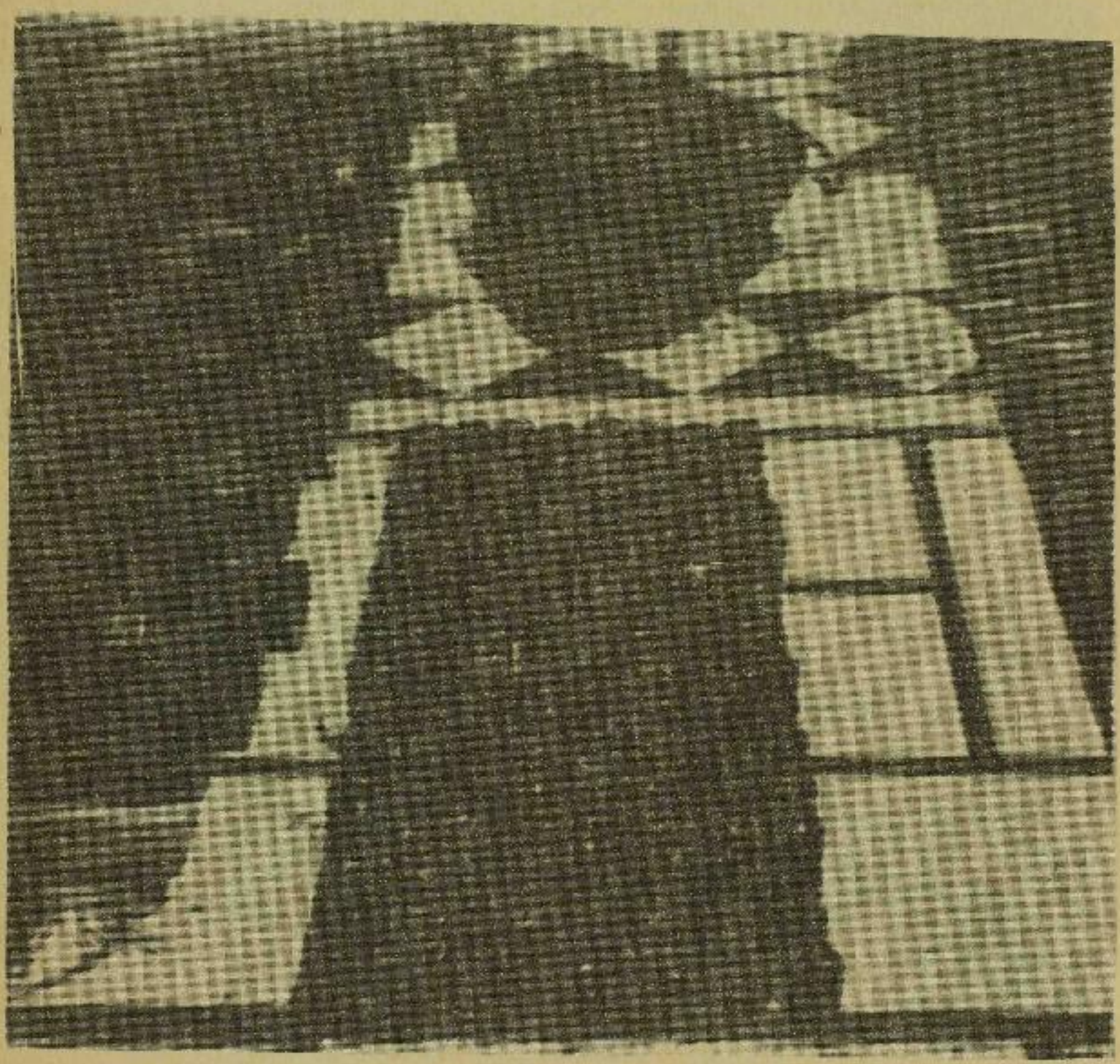

स्वर्ण मंदिर परिसर से प्राप्त और स्वर्ण मंदिर की प्रक्रिया में पड़ी पाई गई
एंटी-परसोनल माइन्ज, पिस्तौलें, स्टेन मशीन, कारबाइन और
विविध मेक की राइफलें ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

14-15 एक बम विस्फोट के कारण जिला अमृतसर में तरसिक्का गांव में श्री दिलबाग सिंह का मकान क्षतिग्रस्त हुआ।

22-23 पंजाब के तत्कालीन शिक्षा मंत्री, श्री हरचरण सिंह अजनाला के आवास पर देशी बम फेंके गए. जिससे कुछ नुकसान हुआ।

16-17 दिसम्बर, ग्राम सुल्तानविंड, जिला अमृतसर में कांग्रेस (आई) के एम० एल० ए० श्री लखा सिंह के अहाते में एक देसी बम का विस्फोट हुआ।

24 निरंकारी मिशन, भटिंडा के सचिव, प्रभु दयाल की तलवन्डी साबो, भटिंडा में हत्या।

1983

10 जनवरी, श्री स्वर्ण सिंह लहरी निरंकारी का शव घोल भाटिया, गुरदासपुर में पाया गया।

26 अमृतसर में बम विस्फोट की चार वारदातें। एक लकड़ी के खोखे को आग लगा दी गई और आंशिक रूप से जला हुआ तिरंगा झंडा एक दुकान के सामने फेंका गया। अमृतसर में, गणतन्त्र दिवस समारोह स्थल गुरु नानक स्टैडियम से एक हथगोला बरामद।

27 सिंडीकेट बैंक, अमृतसर की एक शाखा में 7,80,000 रुपए की बैंक डकैती।

31 कांग्रेस (आई) एम० एल० ए० श्री जोगिन्द्र नाथ के बड़े भाई श्री मोहिन्द्र पाल की अमृतसर में गोली मार कर हत्या।

16 फरवरी, ग्राम किरयाली, जिला अमृतसर में एक पुलिस इंस्पेक्टर की गोली मार कर हत्या।

8 मार्च, दिल्ली में पालिका बाजार और अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डा पर बम विस्फोट।

16 अमृतसर के नजदीक उग्रवादियों और पुलिस के बीच मुठभेड़ में एक पुलिस अधीक्षक गंभीर रूप से जख्मी। एक उग्रवादी की लाश, जिसकी मुठभेड़ में मृत्यु हो गई थी, एस० जी० पी० सी० अमृतसर द्वारा पुलिस के हवाले की गई। तीन अन्य-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उपवादियों ने, जो घायल हो गए थे, गुरु नानक निवास में शरण ली।

21 कुछ निहंग रात्रि के लगभग 8.30 बजे जिला गुरदासपुर में कादियां के बाजार में गए और अन्धाधुन्ध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। इसके परिणामस्वरूप 9 व्यक्ति घायल हो गए।

23 पटियाला के एक जज, श्री के० के० गर्ग के मकान के अहाते में दो बम फेंके गए। एक बम फटा, जिसके कारण खिड़कियों के शीशे टूटे।

30 मुकेरियां में तीन अलग-अलग स्थानों पर बम फेंके गए जिसके परिणाम स्वरूप, पंजाब के एक भूतपूर्व वित मंत्री के पुत्र और एक अन्य व्यक्ति अपनी दुकानों में जख्मी।

4 अप्रैल, अकाली दल द्वारा आयोजित "रास्ता रोको" आन्दोलन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने हिंसा तथा आगजनी की वारदातें कीं और पुलिस पर आक्रमण किया। दो कार्यकारी मजिस्ट्रेटों और 175 पुलिस अधिकारियों और कर्मियों को चोटें आईं। हिंसक भीड़ पर काबू पाने के लिए पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ा, जिसमें लाठी चार्ज, अश्रु गैस और गोलीबारी शामिल थी। इसमें 21 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

6 फिरोजपुर, शस्त्रागार से हथियारों की चोरी की वारदात। कई राइफले, स्टेनगन और गोलाबारूद चोरी किया गया।

17 एक निरंकारी की हत्या के मामले में एक गवाह की जालन्धर के एक अस्पताल में गोली मारकर हत्या।

18 एक निरंकारी, श्री अमर सिंह ग्राम नागोके, जिला अमृतसर में गोली चलाने से जख्मी।

20 जिला जालन्धर में पंजाब सिंध बैंक की एक शाखा से 3 लाख [illegible]ए लूटे गए।

21 सुल्तानपुरी लोदी, कपूरथला में एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

22 श्री प्रेम नाथ किरयाना व्यापारी और म्युनिसिपल कमिश्नर की मंडी रोड, सुल्तानपुर लोदी, जिला कपूरथला स्थित एक दूकान में गोली मार कर हत्या।

25 दरबार साहिब, अमृतसर के मुख्य प्रवेशद्वार के बाहर पुलिस डी० आई० जी० जालन्धर, श्री ए० एस० अटवाल की गोली मारकर हत्या और एक अन्य व्यक्ति जख्मी।

29 चेतनपुर, जिला अमृतसर में पंजाब नेशनल बैंक की एक शाखा से 22,000 रुपए और एक बंदूक लूटी गई।

4 मई, स्वर्ण मंदिर के नजदीक से एक लाश मिली।

21 जिला होशियारपुर में बुल्लोवाल में, निरंकारी करतार सिंह की गोली मारकर हत्या।

23 गुरु नानक निवास के पीछे एक नाली से एक लाश मिली।

28 जिला गुरदासपुर में ग्राम पाटन में एक अध्यापक की गोली मारकर हत्या।

30 सुल्तानपुर लोदी, जिला कपूरथला स्थित स्टेट बैंक आफ पटियाला को लूटने का प्रयास। एक सहायक पुलिस सब-इंस्पेक्टर की मृत्यु और एक कांस्टेबल तथा दो गनमैन जख्मी।

6 जून, जिला अमृतसर के ग्राम मुच्चाल में एक निरंकारी को मारा गया।

10 जिला गुरदास में बहरामपुर स्थित पंजाब नैशनल बैंक से 27,000/- रुपये लूटे गए।

11 गुरु नानक निवास में सीवर से एक लाश मिली।

15 जिला जालन्धर में सहकारी बैंक, उरापुर से 70,000/- रुपए लूट लिए गए।

16 फरीद कोट में निरंकारी भवन पर एक बम फेंका गया।

17 अकाली दल द्वारा "रेल रोको" कार्यक्रम आयोजित यात्रियों और रेलवे सम्पत्ति की रक्षा तथा सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, पंजाब में रेल यातायात निलंबित। राज्य सड़क परि-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वहन की बसें भी नहीं चली। आन्दोलनकारियों ने तोड़-फोड़ की वारदात की जिनमें सिगनलों और टेलीफोन/टेलीग्राफ की तारों को काटना, फिश-प्लेटों को हटाना, लकड़ी के लट्ठे रखकर रेल पटरियों पर बाधा खड़ी करना और नहरों के किनारों को काटकर रेल पटरियों को बहाना शामिल था।

18 फगवाड़ा, जिला कपूरथला में पुलिस इंस्पेक्टर, श्री रतन चंद शारदा की गोली मारकर हत्या।

20 ग्राम नागोके, जिला अमृतसर में एक निरंकारी गोली चलाये जाने से घायल।

24 जालन्धर स्थित "दैनिक प्रताप" के कार्यालय में एक पार्सल बम का विस्फोट जिससे दो कर्मचारी मारे गए और एक अन्य घायल।

25 अमृतसर में एक निरंकारी हमले से घायल। जिला कपूरथला में सुलतानपुर लोदी स्थिति एक मन्दिर के पुजारी की किसी तेज धार वाले हथियार से हत्या। मन्दिर का नौकर भी घायल।

27 शक्ति नगर, जालन्धर में एक बम विस्फोट जिसके कारण दो व्यक्तियों की मृत्यु। इस स्थान से पुलिस द्वारा गोला बारूद बरामद।

28 अमृतसर में एक निरंकारी की हत्या।

28-29 भटिंडा के नजदीक रेलवे पटरी से फिश-प्लेटें हटाने के प्रयास रेल यातायात में बाधा पड़ी।

1 जुलाई, अमृतसर में दो निरंकारियों की हत्या।

2 निहंगों ने बाबा बकाला पुलिस चौकी पर आक्रमण किया। गोली चलाई। निहंग एक पुलिस राइफल लेकर भाग गए। पुलिस उनके डेरे पर गई। एक दूसरे पर गोलीबारी के दौरान एक व्यक्ति की मृत्यु और दो व्यक्ति घायल। पुलिस द्वारा डेरे से बड़ी मात्रा में हथियार और गोल-बारूद बरामद। पंजाब नैशनल बैंक, बुचोखुर्द, जिला भटिंडा से 30,000/-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रुपए की लूट।

7 जिला लुधियाना के कटनी कलां से न्यू बैंक आफ इंडिया से लगभग 44,000/- रुपए की लूट।

13 ग्राम फातूधिंगा, कपूरथला में एक हैड-कांस्टेबल और 3 कांस्टेबलों की हत्या। आक्रमणकारी पुलिस की तीन राइफलें और 100 कारतूस ले भागे।

15 ग्राम धारार, तरन तारन, जिला अमृतसर में एक निरंकारी गोली चलाने से जख्मी।

28 अमृतसर में बम विस्फोट में एक व्यक्ति की मृत्यु।

2 अगस्त, जिला अमृतसर में ग्राम छनुपुर काले में एक निरंकारी पर गोली चलाये जाने से गंभीर रूप से घायल जिसकी बाद में मृत्यु। खुरदा, जिला अमृतसर में न्यूं बैंक ऑफ इंडिया से एक लाख रुपये की लूट।

4 अमृतसर में एक निरंकारी की हत्या।

5 जिला गुरदासपुर में कटली सूरत मालही के पंजाब एंड सिंध बैंक से 1,10, 706 रुपए लूटे गए।

8 एक उर्वरक एजेंट अमृतसर में जंडियाला गुरू में गोली चलाये जाने से गंभीर रूप से घायल मुक्तसर में एक निरंकारी की दुकान पर बम फेंका गया।

15 मुक्तसर में पुलिस सब इंस्पेक्टर की गोली मार कर हत्या तथा एक कांस्टेबल घायल।

16 स्टेट बैंक आफ इंडिया, जंदोके सरहाली, जिला अमृतसर से 21,000 रुपए लूटे गये। अमृतसर में एक निरंकारी की हत्या एक निरंकारी जिला अमृतसर के गांव कुकरांवाला में हमले से घायल।

29 पंजाब के सभी जिलों में "काम रोको" आंदोलन आयोजन। कुछ हिंसक घटनाएं।

3 सितम्बर, सराय गुरू रामदास, अमृतसर के पीछे नाली से एक शव बरामद।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

5 बैंक ऑफ इंडिया, चाब्बा जिला अमृतसर से 80,000- रु० लूटे गये।

10 अमृतसर में एक निरंकारी की गोली मार कर हत्या।

21 श्री डी० आर० भट्टी, एस० एस० पी०, लुधियाना पर कार्यालय में प्रवेश करते समय गोली चलाई गई। उनके गनमैन की घटना स्थल पर ही मृत्यु। श्री भट्टी घायल। एक आक्रमणकारी की भी मृत्यु। न्यू बैंक ऑफ इंडिया, पुतलीघर अमृतसर से लगभग 73,000//रुपए लूटे। उसी दिन पजाब एंड सिध बैंक, न्यू बस स्टैंड अमृतसर से 27,000 रुपए से अधिक की लूट।

22 निरंकारी बताये जाने वाले एक व्यक्ति पर उस समय गोली चलाई गई जब वह जिला अमृतसर में अपने गांव मुछल जा रहा था।

24 स्वर्ण मंदिर अमृतसर के निकट तीन पुलिस मैन घायल।

26 एक पुलिस हैड कांस्टेबल की अमृतसर के पुतलीघर क्षेत्र में गोली मार कर हत्या।

28 जिला लुधियाना के लालटन स्थित युनाइटिड कमर्शियल बैंक से 1, 30,000 रुपए लूट लिए गए। जिला लुधियाना के जगरांऊ में सवेरे सैर करते हुए पांच व्यक्तियों पर गोली चला कर उन्हें घायल कर दिया।

29 जिला फिरोजपुर के गुरू हर-सहाय स्थित पजाब स्टेट बिजली बोर्ड के कार्यालय से 1, 13,000 रुपए लूटे गए। अमृतसर में पुलिस के एक उपनिरीक्षक की गोली मारकर हत्या। एक व्यक्ति की, जो जिला होशियारपुर के गांव शाम चौरासी में डेरा शामी शाह को जा रहा था, गोली मारकर हत्या।

30 डा० सुदर्शन की जिला अमृतसर के पट्टी में रेलवे रोड स्थित उनके क्लीनिक में गोली मारकर हत्या। एक महिला सहित दो मरीज भी घायल।

1 अक्तूबर, जिला जालंधर के भटनूरा लवाना में स्थित न्यू बैंक आफ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इंडिया से 76,000 रुपए लूट लिए गए। इसके बाद सशस्त्र मुठभेड़ में चार लुटेरे मारे गए। एक स्टेनगन, एक पिस्तौल एक रिवाल्वर, एक राईफल, 3 हथगोले और गोलाबारूद की बहुत बड़ी मात्रा बरामद। बैंक से लूटे गए करैंसी नोट भी बरामद।

4 श्री मदन मोहन धवन पर, जो जनडियाला में अपनी दुकान पर अपने पुत्र और एक रिश्तेदार के साथ बैठे थे, गोली चलाई गयी। श्री मदन मोहन बहुत बुरी तरह घायल, बाद में उनकी मृत्यु।

5 जालन्धर के एक बैंक कर्मचारी, श्री एस० के० मित्तल को गोली मारकर घायल कर दिया। कपड़ा व्यापारी, श्री राज पाल पर उस समय गोली चलाई गई जब वह तरन तारन में गुरुद्वारे के सामने अपनी दुकान बन्द कर रहा था। वह घायल हो गया। तरन तारन के निकट पंजाब रोडवेज बस से उतर रहे यात्रियों पर एक हथगोला फेंका गया। एक व्यक्ति बुरी तरह घायल। रात्रि के दस बजे, एक प्राईवेट बस दिल्ली से अमृतसर के लिए रवाना हुई। ढिलवान में बस का अपहरण करके नूरपुर लबाना की ओर ले जाया गया। जाति के आधार पर यात्रियों को अलग-अलग किया गया। 6 हिन्दू यात्रियों की गोली मार कर हत्या और एक हिन्दू गम्भीर रूप से घायल।

6 अक्तूबर, मानावाला रेलवे स्टेशन के निकट हावड़ा एक्सप्रेस में पंजाब पुलिस के एक सबइन्स्पैक्टर श्री प्यारा सिंह और उत्पाद-शुल्क तथा सीमा-शुल्क निरीक्षक श्री सतपाल सूरी की गोली मार कर हत्या। कुछ यात्री भी घायल। अमृतसर में बन्दूक दिखा-कर, एक व्यापारी से 3,000 रुपये छीन लिए गए। पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू।

7 पंजाब अशांत क्षेत्र अध्यादेश, 1983 के अधीन पंजाब अशान्त क्षेत्र घोषित।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

8 स्वर्णमंदिर में माथा टेकने गये एक सहायक अधीक्षक (जेल) को अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के सक्रिय कार्यकर्ता ने पकड़ कर पीटा। उन्हें गुरू नानक निवास ले जाया गया और बाद में छोड़ दिया गया। जिला जालन्धर के गोगोरियां गांव के निवासी, श्री करतार सिंह की, दो व्यक्तियों ने गोली मार कर हत्या कर दी। अमृतसर के जगजीत कुमार को गोली चलाकर घायल किया गया। जगरांव में बन्दूक की नोंक पर एक हिन्दू की दुकान लूटी।

9 कपूरथला में कुछ व्यक्तियों ने उस समय गोलियां चलाईं, जब माता का जागरण हो रहा था।

10 जिला पटियाला में पंजाब स्टेट बिजली बोर्ड बादबी अला सिंह के कार्यालय से 8,000 रु० लूटे गये। एस० डी० ओ० घायल हो गया। नाभा में श्री बृजलाल से 75,000 रु० छीन लिए गये। जिला अमृतसर के चोला साहिब टाऊन के मुख्य बाजार के 7/8 दुकानदारों पर गोली चलाई गई। पांच व्यक्ति घायल।

12 अमृतसर में एक रिक्शा चालक गोली चलाये जाने से घायल। जिला अमृतसर के कल्हा स्थित पंजाब नेशनल बैंक से 6,000 रु० लूटे गये।

14 पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में 4 उग्रवादी मारे गए और एक पकड़ा गया।

15 श्री किशन चन्द को उस समय गोली मारकर बुरी तरह घायल कर दिया, जब वह जिला अमृतसर के गांव तरसिक्का से अपने घर वापिस जा रहा था। चण्डीगढ़ में रामलीला के दौरान एक हथगोला फेंका गया। परिणामस्वरूप 3 व्यक्तियों की मृत्यु और अन्य 22 घायल।

16 लुधियाना में माता रानी मन्दिर में हुए बम विस्फोट से श्री हरवंस लाल और श्री जुगल किशोर घायल। तरनतारन में बस कंडक्टर को लूटा। जिला संगरूर में कृष्णानन्द महन्त के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

डेरा में कुछ व्यक्ति घुस गए। महन्त की पत्नी को डरा धमका कर वे एक बन्दूक, 20 कारतूस और लाइसेंस ले गये।

17 अमृतसर में बन्दूक दिखाकर पेट्रोल पैम्प के कैशियर को लूटा गया। अमृतसर जिला में बस में यात्रा करते समय पुलिस के एक उप-निरीक्षक की हत्या और एक हैड कांस्टेबल घायल।

18 एक्स-सर्विसमैन एम्पलाइज एसोसिएशन के श्री मोहिन्द्रर सिंह की अमृतसर में गोली मार कर हत्या।

20 अमृतसर में एक जौहरी की दुकान लूट ली गई। एक लुटेरा मारा गया।

21 संदिग्ध तोड़फोड़ के कारण सियालदा-जम्मू तवी एक्सप्रैस गोविन्दगढ़ रेलवे स्टेशन के पास पटरी से उतर गई और 19 व्यक्ति मारे गये और 129 व्यक्ति घायल हुए।

24 जिला संगरूर की पंजाब और सिंध बैंक ब्रांच से 76,000 रु० लूटे गये।

25 जिला लुधियाना के पाखूवाल स्थित पंजाब एण्ड सिंध बैंक के गनमैन की गोली मार कर हत्या। बैंक से 35,000 रुपये लूटे गए।

29 भूतपूर्व जिला पुलिस अधीक्षक, श्री बचन सिंह जब अपने पुत्र की दुकान पर बैठे थे तो उन पर हमला। एक सैल्समैन और एक कांस्टेबल की मृत्यु। घटना स्थल पर एक कांस्टेबल घायल। बाद में उसकी मृत्यु। अमृतसर में एक हैड कांस्टेबल गम्भीर रूप से घायल। बाद में उसकी मृत्यु।

31 अमृतसर में महन्त सुरेन्द्र सिंह की भतीजी, परमजीत कौर पर गोली चलाई गई और उसे घायल कर दिया।

1 नवम्बर, जिला फरीदकोट में एक व्यक्ति से कार छीन ली गई। बाद में शरारती तत्वों ने गांव विलासपुर (फरीदकोट) स्थित एक पैट्रोल पम्प को लूटा। फगवाड़ा, मोतियाना स्थित ट्रेडर्स बैंक से 80,000 लूटे गए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

2 शम्भू कलां में स्थित स्टेट बैंक आफ पटियाला से लगभग 39,000 रुपये लूटे गए।

5 तरन तारन में पुलिस के एक सहायक उप निरीक्षक से एक सर्विस रिवाल्वर छीन लिया गया।

9 नवम्बर, चण्डीगढ़ में स्थित स्टेट बैंक आफ इंडिया ब्रांच से 3.5 लाख रुपये लूटे गए। अमृतसर के जगदेव कलां में स्थित पंजाब एण्ड सिंध बैंक से 40,000 रुपये लूटे गए।

11 कांग्रेस (आई) के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री सुजंन सिंह की अमृतसर जिला के गांव नगोके में हत्या।

18 मोगा जा रही पंजाब रोडवेज की एक बस का रसूलपुर गांव के निकट अपहरण। चार हिन्दू यात्रियों की हत्या।

21 यमुनानगर के हनुमान मन्दिर के परिसर में दो बम फेंके गए। श्री बलराम, कृष्ण तथा सुभद्रा की मूर्तियों और भगवान शिव की मूर्ति और अन्य देवी-देवताओं के चित्रों को क्षतिग्रस्त किया गया।

23 नवम्बर, जिला जालन्धर के गोराया में स्थित लक्ष्मी कमर्शियल बैंक से एक लाख रुपए लूटे गए। मुक्तसर के सुनार, श्री रामप्रकाश सिंह को गोली मार कर हत्या और उसका पुत्र घायल अमृतसर में श्री शरणजीत सिंह गोली चलाने से घायल।

26 नई दिल्ली, करोल बाग स्थित जेवरात की एक दुकान से 15 लाख रुपए के जेवरात लूटे गये।

26।27 चुरु (राजस्थान) में गुरुद्वारे को आग लगाने का प्रयत्न। गुरुद्वारे के दरवाजे को कुछ नुकसान।

28 अमृतसर के नगर निगम आयुक्त, श्री के० के० धीर अपने घर जाते समय गोली चलाये जाने से घायल।

29 अमृतसर में पिस्तौल दिखाकर नानक चन्द, सीताराम और आर०सी० ट्रेडर्स की दुकानों से 40,000 रु० लूटे गये।

1 दिसम्बर, अखिल भारतीद सिख छात्र संघ के कुछ सक्रिय कार्यकर्ता चुरू जा, रही एक रेलगाड़ी में श्रीगंगानगर से चढ़े और

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उन्होंने नारे लगाए। वहां हिन्दुओं की भीड़ एकत्र हो गई और उन्होंने भी जवाबी नारे लगाए। हिन्दुओं और सिखों के बीच हाथापाई हो गई और इस हाथापाई में दोनों ओर के लोग घायल हुए। अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के सक्रिय कार्यकर्ता रेल के एक डिब्बे में घुस गए और उन्होंने अन्दर से चटखनी लगा दी। पुलिस ने उनमें से 15 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और शांति स्थापित की।

3 श्री बलराम, कृष्ण और सुभद्रा की मूर्तियां तोड़ी गईं और अमृतसर के रामतीर्थ होली कम्पलैक्स स्थित मन्दिरों में में एक मन्दिर की मूर्तियों की पोशाकें जलाई गईं।

5 अमृतसर के चटटी विंड गेट के पान-बीड़ी विक्रेता की हत्या।

7 गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में स्थित पंजाब एण्ड सिंध बैंक से 1.50 लाख रुपए लूटे गए।

9 पटियाला की एक फ्लोर मिल के श्री बृजलाल गुप्ता की हत्या।

16 मोगा स्थित एक पैट्रोल पम्प के मालिक, श्री सुरेन्द्र कुमार की गोली मार कर हत्या।

18 जिला फिरोजपुर के गुरु हर सहाय पुलिस स्टेशन के एस० एच०ओ०, श्री बिच्छूराम की अनाज मण्डी में गोली मार कर हत्या।

19 सिविल सप्लाई विभाग का एक निरीक्षक जब अमृतसर जा रहा था तो बन्दूक दिखाकर उसका स्कूटर और कुछ नगदी छीनी गई।

20 जिला लुधियाना के गांव बस्सियां में डा० बलबीर सिंह निरंकारी की उनकी दुकान में गोली मार कर हत्या। अमृतसर में बब्बर खालसा के श्री सुखदेव सिंह ने सन् 1981 से 35 निरंकारियों की हत्या करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली।

25 दिसम्बर, जालन्धर स्थित नरिन्द्र सिनेमा के मालिक, श्री कुलदीप सिंह की गोली मार कर हत्या। जिला लुधियाना के गांव

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सेनसोवाल के सरपंच, श्री शाबाल सिंह की हत्या और उसके परिवार के 8 अन्य सदस्य घायल।

1984

5 जनवरी, जालन्धर जिला के नवां शहर में श्री दर्शन सिंह और उनकी पत्नी गोली चलाये जाने से घायल।

7 पटियाला, खेड़ा गोकू में स्थित सहकारिता बैंक से 46,000 रुपए की चोरी।

9 अमृतसर में गुरु रामदास सराय की तीसरी मंजिल पर एक निहंग की लाश मिली।

11 अमृतसर में श्री केदार नाथ की गोली मार कर हत्या।

15 गांव घुम्मन (जिला गुरदासपुर) के एक निरंकारी श्री अजायब सिंह की गोली मार कर हत्या।

18 अमृतसर के चित्रा सिनेमा में विस्फोट और परिणामस्वरूप 12 व्यक्ति घायल।

24 अमृतसर में सुतासिंह रोड पर स्थित न्यू बैंक आफ इंडिया से लगभग 1·27 लाख रुपए लूटे गए। निगम आयुक्त और चड्ढ़ा चावल मिल, अमृतसर के मालिक को पिस्तौल दिखा कर उनसे 10,000 रुपये और उनकी जीप छीन ली।

26 जिला अमृतसर के गांव बंगला राय के निकट, पिस्तौल दिखाकर एक बस के यात्रियों और कंडक्टर को लूट लिया गया और बस को आग लगा दी गयी। जिला अमृतसर के गांव एला राय के निकट एक बस में आग लगा दी गई।

27 जिला जालन्धर, नवां शहर के सतलुज सिनेमा के परिसर में बम विस्फोट होने के कारण तीन व्यक्ति मारे गए और 15 या 16 व्यक्ति घायल।

28 अमृतसर के चट्टी विंड गेट पर स्थित सीमा सुरक्षा दल की (बी०एस०एफ०) चौकी पर एक हथगोले से हमला। दो नागरिक घायल। जिला संगरूर में स्थित रेलवे स्टेशन हांडया को आग लगा दी गई और इससे रिकार्ड और भवन को नुक-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सान पहुंचा। जिला संगरूर में स्थित रेलवे स्टेशन तापा को आग लगाई और इससे रिकार्ड और बिल्डिग को नुकसान पहुंचा और 452.70 रुपए भी लूटे गए। जिला संगरूर में स्थित रेलवे स्टेशन शिखा को आग लगा दी गई। रिकार्ड जल गया। जिला संगरूर में रेलवे स्टेशन गुरानी की टेलीग्राम की तारें काटी गईं :

31 जनवरी, मालेर कोटला में निहंगों के साथ हुई मुठभेड़ में श्री गुरभजन सिंह की मृत्यु। एक निहंग भी मारा गया। बस स्टैण्ड बरीटा (भटिंडा) के निकट एक निरंकारी श्री जसवंत सिंह मारा गया।

1 फरवरी, तरन तारन के मदन मोहन मन्दिर से चांदी के एक किलो भार के "मुकुट" चुराए गए।

3 स्वर्ण मंदिर परिसर में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यालय के निकट इण्डियन एक्सप्रेस के संवाददाता, श्री संजीव गौड़ की जांघ में छुरा घोंपा गया।

3 अमृतसर के दूर-दर्शन केन्द्र में एक हथगोले का विस्फोट जिससे खिड़की के शीशे को क्षति पहुंची।

5 जालन्धर में श्री केसर सिंह पुत्र श्री जसवन्त सिंह, निरकारी गोली चलाने से घायल।

6 जिला होशियारपुर के पुलिस स्टेशन गढ़शंकर के गांव समुंद्रण में स्थित स्टेट बैंक आफ इण्डिया को लूटने का एक विफल प्रयत्न। दो लुटेरे, एक बैंक कर्मचारी, एक कांस्टेबल और एक हैड कांस्टेबल की मृत्यु।

7 हदचोवाल, गुरदासपुर, के श्री केवल कृष्ण को मारने का प्रयत्न। एक हमलावर सुरक्षा गार्ड द्वारा मारा गया। जिला गुरदासपुर के गांव जापोवाल में तीन व्यक्तियों की गोली मार कर हत्या। अमृतसर में श्री नारायण दास की बारात पर, जिसमें उनके रिश्तेदार व दोस्त थे, एक बम फेंका गया, जिससे चार व्यक्ति घायल हो हुए। अमृतसर में स्कूटर पर

Prof Dr. Harnam Singh Sha
Principal Project Investigator
U.G.C. Research Project on Sikhi

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पर जा रहे श्री अमरजीत सिंह पर आक्रमण करके उन्हें - घायल किया गया। शिरोमणि अकाली दल द्वारा पंजाब बंद।

11 अमृतसर में एक व्यक्ति की जलती हुई लाश मिली। आग बुझाकर लाश हिरासत में ली गई।

12 लुधियाना में एक व्यक्ति को रिक्शा में मार दिया गया।

13 अमृतसर में श्री हीरासिंह की गोली मारकर हत्या और एक अन्य व्यक्ति घायल।

14 दिल्ली सियासी जंग, समाचार पत्र, बाजार असली, अमृतसर के श्री यशपाल विल्ला को गोली चलाकर घायल किया गया। उनके गन मैन कांस्टेबल, मोहिन्दर सिंह की गोली मार कर हत्या। हिन्दू सुरक्षा समिति और अन्य ने पंजाब बन्द का आयोजन किया। हिंसा की घटनाएं हुईं। 11 व्यक्ति मारे गए (5 व्यक्ति पुलिस की गोली से और 6 अन्यों द्वारा)

16 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक दल जब जिला गुरदासपुर के हरचोवाल से अपनी ड्यूटी से वापस आ रहा था तो उन पर हथ-गोले से आक्रमण हुआ। एक कांस्टेबल मारा गया और एक घायल।

17 जिला अमृतसर के गांव भंगला के निकट पंजाब रोडवेज की एक बस को जलाया गया। स्वर्ण मदिर से उग्रवादियों और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के बीच हुई गोलीबारी में 2 नागरिक मारे गए और एक अन्य घायल हुआ। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक जवान भी घायल हो गया।

15-20 पंजाब में हुई घटनाओं की प्रतिक्रिया के रूप में, हरियाणा में 15, 18, 19, 20 फरवरी, 1984 को क्रमश: करनाल, कैथल, पानीपत और जींद में कुछ हिंसक घटनाएं हुई। पुलिस ने हिंसा पर काबू पाने के लिए अश्रुगैस छोड़ी, लाठी चार्ज किया गोली चलाई और फायरिंग की। पानीपत, कैथल और जींद में हुई घटनाओं में 11 व्यक्तियों की जानें गई।

21 भटिण्डा में तीन मन्दिरों को क्षति पहुंचाई गई। अमृतसर में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के बल के एक दल पर दो हथगोले फेंके गए। जिला गुरदासपुर कलनूवान के मुख्य बाजार में हुई गोली बारी की घटना में 6 हिन्दू घटना स्थल पर ही मारे गए और अन्य 8 घायल हुए। जिला गुरदासपुर भईनी मियां खान में हुई गोली बारी की वारदात में दो व्यक्ति मारे गए और दो घायल हो गए। अमृतसर के मन्दिरवाला गेट के निकट दो व्यक्तियों ने श्री सुरेन्द्र पाल और कृष्ण कुमार पर गोली चलाई। पटियाला में श्री शिवराम के घर में एक बम विस्फोट हुआ जिससे दरवाजे खिड़की के शीशों को क्षति हुई। श्री दलबीर बहादुर गोरखा, चौकीदार रेलवे गोदाम, मलोट, जिला भटिण्डा, की हत्या।

22 जिला होशियारपुर के शाम चौरासी में श्री मोहन लाल और कुन्दनलाल की गोली मार कर हत्या की गई और सुरिन्दर कुमार गोली से गम्भीर रूप से घायल हुआ। श्री हरगोबिन्द-पुर जिला गुरदासपुर में एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या। जिला अमृतसर के लोपोके के एक बाजार में गोली चलने की घटना में 4 व्यक्ति मारे गए और 2 घायल हुए। अमृतसर में श्री अशोक कुमार की हत्या और श्री कृष्ण लाल घायल अमृतसर के पुलिस स्टेशन बिछुआ बाजार में गोली चलने की घटना में 3 व्यक्तियों (अर्थात् गुलजारी लाल, मनोहर लाल और सुभाष कुमार) की हत्या और 4 अन्य व्यक्ति घायल। जिला अमृतसर के पुलिस स्टेशन भिकीविंड क्षेत्र में, खेतों से खेमकरन के एक मेडिकल प्रेक्टिशनर श्री कैलाश चन्द की लाश भी मिली जिस पर गोली के घाव थे। जिला फरीदकोट के रेलवे स्टेशन जैतों के समीप एक निहंग द्वारा गोली चलाने से चार व्यक्ति घायल हुए।

23 पुलिस स्टेशन राजपुरा के ग्राम खानडोली में श्री रामेश्वर ऋषिदेव, उसके लड़के और 18 महीने के एक बच्चे की हत्या। एक महिला गम्भीर रूप से घायल। जिला फिरोज-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पुर के गुरू हर सहाय की अनाज मंडी में चार व्यक्तियों की हत्या की गई और एक महिला और एक बच्चे सहित 6 अन्य गोलीबारी की घटना में घायल हुए। बटाला में श्री बनारसी दास की गोली मारकर हत्या। गांधी चौक बटाला के समीप एक बम विस्फोट के फलस्वरूप 10 व्यक्ति घायल हुए, उनमें से एक की बाद में मृत्यु हो गई। जिला अमृतसर के ग्राम रूपाबली के समीप श्री राजिन्दर लाल और श्री ज्ञान चंद पर गोली चलाकर उन्हें घायल किया गया, उनमें से एक की बाद में मृत्यु हो गई। जिला अमृतसर के ग्राम खिलचियां के समीप कुछ व्यक्तियों द्वारा गोली चलाने से श्री माधव मारा गया और श्री सुरेन्द्र घायल हुआ। जिला अमृतसर के ग्राम तार-सिला के दुकानदार श्री बृजलाल को घायल किया गया। जिला भटिण्डा में मंसा में सशस्त्र व्यक्ति द्वारा श्री मूलचन्द से 1०,500 रुपए मूल्य के जेवरात छीने गए।

24 फरवरी, जिला अमृतसर के छेहरता में श्री धर्मपाल की गोली मारकर हत्या और सर्वश्री सरदारी लाल और कंवलजीत गम्भीर रूप से घायल। पंजाब राज्य बिजली बोर्ड के दो कर्मचारी जब सब स्टेशन उदोकी, जिला अमृतसर से अपने घर वापस आ रहे थे, उनको हमला करके घायल किया गया। जिला गुरदासपुर के ग्राम मांड में श्री ओम प्रकाश, दुकानदार को गोली मारकर हत्या। जिला फिरोजपुर में श्री शमशेर ममही की हत्या।

25 जिला अमृतसर के ग्राम मिलोवाल में तीन हिन्दुओं के शव खेत में पड़े हुए पाए गए जिन पर छुरों के घाव थे। जिला अमृत-सर के ग्राम सोहियां के एक मन्दिर के पुजारी, श्री वेदप्रकाश के पुत्र श्री पवन कुमार की मन्दिर में हत्या। श्री यशपाल शर्मा, लाईनमैन, पंजाब राज्य बिजली बोर्ड की गोली मारकर हत्या और बोर्ड के चपरासी श्री विजय कुमार, मुखु, जिला फिरोजपुर गम्भीर रूप से घायल। जिला फिरोजपुर के गांव हामद के श्री ज्ञानचन्द, पुत्र श्री शोनकीराम की उसके घर में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हत्या। अमृतसर में श्री रामचन्द्र गोली चलाये जाने से घायल।

26 जिला अमृतसर के गांव भोड़वाल में एक बच्चे सहित तीन व्यक्तियों को उनके घर में गोली चलाकर मार दिया गया। एक व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल। जिला गुरदासपुर के दीना नगर में श्री बचन सिंह की गोली मारकर हत्या। जालंधर में श्री करनेल सिंह के घर में बम विस्फोट से दो बच्चे घायल।

27 जिला अमृतसर में, हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रधान श्री साधूराम के घर में बम विस्फोट के कारण एक महिला सहित दो व्यक्ति घायल। फरीदकोट में श्री ज्ञानचन्द पुत्र श्री चरणजी लाल की गोली मारकर हत्या। लुधियाना के पुराना बाजार के मीजी-वान मन्दिर में श्री हनुमानजी की मूर्ति टूटी हुई पाई गई। दिल्ली और चंडीगढ़ में अकाली दल ने संविधान के अनुच्छेद 25 के पृष्ठ फाड़कर जलाये।

28 25 तोले का सोने का एक कलश और 2000 रु० की कीमत की दो घड़ियां जिला लुधियाना के जगराउं के जैन समद से चुराई गईं।

29 शिवरात्रि उत्सव के अवसर पर अमृतसर में शिवालय मन्दिर के नजदीक एक भीड़ पर हथगोला फेंका गया।

1 मार्च रेलवे रोड, तरन तारन स्थित ओरिन्टल बैंक से 4.28 लाख रु० लूटे गए। मोगा में ए० एस० आई० जगदीश प्रसाद की गोली मारकर हत्या। हमलावर उनकी पिस्तौल ले गए। पट्टी के नजदीक पुलिस तथा निहंगों के बीच एक मुठभेड़ में 4 निहंग मारे गए। उनसे एक पिस्तौल, एक बन्दूक और एक राइफल बरामद।

2 नकोदर तथा सिधवान रेलवे स्टेशनों के बीच रेल में सफर करने वाले यात्रियों को लूटा गया। मोगा शहर में बन्दूक दिखाकर एक कार छीनी गई। फरीदकोट जिले में उग्रवादियों तथा पुलिस के बीच एक मुठभेड़ में एक उग्रवादी मारा गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

एक स्टेनगन तथा दो रिवाल्वर बरामद किये गये।

3 भटिंडा जिले के मौर में श्री मदन लाल को गोली मार दी गई। भटिंडा जिले के रामा के नजदीक श्री देवराज की हत्या।

5 फिरोजपुर जिले के बकवाला ग्राम के नजदीक दो व्यक्तियों की लाशें बरामद।

7 ग्रामा चित्तावाला ड्रेग, नाभा के नजदीक गश्त करते समय ए० एस० आई० अजमेरसिंह तथा कांस्टेबल बसन्त सिंह पर गोली चलाई गई और उनको घायल किया गया। बाद में श्री बसन्त सिंह की मृत्यु हो गई।

8 अमृतसर के काका कंडियाला ग्राम के नजदीक एक लाश पाई गई, जिस पर गोलियों के निशान थे। चीतनवाला, पुलिस स्टेशन धूरी, संगरूर को स्कूटर पर जाते हुए दो व्यक्तियों को रोककर गोली मार दी और जख्मी कर दिया। उनसे उनका स्कूटर छीन लिया गया। लुधियाना में एक बम विस्फोट में श्री राम बहादुर मारा गया और श्री अली मोहम्मद जख्मी हो गया।

9 श्री वेदपाल उपाध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा, श्रीमती शान्ती देवी, एम० एल० ए० के कार में दिल्ली से करनाल जा रहे थे। मधुवन और करनाल के बीच, मोटर साइकिल पर सवार कुछ हथियारबन्द व्यक्तियों ने कार पर स्टेनगनों से गोली चलाई। कार का ड्राइवर मारा गया और गनमैन गम्भीर रूप से घायल हुआ। श्री वेदपाल को कोई चोट नहीं आई।

10 उचा-भटाला, खन्ना स्थित पेट्रोल पम्प पर श्री जरनैल सिंह को गोली मार दी गई।

11 कलांवली (हरियाणा) तथा रामामंडी, जिला भटिंडा के बीच रेलवे लाइन पर एक विस्फोट। एक मीटर लम्बी रेलवे लाइन को क्षति पहुंची।

12 गुरुद्वारा रविदास, फगवाड़ा के ग्रन्थी पर कुछ बदमाशों ने

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हमला किया। वे गुरु ग्रंथ साहिब के रुमाल भी ले गए।

13 पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, श्री दरबारा सिंह की उस समय हत्या करने की कोशिश की गई, जब से सन्त मोहिंदर सिंह के दाह-संस्कार के मौके पर नंगल स्थित गुरुद्वारा भावौर साहिब गए थे। श्री दरबारा सिंह को कोई चोट नहीं आई। इस घटना में एक-दूसरे पर गोलीबारी से एक महिला तथा आक्रमणकारी मोहिंदर सिंह सहित 6 व्यक्ति घायल।

14 अमृतसर-अजनाला रोड पर कैनाल ब्रिज, कुकनवाला के नजदीक एक वायु-सेना के एक कार्मिक से एक वाकी-टाकी सेट छीना। अपराधियों के पास स्टेनगन तथा रिवाल्वर थे।

15 अमृतसर के एक न्यायालय में लाए गए 4 उग्रवादियों के समर्थकों ने उन्हें पुलिस की हिरासत से छुड़ाने की कोशिश की। उन्होंने गोली चलाई, जवाब में पुलिस ने आत्म-रक्षा में गोली चलाई, जिससे एक व्यक्ति की मृत्यु। गुरदासपुर जिले के दोरंगला ग्राम के डेरा परमहंस के पुजारी मोहिंदर सिंह को घायल किया गया। किशोर सिनेमा, पानीपत की बुकिंग खिड़की के बाहर हुए विस्फोट में एक हिन्दू जख्मी।

16 कुछ निहंगों ने लुधियाना-फिरोजपुर लाइन पर एक ट्रेन के यात्रियों को लूटा और चलती ट्रेन में गोलियां चलायीं। परिणामस्वरूप, तीन यात्रियों की मृत्यु और दो यात्री जख्मी।

17 आनन्दपुर साहिब, रोपड़ में हुए अकालियों के सम्मेलन में बड़ी संख्या में सिखों को, संविधान के अनुच्छेद 25 की अनेक प्रतियों को जलाकर, 2 अप्रैल 7 अप्रैल, 1984 तक "पंथ आजाद सप्ताह" मनाने के लिए कहा गया। बाद में यह कार्यक्रम वापिस ले लिया गया।

18 आनन्दपुर साहिब में एक पुलिस कैम्प में एक बम फेंका गया, इसके परिणामस्वरूप एक पुलिस निरीक्षक और एक महिला कांस्टेबल सहित तीन कांस्टेबल घायल हुए।

19 चौक प्रागदास, अमृतसर स्थित पंजाब तथा सिंध बैंक से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

58,872 रु० लूटे गए। जिला होशियारपुर के पाल्दी स्थित पंजाब नेशनल बैंक को लूटने की कोशिश की गई। बैंक के गनमैन ने एक लुटेरे को गोली मार दी। कारतूसों सहित एक पिस्तौल तथा एक बम बरामद हुए।

21 फिरोजपुर जिले के गुरुद्वारा मालनवाला के ग्रंथी श्री अजीत की गुरुद्वारा में गोली मारकर हत्या।

23 जिला अमृतसर के दयालपुर ग्राम के नजदीक पुलिस उप-निरीक्षक, श्री रविंदर कुमार पर गोली चलाई गई। हालांकि वे बच गए किन्तु उनकी मोटर साइकिल को क्षति पहुंची। कपूरथला जिले के फथूधिगा के नजदीक सरपंच, करतार सिंह की गोली मारकर हत्या। मानसा तथा सदासिंहवाला रेलवे स्टेशनों के बीच रेल लाइन का एक टुकड़ा बम विस्फोट से नष्ट।

25 जिला होशियारपुर के दसुआ में डा० कमल अपनी दुकान पर गोली चलाये जाने से घायल।

26 मोगा बस स्टैण्ड पर खड़ी तीन बसों को आग लगाई। जिला रोपड़ के ग्राम सिधुपुर कलां के शिवालय से एक शिव की मूर्ति चुराई गई। ग्रीन एवेन्यू, अमृतसर के दुकानदार, श्री मुन्नीलाल चाकू मारने से घायल।

27 संगरूर जिले के धनौला में हुए निरंकारी समागम में भाग लेकर लौटते समय श्री वेद प्रकाश, डा जोगिंदर सिंह तथा श्री रूपलाल पर हमला। इसके परिणामस्वरूप श्री वेद प्रकाश की मृत्यु तथा अन्य दो घायल। कैरों पुलिस चौकी के ए० एस० आई० गुरजीत सिंह जिला अमृतसर के ग्राम भल्ला के नजदीक हुए एक हमले से घायल।

28 जिला फरीदकोट के बधनी कलां को स्कूटर पर जाते समय श्री चमन लाल गोली चलाये जाने से घायल। दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष, श्री हरवंस सिंह मनचन्दा की नई दिल्ली में गोली मारकर हत्या।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

29 धरमकोट स्थित सी० आर० पी० एफ० के कैम्प में बम फेंका गया। परिणामस्वरूप एक कांस्टेबल मारा गया और एक घायल। जिला अमृतसर के जलालाबाद ग्राम के नजदीक पिस्तौल दिखाकर एक टैक्सी छीनी। फिरोजपुर-जालंधर लाइन पर रेल की पटरी पर गिराये गये एक पेड़ का पता एक रेलवे गश्ती दल ने लगाया। इससे एक दुर्घटना रोकी गई।

31 मोगा में निरंकारी, सर्वश्री सूरज प्रकाश तथा हुकमचन्द पर उस समय गोली चलाई गई, जब वे दुकान बन्द करके घर जा रहे थे। उन्होंने भी आत्म-रक्षा में गोली चलाई। किसी को भी चोटें नहीं आयीं। अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर परिसर के बाहर श्री गुरप्रीत सिंह की कार चुराई गई। गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर परीक्षा शाखा में कुछ सशस्त्र व्यक्ति आये और वहां के कर्मचारियों को बाथरूम में बन्द कर दिया। उन्होंने स्ट्रांग रूम का ताला खोला और वहां आग लगा दी।

1 अप्रैल श्री आर० एन० शर्मा, प्रिंसिपल आर० एस० डी० कालेज, फिरोजपुर की गोली मारकर हत्या। राय्या लिक रोड स्थित ग्राम चम्बा के एक निरंकारी भवन में सत्संग के समय 2 हथ-गोले फेंके गए। विस्फोट से दो महिलाओं तथा एक लड़की की मृत्यु और 21 व्यक्ति घायल। श्री भारत भूषण पुत्र, श्री सरदारी लाल भाटी, बाल्मिक की कादियां, जिला गुरदासपुर में गोली मारकर हत्या।

2 श्री हरबंस लाल खन्ना, भूतपूर्व विधायक तथा जिला अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, अमृतसर और उसके गनमैन की अमृत-सर में उसकी दुकान पर गोली मार कर हत्या। एक पुलिस निरीक्षक और उसके अंग रक्षक को उस समय राज गेस्ट हाउस में शरण लेनी पड़ी, जब एक बेकाबू भीड़ द्वारा उनका पीछा किया गया। भीड़ ने एक स्कूटर, 3000/- नकद तथा कपड़ों का एक थैला तथा गेस्ट हाउस का नाम-पट्ट व फर्नी-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

चर जला डाला। एस० डी० महिला कालेज मोगा का रिकार्ड जलाया गया। कुछ बदमाश गुरु नानक कालेज, रोड, फरीद-कोट से विश्वविद्यालय प्रश्न-पत्र तथा उत्तर पुस्तिकाएं उठा ले गए। अमृतसर में स्वर्गीय श्री हरबंस लाल खन्ना की दुकान के पास एक पुलिस की जीप को आग लगाई।

3 अमृतसर के मडाला कलां के सरकारी हाई स्कूल के परीक्षा अधीक्षक श्री तिलकराज गोली चलाये जाने से घायल। आक्रमणकारी प्रश्न-पत्रों का बंडल उठा ले गये। स्वर्गीय श्री हरबंस लाल खन्ना की शव यात्रा के दौरान हुई हिंसक घट-नाओं में 8 व्यक्तियों की मृत्यु व 9 व्यक्ति घायल। अमृतसर के ग्राम मियांविंड के नजदीक ईटों के भट्टे के मुंशी, श्री जवा-हरलाल पर गोली चलाई गई और वे घायल। डा० वी० एन० तिवारी, एस० पी०, को चण्डीगढ़ स्थित उनके निवास स्थान पर गोली मारी गई और उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। अपनी चोटों के कारण उनकी मृत्यु। चण्डीगढ़ में सफाई निरीक्षक, श्री धनसिंह मारे गये।

4 श्री अनन्तराम अपनी दुकान बन्द करके लौटते समय गोली से घायल। सहकारी बैंक, फिरोजपुर के प्रबंधक श्री अंग्रेजसिंह की कार छीनी गई। मैजेस्टिक चौक, मोंगा के नजदीक एक बम विस्फोट 5 व्यक्ति घायल।

5 जालंधर जिले के बिलगा में श्री शंकरदास मारे गए।

6 पटियाला में श्री जालम सिंह पर गोली चलाकर उन्हें घायल किया। भटिण्डा में डी० ए० वी० कालेज का कार्यालय-कक्ष और रिकार्ड, फर्नीचर, आदि जला दिये गये। जिला भटिण्डा के टी० पी० डी० मालवा कालेज, फूल के रिकार्ड कक्ष में आग लगाई गई।

8 भटिण्डा जिले के पुलिस थाना कोटपट्टा स्थित मैमूर खन्ना मन्दिर के द्वार पर एक बम विस्फोट में एक महिला सहित तीन व्यक्तियों को घायल किया गया। सरकारी हाई स्कूल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मेहता नंगल के विद्यार्थियों के प्रश्न-पत्र तथा उत्तर-पुस्तिकाएं जलाई गईं। सरकारी कालज, रोपड़ की खिड़कियां तथा लाइब्रेरी-कक्ष जलाये गये। भटिण्डा स्थिति सन्तोषी माता मन्दिर के प्रांगण में बम विस्फोट में एक होमगार्ड स्वयंसेवक चन्दर भूषण की मृत्यु तथा भगत बहादुर चौकीदार घायल। खालसा हाई स्कूल, मुक्तसर के परीक्षा भवन से प्रश्न-पत्रों के बंडल छीने गये। पटियाला के भुनेरहेरी केन्द्र के परीक्षा अधीक्षक से प्रश्न-पत्र तथा अन्य कागजात छीने गये।

9 कादियां में बाबा गुरुदेव दास को गोली मार कर घायल किया गया। जिला फिरोजपुर के डेरा आनन्दपुर चूरचाक के बाबा स्वर्ण सिंह की हत्या।

10 तरन तारन में सेवा निवृत्त सैनिक श्री इन्दर सिंह की हत्या। टाण्डा में श्री दुर्गादास के मकान में एक बम फेंका गया, जिससे मकान को क्षति पहुंची। खरार स्थिति पंजाब व्यापार मण्डल तथा हिन्दू सुरक्षा समिति के नेता श्री निरंजन दास की किरयाना दुकान तथा एक चीनी डिपो को आग लगाई गई। अमृतसर जिले के चामुन्डा देवी मन्दिर से एक हथगोला बरामद। फिरोजपुर में श्री रमेश कुमार के मकान की छत पर बम विस्फोट। फिरोजपुर में श्री सुरजीत सिंह को गोली मार कर घायल किया गया। जालन्धर जिले के राहों के पास श्री रघुबीर चन्द और श्री जोगिन्दर पाल की गोली से मार कर हत्या। फरीदकोट जिले में पाक्को तथा काब्बरवाला रेलवे स्टेशनों के बीच गंगानगर जाने वाली ट्रेन के यात्री लूटे गये।

11 अमृतसर जिले के ग्राम बल्लार के नजदीक श्री दरशन कुमार की गोली मार कर हत्या। जिला अमृतसर के साथियाला स्थिति गुरु तेग बहादुर सरकारी कालेज के कार्यालय में आग लगाई गई। जालधर में बाबूराम तथा हंसराज के लकड़ी के खोखे जलाये गये। भटिंडा जिले में सशस्त्र व्यक्तियों के हमले

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

से श्री गुरुचरण सिंह घायल। गुरदासपुर जिले में सी० पी० एम० एल० के कार्यकर्ता श्री सुखराज सिंह को उसके घर पर गोली चलाकर घायल किया। बाद में उसकी मृत्यु हो गई। फरीदकोट जिले में भतसर रेलवे स्टेशन के पास रेल की पटरी का कुछ भाग हटा पाया गया। पटियाला में श्री अरुण नारंग पर गोली चलाकर उन्हें जख्मी किया। बाद में उनकी मृत्यु। हुसैनीपुरा रेलवे स्टेशन के बुकिंग कार्यालत में आग लगाई गई।

12 फिरोजपुर में श्री भोला को गोली मार कर घायल किया गया। अमृतसर के नजदीक कैरों तथा नजदीक रेलवे स्टेशन के बीच चलती गाड़ी में कुछ यात्रियों को लूटा।

13 भटिंडा में श्री निरंजन सिंह पर गोली चलाकर उन्हें घायल किया।

14 अमृतसर की गुरु रामदास सराय के सामने सिंधी होटल में बैठे श्री सुरिन्दर सिंह सोंधी की गोली मार कर हत्या। श्री कुलदीप सिंह गोली से जख्मी। खेमकरण के नजदीक एक बस में गोली चलाने से दो महिलाएं तथा तीन पुरुष घायल। जिला फिरोजपुर में अपने स्कूटर पर रेलवे स्टेशन को जाते समय एक निरंकारी श्री गुरदियाल सिंह की गोली मारकर हत्या। 14/15 अप्रैल, 1984 की रात्रि को 38 रेलवे स्टेशनों को रेल सम्पत्ति जलाने के प्रयत्न किये गये।

15 15 और 16, अप्रैल 1984 की रात्रि को चुटोली रेलवे स्टेशन की रेल सम्पत्ति क्षतिग्रस्त। पटियाला जिले में समाना पोस्ट आफिस की खिड़कियों के शीशे तोड़े गए और पोस्ट आफिस को आग लगाई गई। कुछ रिकार्ड जल गया। एक शव जलाया गया। वह अमृतसर के बाजार मोचियां में मिला।

16 श्री मलिक सिंह तथा वरजिंदर सिंह की स्वर्ण मंदिर में गोली मारकर हत्या। अमृतसर में मानावाला कलां के नजदीक एक व्यक्ति का शव मिला। पटियाला जिले के ग्राम कीली पोस्ट

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आफिस को आग लगाई गई। घड़याल रेलवे स्टेशन पर गश्ती ड्यूटी देते समय गनमैन श्री काबल सिंह तथा श्री जोगिन्दर सिंह पर गोली चलाई गई। श्री जोगिन्दरसिंह घायल हो गये।

17 अमृतसर के वाला ग्राम के नजदीक एक महिला का नंगा शव मिला। पहचान करने पर पता चला कि यह शव सुरिन्दर सिंह सोंधी की कथित हत्यारी बलजीत कौर का था। हिन्दू सुरक्षा समिति चंडीगढ़ के प्रधान श्री इन्दर पाल की हत्या। फरीदकोट जिले में बारीवाली रेलवे स्टेशन के नजदीक 3 होमगार्ड जवानों की हत्या।

19 कासुबेग तथा कन्नान रेलवे स्टेशनों के बीच रेल की पटरी उड़ा दी गयी। होशियारपुर जिले के गिरदीवाला में एक निरंकारी श्री मदन लाल की दुकान को आग लगाई गई। डी० ए० वी० कालेज, बटाला के श्री एस० एल बाबा के कार्यालय को आग लगाई गई। फरीदकोट जिले के पुलिस थाने बाघापुराना में रोड़े पोस्ट आफिस के रिकार्ड तथा फर्नीचर जला दिया गया।

20 जोगीवाला रेलवे स्टेशन को आग लगाई गई। धर्मकोट के श्री रघुवीर सिंह पर हमला करके उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया। बाद में उनकी मृत्यु।

21 बटाला की एक फ्लोर मिल के एक कमरे में सोये हुए श्री बाल मुकुन्द पर गोली चलाकर उन्हें घायल किया गया। होशियार पुर जिले में भोगपुर के नजदीक एक बस के हिन्दू यात्रियों तथा कंडक्टर से नकदी तथा हाथ घड़िया छीन ली गई।

22 कपूरथला जिले के नंगलमाजा ग्राम में श्री सुखदेव पाल शर्मा, सरपंच तथा सरदारा सिंह की हत्या कर दी गई और दो अन्य व्यक्तियों को घायल कर दिया गया। अमृतसर में गुरू राम दास सराय के पास एक व्यक्ति का शव मिला।

23 अमृतसर के लोपोक थाना क्षेत्र के प्रीतलड़ी गांव में स्केवड्रन लीडर परमजीत सिंह की हत्या। अमृतसर के मजीठा रोड स्थित पंजाब व सिंध बैंक से 44,583 रुपये लूटे गये। अमृतसर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जिले के ग्राम शहीद के श्री ठाकुर सिंह की हत्या। अबोहर जाने वाली एक बस के यात्रियों से उनका सामान लूट लिया गया। गोली चलने से तीन व्यक्ति घायल। गुरुगारा चौक, मुक्तसर में श्री भाग सिंह की दुकान पर आग लगा दी। आग से 50,000/-रुपये की अनुमानित हानि हुई। फिरोजपुर में एक निहंग ग्रुप और सी आर पी एफ यूनिट के बीच हुई मुठभेड़ में 6 व्यक्ति मारे गए और 8 व्यक्ति घायल।

24 फुलका, बटाला निवासी श्री जोगिन्दर सिंह पर गोली चला कर घायल कर दिया गया। संगरूर जिले के बवनपुर स्थान पर संत राम सिंह को गोली मार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया।

25 जब जालंधर स्थित पंजाब होम गार्ड के डिवीजनल कमाण्डेंट जालंधर के पुराने बस स्टैंड के पास से अपनी सरकारी जीप में गुजर रहे थे तो एक हथगोला फेंका गया। हथगोला जीप से दूर फटा पर कोई नुकसान नहीं हुआ।

26 जिला अमृतसर के गांव कुच्चा पुक्का के नजदीक भिकीविंड के कमीशन एजेंट श्री जोगिन्दर पाल को गोली मार कर घायल कर दिया गया। अमृतसर में अपनी दुकान पर बैठे बिजली मैकेनिक श्री रमेश कुमार की गोली मार कर हत्या। मोगा स्थित गुरुद्वारा बीबी काहन कौर के समीप सीमा सुरक्षा बल के जवानों और उग्रवादियों के बीच हुई गोली-बारी में आठ व्यक्तियों की मृत्यु। जिला फरीदकोट के गांव सामद भाई में श्री देवराज की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वह अपनी दुकान पर बैठा था। फिरोजपुर और कसुबेगु रेलवे स्टेशनों के बीच रेल की पटरी का कुछ हिस्सा उड़ा दिया गया। रेलवे स्टेशन तल्ली सेदा साहू के पास बम विस्फोट द्वारा पुल क्षतिग्रस्त खाई फामके और झोक तेहुल सिंह रेलवे स्टेशनों के बीच रेल की पटरी के कुछ हिस्से को नुकसान पहुंचाया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

28 मोगा में श्री राम लुभाया की दुकान को आग लगाई गयी। जिला कपूरथला के बांध हमीरा में पंजाब राज्य बिजली बोर्ड के खजांची को पिस्तौल दिखाकर 75000/- रुपये छीन लिये। तरनतारन रेलवे क्रासिंग के पास पंजाब राज्य बिजली बोर्ड के एक कर्मचारी से 53,533/- रुपये और एक वाहन छीन लिया गया। पंजाब राज्य बिजली बोर्ड के उन पांच कर्मचारियों पर बटाला के पास गोलियां चलाई गई, जो एक टेंपों में स्टाफ का वेतन ले जा रहे थे। फलस्वरुप, तीन व्यक्ति घायल हुए। भटिंडा के मुलतानिया रेलवे क्रासिंग के पास केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल की एक टुकड़ी पर एक बम फेंका गया। तीन जवान घायल हो गए। अन्य दो जवानों को भी चोटें आई। जिला फरीदकोट गांव डाला में श्री सतीश कुमार की गोली मार कर हत्या।

30 रिटायर्ड डी० एस० पी० ज्ञानी बच्चन सिंह और हैड कांस्टेबल मिलखा सिंह की अमृतसर में गोली मार कर हत्या। ज्ञानी की पत्नी श्रीमती अमरजीत कौर और पुत्री कुमारी हरजीत कौर, जो गंभीर रूप से घायल हो गई थीं, बाद में उनकी भी मृत्यु हो गई। श्री हरभजन सिंह और दर्शनलाल को तलवंडी भाई, फिरोजपुर स्थित नेशनल राइस मिल में टी० वी० देखते समय मार डाला गया। पांच अन्य घायल।

1 मई, पोलिटैक्निक इन्स्टीट्यूट, होशियारपुर के कुछ फर्नीचर और रिकार्ड को आग लगाई। हतायतपुर, गुरदासपुर स्थित राजकीय माध्यमिक स्कूल के औषधालय और रिकार्ड रूम को आग लगाई गई। थिएन बांध पर निर्माणधीन गुरुद्वारा में निशान साहिब के चोला का कुछ भाग जला। लुधियाना में श्री गुरचरन सिंह पर हमला, जिसमें वह घायल हो गये।

2 श्री रौनक सिंह की पटियाला स्थित आरा मशीन को आग लगाई गई। एक प्रमुख निरंकारी, पिशोरा सिंह पर, मोटर साइकल द्वारा मोरिन्दा, रोपड़ पर जाते समय गोली चलाई

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

गई जिससे वह घायल हो गये। कांग्रेस (आई) के एक भूत पूर्व विधायक, श्री लखा सिंह को खंदूर साहेब, जिला अमृतसर स्थित उसके खेत में गोली मारी गई। वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उनका गनमैन श्री चंचल सिंह मारा गया। कांस्टेबल सुरजीत सिंह घायल हो गया, बाद में वह मर गया। गनमैन द्वारा जबाव में गोली चलाने से दो आक्रमणकारी भी मारे गए। गवर्नमेंट कालेज तरनतारन के खजांची से पिस्तौल दिखाकर 42,000/- रुपये छीन लिए गए।

4 निरंकारी श्री जसवन्त सिंह पर तरनतारन में गोली चलाई गई। वह गंभीर रूप से घायल हो गवा।

5 दिसम्बर जैन मंदिर, बाजार सोटीवाला घंटाघर, अमृतसर की मूर्तियों के 6 चांदी के छत्र चुरा लिए गए। पुजारी को कलाई घड़ी भी चोर ले गये।

6 अमृतसर में श्री कुन्दनपाल के मकान पर एक वम फेंका गया।

7 चोगाटेवाला, जिला फिरोजपुर के निवासी श्री नगीन चन्द को गोली से उड़ा दिया गया। चौक घंटाघर, अमृतसर के महन्त जोगिन्दर दास के चेले श्री नारायण दास पर गोली चलाई गई और वह घायल हो गया। भट्टा मालिक श्री हरि चन्द पर अपने गांव तरसिका, अमृतसर वापस जाते समय उसे रोककर हमला किया गया और उसे घायल कर दिया। गया। कोठी वसवासिंह, बलटोहा, जिला अमृतसर के श्री हंसराज को गोली मारकर हत्या कर दी।

8 डाकखाना मोहाली, रोपड़ को आग लगाने की कोशिश की गई। रोपड़ के गांव सोहना स्थित डाकखाने को आग लगाई गयी। जालन्धर में एक दुकान में एक हथगोला फेंका गया। पर वह फटा नहीं श्री, परवत सिंह जब बंगला राय, जिला अमृतसर में अपने मकान में सो रहा था, उसे गोली मार दी और वह घायल हो गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

10 अकाल तख्त अमृतसर के भूतपूर्व जत्थेदार, ज्ञानी प्रतापसिंह को उसके तहली चौक अमृतसर स्थित मकान में गोली से उड़ा दिया गया। मेडिकल कालेज, अमृतसर के पास श्री सोहन लाल की दुकान को आग लगा दी गई। डा० सतपात गर्ग पर फरीदकोट में गोली चलाई गई, जिससे वह जख्मी हो गये।

11 डी० ए० वी० कालेज, जालंधर शहर के एक चौकीदार को गोली मार दी गई और घायल हो गया। अपराधियों ने कालेज के कार्यालय के रिकार्ड को भी आग लगा दी और खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए गए। आयकर कार्यालय मानसा की छत पर एक बम फेंका गया। अमृतसर में श्री ज्ञान सिंह की दुकान में आग लगा दी गई। एक आदमी को गोली मार दी और वह जख्मी हो गया।

12 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने स्वर्ण मंदिर परिसर से आने वाले एक "कर सेवा" ट्रक को तलाशी के लिए रोका। उसमें बैठे व्यक्तियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर गोलियां चलाई और भाग जाने की कोशिश की। अन्त में ट्रक को रोक लिया गया और उसमें बैठे लोग बचकर स्वर्ण मन्दिर परिसर में घुस गए। उस ट्रक से भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद किया। हिन्द समाचार, जालन्धर के सम्पादक, श्री रमेश चन्द की गोली मार कर हत्या। उनके दोनों गनमैन भी घायल हो गए।

13 लुधियाना के पखोवाल गांव के पास केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दल पर गोलियां चलाई गईं। एक कांस्टेबिल घटनास्थल पर ही मर गया और एक अन्य कांस्टेबिल घायल हो गया। अदालत बाजार पटियाला के कपड़ा व्यापारी, श्री पवनकुमार पर गोली चला कर घायल कर दिया। रेलवे स्टेशन जडोक जिला अमृतसर पर होमगार्ड स्वयंसेवक श्री गुरमीत सिंह को गोली मार कर हत्या कर दी गयी और रेलवे सुरक्षा बल के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कांस्टेबिल शिव दत्त शर्मा और एक अन्य व्यक्ति, श्री देव राज को घायल कर दिया गया।

14 जिला गुरदासपुर के गांव घुमान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कैम्प पर चार हथगोले फेंके गये। बदमाशों ने स्टैनगन से गोलियां भी चलाईं जिससे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 6 जवान घायल हो गये। छत्तोविन्द नहर, अमृतसर के पास बाबा गुलाबदास की समाधि के महन्त गोपाल दास की गोली मारकर हत्या और एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल जो अस्पताल में मर गया। अमृतसर के सुल्तान बिन्ड क्षेत्र में हवेली सोहनसिंह के पास एक व्यक्ति का शव मिला, जिस पर गोलियों के घाव थे। बरेटा, जिला भटिंडा में श्री राजिन्दर कुमार को गोली चलाकर घायल कर दिया गया। कुछ व्यक्तियों ने जैतो, जिला फरीदकोट के बाजार में गोलियां चलाईं जिससे एक व्यक्ति मारा गया और छह अन्य व्यक्ति घायल हुये। जिला अमृतसर के रेलवे स्टेशन राया पर रेलवे सुरक्षा बल के दो जवानों की गोली मार कर हत्या। गुरुद्वारा तूत साहिब, अमृतसर के ग्रंथी श्री निरंजन सिंह की हत्या कर दी।

15 मई, सहायक उप निरीक्षक हरबंस सिंह से एक रिवाल्वर और 6 कारतूस और दो कांस्टेबली से 25 कारतूसों समेत 2 राईफलें भी छीनी गईं। ये अपराधी गुरुद्वारा तरनतारन में घुस गये। जिला फिरोजपुर के गांव लधीवाली उत्तर की न्यू बैंक आफ इण्डिया शाखा से 4737 रुपये लूटे गये और खजांची की कलाई घड़ी छीनी गई। गुरदासपुर में श्री रमेश कुमार और श्री तरलोचन सिंह को गोली चलाकर जख्मी कर दिया गया। बाद में श्री रमेश कुमार की मृत्यु।

16 जिला गुरदासपुर, बटाला स्थित रोजगार कार्यालय को आग लगा दी गई। हेड कांस्टेबल राजसिंह को जो अपने स्कूटर पर श्री कमल कुमार के साथ अजनाला जिला अमृतसर जा रहा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

था रास्ते में रोक लिया गया। उसका स्कूटर और कलाई डंडी छीन ली गई। उसे गोली चलाकर घायल कर दिया गया। अमृतसर में श्री गंगा राम के खोखे में आग लगा दी गई। अड्डा झुरार खेड़ा, अमृतसर के नजदीक एक बस को आग लगाई गई।

16/17 जिला गुरदासपुर के गांव मजौली में ग्रंथी श्री सूरत सिंह की हत्या। डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कादियां के दरवाजों और फर्नीचर को आग लगायी गयी। जिला जालन्धर के गांव चौलांग के पास बस में यात्रा कर रहे 10 हिन्दुओं को हथियारों की नोंक पर लूटा गया। भंडेर कलां जिला जालन्धर के भट्टा मालिक श्री राम प्रकाश से 1,100 रुपये छीन लिये गये। पिस्तौल दिखाकर एक ट्रक भी हथिया लिया गया।

17-18 जिला अमृतसर के गांव वालटोहा में गुरुद्वारा के ग्रंथी, श्री जरनैल सिंह की हत्या जिला अमृतसर में थथी पुल के नजदीक पिस्तौल दिखाकर श्री विजय कुमार से एक ब्रीफ केस छीन लिया गया जिसमें 28,936 रुपये थे। अमृतसर में माता वैष्णव मन्दिर के पुजारी, श्री टीकमदास को कृपाण से घायल कर दिया गया। कुछ व्यक्तियों ने जिला अमृतसर के गांव रामसिंह वाला के निवासी श्री रक्खा राम के घर पर गोलियां चलानी शुरू कर दी जिससे उसकी मां, उसकी पत्नी त्रिप्ता रानी और एक अन्य व्यक्ति श्री जगरात सिंह मजबी घायल हो गये। अपराधियों ने घर में आग लगादी। अमृतसर में एक पेट्रोल पम्प के सेल्समैन से पिस्तौल दिखाकर 15000 रुपये छीन लिये गये। गोलगाग अमृतसर के नजदीक पेट्रोल पम्प के सेल्समैन से 5,100 रुपये छीने गये। जिला गुरदासपुर के गांव बेरी के पास निरंकारी, श्री किरपालसिंह भाटिया की गोली मार कर हत्या।

19 जिला अमृतसर के सुधार में कोपरेटिव बैंक से पिस्तौल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

दिखाकर 21,665 रुपये लूटे गये। अमृतसर में श्री परवीन की दुकान में आग लगा दी गई। जिला अमृतसर के गांव सबरनवान के पास एक पुलिस टुकड़ी पर दो व्यक्तियों ने गोलियां चलाईं। पुलिस टुकड़ी ने जवाब में गोलियां चलायीं और नौकरी से बर्खास्त पुलिस कांस्टेबल, श्री इन्दर सिंह को गिरफ्तार किया तथा उससे एक पिस्तौल बरामद की।

20 रौनी ब्रिज, पटियाला पर तैनात नहर विभाग के एक चौकीदार, श्री बलवन्त राम को गोली मारकर घायल कर दिया। भट्टा मालिक श्री धरम पाल और मंगत राम को जिला लुधियाना के गांव जगराव के नजदीक रोक लिया गया और गोली चलाकर उन्हें घायल कर दिया गया।

21 पंजाब रोडवेज की बस में यात्रा कर रहे 4 हिन्दुओं की जिला फरीदकोट के गांव दारापुर के नजदीक गोली मारकर हत्या। जिला अमृतसर में अनाज मंडी मरी मेघा में गोली बारी की घटना में श्री दर्शन लाल और रछपाल मारे गए और भारतीय खाद्य निगम के निरीक्षक, श्री ज्योति प्रकाश घायल हुए। श्री जोगिन्दर नाथ, अध्यक्ष, हिन्दु सुरक्षा समिति, मानसा, जिला भटिंडा की गोली मारकर हत्या। बटाला में कुछ व्यक्तियों द्वारा गोली चलाने व हथ गोला फेंकने से श्री रतन चन्द फोटो ग्राफर की उसी समय मृत्यु हो गई और 13 अन्य व्यक्ति घायल। फिरोजपुर के गांव नुरपुर में हैड कांस्टेबल राकेश कुमार की गोली मारकर हत्या। जालन्धर जिले में सर्वश्री नन्द लाल और काला को गोली चलाकर घायल। जिला जालन्धर के गांव रायपुर अरायन के नजदीक सहायक उप निरीक्षक हरदयाल सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आक्रमणकारी, मृतक का रिवाल्वर ले गए। कमीशन एजेंट श्री तरसेम की हरियाना, जिला होशियारपुर में उनकी दुकान पर गोली मार कर हत्या। आक्रमणकारी 7,000 रुपये ले गए। बग्गापुराना, जिला फरीदकोट से श्री अमृतसर गुप्ता

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

की गोली मार कर हत्या।

22 पंजाब रोडवेज की बस में यात्रा कर रहे दो हिन्दुओं की जिला फरीदकोट में बस स्टैंड, गुलाल-पथरा पर गोली मारकर हत्या। मेडिकल प्रैक्टिशनर, श्री धर्मपाल की जिला गुरदास-पुर के गांव धडियोला में गोली मारकर हत्या। श्री अशोक कुमार को घर लौटते समय राज थियेटर, अमृतसर के नजदीक गोली चलाकर घायल किया गया। अमृतसर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ट्रक पर एक हथगोला फेंका गया। हथगोला सड़क पर फटा। दो व्यक्ति घायल हुए। बटाला की सरकारी समितियों के सचिव से पिस्तौल दिखाकर 37,000 रुपये छीने गए। जिला अमृतसर में संगतपुरा पुल पर पिस्तौल दिखाकर बस यात्रियों को लूटा गया। नाभा के दुकानदार श्री सतीश कुमार से एक बैग छीन लिया गया, जिसमें 50,000 रुपये थे।

23 जिला पटियाला के गांव बलवाड़ा की अनाज मण्डी में हुई गोलाबारी में चार व्यक्ति मारे गये और तीन व्यक्ति घायल हुए। भटिंडा में लकड़ी के तीन खोखों में आग लगा दी गयी। भिवानीपुर, जिला कपूरथला में श्री बाल किशन को घायल कर दिया और उसका स्कूटर और कलाई घड़ी छीन ली गई। सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल ने घोषणा की कि 3 जून, 1984 से असहयोग कार्यक्रम शुरू किया जायेगा और भूमि राजस्व; नहर पानी के प्रभार, ऋणों और बिजली के बिलों का भुगतान न करना और पंजाब से अनाज के आवागमन को रोकना, इस कार्यक्रम में शामिल होगा।

24 जिला लुधियाना के गांव तहारा के नजदीक हुई गोलाबारी की घटना में 8 व्यक्ति मारे गये। अमृतसर स्थित सेंट्रल कोआप-रेटिव बैंक की शाखा से 31698/- रुपये लूटे गये।

25 हिन्दू सुरक्षा परिषद के उपाध्यक्ष श्री देव रतन तुली की फिरोजपुर में गोली मारकर हत्या कर दी गई। कुछ लोगों ने जिला फिरोजपुर में गुनियाना और कसुवेगु रेलवे स्टेशनों के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बीच चलती हुई रेलगाड़ी पर गोलियां चलायीं। गाड़ी में ड्यूटी पर तैनात दो कर्मचारी, रेलवे सुरक्षा बल के श्री रतन सिंह और सरकारी रेलवे पुलिस के श्री सतिन्दर सिंह घायल हो गये। जिला फरीदकोट के वागापुराना स्थान पर श्री अशोक कुमार पर गोली चलाकर घायल किया गया। श्री यशपाल सिंह, स्वर्णकार को मोगा में गोली चलाकर जख्मी कर दिया गया। उससे उसका स्कूटर, कलाई घड़ी और नोट-बुक छीन ली गयी। हरदो छनिया चौक, गुरदासपुर के पास सीमा सुरक्षा बल के एक ट्रक पर एक बम फेंका गया, जिससे कांस्टेबल श्री कुलदीप राज की मृत्यु हो गई। नाभा में श्री मेघराज की दुकान पर एक बम फेंका गया। इसे दुकान से बाहर फेंक दिया गया जहां वह फट गया। राजपुर स्थित नव-युग सिनेमा के बाहर एक बम विस्फोट।

26 जिला गुरदासपुर के गांव महलेवान में अध्यापक श्री रतन चन्द की गोली मारकर हत्या। जिला कपूरथला में सुलतानपुर लोधी के गुरद्वारा हुत साहिब के पास श्री प्रीतम सिंह की गोली मारकर हत्या। होशियारपुर जिले में उरमुर टांडा स्थित मन्दिर के पुजारी श्री रामबल दास पर गोली चलायी गयी परन्तु वह बच गये। अराधियों ने मन्दिर में आये दर्शनार्थी को चाकू से घायल कर दिया। फिरोजपुर लुधियाना सेक्शन में रेलवे स्टेशन महेश्वरी के बुकिंग आफिस में आग लगाई गई।

27 अमृतसर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक जवान को गोली मारकर घायल कर दिया गया। कादियां में दुकानदार श्री यशपाल मोहन को गोली चलाकर घायल कर दिया गया। जंडियाला गुरु, अमृतसर में उपनिरीक्षक श्री मोहनसिंह को गोली चलाकर जख्मी कर दिया गया। गुरुद्वारा दुख निवारण में से कुछ उग्रवादियों ने सरहिन्द रोड, पटियाला पर तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ी पर गोलियां चलाई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सीमा सुरक्षा बल के दो जवान घायल हुए। जिला होशियार-के गांव महावलीपुर के एक दुकानदार श्री बिहारी लाल को गोली मारकर घायल कर दिया गया। पटियाला स्थित हरबंस सिनेमा के बाहर हुए एक बम विस्फोट में 13 व्यक्ति घायल हुए, जिसमें एक महिला व एक बच्चा भी था।

28 जिला अमृतसर के बसेरकी नामक स्थान पर कमीशन ऐजेन्ट श्री दलजीत कुमार की उसकी दुकान में हत्या। अमृतसर में, सोते हुए श्री दोपा की छुपा घोंप कर हत्या कर दी गई। जिला जालंधर के गांव करनावा में श्री गुरु चरन दास, वकील पर गोली चलाकर घायल कर दिया गया। बागापुराना, फरीदकोट में श्री तेजा सिंह के घर से पिस्तौल दिखाकर लग-भग 22,000 रुपये की नकदी और जेवर लूट लिए और उसकी पत्नी को घायल कर दिया गया। लेहरा मोहब्बत और लेहरा खान रेलवे पुल पर एक बम विस्फोट।

99 जिला गुरदासपुर के वडाला ग्रंथियान में श्री जरन सिंह की गोली मारकर हत्या। तीन अन्य व्यक्ति भी घायल हुए। उनमें से बाद में एक व्यक्ति मर गया। अमृतसर में श्री चिमन लाल कोहली की उस समय गोली मार कर हत्या कर दी गई। जब वह अपने किराना स्टोर में बैठे थे। एक ग्राहक भी मारा गया। भान सिंह, तरन तारन में सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ियों पर गोलियाँ चलाई गईं। इसके परिणामस्वरूप एक नागरिक, श्री अर्जुन सिंह की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। दो अन्य व्यक्ति जख्मी हुए। सीमा सुरक्षा बल के लान्स नायक मोहन लाल और कांस्टेबल सतिन्दर सिंह भी घायल हुए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई। सीमा सुरक्षा बल के ही श्री प्रेम प्रकाश घायल हुए। जिला अमृतसर के गांव रसूलपुरा में श्री सन्तोख सिंह और श्री स्वर्ण सिंह गोलीबारी में घायल हो गए। अपराधियों को गिरफ्तार किया गया और उनसे गोलाबारूद बरामद किया। पटियाला में स्वर्णकार, श्री

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बासुदेव की मृत्यु अर पिस्तौल दिखाकर कई लाख रुपयों के जेवर लूट लिए गए।

30 आर्किटेक्ट, श्री कृष्ण लाल कुमार की पटियाला में हत्या। लुधियाना स्थित एडवांस ट्रेनिंग संस्थान के निदेशक, श्री जे० सी० अरोड़ा को घायल कर दिया गया। जिला गुरदास के गांव घसीटापुर में कुछ व्यक्तियों द्वारा गोलीबारी किये जाने से श्री चरण लाल गंभीर रूप से घायल हो गए और उनकी पत्नी श्रीमती दर्शना की मृत्यु हो गई। तरन तारन स्थित गुरू अर्जुन देव सराय में से कुछ उग्रवादियों ने सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ी पर स्टेनगन से गोलीबारी की जिला अमृतसर में गांव जोधपुर के दुकानदार श्री जोगिन्द्र पाल की हत्या। गुरुदेव सिंह नामक एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। केनरा बैंक, धर्म सिंह मार्किट अमृतसर के लेखाकार से पिस्तौल दिखाकर 13,877 रुपये की राशि और 55, 88690 रुपये का एक चैक छीन लिया गया। सुलतानविंड में डा० दलबीर सिंह के मकान से एक बन्दूक, एक रिवाल्वर, 3,000 रुपये और 12,000 रुपये के जेवरात लूट लिए।

31 जिला अमृतसर के गांव फतेहाबाद में श्री जतिन्दर कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी गई और और 3 अन्य व्यक्ति घायल हुए। पटियाला के गांव रायपुर में दूध विक्रेता श्री छोटे खां और श्री अनवर खां पर गोलियां चलाई गई। श्री छोटे खां घायल हो गए। जिला गुरदासपुर के गांव ठीकरी वाला में श्री सतपाल और श्री देशराज को गोली चलाकर घायल कर दिया। जिला भटिंडा में गांव भोखारा के पास श्री कृष्ण लाल गोयल को घायल करके उनका स्कूटर छीन लिया गया। राजकीय उच्च पाठशाला, बरेट्टा, भटिडा के हाल में आग लगा दी गई और रिकार्ड एवं फर्नीचर जल गया। पटियाला में रुमालों और पालकी के साथ-साथ गुरु ग्रन्थ साहब "बीर" में आग लगा दी गई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

1 जून, कुछ उग्रवादियों ने स्वर्ण मन्दिर में से सीमा सुरक्षा बल की एक टुकड़ी पर गोलियां चलाई। सीमा सुरक्षा बल ने भी जवाब में गोलियां चलाई। इसके फलस्वरूप स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर 7 व्यक्ति और परिसर के बाहर 3 व्यक्ति मारे गए। परिसर के भीतर 16 व्यक्ति और उसके बाहर 9 व्यक्ति घायल हुए। मलौत मण्डी, जिला फरीदकोट के चुंगी निरीक्षक श्री ओम प्रकाश हत्या का उसका मित्र घायल हो गया अमृतसर में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई तथा एक अन्य व्यक्ति को घायल कर दिया। जिला अमृतसर के थथियान नामक स्थान पर श्रीमती परसीनकौर की उसके मकान में हत्या कर दी गई। जिला फरीदकोट में मुक्तसर निवासी श्री जगजीत सिंह की कृपाण से हत्या कर दी गई। हत्यारों ने अबोहर रोड़, मुक्तसर निवासी श्री कश्मीरी लाल को भी घायल कर दिया। धारीवाल में संतोषी माता के मन्दिर के पास पार्क में हुई गोली बारी की घटना में 5 व्यक्ति मारे गये और 9 व्यक्ति घायल हुए। भटिंडा में श्री गोविन्दराय और श्री रतन लाल मिस्त्री नामक दो व्यक्ति घायल किये गये। सभी-नगर लुधियाना के डाकपाल श्री देव प्रकाश पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया गया गांव वजुवान खुर्द नकोदर में कोआपारेटिव बैंक में पिस्तौल दिखाकर 68,000 रुपये लूट लिये गये। भटिंडा में श्री प्रमोद कुमार अपनी दुकान में हुए बम विस्फोट में घायल हो गये। पटियाला में श्री सुख मिन्दर सिंह की दुकान में आग लगा दी गई।

2 जिला फरीदकोट के गांव लैंगियाना खुर्द में श्री सोहन सिंह की हत्या कर दी गई। श्री देवराज को घायल कर दिया गया। जिला फरीदकोट के गांव लेइनावाली में श्री श्याम लाल की गोली मार कर हत्या कर दी गई। भटिंडा में श्री प्रकाश चंद नागरा की गोली मारकर हत्या कर दी गई। श्री बरीन्दर खुल्लर को जालंधर में गोली चलाकर मार डाला गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ध्यानपुर जिला गुरदारपुर में प्रकाश, बलदेव, गोपाल को गोली मार दी गई। वह मर गये। 7 अन्य घायल हुये। होशियारपुर में भूतपूर्व विधायक श्री ओम प्रकाश बड़यग और जनता पार्टी के एक कार्यकर्ता की हत्या कर दी गयी। श्री हेमराज को भटिंडा में गोली मारकर घायल कर दिया गया। गांव मनोहर जिला अमृतसर में एक बस के यात्रियों को लूट लिया गया। मेदी रोड़ावाली सदर फाजिल्का में 13 दुकानें जला दी गयीं। एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। वेरका, जिला अमृतसर में पंजाब रोडवेज की एक बस जला दी गई। भटिंडा जाते समय श्री हरिचन्द्र का अपहरण। आज तक वह लापता है।

यह घटना क्रम केवल पंजाब का है। पंजाब के बाहर भी आतंक फैलाया गया। हिंसा की घटनाएं हुई। दिल्ली में मनचंदा को दिन दहाड़े हत्या कर दी गई। दिल्ली में कई बैंकों में डाका मारा गया। निश्चय ही यह उग्रवादियों का काम था। अपराध करना और अमृतसर के पवित्र स्वर्ण मन्दिर में घुस जाना उनका कार्यक्रम बन गया था। पुलिस गुरुद्वारे में जा नहीं सकती थी। अतएव चैन की बंशी बजायी जाती थी। इस तरह खालिस्तान के नाम पर, गुरुद्वारों को किले बनाकर पूरे भारत को अपने आतंक से हिलाकर सिख-समुदाय का मुखौटा लगा कर पृथकतावादी शक्तियों की करतूतें चरमसीमा को छूने लगी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

चरम सीमा पर

आतंकवाद को इस चरम सीमा तक ले जाने का श्रेयसंत जनरैल सिंह भिंडरांवाला को है। मोगा से दक्षिण पश्चिम सीमा में लगभग 70 कि० मी० दूर एक गांव रोडा में जनरैल सिंह का जन्म हुआ था। उसके पिता का नाम जत्थेदार जोगेन्द्र सिंह हैं। विवाहित और दो बच्चों का पिता जनरैल सिंह संत गुरुचरण भिंडरांवाला का शिष्य बन गया। उसने घर द्वार छोड़ दिया और गुरुद्वारे में रह कर ही सिख मत का कार्य शुरू कर दिया। बहुत कम पढ़े-लिखे इस संत की बेलगाम और तीखी भाषा ने जन-साधारण पर अपना प्रभाव डालना शुरू कर दिया। उसके भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। पहले अकाली दल ने जनरैल सिंह को कोई महत्व नहीं दिया पर कांग्रेस ने अपने चुनाव काल में भिंडरांवाला की सेवाएं लीं। इससे भिंडरांवाला का राजनीति में हौसला बढ़ने लगा। जब ज्ञानी जैलसिंह केन्द्र सरकार में गृह मन्त्री थे, तो जनरैल सिंह को उनका वरदहस्त प्राप्त था। इस वरदहस्त ने जनरैल सिंह को काफी बढ़ावा दिया। वह चौक मेहता के गुरुद्वारे का

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सर्वोसर्वा बन गया।

निरंकारियों के बढ़ते प्रभाव से जनरैल सिंह बहुत दुखी और उत्तेजित था। बीबी अमर जीत कौर के पति की निरंकारियों से हुई एक मुठभेड़ में हत्या हो गयी और तब जनरैल सिंह भी आतंकवाद पर उतर आया। निरंकारी संत बाबा गुरुचरन की हत्या कर दी गयी और इसके बाद 'पंजाब केसरी' के सम्पादक-संचालक लाला जगत नारायण की। ज्ञानी जैल सिंह तब तक भारत के राष्ट्रपति बन गये थे। इस कारण भिंडरांवाला का साहस और बढ़ गया। खूनी संघर्ष के बाद चौक मेहता में उसे गिरफ्तार किया गया, पर बाद में छोड़ दिया गया। इस गिरफ्तारी ने भिंडरांवाला को रातोंरात मशहूर कर दिया। बिना शर्त रिहा होने के कारण उसका हौसला बढ़ गया। चौक मेहता के स्थान पर उसने स्वर्ण मन्दिर में अपना अखाड़ा कायम किया।

छोटे दायरे में रहने वाला आदमी जब यकायक 'बड़ा' बन जाता है, तो 'बड़प्पन' को संभाल नहीं सकता है। भिंडरांवाला इसी कारण सातवें आसमान पर बैठ गया। राजनीति का 'क ख ग' तक न जानने के कारण उसने ठेठ छोटे दायरे की भाषा का प्रयोग करना शुरू कर दिया। आतंक वाद को बढ़ावा देना शुरू कर दिया। उसके प्रवचन और अखबारों में दिये गये साक्षात्कार इसके प्रमाण हैं। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं—

"सभी सिखों को चाहे वे शहरी क्षेत्रों के रहने वाले हों या ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले हों, यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम गुलाम हैं और किसी भी कीमत पर आजादी चाहते हैं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हथियार संभाल लो और लड़ाई के लिए तैयार रहो, तथा आदेशों की प्रतीक्षा करो।"

"इस बात को अच्छी तरह से ध्यान में रखो कि किसी प्रकार की गड़बड़ी होने पर, सेना और पुलिस के सभी सिखों की दुनालियां उसी स्थान की तरफ होंगी।"

"उसमें यह बहुत ही साफ लिखा हुआ है कि 12 बोर की बन्दूक के लिए लाइसेंस की जरूरत नहीं हैं। लाइसेंस लेने की कोई जरूरत नहीं है। यदि आपको 12 बोर गन के साथ पकड़ लिया जाता है और आपसे यह

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पूछा जाता है कि इसका लाइसेंस कहां है तो आप यह आसानी से कह सकते हैं कि यह आनन्दपुर साहिब संकल्प के अनुसार है।"

"मैं सिखों को इस चालाकी के प्रति सावधान रहने की चेतावनी देता हूं। बातचीत जारी रख लेकिन साथ-साथ अपनी तैयारी भी पूरी रखें -- तैयारी पूरी होनी चाहिए।"

"वे तो केवल 36 बनते हैं और 100 भी नहीं। 66 करोड़ को विभाजन करें तो प्रत्येक सिख के हिस्से में केवल 35 हिन्दू आते हैं, 36 भी नहीं, तो फिर आप कैसे कहते हैं कि आप कमजोर हैं।"

"मैंने पहले यह निर्देश दिए थे कि प्रत्येक गांव में तीन युवकों का एक दल बनाया जाए, प्रत्येक के पास एक रिवाल्वर और एक मोटर साइकिल होनी चाहिए। कितने गांवों में ऐसा किया है।

"प्रत्येक सिख बालक को अपने पास 200 ग्रेनेड रखने चाहिए—"

"सिखों के विरुद्ध अपराध करने वालों से बदला लेने के लिए मोटर साइकिल ग्रुप तैयार किए जाने की आवश्यकता है।"

"आप में से जो आतंकवादी बनाना चाहते हों, वे अपने हाथ ऊपर उठाएं। आपने जो इस बात पर विश्वास करते हैं कि वे गुरु के सिख हैं अपने हाथ ऊपर उठाएं, बाकी बकरियों की तरह अपने सिर झुका लें,"

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है, हम चाहते हैं कि आनन्दपुर साहिब संकल्प की सभी मांगें स्वीकार की जाएं अर्थात् सिख एक अलग राष्ट्र (कौम) है, बस इतना ही मैं कहना चाहता हूं।"

"हथियार के बिना सिख नंगा है", बलि का बकरा है— मोटर साइकिलें, बन्दूकें खरीदें और देश द्रोहियों को उन्हीं की भाषा में जवाब दें।"

(',इंटरनेशनल हैराल्ड ट्रिब्यून" 24 अप्रैल, 1984)

"जिन्होंने यह महान कार्य किए हैं वे सिखों के सर्वोच्च आसन अकाल तख्त की ओर से सम्मान के पात्र हैं — यदि उनके हत्यारे मेरे पास आएं तो मैं उन्हें सोने से तोलूंगा।" ('इंडिया टूडे' 30 अप्रैल, 1983)

"मैं उनसे कहना चाहता हूं— कि वे अलग राष्ट्र के रूप में हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई में भाग लेने के लिए तैयार रहें।"

(डेली मेल, 12 अप्रेल, 1984)

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

"सिख एक अलग राष्ट्र हैं और इस तथ्य को मान्यता दी जाए। सिखों को भारत संघ में विशेष दर्जा प्राप्त होना चाहिए, पंजाब राज्य को वह दर्जा दिया जाना चाहिए जो संविधान के अनुच्छेद 370 के अधीन जम्मू और कश्मीर को दिया गया है।" ("वीक" 27 मार्च—अप्रेल, 1984)

"साफ-साफ बात यह है कि मैं यह नहीं समझता कि सिख भारत में या भारत के साथ रह सकते हैं।" ("संडे आब्जरवर")

स्वर्णमंदिर में आने पर जनरैल सिंह अपने आतंक के कारण अकाली दल के नेताओं पर हावी होने लगा। उसने 'खालिस्तान' का सपना देखना शुरू कर दिया। विदेश से इसी आन्दोलन का संचालन करने वाले जगजीत सिंह चौहान और गंगा सिंह ढिल्लों से उसके संबंध बन गये। कहा जाता है कि उसे यह आश्वासन भी दिया गया कि जब खालिस्तान बन जायेगा तो उसे राष्ट्रपति बना दिया जायेगा। इस आश्वासन ने भिंडरांवाले का दिमाग और चढ़ा दिया। उसने आतंक और हथियारों की भाषा में बात करना शुरू कर दिया। स्वर्ण मंदिर में बाकायदा उसका दरबार लगने लगा। उसने फैसले देना शुरू कर दिये और 'हिटलिस्ट' बनाना शुरू कर दी। उसका पालन किया जाने लगा।

परदे के पीछे पाकिस्तान और अमेरिका भी सक्रिय हो गये। पाकिस्तान 'बंगला देश' का बदला लेने के लिये न जाने कब से छटपटा रहा है और अमेरिका भारत की बढ़ती शक्ति से आक्रान्त है। 'एशियाड' और 'नाम' का आयोजन, भारत की अखंडता उसे विशाल दैत्य के समान लगती है और अमेरिका इस बात से चिंतित है कि यह महादेश अगर कमजोर नहीं किया गया, तो एशिया और यूरोप से उसका वर्चस्व उखड़ जायेगा। इन दोनों शक्तियों के इशारे पर भिंडरांवाले को पूरा विश्वास हो गया कि खालिस्तान बनकर रहेगा।

अपने इस स्वप्न को पूरा करने के लिये भिंडरांवाले ने नेताओं तोहरा पर भी दबाब डालना शुरू कर दिया। अकाली दल को एक नया मोड़ 12 दिसम्बर 1982 को दिया गया, जिसमें तमाम भूतपूर्व सैनिकों से अकाली दल में शामिल होने की अपील की गई। 23 दिसम्बर को अमृत-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सर के सम्मेलन में शामिल होने के लिये 2200 सेवा निवृत सैनिकों को एक प्ररिपत्र अकाली दल द्वारा भेजा गया। सैनिकों का सम्मेलन किया गया। 19 दिसम्बर को चंडीगढ़ के एक गुरुद्वारे में सेना के कई भूतपूर्व अधिकारियों तथा मेजर जनरल नरेन्द्र सिंह भुल्लर, मेजर जनरल महेन्द्र सिंह ढिल्लन, मेजर जनरल जसवंत सिंह जैसे लोग लगभग अन्य 80 अफसरों का सम्मेलन हुआ। फिर 23 दिसम्बर को स्वर्ण मंदिर में गुरु रामदास भवन में 12,000 सैनिकों की एक सभा हुई। इसे भिंडरांवाले ने संबोधित किया। लगभग इसी समय भिंडरांवाले को मेजर जनरल शहवेग सिंह (सुवेग सिंह) का भी समर्थन मिल गया। बंगलादेश की मुक्ति सेना का गठन करने वाले और गुरिल्ला युद्ध में माहिर शहवेग सिंह को भ्रष्टाचार के आरोप में निकाला जा चुका था। वह भारत सरकार से सख्त नाराज थे।

शहवेग सिंह ने आंदोलन को हथियारों का रूप दिया और लगभग इसी समय से गुरुद्वारा स्वर्ण मंदिर में मोर्चाबंदी शुरू हो गयी। स्वर्ण मंदिर को किले का रूप दिया जाने लगा। आतंकवाद को विस्तार देने के लिये हथियारों का बांटना शुरू हो गया। स्वर्ण मंदिर में हथियार आने लगे। लंगर के लिये लाये जाने वाले अनाज के बोरों में एक से एक घातक हथियार पहुंचने लगे। विदेश से जगजीत सिंह चौहान तथा गंगासिंह डिल्लो प्रति सप्ताह लाखों रुपया भेजने लगे। इससे हथियारों की खरीद शुरू हो गयी।

शहवेग सिंह ने अपने पाकिस्तानी परिचय का लाभ उठाना शुरू कर दिया। जबलपुर में जब बंगलादेश में बंदी बनाये गये अफसर मौजूद थे, तो शहवेग सिंह इन्चार्ज थे। उनका परिचय उनसे हो गया था। वही अधिकारी पाकिस्तान से हथियार लाकर देने लगे। शहवेग सिंह उनको भड़का रहा था कि बंगलादेश का बदला लेना है। शहवेग सिंह ने अत्यन्त रहस्यमय ढंग से स्वर्ण मंदिर को एक मजबूत किले के रूप में बदल दिया। चंडीगढ़ में रहने वाले शहवेग सिंह ने अपना परिचय गुप्त ही रखा। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग, खुफिया एजेंसियों को शहवेग सिंह की भूमिका का कुछ पता न था। शहवेग सिंह ने पूरा मोर्चा बना लिया। हर तरह से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

'युद्ध' की तैयारी कर ली गयी। इस कारण आतंकवादियों का हौसला बढ़ने लगा। रोज हत्याएं लूटमार, बैंकों, जौहरियों की दुकानों पर डाके पड़ने लगे। सारा माल स्वर्ण मंदिर जाने लगा। अपराधी वहीं शरण पाने लगे। पुलिस गुरुद्वारे में घुस न सकती थी। इसी सुविधा का लाभ उठाकर पंजाब के लगभग 65 गुरुद्वारों में भारी शस्त्रास्त्रों के साथ आतंकवादियों और भूतपूर्व सैनिकों का जमाव शुरू हो गया। इस मुस्तैदी और अपनी क्षमता को परखने के लिये एक साथ 17 रेलवे स्टेशनों पर हमला किया। लूटमार हुई। पटरियां उखाड़ी गयीं। इस परीक्षण में भिंडरांवाला और शहवेग सिंह को पूरा विश्वास हो गया कि वह अपनी मिशन में कामयाव होंगे।

तैयारियां बहुत व्यापक पैमाने पर हो गयी थीं। देशी रिवाल्वर और हथगोले बनाने के कारखाने स्वर्ण मन्दिर में बन गए थे। शक्तिशाली ट्रांस-मीटर भी फिट हो गए थे। जगजीत सिंह चौहान और गंगा सिंह ढिल्लो का पाकिस्तान के माध्यम से भिंडरावाला का सीधा सम्पर्क हो गया था। अमेरिका ब्रिटेन से उनकी आवाज पाकिस्तान ट्रांसमीटर होती थी और तब पाकिस्तान (लाहौर) से स्वर्ण मन्दिर भेज दी जाती थी। इस वार्ता का कोडनम्बर 'के० थ्री' रख गया था। 'के० थ्री' का कोड नम्बर अपना काम कर रहा था।

यह सर्वविदित तथ्य है कि बंगला देश में 'मुक्ति वाहिनी' के नाम से गुरिल्ला युद्ध करने वाले भारतीय सैनिक ही थे। उन्होंने मुसलमानों का पहनावा धारण कर गुप्त रूप से बंगला देश में प्रवेश कर पाक सेना की कमर तोड़ दी थी। इसका आयोजक शहवेग सिंह ही था। स्वयं शहवेग तब मुसलमानी वेश धारण कर शहवेग खां बन गया था। वही हथकंडा शहवेग ने यहां भी अपनाया। निहंग के वेश में कुछ पाकिस्तानी अधिकारी स्वर्ण मन्दिर में आ गए। वह यह देखने आये थे कि सब काम सुचारू रूप में चल रहा है या नहीं। स्वर्ण मन्दिर में रहकर वह ट्रांसमीटर के जरिये परदे के पीछे खड़े पाकिस्तान को बराबर सूचनाएं दे रहे थे कि सब काम ठीक-ठाक चल रहा है। उधर पाकिस्तान ने भी भारत पाक सीमा, जो पंजाव से सटी है लगभग 6000 लोगों को निहंगों के वेश में खड़ा कर रखा था। इसमें

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अधिकतर पाकिस्तानी सेना के ही जवान थे। मई 1984 तक इस प्रकार के लगभग 35000-40000 लोग तैयार किए गए। इनको पंजाब से सटी भारत पाक सीमा पर बिखरा दिया गया।

अपनी इसी शक्ति और आत्मविश्वास के कारण अकाली दल ने आतंक को चरम सीमा पर पहुंचा दिया। वास्तव में शहवेग सिंह के आगमन के बाद अकाली दल का सारा नेतृत्व भिंडरांवाला के हाथ में आ गया था। तोहरा लोंगोवाल भिंडरांवाला के आतंक के आगे भींगी बिल्ली बन गये थे। हरदम स्टेनगन अपने पास रखने वाला और गोली की भाषा में बात करने वाला भिंडरांवाला इन दोनों को अपने इशारे पर नचा रहा था वह सरेआम दोनों को 'बकरियां' कहा करता था। इसी कारण सैनिक कार्रवाई शुरू होने से पहले 1 जून, 1984 को लोंगोवाल ने तत्कालीन राज्यपाल भैरवदत्त पांडेय से इस बात को कहा कि स्थिति उनके हाथ से बाहर है, सरकार चाहे जो करे भिंडरांवाला के आगे इनकी एक न चलती थी। सर्वथा असहाय, मूकदर्शक, मात्र 'रबर स्टैम्प' बना दिये गए थे। भिंडरांवाला के इसी आतंक के कारण अकाली अध्यक्ष केन्द्र सरकार से समझौता न कर पा रहे थे। बात-बात में अड़ंगे लगा रहे थे। भिंडरांवाला सीधे-सीधे एक स्वतन्त्र राष्ट्र 'खालिस्तान' के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था, ठीक बंगला देश की तरह, उसका राष्ट्रपति बनने का स्वप्न देख रहा था। उसने स्पष्ट रूप में कह दिया था. "समझौता करके आओगे तो तुम्हें गोली मार दी जायेगी। खालिस्तान बीबी (श्रीमती इन्दिरा गांधी) नहीं मानती हैं तो हम लेकर रहेंगे। पूरा हिन्दुस्तान हड़प लेंगे। लालकिले पर खालिस्तान का झंडा फहरायेगा। भिंडरवाला का तेवर ही कुछ और किस्म का था। लोंगोवाल और तोहरा को अपनी जान का खतरा पैदा हो गया था। तेजा सिंह समुन्दरी हाल में दोनों के समर्थकों में मारपीट भी हो गयी। दोनों एक-दूसरे के लिए तलवारें तानकर खड़े हो गए। लगभग इसी समय भिंडरांवाला ने अकाल तख्त को अपना केन्द्र बना लिया और वहां पर जबर्दस्त मोर्चा बन्दी कर ली।

पूरे युद्धस्तर की तैयारियां कर ली गयीं। शहवेग सिंह, भिंडरांवाला आदि उच्च उग्रवादी इस बात को समझ रहे थे कि बीबी पूर्ण रूप में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मुकाबला करेगी। इस कारण वह ईंट का जवाब पत्थर से देने की तैयारियों में लगे थे। शहवेग सिंह ने सारी योजना ठीक 'आपरेशन बंगला देश, के ढंग पर बनायी थी। अपनी इस योजना की सफलता पर उनको पूरा विश्वास था।

यह निश्चित किया गया कि एक निश्चित तारीख को सारे पंजाब के गुरुद्वारों से आतंकवादी निकलेंगे। लगभग 8000 व्यक्तियों की एक ही रात में हत्या की योजना बना ली गई थी। उनके नामों की लिस्ट यथा-स्थान दे दी गयी थी। इस प्रकार कत्लेआम कर सारे पंजाब में विद्रोह कर सेना को असहाय बना दिया जायेगा। इसके तत्काल बाद ही पाकिस्तानी सीमा पर खड़े निहंग वेशधारी 30000-40000 पाक सैनिक व खतरनाक नागरिक पंजाब में फैल जायेंगे। उनके लिए सीमा पर ट्रकों की व्यवस्था ट्रांसपोर्टरों से बात कर हो गयी थी। इस प्रकार सम्पूर्ण पंजाब में घुसकर खालिस्तान की स्थापना की घोषणा कर दी जाएगी। घोषणा के तत्काल बाद पाकिस्तान और तब अमेरिका उसे एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में मान्यता देंगे। जैसा भारत ने बंगला देश के लिए किया था, ठीक उसी लाइन पर सब निश्चित कर लिया गया। अब केवल रेड सिगनल बाकी था और उसके लिए 3 जून 1984 का समय तय कर लिया गया। 3 जून 1984 को आन्दोलन के नाम पर खालिस्तान की पूरी तैयारियां कर ली गयीं, सारे भारत को एक गहरा झटका देने का पूरा बन्दोबस्त कर लिया गया।

यह कहना या इस प्रकार के आरोप लगाना सर्वथा गलत है कि भारत सरकार को इस घटनाक्रम की सूचना न थी और गुप्तचर विभाग या 'रा' इस मामले से अनभिज्ञ था। सारी सूचनाएं केन्द्र सरकार के पास पहुंच गई गयी थीं। यह सत्य है कि भारत के खुफिया संगठनों को स्वर्ण मन्दिर के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

किलेबन्दी की पूरी जानकारी न थी और न ही हथियारों का ठीक-ठीक पता था और न ही आतंकवादियों की संख्या का ज्ञान था। मात्र एक इस कमजोरी के अलावा सारी सूचनाएं थीं और इसी आधार पर जब जम्मू काश्मीर में गुरमत कैम्प के नाम पर आतंकवादियों को विमान अपहरण करने, गुरिल्ला युद्ध करने की ट्रेनिंग दी जा रही थी, तो केन्द्र सतर्क हो गया था।

जिस प्रकार आतंकवादियों ने अपना उपरोक्त मंसूबा सर्वथा गोपनीय रखा, उसी प्रकार केन्द्र सरकार ने भी किया। मई के अन्तिम सप्ताह में चकराता में एक गुप्त निर्णय लिया गया। 30 मई की रात को ठीक 7 बजे इन फेटंरी डिवीजन सेना ने अपना मुख्यालय मेरठ छोड़कर पंजाब में प्रवेश करना शुरू कर दिया। चारों दिशाओं से बाकायदा रातोंरात बख्तर बन्द गाड़ियों में सैनिक पंजाब के नगरों में बिखर गए। मात्र 24 घन्टे के समय में 70,000 सैनिकों ने लगभग पूरा पंजाब घेर लिया। 12,618 गांवों व शहरों को जोड़ने वाली सड़कों पर सेना खड़ी हो गई।

'आपरेशन के श्री' के जवाब में 'आपरेशन ब्लू स्टार' पूरी ताकत के साथ तैयार हो गया। यह काम पूरी-खूबी और गोपनीयता के साथ किया गया कि उग्रवादियों की कौन कहे, स्वयं राज्यपाल श्री भैरवदत्त पांडेय और आई०जी० प्रीतम सिंह भिंडर को भी भनक न लगी। वह तो यकायक 2 जून को जब सारे पंजाब का नियन्त्रण सेना के हाथ में आ गया, तो राज्य-प्रशासन बेतरह चौंक गया। सेना ने पूरे पंजाब का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया। सारे राज्य में मशीन-गनों से लैस हेलीकाप्टर मंडराने लगे, जो हर गांव, हर शहर पर नजर रखने लगे और किसी प्रकार के जन-समूह को रोकने के लिए एकदम प्रस्तुत थे।

और इस पूरी तैयारी के बाद 2 जून, 1984 को सायंकाल श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राष्ट्र को सम्बोधित किया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आपरेशन ब्लू स्टार

मेजर जनरल सहवेग सिंह को इस बात की पक्की खबर थी कि स्वर्णमन्दिर पर सैनिक कार्रवाई होगी और आतंकवादियों का सफाया करने या गिरफ्तार करने के लिए कदम उठाये जायेंगे। यह काम पुलिस और अर्ध सैनिक बल (बी० एम० एफ०) आदि से नहीं लिया जायेगा। अकाली दल के नेताओं ने बार-बार झुठी गलत सूचनाएं दीं कि स्वर्णमंदिर में कोई अपराधी नहीं है और न ही हथियार हैं और जनता पार्टी के नेता सुब्रह्मयण स्वामी ने एक सप्ताह तक स्वर्णमंदिर में डेरा डाल भिंडरावालां को नेक दिल इंसान बताया गया। साथ ही स्पष्ट घोषणा भी कर दी कि स्वर्णमंदिर में न तो कोई किलेबन्दी है और न ही हथियार हैं। इस प्रकार स्वर्णमंदिर की वास्तविकता पर परदा डाल रखा गया था, पर सहवेग सिंह समझता था कि केन्द्र के पास बहुत कुछ सूचनाएं हैं। अतएव सेना की सहायता से स्वर्णमंदिर से आतंकवादियों को पकड़ा, निकाला जायेगा यह कार्रवाई केवल शहर अमृतसर में होगी। सेना का घेरा नहीं पड़ेगा और जैसे ही घेरा पड़ेगा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वैसे ही पंजाब में 65 गुरुद्वारों से जन-समूह अमृतसर कूच कर देगा। अमृतसर के सैनिकों को घेर लिया जायेगा और तभी निहंगरूपी पाकिस्तानी भी पंजाब में प्रवेश कर जायेंगे। सहवेग सिंह को सपने में भी एहसास न था कि पूरा पंजाब पूरी कड़ाई के साथ सील कर दिया जायेगा। सारे पंजाब में कर्फ्यू लग जायेगा। भारत पाक सीमा पर चट्टानों सी अडिग भारतीय फौज पूरी तैयारी के साथ खड़ी हो जायेगी। सम्पूर्ण परिवहन रुक जायेगा। सब कुछ उसकी कल्पना के विपरीत था।

> वास्तविकता यह है कि विश्व के किसी भी देश में अपनी सीमा के भीतर इतना बड़ा आपरेशन पहली बार किया गया, जो एकदम युद्धस्तर पर था।

इस सबसे बेखबर जब स्वर्णमंदिर के आतंकवादियों के पास सेना के आने की खबर आई तो भिंडरावाला ने जबर्दस्त अट्टहास लगाकर घोषणा की, "खालिस्तान बनने जा रहा है। वाह गुरु की फतह। राज करेगा खालसा"—और तत्काल ट्रांसमीटर में हरकत आ गयी। जगजीत सिंह चौहान और गंगासिंह को खबर कर दी गयी। कहा जाता है जगजीत सिंह चौहान ने तत्काल पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया से सम्पर्क कर उन्हें अपना वायदा तुरन्त अमल में लाने को कहा, पर भारतीय सीमा को पूरी तैयारी के साथ सील की खबर पाकर जनरल जिया साहस न कर सके। पूर्ण रूप से युद्ध की स्थिति थी और दूसरी ओर रूसी राकेटों का मुख पाकिस्तान की ओर घुमा हुआ था। कल्पना के विपरीत स्थिति थी।

> वास्तव में जिस प्रकार बंगला देश की स्थापना के लिए भारत ने अमेरिका के सातवें बेड़े की भी परवाह न कर अपना अभियान जारी रखा था, ठीक उसी प्रकार की दशा 'आपरेशन ब्लू स्टार' की थी। अगर इसमें जरा भी चूक हो जाती, पंजाब को पूर्ण रूप से सील न किया गया होता या केवल 12 घंटे का और विलम्ब हो जाता तो सारा भारत युद्ध की लपटों में आ गया था। आज इतिहास कुछ और ही होता। भारत ने एक बार

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

फिर अपने को अग्नि परीक्षा के लिए तैयार कर दिया। भारत के नेतृत्व ने कितना बड़ा जोखिम लिया था। इसकी कल्पनामात्र रूह कंपा देने के लिए काफी है। यह तो उस वीरांगना श्रीमती इंदिरागांधी का ही साहस, कठोरता थी कि इतनी बड़ी आग में वह कूद पड़ी। यही तो इस महिला का चरित्र है कि वह बहुत नम्रता और खामोशी के साथ सब बरदाश्त करती रहती है, पर ठीक समय पर वह ऐसा विकराल भयंकर रूप धारण करती है कि समूचा विश्व डोल जाता है और अपने प्यारे भारत की अखंडता सार्वभौम सत्ता को एकदम बेदाग बचाकर ले जाती है। इसके बाद फिर वह बहुत मासूम, भोली-भाली बन जाती है।

'आपरेशन ब्लू स्टार' का नामकरण बताया जाता है कि स्वयं इंदिरा गांधी का दिया हुआ है। खालिस्तान के नीले झंडे में लंबे सितारेवाले (तथाकथित ध्वज) के आधार पर बनाया गया था। 'आपरेशन ब्लू स्टार' शुरू हो गया। स्वर्णमंदिर में पूरी आशा और विश्वास के साथ मोर्चाबंदी हो गयी कि सेना गुरुद्वारे में आयी, तो भून डाली जायेगी और तब तक पंजाब के गांव-गांव से हजारों आदमी अमृतसर चल पड़ेंगे। एक बहादुर और देशभक्त कौम को उग्रवादियों ने भिंडरांवाला के भाषणों के कैसटें गांव-गांव मुफ्त बांटकर 'खालिस्तान' के नाम पर बहका रखा था। 'राज करेगा खालसा' के नाम पर धार्मिक भावनाएं उभार दी गयीं थीं। इसी कारण अमृतसर से 25 कि० मी० दूर थाना झूवल के अन्तर्गत गोलवड आदि गांवों के 30,000 लोग हथियार बंद होकर विधिचन्द के नेतृत्व में अमृतसर कूच करने के लिए निकल पड़े। अजनाला, राजा सांसी, डंडकेशाली, बटाला, फतेहपुर राजपूतों से भी हजारों हथियारबंद लोग कूच करने लगे। अगर व्यापकतैयारियां न कीगयी होतीं, आपरेशन केवल अमृतसर या स्वर्णमंदिर तक ही रखा गया होता, तो क्या हाल होता। यह हजारों की भीड़ हिन्दुओं का कत्लेआम करती अमृतसर की ओर बढ़ती तब देश और सेना का क्या हाल होता !

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

तथाकथित बुद्धिजीवी, शराब और खूबसूरत औरतों तथा सैक्स के चटखारे लेकर वर्णन करने वाले सरदार खुशवंत सिंह ने राज्यसभा की सीट से चिपके रहकर केवल पदविभूषण लौटाकर यह दुहाई दी कि सैनिक कार्रवाई से भला था कि स्वर्णमंदिर घेर लिया जाता और राशन पानी आदि की सप्लाई बन्द कर दी जाती तो आतंकवादी घबराकर समर्पण कर देते। न स्वर्णमंदिर को क्षति पहुंचती और न ही खून-खराबा होता। इस तरह की बातें और भी बुद्धिजीवियों ने की हैं, पर क्या उनको पता था कि इसका क्या अंजाम होता! सारा अमृतशहर हजारों लोगों द्वारा घेर लिया जाता और स्वर्णमंदिर में घेरा डालने वाली सेना का सफाया कर दिया जाता। पूरा पंजाब सुलग जाता। घेरा कम-से-कम 7-8 दिन तो पड़ता···जाने क्या हाल होता···और क्या इन महानुभावों को यह पता नहीं था कि महीनों का राशनपानी स्वर्णमंदिर में जुटाकर रख लिया गया था। (जैसा कि आपरेशन के बाद में खाद्यान्न पकड़ा गया) इस तरह की सलाह का रोना रोने वाले क्या इस 'आंदोलन' के नाम पर काम कर रही विदेशी शक्तियों से अपरिचित थे। इस प्रकार का काम अगर केन्द्र ने किया होता (उग्रवादियों को पूरी उम्मीद थी। इसलिए राशनपानी भरपूर रख लिया था) तो आज उसका हल क्या होता!

'आपरेशन ब्लू स्टार' एकदम संतुलित और पूर्णतः व्यावहारिक योजना थी। इसका कोई विकल्प न था। सरकार द्वारा प्रकाशित श्वेतपत्र में सैनिक कार्रवाई का विवरण इस प्रकार दिया गया है।

2 जून, 1984 को सरकार ने नागरिक प्राधिकारियों की मदद के लिए, पंजाब में सेना बुलाने का निर्णय किया। सेना को निम्नलिखित कार्य सौंपा गया था।

पंजाब राज्य और चण्डीगढ़ संघ शासित क्षेत्र में उग्रवादी, आतंकवादी और साम्प्रदायिक हिंसा को रोकना और नियंत्रित करना तथा लोगों को सुरक्षा प्रदान करना व सामान्य स्थिति बहाल कराना; तस्करी और सीमापार से अनाधिकृत आवाजाही को रोकने के लिए पंजाब के राज्य

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

क्षेत्र से लगने वाली भारत-पाकिस्तान सीमा पर सुरक्षा बल की उपस्थिति में वृद्धि करना।

पंजाब और चण्डीगढ़ में तैनात अर्द्ध सैनिक बलों तथा पंजाब सशस्त्र पुलिस यूनिटों को सेना की कमान तथा नियंत्रण के अधीन रखा गया। चूंकि संघशासित क्षेत्र चण्डीगढ़ भी आतंकवाद की कार्रवाई से प्रभावित था, इसलिए समन्वित कार्रवाई जो सुविधाजनक बनाने की दृष्टि से पंजाब के राज्यपाल के दो महीने की अवधि के लिए इस संघशासित क्षेत्र का भी प्रशासक नियुक्त किया गया। 3 जून, 1984 को विदेशी अधिनियम के अधीन पंजाब में विदेशियों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई। बाद में, 15 जून, 1984 को यू० के० और कनाडा के पारपत्रधारियों तथा 18 जून, 1984 को अन्य राष्ट्रमण्डल देशों और आयरलैंड के राष्ट्रिकों के लिये वीजा की आवश्यकता कर दी गई। ऐसे नियम दूसरे देशों के राष्ट्रिकों के लिए भी मौजूद हैं। अस्थायी तौर पर, अटारी चैकपोस्ट के आर-पार आवाजाही पर रोक लगा दी गयी। पंजाब प्रेस (विशेष शक्तियां) अधिनियम के अधीन पंजाब सरकार ने ऐसी सामग्री के प्रकाशन और भेजे जाने पर रोक लगा दी, जिससे साम्प्रदायिक भावना भड़क सकती हो और सार्वजनिक व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। पंजाब और चण्डीगढ़ में कानून और व्यवस्था को फिर से स्थापित करने की सेना कार्रवाई में आतंकवादियों की धरपकड़ करना, आतंकवादियों के छिपने के ज्ञात स्थानों से उन्हें बाहर निकालना, अवैध हथियार और गोला-बारूद बरामद करना और लोगों की सुरक्षा और उनके विश्वास को कायम करना शामिल था।

3 जून, 1984 को तड़के तक सेना के दस्ते पंजाब और चण्डीगढ़ में प्रवेश कर गए और उन्हें सभी जिलों में उपयुक्त तरीके से तैनात कर दिया गया। तब तक भारत-पाकिस्तान की सीमा पर पंजाब क्षेत्र में सीमा सुरक्षा बल की बटालियनों को भी सेना के प्रचालन कमान में ले लिया गया था ताकि सीमापार से गैर-कानूनी आवाजाही तथा तस्करी के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर प्रभावकारी समन्वय तथा नियंत्रण रखा जा सके। पंजाब के साथ लगने वाले राज्यों ने भी पंजाब से उनके क्षेत्र में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बा सकने वाले आतंकवादियों को रोकने के लिए कार्रवाई की।

यद्यपि यह सूचना उपलब्ध थी कि आतंकवादियों के पास भिन्न-भिन्न प्रकार के भारी मात्रा में हथियार हैं और उन्होंने मजबूत किलेबन्दी की हुई है, पर आतंकवादियों की संख्या तथा उनके द्वारा बनाए गए मोर्चों के बारे में प्राप्त सूचना नाकाफी थी। तथापि; स्थिति को ज्यादा खराब होने से बचाने के लिए तेज गति से सैनिक कार्रवाई किए जाने की नितांत आवश्यकता थी। सैन्य दलों को विशेष रूप से ये आदेश दिए गए थे कि कम-से-कम ताकत का इस्तेमाल किया जाए, सभी पवित्र स्थानों के प्रति अत्यधिक आदरभाव दिखाया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि स्वर्ण मन्दिर के सबसे अधिक पवित्र स्थल हरमन्दिर साहिब को, और अन्य गुरुद्वारों के दरबार साहिब को, कोई नुक्सान न पहुंचे। प्रक्षेपक ढंग के और प्रज्जवलनशील हथियारों व गोला-बारूद के इस्तेमाल की पूरी तरह मनाही थी। सैन्य दलों को खास तौर पर यह हिदायत दी गई थी कि पवित्र स्थानों में चमड़े की कोई चीज पहनकर न जाएं और पकड़े गए सभी व्यक्तियों के प्रति आदर तथा नम्रता का व्यवहार किया जाए। सभी कमाण्डरों को यह हिदायत दी गई थी कि वे उन सभी स्थानों पर जहां आतंकवादियों के छिपे होने का सन्देह हो, लाउडस्पीकर आदि से उन्हें हथियार डाल देने के लिए काफी समय तक लगातार चेतावनी दी जाए ताकि उन्हें पकड़ने के लिए बल प्रयोग करने से पहले खून-खराबा न हो और पवित्र स्थानों को नुक्सान न पहुंचे। 3 जून, 1984 को रात 9 बजे से पंजाब सरकार तथा चण्डीगढ़ प्रशासन द्वारा 36 घण्टे का कर्फ्यू लगा दिया गया, जिसे बाद में आवश्यकतानुसार बढ़ाया गया। स्वर्ण मन्दिर तथा आतंकवादियों के छिपे होने के ज्ञात स्थानों के इर्द-गिर्द पुलिस के घेरे को सेना की यूनिटों द्वारा और अधिक मजबूत बना दिया गया और सेना ने यह भी सुनिश्चित किया कि कर्फ्यू का उल्लंघन न होने पाए।

इस क्षेत्र में आतंकवादियों ने अपनी तैनाती, सैनिक व्यूहरचना के अनुसार की थी, ताकि इन इमारतों का रक्षात्मक दृष्टि से पूरा-पूरा इस्तेमाल किया जा सके। आतंकवादियों ने अकाल तख्त की इमारत को सर्वाधिक महत्त्व की इमारत चुना क्योंकि श्री भिण्डरांवाले इसी इमारत

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

में थे और इनका मुख्यालय भी यहीं था। यह इमारत उनकी दृष्टि में सामरिक महत्त्व की थी। अकाल तख्त तक पहुंचने के सभी तख्तों पर कड़ी रक्षा व्यवस्था की गई थी। आतंकवादियों ने असैनिक आवसीय इलाकों में सत्रह मकानों को चुनकर, जो मन्दिर के बाहरी परिसर से 500 से 800 मीटर की दूरी पर थे, लगभग 10-10 व्यक्तियों की चौकियां बनाई हुई थीं। ये निगरानी तथा पूर्व-चेतावनी चौकियां वास्तव में हल्की मशीन गनों और अन्य स्वचालित तथा अर्द्ध-स्वचालित हथियारों और गोला-बारूद के भण्डार थे। इन चौकियों को समान संचार उपकरण दिए गए थे ताकि वे अपनी कमाण्ड चौकियों से तत्काल सम्पर्क कायम कर सकें। इसके अतिरिक्त, अन्य ऐसी इमारतों पर भी चौकियां बनाई गई थीं, जो आसपास की इमारतों से ऊंची थीं, जैसे कि गुरु रामदास सराय के पूर्व में ओवर हैड वाटर टैंक, लंगर के साथ पश्चिम की ओर के दो टावर जिनकी अपनी-अपनी सीढ़ियां भी हैं और इन सीढ़ियों के वातायनों के स्थानों को बन्दूकों की पोजीशन लेने के रूप में इस्तेमाल किया गया। छतों, छज्जों और दीवारों पर तीन तरफ से रेत के बोरे लगाकर मशीनगन रखने के स्थान बना दिए गए थे। बरामदों, के महराबों को चिनाई करके भर दिया गया और उनमें छोटे-छोटे छेद रखे गए, ताकि उन छेदों से देखकर गोली चलाई जा सके। इन्हें फायरिंग चौकियों के रूप में इस्तेमाल किया गया।

पूरब की ओर जिधर से वे सबसे अधिक खतरा महसूस करते थे सभी इमारतों की छतों पर हथियार जमा किए गए थे। इसके अतिरिक्त, उन इमारतों के हर तले की खिड़कियों पर रेत के बोरे लगाकर गोलाबारी के मोर्चे बना लिए थे। इसी तरह मन्दिर परिसर के आसपास की सभी इमारतों की छतों तथा बीच की मंजिलों पर हथियार जमाए गए थे और बहुत से वैकल्पिक मोर्चे तैयार किए गए थे। चूंकि अकाल तख्त पश्चिमी स्कन्ध में परिक्रमा के पीछे की ओर स्थित है, इसलिए इसके पूरब में स्थित खुले स्थान को "किलिंग ग्राउण्ड" के रूप में विकसित किया गया था और स्वयं अकाल तख्त से यहां कारगर गोलीबारी की गई। गोलीबारी अकाल तख्त से दायीं तथा बायीं ओर की इमारतों व तोशाखाना से भी की गई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाल तख्त की इतनी अच्छी तरह से किलेबन्दी की गई थी मानो वह किसी आधुनिक सेना का मोर्चा हो। तहखाने से ऊपर की ओर बन्दूकें लगाने की जगह बना ली गई थी और ये बन्दूकें फर्श, खिड़कियों, छत, रोशनदानों, पहली मंजिल और ऊपर की मंजिलों पर भी लगा दी गई थीं। आतंकवादियों ने बन्दूकें तान रखने के लिए दीवारों तथा संगमरमर को काट-काटकर छेद बना रखे थे। सैनिक कार्रवाई के दौरान आतंकवादियों ने जिस तरह का प्रतिरोध प्रदर्शित किया उसका नमूना इस प्रकार है : निगरानी चौकियों की घेरेबन्दी द्वारा पूर्व चेतावनी और आक्रामक कार्रवाई; और गोलाबारी पर चतुराई नियन्त्रण तथा पहली और दूसरी रक्षा पंक्तियों की वैकल्पिक स्थितियों का उपयोग।

यह बिल्कुल साफ था कि हथियारों को बड़ी चतुराई से जमाया गया तथा गोलीबारी की गई। उदाहरण के लिए, जबकि राइफलों और स्वचालित हथियारों का इस्तेमाल निगरानी चौकियों से किया गया, पहली और दूसरी रक्षा पंक्तियों में स्टैन मशीन कारबाइनें ही मुख्य हथियार थे क्योंकि मुख्य परिसर के इर्द-गिर्द 25-30 गज से ज्यादा की दूरी शायद ही कहीं थीं। गोलीबारी का बहुत प्रभावशाली तालमेल रखा गया। चुने गए मारक-स्थान (किलिंग ग्राउंड) पर सभी तरफ से गोलीबारी की जाती रही। सीमित टैंक-भेदी साधनों को बहुत अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया था और उनका इस्तेमाल केवल तभी किया गया, जब कोई यांत्रिक वाहन उसकी रेंज में आया। आतंकवादियों ने स्वर्ण मन्दिर को वास्तव में एक ऐसे किले में बदल दिया था जहां से वे उन्हें चुनौती देने वाले किसी भी अर्द्ध-सैनिक अथवा सैनिक बलों पर आक्रमण कर सकें। उन्होंने सैनिक कार्रवाई और विस्फोटक पदार्थों तथा उन्नत हथियारों के प्रयोग का व्यापक प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ था। उन्होंने अपनी ही संचार व्यवस्था बना रखी थी और कई महीनों के लिए पर्याप्त मात्रा में अनाज जमा कर रखा था। भूतपूर्व अनुभवी सैनिकों द्वारा उन्हें प्रशिक्षण दिया गया था और युद्ध की योजना बड़े कौशल से बनाई गई थी, जिससे कि मंदिर परिसर के तहखानों, भूमिगत रास्तों, गुप्त जगहों, घुमावदार सीढ़ियों, निगरानी चौकियों तथा टावरों का सामरिक दृष्टि से अधिक-से-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अधिक उपयोग किया जा सके। कई प्रकार वर्दियां पहने ये आतंकवादी अच्छे नियमित सैनिकों तरह प्रशिक्षित तथा हथियारबन्द थे। पंजाब में आतंकवादियों द्वारा की गई हत्याओं, बैंक डकैतियों और आगजनी के तरीके से पता चलता है कि वे हथियारों के इस्तेमाल में कितना अच्छा प्रशिक्षण पाए हुए थे। उन्हें भाग निकलने और पूजा-स्थानों में शरण प्राप्त करने का व्यापक संरक्षण प्राप्त था।

5 जून, 1984 को अपराह्न में लाऊड-स्पीकरों आदि के माध्यम से आतंकवादियों को हथियार डालने तथा प्राधिकारियों के सामने आत्म-समर्पण करने के लिए बार-बार अपील की गई ताकि खून-खराबा न हो और मन्दिर परिसर की इमारतों को नुकसान न पहुंचे। 129 व्यक्तियों ने आत्मसमर्पण किया। 5 जून को शाम 7 बजे सेना ने उन महत्वपूर्ण इमारतों को प्राप्त करने के लिए प्रारम्भिक कार्रवाई शुरू की, जो स्वर्ण मंदिर के उस क्षेत्र की परिधि में थीं जहां अतंकवादियों ने कब्जा किया हुआ था। सेना की यूनिटों ने रात के 10.30 बजे स्वर्ण मन्दिर परिसर की ओर बढ़ना शुरू किया। इस पर आतंकवादियों ने नजदीक रेंज से, तंग गलियों में भारी मात्रा में गोलीबारी शुरू कर दी। आतंकवादियों ने अकाल तख्त सहित अन्य स्थानों पर जो पोजीशनें ली हुई थीं, उन पर सैनिकों ने आंसू गैस के अनेक गोले छोड़े, जिनका असर नहीं हुआ, क्योंकि सभी खिड़कियों और दरवाजों में ईंट, पत्थर तथा रेत के बोरों की भारी रुकावटें बना रखी थीं। हताहतों के बावजूद, तथा बहुत ही भारी एवं सुसंगठित प्रतिरोधक कार्रवाई पर काबू पाने के बाद सैनिक धीरे-धीरे निकट पहुंचते गए और उन्होंने स्वर्ण मन्दिर के चारों तरफ के क्षेत्र में कार्रवाई शुरू कर दी।

सैनिकों ने सरोवर के इर्द-गिर्द के क्षेत्र में उत्तरी द्वार और दक्षिण में पुस्तकालय भवन में प्रवेश किया। पुस्तकालय भवन के क्षेत्र में, पुस्तकालय भवन में मशीन गन के अनेक ठिकानों से आतंकवादी गोलीबारी कर रहे थे, और दियासलाई की तीलियों से जलाकर देशी हथगोले फेंक रहे थे। कार्रवाई के इस चरण में पुस्तकालय में आग दिखाई दी। इस आग को बुझाने के लिए, सैनिक अग्निशमन दल बार-बार दौड़े, लेकिन आतंक-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वादियों की मशीनगनों की भारी गोलीबारी से, ये कोशिशें नाकाम हो गयीं। जब तक आतंकवादियों की गोलीबारी के ठिकानों पर काबू पाया गया, पुस्तकालय जल चुका था। सुदृढ़ किले की तरह खड़े अकाल तख्त से गोलियों की जबरदस्त बौछार का सामना करना पड़ रहा था। अकाल तख्त जाने वाले सभी रास्तों पर मशीनगनों से लगातार घातक गोलीबारी की जा रही थी, जिस कारण हताहतों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अकाल तख्त से जो गोलाबारी हो रही थी' उसे आतंकवादियों को आउटर लाइन पोजिशनों से भी सहायता मिली और यह स्थान स्वचालित हथियारों का गढ़ बन गया। इसी समय, हरमन्दिर साहिब से की जा रही मशीनगनों से गोलियों की बौछार परिक्रमा तथा आस-पास के भवनों पर होने लगी, जहां से सैनिकों ने बहुत ही संयम से काम किया, और हरमन्दिर साहिब की तरफ किसी तरह की गोलीबारी नहीं की। 6 जून को बड़े तड़के, एक बजे, सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल और श्री जी० एस० तोहरा ने, लगभग 350 लोगों के साथ गुरु नानक निवास के समीप आत्मसमर्पण कर दिया। उनके आत्मसर्पण को रोकने के लिए आतंकवादियों ने उन पर गोलियां बरसाई और हथगोले भी फेंके। परिणामस्वरूप, 70 व्यक्ति मारे गए, जिनमें 30 महिलाएं और 5 बच्चे भी शामिल थे। मारे जाने वालों में श्री गुरुचरणसिंह भी था, जिस पर आतंकवादियों का यह आरोप था कि उसने श्री सोढी और श्री बग्गा सिंह की हत्या करने की साजिश की थी। श्री बग्गा सिंह ने श्री भिंडरांवाला द्वारा प्रचार किए जा रहे धार्मिक आतंकवाद की खुले शब्दों में नुक्ताचीनी की थी।

6 जून को सवेरे 4 बजकर 10 मिनट पर, आरमर्ड परसोनल कैरियर (ए० पी० सी०) में कुछ सैनिकों ने अकाल तख्त में प्रवेश करने की कोशिश की, जिन पर अकालतख्त से टैंक भेदी राकेटों द्वारा आक्रमण किया गया, जिससे ए० पी० सी० को नुकसान पहुंचा और वह रुक गया। इसके बाद सर्चलाइट लगे एक टैंक को इस क्षेत्र में लाया गया ताकि अकाल तख्त में मोर्चों पर तैनात आतंकवादियों को चकाचौंध से कुछ न दिखाई न दे, और फिर उनकी गोलाबारी से जूझा जाए। 6 जून की सुबह तक, सैनिक अकाल तख्त में बन्धूकधारी सभी आतंकवादियों के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विरुद्ध कार्रवाई करने में भावी प्ररूप से सफल हो गए। अकाल तख्त में आतंकवादियों के कुछ मशीनगन ठिकानों को शांत करने के बाद सैनिक अकाल तख्त के अन्दर प्रविष्ट हुए। इसके बाद, प्रत्येक कमरे में मुठभेड़ शुरू हो गयी। उस समय, कुछ आतंकवादी पहली तथा नीचे की मंजिल की ओर भागते हुए देखे गए, जहां पर थोड़ी देर बाद धमाका हुआ और आग लग गयी। सैनिकों ने स्वयं आतंकवादियों के बीच निचली मंजिल तथा तहखाने में आपस में गोलीबारी करने की आवाजें सुनीं। कुछ आतंकवादियों ने अकाल तख्त से बाहर दौड़े, ताकि वे कुछ भागों को सैनिकों के कब्जे से छुड़ा लें, लेकिन उन्हें पीछे हटा दिया गया। इसके बाद 10 आतंकवादियों की एक टोली ने, सफेद झंडा लिए आत्मसमर्पण कर दिया। अकाल तख्त में एक-एक कमरे में मुठभेड़ें चलती रहीं और 6 जून को दोपहर 12-30 बजे तक अकाल तख्त को आतंकवादियों से मुक्त करा लिया गया हालांकि नीचे की मंजिल और तहखानों से मुकाबला चलता रहा। उसी दिन दोपहर बाद, सेना द्वारा आतंकवादियों से आत्म-समर्पण करने के लिए लाउड स्पीकरों पर कई बार अपील की गई। फल-स्वरूप 200 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण कर दिया, जिनमें 22 आतंक-वादी हरमन्दिर साहिब से आये। इस समय, प्रमुख ग्रंथी तथा दो अन्य ग्रंथी हरमन्दिर साहिब के अन्दर सकुशल पाए गए। अकाल तख्त के तह-खाने और निचली मंजिल से लगातार की जा रही प्रतिरोधी कार्रवाई पर 6/7 जून की रात को काबू पा लिया गया। इस प्रतिरोधक कार्रवाई पर काबू पा लेने के बाद, सैनिकों के नीचे की मंजिल और तहखाने की पूरी तरह तलाशी लेनी शुरू की। अकाल तख्त के नीचे की मंजिल पर श्री भिंडरावाले, और अमरीक सिंह सहित 34 शव पाए गए।

कुछ आतंकवादी, आस-पास की इमारतों और स्वर्णमन्दिर क्षेत्र की बहुत सी सुरंगों का उपयोग करते हुए 7 जून को बड़े सवेरे तक भी कार्र-वाई करते रहे। बचे-खुचे आतंकवादियों को बाहर निकालने की कार्रवाई के अन्तर्गत कई दिनों तक तलाशी चलती रही, इन बचे खुचे आतंकवादियों ने सैनिकों को काफी बर्बरतापूर्वक हताहत किया था। सेना की कार्रवाई में कोई महिलाएं अथवा बच्चे नहीं मरे। इस कार्रवाई की योजना बनाते

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

समय ही शुरू से ही इस बात का ख्याल रखा गया था कि भवनों को नुकसान न पहुंचे और इस सम्बन्ध में सख्त हिदायतें दी गयी थीं। इतनी बड़ी संख्या में सैनिकों को मारा जाना इस बात का सबूत है कि हमारे सैनिकों ने बड़े संयम व सूझ-बूझ से काम लिया और इस बात का ध्यान रखा कि हरमन्दिर साहिब तथा अकाल तख्त को कोई नुकसान न पहुंचे। हालांकि इन्हीं भवनों से हमारे सैनिकों पर छोटे तथा स्वचालित हथियारों से घातक गोलाबारी की जा रही थी। अकाल तख्त की ओर गोली तब चलानी पड़ी जब सैनिक बहुत बड़ी संख्या में हताहत होने लगे और जब आतंकवादियों ने इस भवन से टैंक-भेदी हथियारों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। भारी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद और विस्फोटक पदार्थ बरामद किए गए, जिसमें स्वचालित और टैंक-भेदी हथियार शामिल थे। स्वर्णमन्दिर परिसर के भीतर से हथगोले और स्टेनगन बनाने की एक छोटी फैक्टरी भी पाई गई। सेना अभी भी हथियार बरामद करने के कार्य में लगी है। सेना इस काम को पूरा करने में कुछ समय और लेगी। 30 जून, 1984 तक बरामद किए गए हथियारों की सूची आगे पृष्ठों पर दी है। सेना के प्रवेश करने से पहले बेकसूर सिखों और हिन्दुओं पर आतंकवादियों द्वारा किए गए अत्याचार सर्वविदित हैं। सैनिक कार्रवाई के दौरान आतंकवादियों द्वारा, जिनका स्वर्ण मन्दिर पर नियंत्रण था, और जघन्य तथा बर्बरतापूर्ण कार्रवाई की घटनाएं प्रकाश में आई हैं। 5/6 जून की रात्रि को जब सेना की अपील पर गुरु नानक निवास और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भवन से महिलाओं और छोटे-छोटे बच्चों सहित बहुत से नागरिक आत्मसमर्पक करने के लिए बाहर आये, तो आतंकवादियों ने उन पर गोलियां चलाई और हथगोले फेंके और 30 महिलाओं तथा 5 बच्चों सहित 70 व्यक्तियों की हत्या की। आतंकवादियों ने दो जूनियर कमीशंड अधिकारियों को बंदी बनाया और अमानवीय तरीके से उन्हें यातना दी तथा क्रूरतापूर्ण ढंग से उनकी हत्या की। उन्होंने एक जूनियर कमीशन्ड अधिकारी की चमड़ी काटकर उसके शरीर में विस्फोटक पदार्थ भरे और आग लगाकर अकाल तख्त की ऊपरी मंजिल से फेंक दिया। 8 जून, 1984 को उन्होंने एक निहत्थे सैनिक डाक्टर की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हत्या कर दी जो कुछ हताहतों का इलाज करने के लिए तहखाने में गया था। ऐसे कुल 42 धार्मिक स्थानों का पता लगाया गया, जहां आतंकवादियों के अड्डे थे। 5 जून की शाम को इन सभी स्थानों पर आतंकवादियों से प्राधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण करने के लिए सार्वजनिक तौर पर लाउडस्पीकरों आदि प्रणाली से बार-बार अपील गई। जब उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ तो उन्हें निकालने के लिए सेना अलग-अलग चरणों में इन परिसरों में घुसी। इनमें से अधिकांश स्थानों पर मामूली प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, हालांकि आतंकवादियों ने मोगा और मुक्तसर के गुरुद्वारों में कड़ा मुकबला किया और सुरक्षा बलों पर गोलियां चलाईं। इसके अतिरिक्त उन्होंने फरीदकोट, पटियाला, रोपड़ और चौक मेहता में भी गोलियां चलाईं। हथियारों और गोलाबारूद की अधिकांश बरामदी चौक मेहता, पटियाला और रोपड़ के धार्मिक स्थानों से हुई। सेना द्वारा मुक्तसर गुरुद्वारे को आतंकवादियों से मुक्त करा लेने के बाद 6 जून शाम 5 बजे तक आखिरी कार्रवाई पूरी कर ली गई।

इस कार्य में नौसेना ने हथियारों गोलाबारूद की तलाशी पवित्र सरोवर तथा आसपास के जलीय क्षेत्रों की ली और भारी मात्रा में आभूषण, हथियार, गोलाबारूद निकाले। वायुसेना ने सैनिक पहुंचाये और हैलीकौप्टरों ने निगरानी उड़ानें भरीं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अंधकार में डूबे तथ्य

'आपरेशन ब्लू स्टार' के नाम से जो कार्रवाई हुई उस सम्बन्ध में समाचारों पर लगाये गये कड़े सेंसर के कारण बहुत से तथ्य अंधकार में डूब गये। लगातार पांच दिनों तक सारे पंजाब में एक भी दैनिक पत्र प्रकाशित न होने दिया गया। बाद में इस आपरेशन की अनेक तथ्यात्मक बातें सामने आयीं। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'श्वेतपत्र' में इन पर परदा डाल दिया गया है। कहीं भी 'आपरेशन ब्लू स्टार' शब्द तक नहीं है और न ही पाकिस्तान के, चीन के निर्माण चिह्न लिए उन हथियारों का जिक्र है, जो स्वर्णमंदिर में बरामद किए गए। न ही श्वेतपत्र में किसी विदेशी शक्ति का नाम लिया गया है और न ही बहुत-सी सच्चाई को लिखा गया है।

'आपरेशन ब्लू स्टार' के दौरान स्वर्णमंदिर में इतनी उच्चकोटि के हथियार होंगे तथा इस प्रकार जबर्दस्त मोर्चा-बन्दी रहेगी, इसकी सेना में कल्पना तक न थी। स्वर्णमंदिर का गलत नक्शा तक सेना को दिया गया था। कुछ स्थानों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

को गोदाम लिखा गया था, जबकि वहां पर कमरे बने थे और उनमें आतंकवादी थे।

5 जून, 1984 की रात साढ़े दस बजे सेना को पता चला कि हरमंदिर सिंह सिधु के नेतृत्व में भिंडरांवाला के कहने से टोहरा और लोंगोवाल की हत्या तेजासिंह मकुन्दी हाल में कर दी जायेगी तथा अकालतख्त व हरमंदिर साहिब को उड़ा दिया जायेगा और इसके बाद अकालतख्त के तहखाने में घुड़ासाहिब नामक सुरंग द्वारा गुरुद्वारा घुड़ा के तहखाने में भिंडरावालां सहवेग सिंह निकल जाएंगे। घुड़ा साहिब गुरुद्वारे से वह आसपास के किसी भी दुकान में भाग सकते हैं। इस प्रकार भिंडरावाले ने दोनों नेताओं की हत्या कर, विस्फोट कर भागने की योजना बनायी थी।

> ठीक इसी समय भारत की सेना का जाबांज कमांडो दस्ता बुलैट प्रूफ काली पोशाक पहिन ब्रेनगनें लेकर अपनी जान हथेली पर रख स्वर्णमंदिर में प्रवेश कर तेजासिंह मकुन्दी हाल की ओर बढ़ गए। तब तक हत्यारों का दल लोंगोवाल के भूतपूर्व सचिव गुरुचरण सिंह पर हथगोला फेंक उसके शरीर की धज्जियां उड़ा चुका था। कमांडो दस्ता हत्यारी सेना के मुकाबले पर आ गया। भगदड़ मच गयी। वह अकालतख्त के तहखाने की ओर भागे। कमांडो दस्ता दो दलों में बंट गया। एक दल लोंगोवाल और टोहरा को उठाकर बाहर सुरक्षित ले आया और दूसरा दल तब तक उन के पीछे दौड़ गया। दोनों ओर से जमकर आध घंटे तक गोलियां चलीं। इसी में भिंडरांवाला और सहवेग सिंह अन्य 74 व्यक्तियों के साथ मारे गये। साथ ही कमांडो के द्वारा फेंके गये हथगोलों से तहखाने की छत भी टूट गिरी।

अगर केवल आधा घंटे की देर हो गयी होती तो टोहरा, लोंगोवाल की हत्याकर सब कुछ मिट्टी में मिलाकर सहवेग सिंह और भिंडरांवाला

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सुरंग स निकल गए होते।

भारत के बहादुर सैनिकों ने एक बार फिर साबित कर दिया कि उनकी वीरता, कुशलता का मुकाबला नहीं है। अनुमान था कि दो दिन में आपरेशन समाप्त हो जायेगा पर अचानक मोर्चाबंदी के कारण पांच दिन लग गये। जिस दिन राष्ट्रपति स्वर्णमंदिर में गये, उस दिन भी आतंकवादियों ने गोलियां दागीं। अपनी जान हथेली पर रख बहादुर सैनिक हरमंदिर साहब की ओर बिना गोली चलाये आगे बढ़ रहे थे। सरोवर परिक्रमा के चारों ओर सैनिक ढेर हो रहे थे। हरमंदिर साहिब से लगातार गोलियां आ रही थीं। सैनिक मरते गये। अन्ततः तेज सर्च लाइट वाले टैंक लगाये गये। भयानक रोशनी कर आतंकवादियों की आंखें चकाचौंध कर दी गयी-ताकि निशाना न लगा सकें। इसके साथ-साथ बेहोशी की गैस भी छोड़ी गयी।

जितने सैनिक 'आपरेशन ब्लू स्टार' में केवल स्वर्णमंदिर परिसर में शहीद हुए, उतने तो एक युद्ध में भी न होते, पर देश की अखंडता एकता को बनाये रखने वह शहीद हो गये।

'आपरेशन ब्लू स्टार' पांच दिन बाद सफल रहा। स्वर्णमंदिर में उग्रवादी समाप्त कर दिये गये। खालिस्तान को बनाने और भारत को चूर-चूर करने का सपना समाप्त कर दिया गया। इसके बाद पूरे पंजाब में उग्रवादियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू हो गयी।

स्वर्णमंदिर में अनेक कारनामे उग्रवादियों के द्वारा किये गये सामने आये। शराब की बोतलें, हीरोइन बरामद हुई। लगभग 65 लड़कियां एकदम नग्नावस्था में जो 20 साल से अधिक न थी, पकड़ी गयीं। उनको वासनापूर्ति के लिए रखा गया था। गुरुद्वारे में अरदास करने आयीं इन युवतियों को उग्रवादी तुरन्त उठाकर ले जाते थे। इनमें से कई गर्भवती थीं। उनके साथ वासना का नंगा नाच होता था। (पंजाब केसरी, 11 जुलाई 1984) इनको सेना ने वस्त्र खरीदकर दिये। ब्लू फिल्मों के कैसेट भी बरामद किये गये। कहा गया है कि एक फिल्म भिंडरांवाला की भी है।

स्वर्णमंदिर में सिर्फ सिक्खों का ही नहीं हिन्दुओं का भी है। शुरू से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

चला आ रहा है। उग्रवादियों ने उसकी पवित्रता नष्ट कर रखी थी। भारत के बहादुर सैनिकों ने उस पवित्रता की पुनःस्थापना के लिए कदम उठाया और उसे पवित्र करके रहे।

> डाक्टर महीप सिंह जैसे हिन्दी बुद्धिजीवी लेखक जब गुरुद्वारा और मंदिर के बीच भेदभाव का जिक्र करते हैं, (नवभारत टाइम्स 25 जून 1984) तथा दोनों की मानसिकता अलग बताते हैं तो लगता है कि सी. आई. ए. का कोई एजेंट बोल रहा है। भाई महीप ठीक सैक्सी लेखक खुशवंत सिंह (जो मेनका गांधी के बारे में कहते हैं कि उसमें सैक्स अपील नहीं है तथा एक ईरानी युवती से प्यार का इजहार करने पर वह उनको फटकारती है कि सठिया गये हो क्या तथा जो विशाल नितम्बों वाली तथा बड़े-बड़े कद्दू जैसी छातियों वाली युवतियों की कल्पना करते हैं) की तरह हिंदुओं और सिक्ख का भेदभाव खड़ा करते हैं कि मेरे पद्मविभूषण लौटाने पर सिक्ख खुश हैं, हिंदू गुस्से में है। क्या हिन्दू और सिक्ख अलग-अलग हैं। एक ही मां की दो सन्तानें हैं।

उन दोनों बुद्धिजीवियों को इस बात का जरा भी एहसास नहीं है कि महान गुरुओं का महान तीर्थ-स्थल, हिन्दु-सिख सम्प्रदाय का पुजागृह स्वर्ण मन्दिर किस प्रकार उग्रवादियों द्वारा अपवित्र कर दिया गया। वह केवल सिखों के आहत होने की बात करते है। हिन्दुओं को क्या ठेस नहीं लगी है। हिन्दू भी इस सैनिक कार्रवाई से मर्माहत हैं, पर इसके अलावा हमारा रास्ता भी क्या था, पर दोनों बुद्धिजीवी जहर घोल रहे हैं।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार 544 उग्रवादी मारे गए, 121 घायल हुए और 4712 गिरफ्तार किए गए। इनमें से स्वर्ण मन्दिर परिसर में 493 आतंकवादी मारे गए और 86 वहां घायल हुए।

सेना के चार अधिकारी, चार जे० सी० ओ० और 84 जवान स्वर्ण मन्दिर आपरेशन में मारे गए। एक जे० सी० ओ० और 8 जवानों को छोड़कर बाकी सबकी जान स्वर्ण मन्दिर परिसर में गई। 15 अधिकारी 16 जे० सी० ओ० और 253 सिपाही घातल हुए।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हथियार इस प्रकार बामद हुए—

	स्वर्ण मन्दिर में	अन्य धार्मिक स्थानों पर	तलाशी के दौरान	कुल
लाइट मशीन गनें	41	—	—	14
स्टैन गनें	57	7	32	96
पायन्ट 303 राइफल	377	5	50	432
7·62 एम एम सेल्फ लोडिंग राइफलें	83	—	15	98
12 बोर गनें	88	51	204	343
7·62 एम एम चीनी राइफलें	52	—	—	52
अन्य प्रकार की राइफलें	71	21	36	128
सभी प्रकार के रिवाल्वर	49	15	25	89
सभी प्रकार के पिस्तौल	33	10	65	108
12 बोर की देशी पिस्तौल	61	17	11	89
आर.पी.जी एंटी टैंक हथियार	2	—	—	2
देशी 2 इंच के मोरटार	—	—	3	3
माइन	128	—	—	128
गोलाबारूद/विस्फोटक	बहुत बड़ी संख्या में बरामद हुए हैं।			
एच०एफ० ट्रांसमीटर रिसीवर	1			
सोना	5.4 किलो			
चांदी	1·14 किलो			
अमूल्य रत्न	1·442 किलो			
नकदी	30 लाख से ऊपर		—1,53559 रु.	31,53,559 रुपये से ऊपर
ग्रेनेड मैनुफैक्चरिंग प्लांट	1			
स्टैन पार्टस मैनुफैक्चरिंग शाप	1			
पाक मुद्रा	—		—1,29,966 रु.	1,29,966 रु.
नकाब	—	—	5	5

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रस्सी जल गयी, पर···

सेना के स्वर्ण मंदिर में प्रवेश करते ही तथाकथित सिख समुदाय के एक वर्ग ने शोर मचाना शुरू कर दिया कि सेना के प्रवेश से "गुरुद्वारा अपवित्र हो गया है।"

भारत माता के वीर सपूतों ने अपने प्राण हथेली पर रखकर देशद्रोहियों, गद्दारों, उग्रवादियों से एक धार्मिक स्थल को मुक्त कराया। जब तक वह वहां थे, तब तक उनके काले-घिनौने कारनामों से गुरुद्वारा अपवित्र नहीं था, पर सेना के प्रवेश करते ही वह अपवित्र हो गया! इस प्रकार का घिनौना प्रचार कर भारत की बहादुर सेना का अपमान किया गया। हमारे वीर सैनिकों के पैरों में ऐसी क्या गंदगी थी कि उनके भीतर प्रवेश करते ही 'गुरुद्वारा अपवित्र हो गया।' इस प्रकार का लांच्छन बेहूदे, गद्दार लोग ही लगा सकते हैं।

एक सबसे बड़े पूजा-स्थल को पूरे किले का रूप देकर युद्ध स्तर पर तैयारी करने वाले लोग क्या पवित्र थे? इस तरह किलेबंदी करने, अत्यन्त खतरनाक हथियार जुटा रखने का उद्देश्य क्या था? जब फौज भीतर गयी, तो उसका

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मुकाबला करने की जरूरत क्या थी ? लाउडस्पीकर से जब बार-बार आत्मसमर्पण की चेतावनी दी जा रही थी, तो आत्म समर्पण क्यों नहीं किया ? किस उद्देश्य से सेना का डटकर मुकाबला किया गया ? हमारे सैकड़ों जवान शहीद हो गये। आत्म-समर्पण करने वालों पर बम फेंका। यही मतलब था न कि गुरुद्वारे में जमकर लोहा लेंगे। पूरे पंजाब से जगह जगह से उग्रवादी निकल कर अमृतसर की ओर प्रस्थान कर देंगे। तब तक पाकिस्तानी सीमा पर 30/40 हजार निहंग वेशधारी मुसलमान भी आ जायेंगे और तभी पाकिस्तान भी हमला कर देगा। तुरन्त खालिस्तान का ऐलान कर दिया जायेगा, जिसे पाकिस्तान, ईरान, अमेरिका और श्री लंका फौरन मान्यता देंगे। बंगला देश की तरह भारत का भी एक बड़ा भूभाग टूट-कर 'खालिस्तान' बन जायेगा।

अगर उग्रवादियों का यह उद्देश्य न था, तो गुरुद्वारे में इतनी जबर्दस्त मोर्चाबंदी कर अत्याधुनिक हथियार जुटाकर भारतीय सेना से ऐसा कठोर संघर्ष करने का उद्देश्य क्या था ? और जगजीत सिंह चौहान का ब्रिटेन में रहकर पाकिस्तान के सर्वोसर्वा जनरल जिया से सम्पर्क करने का, गंगा सिंह ढिल्लो का परवी करने का मतलब क्या था ? सिख समुदाय के नाम पर उनकी आहत भावनाओं के कारण बहुत मुखर हो गये खुशवंत सिंह, महीपसिंह के पास क्या जबाव है इसका ?

सिखों की भावनाओं को केन्द्र सरकार ने या सेना ने आहत नहीं किया। भिंडरावाला, लोंगोवाल और तोहरा ने आहत किया है ! विदेशी शक्तियों के इशारे पर नाचने वाले यह लोग भारत के टुकड़े कर उसकी शक्ति क्षीण कर उसे एक कमजोर जर्जर राष्ट्र के रूप में तोड़कर रख देना चाहते थे। सारे भारत में अपनी काली करतूतों से आग लगा देने का प्रयास करने वाले इन गद्दारों की निन्दा में एक भी शब्द खुशवंत सिंह, महीपसिंह की कलम से नहीं निकल रहा है !

भारत के वीर जवानों ने जिस बहादुरी और धैर्य के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

साथ विश्व का सबसे बड़ा आपरेशन 'ब्लू -स्टार' सफल किया, उस पर देश की जनता को गर्व है। एक बार फिर प्रमाणित हो गया है कि वह विश्व की श्रेष्ठतम सेनाओं में से एक है।

जिस समय सेना ने सम्पूर्ण पंजाब सील किया, जो अत्यावश्यक था, उस क्षण की कल्पना मात्र ही रोमांचक है। गुरुद्वारे में घमासान युद्ध, गुरुद्वारे के ट्रांसमीटरों से पंजाब के शहर-शहर के उग्रवादियों को सूचना कि अमृतसर मार्च करो, सीमा पार खड़ी निहंगवेशधारी पाकिस्तानी सेना आपरेशन शुरू होने के दो घंटे बाद ही जगजीत सिंह चौहान से टेलीफोन पर संम्पर्क—अगर भारत के केन्द्रीय नेतृत्व ने पूरा पंजाब सील न किया होता, सम्पूर्ण पंजाब में कर्फ्यू न लगाया होता, सम्पूर्ण यातायात न रोका होता, हैलीकैप्टर्स अगर आकाश में मंडराकर सम्पूर्ण पंजाब को निगरानी न करते होते, सीमा पर हमारे जवान एक-दम अलर्ट न होते तो ईश्वर जाने आज देश का क्या हाल होता ? केवल गुरुद्वारे को घेरने की बात करने वाले लोग क्या इस वास्तविकता से अपरिचित थे, जो आज इस प्रकार की दलीलें दें रहे हैं। बंगला देश के 90,000 सैनिकों से आत्म-समर्णण करने वाली भारतीय सेना 300 उग्रवादियों से आत्मसमर्पण न करा सकी, बचकानी बात कहने वाले महीपसिंह क्या इस तथ्य से अपरिचित हैं कि उग्रवादियों ने शहर-शहर में केन्द्र बना रखे थे और स्वर्णमंदिर के ट्रांसमीटरों में खबर पाकर कूच कर देते। क्या यह सत्य भी उनको बतलाना होगा कि अधिकांश पाकिस्तानी सेना के ही लोग पंजाब में उग्रवादी सिखों का बाना पहिनकर कार्यरत थे। मारे गये कई उग्रवादी शिनाख्त में मुसलमान पाये गये हैं। अधिकतर हथियार गुरुद्वारे में पाकिस्तानी ही मिले हैं। खुशवंत सिंह, महीप सिंह को अपनी गरदनें शर्म से झुका लेनी चाहिए।

इसी प्रकार के तत्वों ने सिख सैनिकों को भड़का दिया। देश का सबसे बड़ा बारूद-गोदाम गंगानगर के पास लालगढ़ छावनी में है। यहां के भोले-भाले सिखों को भड़काया कि स्वर्ण मंदिर एक-दम ढहाकर बुलडोजर चला दिया है। मां बहिनों के साथ बलात्कार हो रहा है। भोले सनिक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भागे । स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय सेना के स्वर्णिम आध्याय में एक दाग लग गया। अबोहर रोड पर 50 भगोड़े सैनिक पकड़े गये : 400 भगोड़े फाल्जिका-मुक्तसर रोड पर पकड़े गये। दो घंटे गोली बारी हुई॥ भगोड़े घायल हुए। फरीदकोट के पास एक दल पकड़ा गया।

रामनगर (विहार) छावनी में ब्रिगेडियर एम० सी० पुरी की हत्या कर एक सैनिक टुकड़ी भागी। बरिख्तयारपुर में मुठभेड़ हुई। 68 सैनिक पकड़े गये। इलाहाबाद में 126, जौनपुर में 60, पकड़े गये। तीन घंटे गोलियां चलीं। 28 सैनिक मारे गये। 67 ने आत्म समर्पण कर दिया। कुंडा प्रतापगढ़ में 222 भगोड़े सैनिक पकड़े गये। 83 प्रतापगढ़ में, 48 मैनपुरी एटा में पकड़े गये। अलवर, पूना, सिलीगुड़ी से भी सैनिक भागे।

सेना के सिख जवानों को भी भड़काने का षडयंत्र समय पर की गयी कार्रवाई के असफल हो गया। सैनिकों को भड़काने का काम अकाली दल बहुत समय से कर रहा था। एक राजनैतिक संगठन होकर धार्मिक स्थल गुरुद्वारे से आंदोलन संचालित करने का तुक क्या है ? फिर समय समय पर अकाली ने भूतपूर्व सैनिकों, अफसरों का सम्मेलन क्यों बुलाया ? भारतीय सेना का मुकाबला करने, गुरुद्वारों में किलेबंदी करने और सेना के सिख जवानों को भड़काने के अलावा और उद्देश्य क्या था ? इस तरह के सम्मेलन बुलाने का अर्थ क्या था ?

गुरुद्वारे से उग्रवादियों का सफाया होते ही और अपने मित्रों को पीछे हटते देखकर खालिस्तान केस्वयंभू राष्ट्रपति जगजीत सिह चौहान बौखला गये। बी० बी० सी० से एक प्रसारण में उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनके परिवार का सफाया करने की धमकी दी। श्रीमती इन्दिरा गांधी को जिदा या मुर्दा लाने वाले को 2 लाख डालर पुरस्कार बाद में उन्होंने घोषित किया। यह भी उन्होंने दावा किया कि अब तक 2 करोड़ रुपयों से वह भिडरांवाला की सहायता कर चुके हैं।

भारत के बहादुर जवानों ने बड़ी चुस्ती-फुर्ती और शौर्य के साथ विदेशी इशारों पर बहुत समय से चलने वाली एक घृणित साजिश का खात्मा कर दिया, जो मजबूत हो रहे भारत को तोड़ देने के लिये बड़ी चालाकी के साथ चलायी जा रही थी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आपरेशन-पंजाब के बाद जो तथ्य सामने आये हैं, उससे और भी उपरोक्त आरोप पुष्ट होता है।

- ० 'कार-सेवा' के नाम पर अनाज से भरे बोरों के बीच भारी मात्रा में गुरुद्वारे में हथियार पहुंचाये गये। यह अनाज 'लंगर' के लिये गुरुद्वारे में ट्रकों पर जाता था।
- ० भिंडरांवाला का गुरुद्वारे में लगे ट्रांसमीटर से जगजीत सिंह चौहान से व्हाया पाकिस्तान सरकार सम्पर्क बना रहता था।
- ० गुरुद्वारा पूरे किले के रूप में बदल दिया गया था। 10,000 बोरी गेहूं जुटाकर रखा गया था ताकि घेरा पड़ने पर रसद बनी रहे। पानी के लिये सरोवर था ही। बिजली कटने पर जैनरेटरों का प्रबंध कर लिया गया था।
- ० समय आने पर अकाल तख्त को उड़ाने व बाद में तहखाने की सुरंग से भाग निकलने का पूरा प्रबंध था।
- ० 'बटाला बम' बनाने और देशी पिस्तौल बनाने के कारखाने गुरुद्वारे में स्थापित हो गये थे।
- ० अकाल तख्त को भिंडरांवाला और शहवेगक सिंह ने अपना मुख्यालय बना रखा था।
- ० इस सबकी जानकारी गुरुद्वारे के ग्रन्थियों, तोहरा, लोंगोवाल को पूर्ण रूप से थी।
- ० भिंडरांवाला से बिना पूछे स्वर्ण मंदिर का एक पत्ता तक न हिल सकता था।
- ० खालिस्तान के मन्त्रिमण्डल की सूची बना ली गयी थी।
- ० टैंक मारक राकेट भी गुरुद्वारे में स्थापित कर लिये गये थे।

भारतीय सेना ने बड़े समय और मौके पर कार्रवाई की अन्यथा 3 जून 1084 को देश बहुत गहरे चक्कर मे पड़ जाता।

उग्रवादियों से पवित्र गुरुद्वारा मुक्त हो गया, पर पंजाब की घटनाओं से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठे हैं, जिन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

(1) क्या लाखों लोगों के लिए श्रद्धास्पद पूजा-स्थलों का शस्त्रागर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के रूप में प्रयोग करना ठीक है ?

(2) क्या ऐसे स्थानों को अपराधियों और तोड़-फोड़ करने वाले तत्वों को शरण देने के स्थान बना देना ठीक है ?

(3) और सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपने गणतंत्र के निरपेक्ष आधार को क्षति पहुंचाने से कैसे रोकें ?

पंजाब में एक छोटे से ग्रुप ने धर्म की आड़ में साम्प्रदायिक अलगाव पर आधारित पृथकतावादी आन्दोलन को बढ़ाने के लिए आतंक को एक शस्त्र के रूप में अपनाया। स्वर्ण मन्दिर और अन्य गुरुद्वारों का प्रयोग उन अपराधियों और व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान के लिए किया गया, जिन्होंने देश की एकता को भंग करने की चेष्टा की थी। यह भारत के हाल के इतिहास में धर्म और धार्मिक स्थानों के दुरुपयोग का अत्यन्त ज्वलन्त उदाहरण है। यह बात सोची भी नहीं जा सकती, कि अकाली दल तथा स्वर्ण मन्दिर के प्रभारी प्रबन्धक, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को, उनके अपने नियमों की अवहेलना करके स्वर्ण मन्दिर के पवित्र परिसर को खुल्लमखुल्ला अपवित्र किये जाने और उसका दुरुपयोग किये जाने के बारे में जानकारी नही थी। अकाली दल तथा शिरोरणि गुरुद्वरा प्रबन्धक कमेटी ने इसके खिलाफ कोई आवाज नहीं उठाई, बल्कि अकाली दल ने अपने आन्दोलन के लिए धार्मिक प्रतीकों और अनुष्ठानों का पूरी तरह प्रयोग किया। इस वातावरण में धार्मिक मतांधवादी और कट्टरपंथी ताकतें बल पकड़ती रही। क्या शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी जिस पर इन धार्मिक स्थानों के प्रबन्ध का कानूनी उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकती है ?

पंजाब में हाल ही में हुई घटनाओं को व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ से अलग नहीं किया जा सकता है। पिछले तीन वर्षों में भारत का सुरक्षा वातावरण काफी बिगड़ा है। शक्तिशाली ताकतें भारत की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति को कमजोर बनाने के लिए काम कर रही हैं। सुरक्षा की दृष्टि से नाजुक सीमावर्ती राज्य जिसका कि कृषि और औद्योगिक विकास का रिकार्ड शानदार रहा है, स्पष्टत: तोड़फोड़ की कार्रवाई का लक्ष्य हो सकता है। इस सन्दर्भ में विदेशों में रहने वाले ग्रुपों की गति-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विधियों का विशेष महत्व हो जाता है। विदेशी जन संचार साधनों का एक भाग जानबूझकर पंजाब की स्थिति को पूरी तरह तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत कर रहा है, जिनसे पृथकवादियों की गतिविधियों को प्रोत्साहन और उन्हें जारी रखने के लिए बल मिल रहा है। भारत की एकता के लिए मूलभूत चुनौतियां साम्प्रदायिक कट्टरपंथी और अन्य फूट डालने वाली शक्तियों से उत्पन्न हुई हैं जिन्हें बाहर का शक्तिशाली समर्थन प्राप्त है। अब लक्ष्य भारत की एकता के मूल आधार धर्म निरपेक्षता को बनाया गया है। बार-बार हुए बाहरी आक्रमण और अन्य दबाव भारत की एकता और अखंडता को तोड़ने में असफल रहे हैं। अब धर्म की आड़ लेकर आन्तरिक तोड़-फोड़ व विघटन की कोशिशें की जा रही हैं। पंजाब में हाल ही की घटनाओं से राष्ट्र को चेतावनी मिलती है।

अन्य ये प्रश्न भी हैं—

(1) किसी प्रकार इतनी अधिक मात्रा में आधुनिक हथियार स्वर्ण मन्दिर और अन्य गुरुद्वारों के अन्दर ले जाए गए ?

(2) क्या सरकार को इस बात की जानकारी नहीं थी कि इस किस्म के हथियार आदि स्वर्ण मन्दिर और अन्य गुरुद्वारों के अन्दर जमा किए जा रहे थे ? क्या यह आसूचना तंत्र की विफलता नहीं थी ?

(3) क्या आतंकवादियों को बाहरी देशों और स्रोतों से कोई सहायता व समर्थन प्राप्त था ?

सरकार को उन हथियारों की मात्रा और किस्म के बारे में कुछ जानकारी थी जिन्हें आतंकवादियों द्वारा प्राप्त किया गया था और स्वर्ण मंदिर तथा अन्य गुरुद्वारों में जमा किया गया था। घटनाओं से इस बात की पुष्टि होती है कि जो सूचना प्राप्त हुई थी, वह सही थी। सरकार को आतंकवादियों की मंशा और कार्रवाई की व्यूहरचना व योजना की भी जानकारी थी। आतंकवादी किस प्रकार बल पकड़ते जा रहे हैं, उनकी जानकारी सरकार ने स्वयं समय-समय पर दी। स्वर्ण मन्दिर और अन्य गुरुद्वारों के अन्दर हथियार और गोलाबारूद "कार सेवा", या खाद्य सामग्री और अन्य सामान ले जाने के काम में लाये जाने वाले अन्य वाहनों में चोरी-छिपे ले

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जाए गए थे। शुरू-शुरू में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के वाहनों की तलाशी नहीं ली जाती थी। प्रतिदिन सैकड़ों और अमावस्या जैसे खास दिन हजारों व्यक्ति गुरुद्वारों में जाया करते थे और यात्रियों की भीड़ में घुल-मिलकर आतंकवादियों द्वारा आसानी से कुछ हथियार अन्दर ले जाए जा सकते थे। यात्रियों को परेशानी में डाले बिना इतनी भारी सख्या में लोगों की जांच-पड़ताल करना व तलाशी लेना संभव नहीं था।

फिर भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि एक क्षेत्र ऐसा था जिसमें सरकारी आसूचना कमजोर थी, वह था "आधारभूत" (ग्राउंड) सूचना। उदाहरण के लिए सरकार को यह जानकारी थी कि किसी खास अवधि के दौरान आतंकवादी रेलवे ट्रकों, रेलवे स्टेशनों और पोस्ट आफिसों के खिलाफ कुछ बड़ी और आकस्मिक कार्रवाई करने की योजना बना रहे हैं पर आक्रमण के ठीक-ठीक स्थानों और आतंकवादियों के गिरोह विशेष के बारे में, जिन्हें आक्रमण करना था, जानकारी उपलब्ध नहीं थी। यह आधारभूत सूचना से सम्बन्धित था। इसके परिणामस्वरूप जब पूरे राज्य में रेलवे ट्रकों की व्यापक पेट्रोलिंग की गई, तो ट्रकों के तोड़-तोड़ की कई कार्रवाइयों का पता चला और कई रेल दुर्घटनाओं को रोका जा सका, पर अधिकांश छोटे रेल स्टेशनों और दूर-दूर स्थित फ्लैग स्टेशनों पर हमले रोकना संभव नही हो सका। जहां तक हथियारों की सप्लाई का सम्बन्ध है, शुरू-शुरू में आतंकवादियों को ये हथियार शस्त्रागारों पर कुछ अचानक छापे मारने (इनमें से फिरोजपुर स्थित होमगार्ड का शस्त्रागार प्रमुख है) और पुलिस कर्मिकों से यदाकदा छीनने से मिले हैं। बाद में, वे बाहर के स्रोतों से और देश के अन्दरूनी स्रोतों से गुप्त सम्पर्क स्थापित करके अधिक आधुनिक हथियार प्राप्त करने में सफल हुए। विदेशों के उच्च प्राधिकारियों ने सीमा पार से भारत में भारी मात्रा में अवैध हथियारों की सप्लाई की संभावनाओं के बारे में कहा है। इस बारे में अधिक तथ्य तब उपलब्ध होंगे जब हिरासत में लिए गए आतंकवादियों के खिलाफ मामलों में जांच पूरी हो जायेगी' पर एक तथ्य स्पष्ट है कि आतंकवादी गिरोहों को हथियार बांटने का प्रमुख केन्द्र स्वर्ण मन्दिर के अन्दर था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सरकार के पास यह विश्वास करने के कारण हैं कि आतंकवादियों का कुछ विदेशी स्रोतों से विभिन्न प्रकार का सक्रिय समर्थन मिल रहा था। आजकल की अन्तराष्ट्रीय स्थिति के अन्तर्गत तोड़-फोड़ की बाहरी और आन्तरिक शक्तियों में विशिष्ट सम्बन्ध रहना एक सुपरिचित तथ्य है पर पंजाब में आतंकवाद के इस पक्ष पर सरकार के पास जो सूचना उपलब्ध है, उसे प्रकट करना लोकहित में नहीं है। जो लोग हमारी आंतरिक स्थिति का अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रयोग करना चाहते हैं, उनके इरादों को नाकाम करने के लिए पूर्ण सतर्कता आवश्यक है। हमारे राजनीतिक जीवन के इस पक्ष के प्रति भारत के लोगों ने अपनी पूर्ण सजगता कई बार प्रदर्शित की है।

सरकार को पंजाब में जो कार्रवाई करनी पड़ी, वह न तो सिखों के खिलाफ थी और न ही सिख धर्म के खिलाफ। वह कार्रवाई तो आतंक व विद्रोह के खिलाफ थी। सिख पूरी तरह से भारतीय राष्ट्र का एक अभिन्न अंग है। देश को आजादी दिलाने और उसकी रक्षा करने में तथा स्वतन्त्र भारत को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाने में अपने योगदान में वे किसी से भी कम नही हैं। सिख समुदाय शेष राष्ट्र के साथ देश की एकता और अखंडता को बनाये रखने तथा उसे सुदृढ़ करने के अपने संकल्प पर दृढ़ है। सरकार ने पिछले दो वर्षों से पंजाब में आन्दोलन से निपटने के लिए व्यापक राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखा है। इन दुखद घटनाओं के बाद भी जिनका पूर्ववर्ती पृष्ठों पर उल्लेख किया गया है, सरकार अपने इस इरादे पर दृढ़ है कि कोई स्थायी हल विचार-विमर्श की लोकतांत्रिक प्रक्रिया के जरिये निकाला जाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि ऐसा विचार-विमर्श शांति व पारस्परिक विश्वास के वातावरण तथा आदान-प्रदान की भावना से ही लाभप्रद हो सकता है। यदि एक पक्ष इस बात पर अड़ जाए कि उसकी सभी मांग पूर्णत: मानी जानी चाहिए जबकि उन मांगों में ऐसी भी मांगें भी शामिल हों जिनका अन्य राज्यों से सम्बन्ध है, उस स्थिति में समझौता संभव नहीं। ऐसा कोई समझौता स्थायी नहीं हो सकता जिसमें किसी एक राज्य या ग्रुप की मांगों को स्वीकार करते समय अन्य राज्यों या ग्रुपों के वैध हितों की उपेक्षा कर दी जाए। किसी भी समझौते पर पहुंचने के लिए

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कुछ आदान-प्रदान आवश्यक होता है। सबसे मुख्य बात इस बुनियादी सिद्धान्त के प्रति कृत संकल्प रहना है कि सम्पूर्ण देश का हित, किसी भी राज्य या ग्रुप के हित से अधिक महत्वपूर्ण है।

इस तथ्य को अकालियों ने सदा नजरअन्दाज किया और वह उग्रवादियों के हाथ का खिलौना बन गये, ऐसे उग्रवादियों के हाथ, जो विदेशी शक्तियों के बल पर अप अपने आपको तीसमार खां समझने लगे थे।

इतना सब होने के बावजूद भी उग्रवादी बाज न आये और 5 जूलाई 1984 को श्रीनगर हवाई अड्डे से 264 यात्रियों वाली एक एयर बस का अपहरण कर ले गये। लाहौर हवाई अड्डे पर उसे उतरना पड़ा वरना उनका इरादा उसे श्रीलंका या ईरान ले जाना था। 9 अपहरणकर्ताओं ने खालिस्तान की मांग, 25 करोड़ रुपया और हरमिंदर सिंह से बात करने को शर्त रखी। सारा देश एकबारगी स्तब्ध रह गया। हवाई डाकुओं का व्यवहार लाहौर हवाई अड्डे पर बड़ा मन्देहास्पद था।

किसी प्रकार नाटकीय ढंग से एयर बस के यात्री वापस दिल्ली आ गये। एयर बस भी बाद में आ गई, पर इस अपहरण में पाकिस्तान का रोल अत्यन्त संदिग्ध था।

पंजाब के साथ-साथ उससे सटे राज्य जम्मू कश्मीर में भी उग्रवादियों ने हाथ पैर फैला दिये थे। श्रीनगर में विमान अपहरण इसी का परिणाम था। शेख फारुक अब्दुल्ला की गतिविधियां सन्देहास्पद थीं। भिंडरांवाला से वह गुरुद्वारा स्वर्ण मन्दिर मिलने के लिए जा चुके थे। श्रीगर में बम विस्फोट, जस्टिस आनन्द के घर पर हमला, मकबूल बट को फांसी देने पर श्रीनगर में उपद्रव और जुलूस, भिवंडी (बंबई) के दंगों के विरुद्ध निकला जुलूस जिसमें नारे लगे, "सिक्ख मुस्लिम भाई-भाई, हिन्दू कौम कहां से आयी।" भिंडरांवाला की मौत की खबर पर 7 जून को श्रीनगर आर्य समाज भवन और निरंकारी भवन में आग लगा दी गई। प्रदर्शन उपद्रव हुये। एक जानवरों का डाक्टर खुलेआम कहता था, इन्दिरा गांधी, राजीव और जैलसिंह के टुकड़ें-टुकड़े कर डालो, पर उसे पकड़ा नहीं गया, सिक्ख स्टुडेंट फैडरेशन प्रतिबंध के बावजूद प्रेस कान्फ्रेस कर रही थी। भूतपूर्व शिक्षा सूचनामत्री शफी के साले का बड़ा भाई जो एक बैंक से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

डाका डालकर भाग गया था। काश्मीर सरकार का मेहमान बनकर रहा। 1983 में लगभग 13 गुरमत शिविर नंगेली साहिब गुरुद्वारा में लगे, जहां उग्रवादियों को गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग दी गयी। यहीं से 5-5 लोगों का गिरोह पंजाब के गांवों में भेजा जाता था।

इसी छात्र संघ के एक आयोजन में फारूक साहब ने शिरकत की थी, उसमें उनकी सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री भी मौजूद थे। यही मंत्री न केवल परिसंघ, बल्कि पाकिस्तानी घुसपैठियों और कश्मीर लिबरेशंस फ्रंट और डॉ० फारूक के बीच कड़ी का काम करते थे। लंदन में बसा एक 'घुसपैठिया' इन्हीं मन्त्री महोदय के यहां बतौर मेहमान रह चुका है। अब्दुल माजिद नामक घुसपैठिये ने अनेक स्थानों के चित्र लिए हैं।

विशेष सूत्रों का कहना है कि जम्मू-कश्मीर में कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट, जमाते-इस्लामी, तूलबा, अ० भ० सि० छा० प० और मौलवी फारुख के अनुयायियों ने गठबंधन करके ठीक वैसी ही साजिश रच रखी थी, जैसी साजिश से पंजाब में सेना को निबटना पड़ा है। यहां न केवल सीमा पार से लाये गये हथियारों का जमाव किया जाता रहा है, बल्कि इन हथियारों को पंजाब में भी 'सप्लाई' किया जाता रहा। खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीतसिंह चौहान ने पंजाब में सैन्य कार्रवाई से पहले घोषणा की थी कि भिंडरांवाले ने सहमति प्रकट कर दी है कि स्वर्ण मंदिर में 'सरकार-ए-खालसा' की स्थापना कर दी जाये यदि सेना की कार्रवाई न होती, तो जून के पहले पखवाड़े में 'सरकार-ए-खालसा' की घोषणा हो चुकी होती और पंजाब के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर में भी अराजकता और खूनखराबी का माहौल खड़ा कर दिया जाता। सैन्य कार्रवाई के बाद जम्मू-कश्मीर में जिस तरह के प्रदर्शन हुये और उसके बाद विमान-अपहरण की जो घटना घटी, उससे साफ जाहिर होता है कि पंजाब के आतंकवादियों और जम्मू-कश्मीर में सक्रिय देश-विरोधी तत्वों के बीच तालमेल की जड़ें गहरी पहुंच चुकी थीं।

यह अच्छा हुआ कि अल्पमत में आकर फारुख सरकार गिर गई वरना उसके बरखास्त किये जाने की पूरी संभावनाएं थीं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हम सब एक हैं !

पंजाब पर हुई सेना की इस कार्रवाई का विपक्षी दलों समेत सारे देश की जनता ने समर्थन किया। सफलता पर संतोष की सांस ली गयी। वैसे सरकार पर कई आरोप लगाये गये। पंजाब के एक लोकसभा सदस्य ने इस्तीफा दे दिया। राज्य-सभा के नामजद सदस्य खुशवंतसिंह ने पदम विभूषण वापस कर दिया और ऐलान कर दिया कि सरकार की इस कार्रवाई से 'खालिस्तान' की नींव पड़ गई है। (जैंटिलमैन-जुलाई 1984) हिन्दी लेखक (सरदार) महीप सिंह बहुत बौखलाये हैं। अपने को एक करोड़ चालीस लाख सिखों का मसीहा घोषित करते हुये खुशवंत सिंह ने राज्य सभा में बहुत तीखा भाषण किया है। दोनो बुद्धिजीवियों की कलम हिन्दुओं में अलगाव पैदा कर रही है। खुशवंत सिंह ने तो सेना की भूमिका पर संदेह प्रकट कर भारत को 'पाकिस्तान' बन जाने का खतरा बतलाया है (हिन्दुस्तान टाइम्स-29 जुलाई '84) पर जन साधारण आश्वस्त है।

चौधरी जयराज सिंह उपाध्यक्ष पूर्वी दिल्ली जिला युवक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कांग्रेस (इ) गोल बैठक, पुराना सीलमपुर, गांधी नगर दिल्ली के शब्दों में—"सरकार ने बड़े उचित समय पर कदम उठाया। और विलम्ब से देश खतरे में पड़ गया था।"

भारतीय गुर्जर परिषद के अध्यक्ष ज्ञानेन्द्रसिंह, गांव गाबरी, शाहदरा दिल्ली के कथनानुसार, "हिंदू सिख हमेशा भाई-भाई रहे हैं। उग्रवादियों ने जो अलगाव कर दिया था, वह सरकार की इस कार्रवाई से खत्म हो गया है।" वास्तव में यही आज आम जनता की भावना है। सर्वत्र शांति और संतोष की लहर है। देश के और तमाम बुद्धिजीवियों ने भी समर्थन किया है।

इस सैनिक कार्रवाई से गुरुद्वारा स्वर्ण मंदिर को विवशता के कारण नुकसान पहुंचा। उसकी मरम्मत और सुधार करना सरकार ने अपना कर्तव्य समझा और सिख परम्परानुसार 'कार सेवा' (कर सेवा) द्वारा कार्य शुरू कराना चाहा, पर बाबा खड़गसिंह तैयार होकर भी अकाली राजनीति के शिकार बन, बाद में इंकार कर बैठे।

जगतपुर बजीरावाद, दिल्ली के प्रदेश युवक कांग्रेस (इ) के उपाध्यक्ष महेन्द्रसिंह के शब्दों में—"सरकार का यह कदम एकदम उचित है। हम सिख धर्म का उतना ही सम्मान करते हैं, जितना अपने धर्म का।" इसी प्रकार के विचार जोरबाग रामपुरा, त्रिनगर दिल्ली के महासचिव युवक कांग्रेस (इ) के श्री शादीराम के भी हैं।

गांधीनगर दिल्ली के सामाजिक कार्यकर्ता श्री गजराज शर्मा ने सरकार की कार्रवाई पर प्रसन्नता प्रकट की और इसे श्रीमती इंदिरा गांधी का एक और साहसिक कदम बतलाया। वास्तव में उक्त लोगों के समान देश का हर नागरिक इस बात का समर्थन करता है।

इसके बावजूद अकाल तख्त के ग्रंथी कृपाल सिंह अपनी जिद पर हैं। बाबा खड्गसिंह द्वारा इंकार करने पर संत बाबा संतासिंह द्वारा 'कार सेवा' शुरू कर दी गयी है। इस पर क्षुब्ध होकर उनको 'तनखय्या करार कर दिया गया।

अब तक अकाल तख्त से हुक्मनामे जारी करके जिन अकाली नेताओं को 'तनखय्या' करार दिया गया, उनमें मास्टर तारा सिंह, संत फतह सिंह'

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

संतोख सिंह और जगदेव सिंह तलवंडी शामिल हैं। इन सभी नेताओं ने अकाल तख्त के सामने पेश होकर उसके जत्थेदार द्वारा सुनायी गयी सजा को स्वीकार किया और यात्रियों के जूते झाड़कर और लंगर में बर्तन साफ करने की सेवा की। यह भी हाल ही के इतिहास की घटना है जब अकाल तख्त से हुकमनामा जारी करके निरंकारी सम्प्रदाय के प्रमुख बाबा गुरबचन सिंह को सिखी से खारिज किया गया और सिखों को निरंकारियों से रिश्तेदारी और अन्य प्रकार के सामाजिक सम्बंध रखने की मनाही की गयी। अप्रैल 1978 में अमृतसर में सिखों और निरंकारियों के मध्य जो झगड़ा हुआ, उसमें मरने वालों की अधिक संख्या सिखों की थी — जिसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप धार्मिक कट्टरता के आधार पर पंजाब में "आतंकवाद पनपा।

उल्लेखनीय है कि सामान्यत: अकाल तख्त से सिखों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण मामलों के बारे में 'हुकम नामा' जारी करने की जो परम्परा है, उसमें अकाल तख्त के अलावा अन्य चार तख्तों — केशगढ़ साहेब, दमदमा साहेब, नांदेड़ साहेब और पटना साहेब के जत्थेदारों का शामिल होना आवश्यक समझा जाता है किन्तु नांदेड़ साहेब और पटना साहेब तख्तों के जत्थेदार बाबा सन्तासिंह के विरुद्ध हुकमनामा जारी करने की प्रक्रिया में शामिल नहीं हुए। उक्त दोनों तख्त शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नियन्त्रण से स्वतन्त्र हैं। नांदेड़ साहेब के तख्त के जत्थेदार ने पिछले दिनों एक 'हुकमनामा' जारी करके राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को स्वर्ण मन्दिर परिसर में सेवा भेजने के लिए और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री गुरुचरण सिंह टोहरा और अकाली दल के प्रधान सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल को स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता बनाए रखने में असफल रहने पर सिखी से खारिज कर दिया किन्तु सिख जगत में 'अकाल तख्त' से जारी हुकमनामा की अधिक मान्यता है, जिसके पीछे एक ऐतिहासिक परम्परा है।

अकाल-तख्त की पहली मंजिल 'छठी पातशाही' गुरु हरगोविन्द (1606-1645) ने निर्माण करवाई थी। उन्होंने मुगल साम्राज्य के अत्याचारों का बदला लेने के लिए अकाल तख्त पर बैठ कर मीरी (सांसा-

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रिक शक्ति) और पीरी (आध्यात्मिक शक्ति) की दो तलवारों से सज्जित किया था। वह सिखों को विभिन्न मामलों में हुकमनामा जारी करके आदेश जारी किया करते थे। दस गुरुओं की परम्परा के बाद जब लाहौर के हाकिम जकरिया खां के समय सिखों पर अत्याचार बढ़ गए, तो उन्होंने अकाल तख्त के सामने संगत इकट्ठी करके 'गुरमतें' की परम्परा डाली। अकाल तख्त की मुहर से यह गुरमतें सिखों के पास पालन के लिये भेजे जाते थे।

महाराजा रणजीत सिंह ने मांरां नामक एक मुस्लिम स्त्री से विवाह कर लिया और सिखों में महाराजा के इस आचरण पर असंतोष प्रकट किया जाने लगा तो अकाल तख्त के तत्कालीन जत्थेदार अकाली फूला सिंह ने महाराजा को संगत की उपस्थिति में कोड़े लगाने का हुकम जारी किया। महाराजा ने विनम्र भाव से अपने वस्त्र उतारे और उन्हें अकाल तख्त के सामने एक इमली के पेड़ से बांध दिया गया। इस पर अकाली फूला सिंह ने संगत से पूछा कि क्या महाराजा को मुआफ कर दिया जाए। संगत के 'हां' कहने पर उन्हें मुक्त कर दिया गया।

अंग्रेजों के शासन काल में 1924 से पहले स्वर्ण मंदिर का जो सरबहार अरुण सिंह था, उसने जलियांवाला बाग के हत्यारे जनरल डायर को सरोपा देने के लिए 'अकाल तख्त' का दुरुपयोग किया। इतना ही नहीं ब्रिटिश मालिकों के इशारे पर कैनेडा और अमरीका के आव्रजक क्रान्तिकारी गदरी बाबों को सिखी से खारिज करने के 'हुकमनामे' भी जारी करवाए गए। उसके बदले अरुण सिंह को अंग्रेजों ने सरदार बहादुर' और 'सर' की उपाधियों से विभूषित किया।

अकाल तख्त के हुकुम नामे की अवहेलना कर बाबा संता सिंह अपने पवित्र काम में लगे हैं। देश की प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दृढ़ता के साथ घोषित कर दिया है खालिस्तान नहीं बनने दिया जायेगा। आइए हम सब मिलकर इस संकल्प को दुहरायें। हम हिन्दू सिख मुसलमान पारसी, ईसाई आदि सभी भारत माता के सपुत हैं। हमारी एकता हम सब भाइयों के बीच बनी रहेगी। अलगाववादी विदेशी शक्तियों के के इशारों पर हम नहीं नाचेंगे और अपने देश की अखडता बनाये रखेंगे।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हमें कोई जूदा नहीं कर सकता।

यह टिमटिमाता आतंकवाद जो नहरें काटकर करोड़ों रुपयों की चौट दे रहा है, हत्याएं कर रहा है, पडयन्त्र करता ही जा रहा है, हमारे नेताओं की हत्या करने विदेश से लोगों को भेज रहा है, हम मिटाकर रहेंगे। इस आन्दोलन से हमारे देश की अर्थ व्यवस्था को बहुत गहरा धक्का लगा है। इसे हमें बरदाश्त करना पड़ेगा। अपने देश की अखंडता के लिये हम बड़ी के बड़ी कुरबानी कर सकते हैं। सिख समुदाय हमारे देश का हमारे समाज का अविभाज्य अंग है। हम सब एक हैं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

खतरा बरकरार है !

श्री राजेन्द्र माथुर, संपादक नवभारत टाइम्स दिल्ली लिखते हैं कि 1966 में पँजाबी सूबा की मांग स्वीकार हो जाने के बाद अकाली दल के पास ऐसी कोई मांग नहीं बची थी, जिसे लेकर सारे पंजाब को हिला पाते। एक चंडीगढ़ का सवाल बचा था, जो इन्दिरा गांधी के फार्मूले के अनुसार कुछ ले देकर तय होने वाला था। अतः 1940 के बीच जो रफ्तार अकाली राजनीति ने पकड़ी थी, उसे बार-बार पैदा किए वगैर यह पार्टी जिन्दा नहीं रह सकती थी। 1973 में उसने चुपचाप आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पास किया था। उस समय लोगों को पता ही नहीं चला कि आनन्दपुर साहब में कितनी खतरनाक बात हो चुकी है, लेकिन 1980 में जब उन्होंने राजपाट खो दिया, तो यह प्रस्ताव आलमारी से निकाला गया और आगे कर दिया गया। यह सही है कि 1980 के बाद भी अंकाली दल ने इस प्रस्ताव को अपने मोर्चा का प्रथम मुद्दा नहीं बनाया और वे दूसरी चीजों का नाम लेते रहे।

"सिख क्या चाहते हैं ?" पुस्तक (गुरुचरण सिंह-न्य

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इण्डिया पब्लिकेशंस, दिल्ली 1950 का एक अध्याय मास्टर तारा सिंह ने पंजाबी सूबे पर लिखा है कि हमें पंजाबी सूबा इसलिए चाहिए ताकि सिखों का इस राज्य में बहुमत हो, विधान सभा में हिन्दुओं के प्रभुत्व से हमें मुक्ति मिल सके और सिखों की एक अलग और आजाद हस्ती कायम रह सके। हिन्दू आजकल इतने धर्मान्ध और सम्प्रदायवादीहो चुके हैं कि उनके साये में सिक्खी नहीं बचेगी। इसलिए धर्म के खातिर, संस्कृति के खातिर, पंथ के खातिर, गुरु का निशान ऊंचा रखने के खातिर, सिखों ने आजादी के लिए पूरी कमर कस ली है। हमें हिन्दुस्तान में एक ऐसा इलाका चाहिए जहां गुरुओं के जन्म दिन पर सड़कों पर सैनिक कवायद हो। सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय झंडे के साथ-साथ पंथ का निशान लहराए और सिख अपनी परम्पराओं के अनुसार अपना भविष्य तय कर सकें।

जनवरी, 1955 के मास्टर तारा सिंह और भीमसेन सच्चर के बीच बातचीत हुई थी, जिसका जिक्र कई जगह मिलता है। इस मुलाकात में मास्टर तारा सिंह ने मुख्यमन्त्री से कहा था कि मेरा यकीन भाषावार पंजाबी सूबे में नहीं है। मुझे सिख सूबा चाहिए जहां बहुमत सिखों का हो। लेकिन पंजाबी सूबे नारे की आड़ मेरे लिए सहूलियत की है। क्योंकि वह राष्ट्रवाद के खिलाफ नहीं जाती। सरकार को बिना जाँच-पड़ताल के यह मांग मान लेनी चाहिए। हमें आजादी चाहिए। अगर बगावत करनी पड़े, तो हम अपनी आजादी के लिए बगावत भी करेंगे।

1950 में अकाली दल ने एक प्रस्ताव पास किया था, जिसमें लिखा था : सरकार जो संवेदनाहीन और निष्ठुर वर्ताव सिखों के साथ कर रही है, उसके कारण इज्जत के साथ जीना मुश्किल हो गया है। अपनी संस्कृति भाषा और आत्मसम्मान की हिफाजत के लिए हम महसूस करते हैं कि पंजाबी सूबा जल्दी से जल्दी बनाया जाए। अगर जवाहरलाल नेहरू ने अपने जीवनकाल में पंजाबी सूबा मंजूर नहीं किया, तो इसका कारण यह था कि वे धर्मनिरपेक्ष भारत के अन्दर एक धर्मराज्य की स्थापना की इजाजत नहीं देना चाहते थे। लेकिन 1966 में श्रीमती गांधी ने उसे मंजूर कर लिया, क्योंकि सरकार यह आभास भी नहीं देना चाहती थी कि पंजाबी भाषी लोगों को उनका भाषावार प्रान्त सिर्फ इसलिए नहीं मिल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पा रहा है कि वहां बहुमत सिखों का है। दूसरी बात यह है कि तब तक संत फतेहसिंह अकालियों के नेता बन चुके थे, जो मास्टरजी की तुलना में ज्यादा नरम और राष्ट्रवादी थे।

अकालियों ने छोटी से छोटी बात के लिए भी जब आन्दोलन किया, तब उन्होंने बड़ी से बड़ी चीजों को दांव पर लगाया। मसलन, आजादी के बाद पहला आन्दोलन उन्होंने 1953 में चलाया। समस्या यह थी कि संविधान के अन्तर्गत चार सिख जातियों को अकाली नेताओं ने अनुसूचित जाति घोषित करवा लिया था। हालांकि सिख धर्म में जात-पांत वर्जित है। ये जातियां थीं—रामदासी, कबीरपंथी, मजहबी और सिकलीगर। 85 प्रतिशत पिछड़े हुए सिख इन चार जातियों में आ जाते थे। सिर्फ 15 प्रतिशत पिछड़े सिख बचे थे और उन्हें भी शिक्षा, नौकरी आदि में सहुलियतें मिल गई थीं। लेकिन उन्हें यह अधिकार नहीं था कि हरिजनों के लिए आरक्षित संसदीय अथवा विधान मंडलीय सीटों पर वे खड़ हो सकें। इसे ही महान अन्याय मान लिया गया। खुद हरिजन सिख इस बात को पसन्द नहीं करते थे कि बड़े किसानों की पार्टी, अकाली दल, उनकी हमदर्दी में आन्दोलन चलाएं और 15 प्रतिशत हरिजन-सिखों की समस्या हल हो जाने के बाद भी कर्कशता इतनी बनी रही कि दिसम्बर 1953 में जब जवाहरलाल नेहरू पटियाला गए, तो मास्टर तारासिंह ने खुद उपस्थित होकर उनकी आम सभा को भँग करवा दिया और नेहरू का भाषण पूरा नहीं हो सका।

मई 1955 में अकाली दल ने पंजाबी सूबे के लिए मोर्चा शुरू कर दिया। मास्टर तारासिंह उसके पहले डिक्टेटर बने। जत्थे के जत्थे स्वर्ण मन्दिर में आने लगे और अपनी गिरफ्तारी देने लगे। तनाव बढ़ने लगा। तब सरकार ने पंजाबी सूबे के नारों पर पाबन्दी लगा दी। मास्टर तारासिंह ने उस समय सिख संगतों का जो सन्देश दिया, उसकी बानगी देखिए—

सिंह साहबानों, हम आजादी मांगते हैं, पर वे हमें गुलामी में और भी गहरे फंसाना चाहते हैं। हम मौजूदा हालात से असन्तुष्ट होकर पंजाबी सूबा मांगते हैं, लेकिन वे सूबे के नारे भी नहीं लगाने देते। खालसाजी,

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

याद रखो कि हमारी इज्जत खत्म करने के लिए यह सब हो रहा। है इज्जत ही तो हमारे पास बची है। वह चली गई तो सब कुछ चला जाएगा। इसीलिए इज्जत के खातिर सर्वस्व दांव पर लगा दो। गुरु तेग बहादुर की तरह हम शांति से अपना सिर देंगे। हुक्मरानों को कुर्सी का घमंड है, पर हमें अपने गुरू पर भरोसा है।

तब भी वे ही आवाजें उठीं, जो आज उठ रही हैं। प्रताप सिंह कैरों ने कहा कि जो अकाली अँग्रेजों के पिट्ठू होते थे वे अब बोलने की आजादी की बात कर रहे हैं। कांग्रेसी सिखों ने कहा कि गुरुद्वारा का राजनीति में उपयोग गलत है। अन्य कांग्रेसी सिखों ने कहा कि मोर्चा जरूर गलत है, लेकिन सिख कौम हताश महसूस कर रही है, यह बात सच है। क्यों न अकालियों से बात कर ली जाए ?

इसी मोर्चे के दौरान पुलिस स्वर्ण मन्दिर में घुस गई थी। आंसू गैस छोड़ते हुए, गोली चलाते हुए, उसने अकाली नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था। तब भी बड़ी नाराजी फैली थी, और अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' ने लिखा था : 'पंजाब एक महान ट्रेजेडी से गुजर रहा है। अपने इतिहास के सबसे बड़े संकट का वह सामना कर रहा है।

बारह हजार सिखों की गिरफ्तारी के बाद मुख्यमंत्री भीमसेन सच्चर ने जुलाई 1955 में नारों पर लगी पाबन्दी हटा ली और अकालियों ने इसे एक महान विजय के रूप में प्रस्तुत किया।

ऐसा नहीं है कि अकाली हमेशा आन्दोलन ही करते रहे हैं। कई बार उन्होंने कांग्रेस से सहयोग किया है और कई बार अकाली नेता अपना दल छोड़ कर कांग्रेस में चले गए हैं। मसलन फरवरी 1948 में मास्टर तारासिंह कह रहे थे कि पंथ को आत्मनिर्णय का अधिकार चाहिए। लेकिन अप्रैल में अकाली दल ने पंजाब विधान मंडल ने अपने सदस्यों को हुक्म दिया कि वे पार्टी से इस्तीफा दे दें और कांग्रेस में शामिल हो जाएं। फिर ज्ञानी करतारसिंह ने अकाली कार्यकारिणी में एक प्रस्ताव पास करवा लिया कि भविष्य में अकाली दल राजनीति में भाग नहीं लेगा।

लेकिन इस सहयोग की कांग्रेस को कीमत चुकानी पड़ी। कांग्रेस गोपीचन्द भार्गव और भीमसेन सच्चर के दो गुटों में बंटी हुई थी, और

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अकाली जिसे चाहते, वही मुख्यमंत्री वनता था। कुर्सी मिलने के बाद वह अकालियों को मुंहमांगी रियायतें देता। दिल्ली से सरदार बलदेवसिंह के टेलीफोन जाते। सरकार के बाहर रहकर मास्टर तारा सिंह कहते हैं कि बड़ा अन्याय हो रहा है और आन्दोलन की धमकी देते।

लेकिन इस विलय के लाभ भी सिखों को हुए। सरकार ने नौकरियों में हिन्दू-सिख अनुपात की बात एक अलिखित समझौते की तरह मान ली। उसने आधे मन्त्री सिख रखना मान लिया और ज्ञानी करतार सिंह द्वारा प्रस्तावित वह फार्मूला उसने मान लिया। जिसके द्वारा पंजाब को हिन्दी-भाषी और पंजाबी भाषी क्षेत्रों में बांट दिया गया, और दोनों क्षेत्रों में शिक्षा के माध्यम अलग हो गए। तब भी ज्ञानी करतार सिंह की दिलचस्पी शिक्षा में कम थी, और अथवा बंटवारे की रेखा खिचवाने में अधिक थी। 1951 तक यह घालमेल चलता रहा। फिर पहला आम चुनाव करीब आ गया और अपनी ताकत अलग अजमाने के लिए अकाली कांग्रेस के बाहर आ गए।

अगले तीन चार वर्षों में उन्होंने दो बड़े आन्दोलन चलाए, जिनका जिक्र हम कर चुके हैं। फरवरी 1956 में अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। नेहरू ने, जो हिन्दुत्व में नहीं, बल्कि वैज्ञानिकता और प्रगतिशीलता में विश्वास करते थे, कहीं कह दिया था कि लाठियों और तलवारों की सही जगह तो आज-कल अजायबघरों में है। इसके जवाव में अकालियों ने कृपाणधारी सिखों का एक तीन मील लम्बा जुलूस अमृतसर में निकाला जिसका नेतृत्व हाथी के हौदे पर बैठे मास्टर तारासिंह कर रहे थे।

अगले ही महीने कांग्रेस और अकाली दल के बीच एक समझौता हो गया, जिसे क्षेत्रीय फार्मूला के नाम से जाना जाता है। इस फार्मूले के अन्तर्गत पंजाब विधान सभा को दो क्षेत्रीय कमेटियों में बांट दिया गया। एक पंजाबी कमेटी, और दूसरी हिन्दू कमेटी। 14 ऐसे विषय चुने गए, जिन पर क्षेत्रीय कमेटियों को विचार करना था। विधान सभा से उम्मीद थी कि क्षेत्रीय कमेटी की सिफारिश के खिलाफ नहीं जायेगी अर्थात् पंजाबी कमेटी का बहुमत अगर चाहे, तो समुची राज्य विधान सभा में बहुमत न होते हुए भी सिर्फ पंजाबी भाषी इलाके में अपनी बात १4 मामल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

में मनवा सकता था।

इस समझौते के बाद अकाली नेताओं के कांग्रेस प्रवेश का सिलसिला फिर शुरू हो गया। पहले ज्ञानसिंह राड़ेवाला गए और कहने लगे कि अकाली दल को अब सिर्फ सिखों की सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों से सरोकार रखना चाहिए। वे गए, तो मास्टर तारासिंह और सरदार हुकुम सिंह ने उन्हें गद्दार, पंथ का दुश्मन आदि बताया और पार्टी से निकाल दिया और जून 1956 में कहा कि धर्म और राजनीति दोनों को हम हमेशा साथ रखेंगे। लेकिन उस समय तारासिंह और उनके साथी भी कांग्रेस में शामिल होने के लिए कम उतावले नहीं थे। दोनों के विलय की बातचीत चली, तो 1948-51 के अनुभव को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस ने शर्त लगाई कि अकाली संविधान में संशोधन किया जाए और देशकाल के लक्ष्य का वर्णन करने वाली वे धाराएं निकाल दी जाएं जिनका अर्थ यह था कि सिखों को आजाद सूबा चाहिए और सिक्खी में पीरी और मीरी को अलग नहीं किया जा सकता।

अकाली दल ने अपना संविधान बदल डाला। उसने राजनीति सचमुच त्याग दी। देशकाल का लक्ष्य खत्म कर दिया गया। लेकिन 1957 के चुनाव में टिकटों को लेकर भारी झगड़े हुए और चुनाव खत्म होते ही मास्टर तारासिंह ने कहा कि कांग्रेस ने समझौते का पालन नही किया है और कांग्रेसी नेता सिखों के साथ हारी हुई कौम जसा व्यवहार कर रहे हैं। वे कहने लगे कि अकाली दल ने तो राजनीति कभी छोड़ी ही नहीं थी। इस बार उनके भूतपूर्व साथी सरदार हुकुम सिंह ने कहा कि ऐसा कहना ईमानदारी नहीं है। लड़ते-झगड़ते यह गठबंधन 1960 तक घिसटता रहा। अंततः अकालियों ने कांग्रेस को एक पंथविरोधी पार्टी घोषित कर दिया और अकाली विधायकों से आह्वान किया कि वे बाहर आ जाएं। काफी कम लोग कुर्सी छोड़कर पथ में लौटे। लेकिन पंजाबी सूबे के लिए मोर्चा फिर शुरू हो गया। मास्टर तारासिंह ने किसी समय कहा था कि नेहरू की इज्जत हमारी इज्जत है। लेकिन अब फिर नेहरू को औरंगजेब बताया जाने लगा, और मुख्य मन्त्री प्रताप सिंह कैरो की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लना सरहिन्द के सूबेदार से की जाने लगी, जिसने गुरू गोविन्द सिंह के दो बेटों के प्राण लिए थे। 1960-61 का आंदोलन दरअसल तब तक का सबसे उग्र अकाली आन्दोलन था। क्योंकि संत फतेह सिंह और मास्टर तारासिंह तब आमरण अनशन की प्रतिज्ञा कर रहे थे और मास्टर तारा-सिंह ने 15 अगस्त 1961 से 1 अक्तूबर 1961 तक अनशन का प्रयोग कर भी डाला था। उस समय पंजाब के मुख्य मन्त्री प्रताप सिंह कैरो थे।

पंजाब में हिन्दू साम्प्रदायकता की अपनी अलग कथा है। हो सकता हैं कि पंजाब का हिन्दू भारत के शेष, हिन्दुओं से कहीं अधिक साम्प्रदायिक हो। लेकिन मुद्दा यहां यह है कि पंथ और राजनीति को एक करके जो बारूदी टाइम-बम अकाली दल ने तैयार किया है, उसे आगे पीछे ही करना फटना ही था। प्रताप सिंह कैरो जीवित होते, तो वह देर से फटता भिंडरांवाले को चन्दू कलां में गिरफ्तार कर लेते, और हीरो नहीं बनने देते, तो विस्फोट और टल जाता। लेकिन जिन भावनाओं को अकाली दल उभार रहा है, धर्मयुद्ध के जिन प्रतीकों का वह इस्तेमाल कर रहा है अन्याय का जो गलत अहसास वह सिखों में आरोपित कर रहा है, नाराजी का जो बवंडर हर पांचवें साल पैदा कर रहा है, वे सब सिख राजनीति को किस दिशा में ले जा रहे हैं ? माहौल ऐसा था कि अहिंसा का स्थान आतंक को और किसी लोंगोवाल का स्थान किसी भिंडरांवाले को आगे पीछे लेना पड़ रहा है।

जब तक सिख राजनीति की दिशा नहीं बदलती, तब तक लगातार खतरा है। अतः सारे देश-भक्त सिखों को इस मौके पर आगे आना चाहिए और हिम्मत हाथ में लेकर उस फैसले को दुहराना और अमिट बनाना चाहिए जो अकाली दल ने 1956 में किया था। धर्म और राजनीति को अलग करने का जो फैसला मास्टर तारा सिंह, सरदार हुकुमसिंह और ज्ञानसिंह राड़ेवाला ने किया था, उस पर 28 साल बाद लौटा क्यों नहीं जा सकता ?

वास्तव में यह एकदम उचित सुझाव है। अकाली दल, धर्म के नाम पर जब तक राजनीतिक चलाता रहेगा, तब तक देश को बराबर खतरा है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कार सेवा

श्री मधुसूदन आनन्द ने 'नवभारत टाइम्स' में लिखा है कि बुर्ज बाबा फूलसिंह पर स्थित बाबा सन्तासिंह के शिविर में एक देहाती मेले जैसा माहौल है। पंजाब और देश के दूर-दूर के हिस्सों से सैकड़ों लोग इस नए सिख पुरुष को देखने आ रहे हैं। वे लोग उनके पैर छूते हैं और बाबा उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

बताशों से भरा एक बर्तन उनके पास धरा रहता है। प्रसिद्ध पत्रकार खुशवन्त सिंह ने उन्हें मोटा बेवकूफ बूढ़ा कहा है। वे मोटे और बूढ़े तो हैं लेकिन बेवकूफ नहीं लगते। उनके हाव-भाव में एक खामोश चतुराई है। प्रसन्न मुद्रा में वह बैठे रहते हैं, लेकिन एक सतर्कता उनके चेहरे पर दिखाई देती है जो लोग उनसे मिलने जाते हैं उनकी तलाशी ली जाती है।

बुर्ज बाबा फूलासिंह के बाहर अहाते में दो कमरों से बाहर एक शामियाना टांग दिया गया है, जिसमें बाबा बैठते हैं। कमरों के ऊपर राइफलधारी निहंग पहरा देते हैं। खुद बाबा के पास पिस्तौल है, जो उनके गले में बंधी रहती है। स्टेनगन लिए दो निहंग उनके पास-पास मंडराते रहते हैं। कुल 25 हथियारबन्द निहंग और कुछ सरकारी गारद सादे

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कपड़ों में वहां तैनात है।

बाबा के आसन के पास ही टेलीफोन है। फोन को की घंटियां बजती रहती हैं और बाबा भक्तों को निपटाते हुए फोन पर बात करते हैं।

नीली पगड़ी, पीला चोगा, पीछे गोलगांव तकिया। बाबा तख्त पर बैठे सिखों की राजनीति को नया मोड़ दे रहे हैं। वह 62 साल के हैं। दस साल के थे तभी बुड्ढा दल में आ गए थे। उनका जन्म गुजरांवाला (पाकिस्तान में हुआ था। उनके पुरखे भगवान सिंह महाराजा रणजीत सिंह के एक वजीर थे।

बाबा सन्ता सिंह ने कोई स्कूली तामील नहीं पाई, लेकिन आदि गुरु ग्रंथ साहब जैसे सिख धार्मिक ग्रन्थों का विधिवत अध्ययन किया है। उनके गुरु बाबा ज्ञानसिंह नान्देड़ साहिब में थे। बाबा बचपन से ही पंथ की सेवा करते रहे। वह हजूर साहिब (बम्बई) में रहने के बाद कोई 12 साल कोटकपुरा में रहे। कोई 16 साल पहले उन्हें बाबा चेतसिंह से बुड्ढा दल की गद्दी मिली थी जो कि तेरहवीं गद्दी है।

रात एक बजे नगाड़ा बजता है और बाबा उठ जाते हैं। नहा-धोकर तीन बजे वह हरमन्दिर साहिब जाते हैं। वहां से 6 बजे लौटते हैं और दोपहर एक बजे तक दर्शन देते हैं। शाम को तीन बजे वह फिर तख्त पर जमकर बैठ जाते हैं और रात को आठ बजे तक लोग मिलने आते रहते हैं।

चार लोग उनके प्रबन्ध सहायक हैं। एक पी० आर० ओ० तथा एक एम० बी० बी० एस० डाक्टर भी हैं। बाबा के पास देश भर में 513 गुरुद्वारे तथा 21 हजार एकड़ जमीन है। इस वक्त खूब दान आ रहा है और प्रबन्धकों को मालूम नहीं कि कितना आता है। पंजाब नेशनल बैंक में बाकायदा एक खाता खोल दिया गया है।

बाबा का एक निहंग गुरुमुखी में लिखा एक पत्र पढ़कर सुनाता है, जो बाबा का बयान है। बाबा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सरदार उबोके की इस आलोचना का उत्तर देते हैं कि उनका तख्त सिखों का चलता-फिरता तख्त नहीं है। उनका कहना है कि उनके बुड्ढा दल के ही अकाली फूलसिंह जत्थेदार ने महाराजा रणजीत सिंह को तनखाइया

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

घोषित किया था।

श्री उबोके इतिहास नहीं जानते या फिर वह झूठ बोल रहे हैं। बाबा से मिलने आने वालों में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य खेमचन्द्र शर्मा भी थे, जो बाबा को सिखों का नया अवतार कह रहे थे।

उन्होंने बताया कि व्यापार के सिलसिले में मैं यहां हूं। जून से पहले यहां धोती पहनना मुश्किल था। अतिवादी बुरी-बुरी गालियां देते थे। मेरे सामने उन्होंने एक ढांबे में आठ लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। इसलिए मैंने पहले ही पजामा और पैंट सिलवा लिए थे। अब धोती पहनकर राहत मिली है।

धोती भिंडरावाला के चाल्लीराम ताल्लीराम की पहचान बन गई थी। 13 जुलाई के आसपास बाबा यहां आए थे और उनके निहंगों के अनुसार वह यहीं जमेंगे।

ग्यारहवी सदी में गुरु गोविंद सिंह और बाबा बहादुर की सेनाओं में निहंगों का इस्तेमाल 'शहीदी' जत्थों के रूप में होता था। 1763 में दल खालसा का दो गुटों में विभाजन हो गया। बुड्ढा दल और तरना (तरुण) दल। बुड्ढा दल ने सारे देश से शत्रुओं का सफाया अभियान शुरू कर दिया और उन्हें 'आतंकवादी' करार दिया गया, लेकिन तरना दल ने अपना मुख्यालय अमृतसर रखा और गुरुद्वारों की मरम्मत का दायित्व संभाला। लेकिन महाराजा रणजीतसिंह ने इन दोनों निहंग गुरुओं को 'खालसा बंधुत्व' के रूप में संगठित किया। 1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद खालसा सेना का पुनः विघटन हो गया। ब्रितानियों ने पंजाब सेना तो भंग कर दी लेकिन निहंगों सहित खालसा सैनिकों की सेवाएं प्राप्त कीं। कुछ निहंगों ने अपने गुरुद्वारे चलाए तो कुछ ने सामुदायिक फार्म। बहुत ही कम निहंग ब्रितानी सेना में शामिल हुए।

बाबा संतासिंह को पुराना कांग्रेस समर्थक माना जाता है। अकाली मोर्चे के समय उनके किसी भी समर्थक को गिरफ्तार नहीं किया गया। भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री कृष्णचंद्र पंत का बाबा से तब का परिचय बताया जाता है जब वह कांग्रेस पार्टी के महासचिव थे। इसलिए बूटासिंह की जगह इस काम के लिए श्री पंत का चुनाव किया गया। बाबा सन्तासिंह

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के समर्थकों की संख्या पांच हजार के करीब है (परिवार के सदस्यों सहित) उनका मुख्यालय तलवंडी साबो (भटिंडा जिला) में दमदमा साहब में है। उनके करीब 300 सैनिक और 200 सेवादार तलवार, तीरकमान जैसे पारम्परिक हथियारों से सदा लैस रहते हैं। उनके अस्तबल में करीब 300 घोड़े भी हैं। कुछ लोगों के पास देशी बंदूकें भी हैं।

हरमन्दिर साहिब 1588 में स्थापित किए जाने के समय से ही सिखों की ऐतिहासिक और धार्मिक परम्परा का सजीव स्मारक रहा है। लेकिन उसकी वर्तमान स्थान पर स्थापना को लेकर अनेक किंवदन्तियां है। कुछ के अनुसार इसकी स्थापना इतिहास के पूर्व काल में हुई जैसे कि प्राचीन हिन्दू साहित्य में उल्लेखित अमृत कुण्ड यहीं था। लोग इस बात पर भी जोर देते हैं कि इस स्थान का चयन उसकी धार्मिक महत्ता के कारण किया गया। हरमन्दिर साहिब बनने से पहले यह क्षेत्र धंसा हुआ था और यहां एक छोटा तालाब था, जहां आज 'दुखभंजनी बेरी' स्थित है। इस तालाब के चारों तरफ काफी संख्या में पेड़ थे जो राहगीरों को गर्मी के मौसम में राहत देते थे। तालाब उत्तर पश्चिमी सीमान्त से आने वाले कारवां की राह में पड़ता था।

यह भी कहते है कि सिखों के तीसरे गुरु श्री रामदास ने तालाब के निकट एक ऐसी जड़ी लगाई जो रोगों का इलाज करती थी। यह पानी के जादुई असर की ओर संकेत है। लेकिन कुछ अन्य सिख इतिहास-वेत्ताओं ने, यह जमीन किस तरह प्राप्त की गई, इसका विवरण भिन्न दिया है। कुछ लोग कहते है कि सम्राट अकबर ने गुरु रामदास जी द्वारा दिए गए आशीर्वाद के बदले उन्हें यह जमीन भेंट की। गुरु ने यह जमीन लेने से इन्कार कर दिया तो अकबर ने तो उन्हें सिख संगत के लिए यह जमीन स्वीकार करने का अनुरोध किया। जिसे गुरु ने स्वीकार कर लिया तभी सम्राट ने उन्हें एक जागीर सम्बन्धी दस्तावेज भी दिए जिसमें झाबल जिले के कई गांव शामिल थे। यद्यपि बाद के इतिहास में इस पर सन्देह नहीं किया गया है। कुछ लोगों का मानना है कि गुरु रामदास ने भूमि लेने से इनकार कर दिया। जिस पर सम्राट अकबर ने गुरु की बेटी बीबी भानी को ये गांव तोहफे में देने की पेशकश की, जिसे उन्होंने तुरन्त मान

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लिया। यद्यपि इस तथ्य की पुष्टि या गलत बताने सम्बन्धी कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। बाद के कुछ इतिहासवेत्ताओं का मानना है कि सुल्तानविंद गांव के जमींदार ने गुरु रामदास को यह भूमि भेंट की।

यह सारी योजना गुरु अमरदास नेतैयार की, जबकि इसे साकार रूप देने का काम गुरु रामरास को और कोष आदि एकत्र करने का काम वृद्ध को सौंपा गवा जो सिख गुरुओं से सम्बद्ध थे। अनेक बुद्धिजीवी, अनुभवी और वृद्ध सिखों ने इस काम में गुरु रामदास की मदद की।

सरोवर का निर्माण 1577 में पूरा हुआ और 'रामसर' या 'अमृतसर' के नाम से जाना जाने लगा। पांचवें सिख गुरु अर्जुनदेव के गद्दी सम्भालने तक सरोवर कच्चा था। इसके बाद इसके चारों ओर पक्की सीढ़ियां बनाई गई। यह काम चल ही रहा था तभी गुरु अर्जुनदेव को पवित्र सरोवर के बीच मन्दिर बनाने का विचार आया। उन्होंने बाबा बुड्ढा से विचार-विमर्श कर योजना को अन्तिम रूप दिया। हरमन्दिर साहिब के नक्शे को लेकर भी अनेक मत सिख इतिहास में मिलते है। इनके अनुसार मन्दिर का नक्शा गुरु ने खुद तैयार किया और नक्शा बनाते समय भारतीय विचारों के आध्यात्मिक स्वरूप की एक नई परिकल्पना प्रस्तुत करने की ओर विशेष ध्यान दिवा। सिख इतिहासवेत्ताओं के अनुसार मन्दिर की नींव 1588 में रखी गई। एक तथ्य के अनुसार नींव स्वयं गुरु रामदास ने रखी। लेकिन बाद के सिख इतिहासज्ञों के अनुसार मुस्लिम सन्त मीर मोहम्मद ने इसकी नींव रखी, जो लाहौर के हजरत मियां मीर के नाम से प्रसिद्ध थे।

कहा जाता है कि एक मिस्त्री से मियां मीर द्वारा रखी नींव की ईंटें गलती से हिल गई, जिस पर गुरु अर्जुन देव ने कहा कि निकट भंविष्य में नींव फिर रखी जाएगी। मन्दिर के निर्माण के दौरान 'कार सेवा' में हजारों लोगों ने भाग लिया। पवित्र सरोबर और मन्दिर के निर्माण के बाद गुरु ने मन्त्रों के उच्चारण के सरोवर में स्नान की महिमा का वर्णन किया। गुरु अर्जुनदेव के बाद आए गुरु श्री हरगोविन्द ने 1906 में स्वर्ण मन्दिर के सामने सिखों की बैठक के लिए एक स्थान बनवाया था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

और अब.....?

सैन्य कार्रवाई के बाद मे ही केन्द्रीय सरकार इस नतीजे पर पहुंच गई थी कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति की भूमिका पंजाब के हिंसा कांड और स्वर्ण मन्दिर में भिंडरांवाले के सशस्त्र राष्ट्र विरोधी कार्यों में अपराधियों को प्रश्रय और प्रोत्साहन देने की रही है। कारसेवा शुरू करवाने के सिलसिले में भी समिति और अकाली दल के नेता जहां मन्दिर से सेना हटाने की मांग कर रहे थे, वहीं यह आश्वासन तक देने के लिए तैयार नहीं कि फिर से मन्दिर परिसर में हथियार नहीं लाए जाएंगे। अकाली नेता चाहते हैं कि अकाल तख्त की कार सेवा का श्रेय उन्हें प्राप्त हो और इस रूप में उसे प्रदर्शित किया जाए कि सिख समाज में उसे विजेता का स्थान प्राप्त हो इसलिए उन्होंने ऐसी शर्त रखी जो सरकार स्वीकार नहीं कर सकती थी। इस कार्य में विलम्ब होने से उन्हें राजनैतिक लाभ भी मिल सकता था। क्योंकि जब तक अकाल तख्त की ध्वस्त अवस्था बनी रहती तब तक सिखों के एक बहुत बड़े वर्ग में असंतोष बना रहता। इस समरनीति का इशारा तो बाबा खड्गसिंह तक ने दिया था, जिन्होंने वर्तमान क्षतिग्रस्त अकाल को ज्यों का त्यों शीशे के कवच में सुरक्षित रखने की मांग की थी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ऐसी अवस्था में सरकार के लिए कार सेवा के लिए वैकल्पिक रास्ता खोजना अनिवार्य हो गया था। बाबा सन्तासिंह इसके लिए उपयुक्त व्यक्ति दिखाई दिए। कार सेवा आरम्भ होने से स्वाभाविक रूप से गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति और अकाली दल चिन्तत हो उठा है। इस चिन्ता का प्रमुख कारण है कि यदि निहंग मुखिया को कार सेवा में किंचित भी सफलता मिली तो स्वर्ण मन्दिर पर उनका प्रभाव बढ़ जाएगा और उसी मात्रा में गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति और अकाली दल का प्रभाव कम होगा। ऐसी अवस्था में इस बात का भी खतरा है कि कहीं केन्द्रीय सरकार गुरुद्वारा अधिनियम में संशोधन करके प्रबन्धक समिति के वर्तमान रूप को ही समाप्त न कर दे। यह अधिनियम 1925 में अकाली आन्दोलन के परिणामस्वरूप बना था, जिसके अन्तर्गत स्वर्ण मन्दिर परिसर में सिखों द्वारा निर्वाचित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति वास्तविक प्रशासक समिति मानी गई थी। आजादी के बाद से किसी भी राज्य या केन्द्रीय सरकार ने प्रबन्धक समिति के इस वर्चस्व को चुनौती नहीं दी और आतरिक प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया। यहां तक कि अकाल तख्त में पांच प्रमुख ग्रन्थियों के आदेशों के सिलसिल में भी सरकार न किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा। वास्तव में यह अधिनियम केवल स्वर्ण मन्दिर परिसर पर लागू होता था। मगर बाद के वर्षों में इसके बीच से जाने वाली सड़क को भी गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति न अपने प्रभावी अधिकार में ले लिया। तत्कालान कांग्रेस सरकार ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की।

केन्द्रीय सरकार क कुछ नेताओं का कहना है कि स्वर्ण मन्दिर के सिलसिले में इस प्रकार के अधिकार किसी गैर सरकारी संगठन का देना उचित नहीं होगा क्योंकि उग्रवादियों की घटनाओं के बाद इस बात का कोई आश्वासन नहीं कि इस प्रकार की गैर सरकारी समिति या सगठन राष्ट्र विरोधी और गैर कानूनी कार्रवाइयों की रोकने में किंचित भी सफल हो जाएगो। इसलिए भारत के कुछ अन्य मन्दिरों के स्वायत्त सगठनों के आदर्श पर एक नंए अधिनियम पर विचार किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत धार्मिक मामलों में गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति को पूर्ण

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्वायत्तता प्राप्त होगी। मगर इसकी कार्रवाइयों की वैधानिकता की देख-रेख करने के लिए सरकार की भी किसी न किसी रूप में उपस्थिति रहेगी। इस प्रकार का स्वायत्त संगठन दक्षिण में तिरुपति में है और ऐसा ही एक संगठन राजस्थान के प्रसिद्ध नाथद्वार मन्दिर में है।

सरकार को कुछ ऐसे ही कदम उठाना पड़ेंगे। राजनीति और धर्म को अलग करना ही होगा। देश की अखण्डता और गौरव इसी में है। आइये, हम सब मिलकर इसी ओर बढ़ें।

जयहिन्द !

इस पुस्तक का अधिकांश आधार भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'श्वेतपत्र' तथा अनेक पत्र पत्रिकाएं एवं लेखक का अपना अन्वेषण है। जिन स्थानों से सामग्री का आधार लिया गया है, लेखक उनका आभारी है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

देश की एक बहादुर कौम को, जिसने विभाजन का बहुत गहरा दर्द झेला था, किस प्रकार गुमराह कर दिया गया और धार्मिक स्थलों को किलों में बदल कर सशस्त्र क्रांति के बल पर एक स्वतंत्र राज्य 'खालिस्तान' का स्वप्न देखा जाने लगा, हजारों, लोगों के खून से आतंकवाद को सींचा गया, सारे देश के लिये खतरा उत्पन्न कर दिया गया, यह-सब इतिहास का रोमांचक अध्याय बन गया है।

उसी आतंक और उग्रवाद की सम्पूर्ण सच्ची-कहानी, जिसके पीछे विदेशी शक्तियां भी थीं, प्रस्तुत है।

सुप्रसिद्ध अन्वेषक, पत्रकार और लेखक गोविन्द सिंह की एक और प्रस्तुति –

साधना पॉकेट बुक्स

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org